॥ श्री ॥

बालकृष्णजी सदासहाय

चौरासी वार्त्ता

श्रीमदा
चार्य्याणां परमानुकंम्पा
स्पद भगवदीय चतुराशी
तिसंख्याक वैष्णवा नां
वार्त्ता

श्री युत मुन्शी नवल किशोर भार्गव
मालिक अवध समाचार पत्रकीआज्ञानुसार

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल सम्पादिकव वन्शीधर
मंनजरके प्रबन्धसेमुम्बै उज्जलनामशिला
यंत्र में छापी गई ॥ दूसरीबार १००० पुस्तक
नवम्बर सन १८८३ ई०

श्रीकृष्णाय नमोनमः।

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमो नमः

अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन की चौरासी वार्त्ता लिख्य॰

अथ आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरसानी तिनकी वार्त्ता॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा कौं पधारे हुते तब तहां दामोदर दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास सों अपने श्री मुख सों दमला कहते, और कहते जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कीनों है सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ऐसे कहते सो पृथ्वी परिक्रमा करत श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल में एक चौंतरा श्री गोविंद घाट ऊपर हुतो तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू आय विश्राम करते ता ठौर ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू की बैठक है और श्री द्वारिकेनाथ जी को मन्दिर है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हुते ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं महाचिंता उपजी जो श्री ठाकुर जी ने तो आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन कों ब्रह्मसंबंध करावो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू अपने मन में विचारें जो जीव तो दोषवंत है और श्री पुरुषोत्तम जी तो गुननिधान हैं तातें ऐसें कैसें संबंध होय तातें चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए ता समय श्री ठाकुर जी आप तत्काल प्रगट होय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछैं जो तुम चिंता आतुर क्यों हो तब श्री आचार्य।

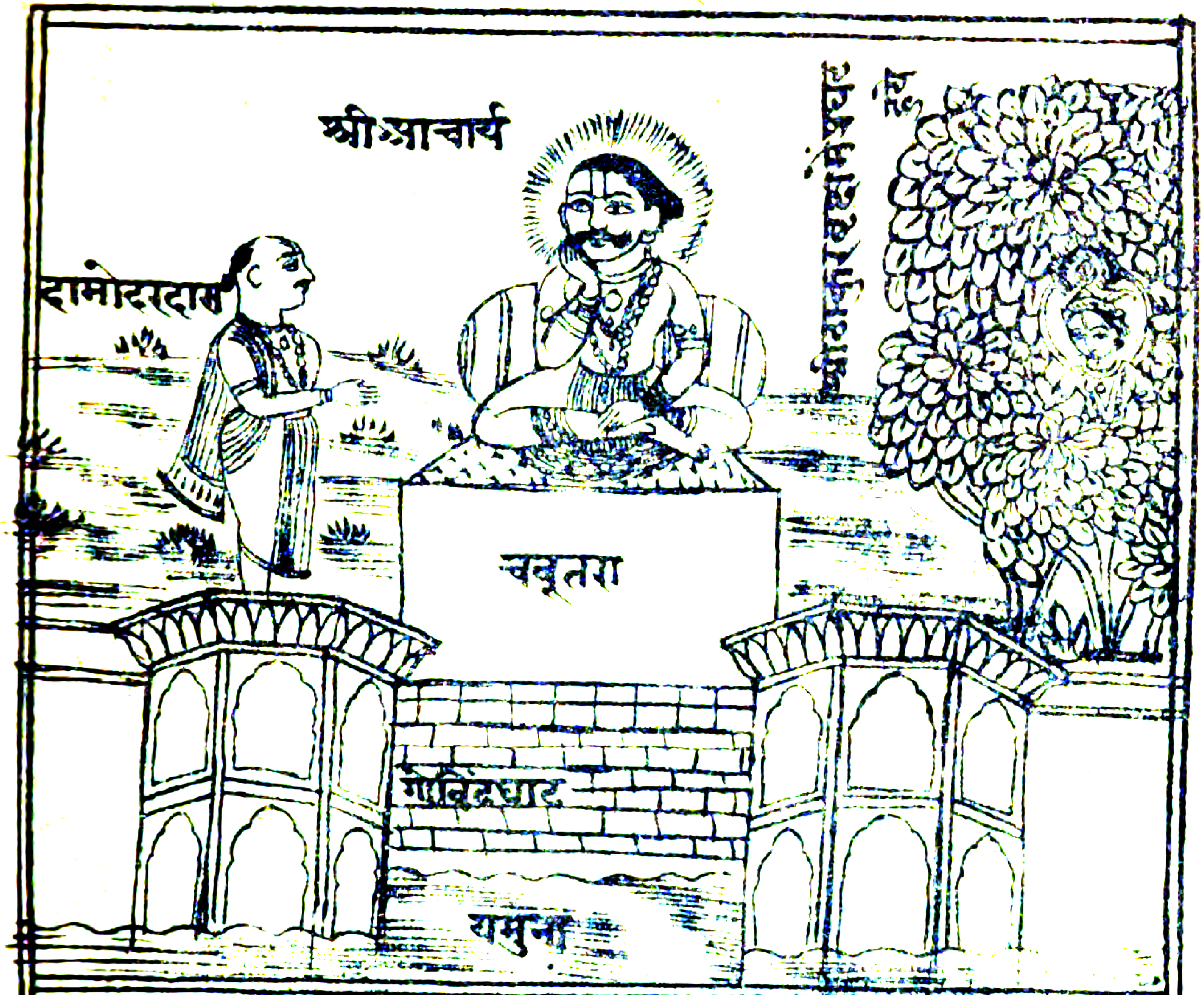
श्री आचार्य
दामोदरदास
श्रीपूर्णपुरुषोत्तम
चबूतरा
गोविंदघाट
यमुना

जी महा प्रभू आप कहें जो जीव को स्वरूप तौ तुम जानत ही हौ दोसवन्त है सो तुम सों संबंध कैसें होय तब श्री ठाकुर जी आप कहें जो तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध करावोगे तिन कौं हौं अंगीकार करूंगो तुम जीवन कौं नाम देउ गे तिन के सकल दोष निवर्त होयंगे ये बातें श्रावण सुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रि कों भई प्रातःकाल पवित्रा द्वादशी हुती तातें पवित्रा सूत कौ करि राख्यो हुतो सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषोत्तम जी कों पहरायो मिश्री भाग धरी ता समय के ये अक्षर हुते ताको श्री आचार्य जी महा प्रभू आप सिद्धांत रहस्य ग्रंथ को यह है सो श्लोक १०

॥ श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि
साक्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ॥१

ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो दमला तें कछु सुन्यों तब दामोदर दास नें वीनती कीनी जो महाराज श्री ठाकुर जी के वचन सुने तो सही परंतु कछु समझ्यो नहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो मोकों श्री ठाकुर जी ने आज्ञा कीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्म संबन्ध करावोगे तिनकों हौं अंगीकार करूंगो तिनके सकल दोष निवर्त होंयगे तातें ब्रह्म संबंध अवश्य करनो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १

बहुर श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो जो मेरे आगें दामोदरदास की देह न छूटे और श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदर दास सों कछु गोप्य न राखते और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत अहर्निस देखते कथा कहते और मार्ग को सिद्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के हृदय में स्थापन कीयो ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

और एक समय दामोदर दास और श्री गुसांई जी एकान्त में बैठे हुते तब श्री गुसांई जी ने दामोदर दास सों पूछी जो तुम श्री आचार्य जी महाप्रभून कों कहा करि जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो हम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून कों जगदीस जो श्री ठाकुर जी तिनहू ते अधिक करि जानत हैं तब श्री गुसांई जी दामोदर सों कहे जो तुम ऐसें क्यों कहत हो तो श्री ठाकुर जी तें श्री आचार्यजी बड़े हैं तब दामो

दर दासनें कही जो महाराज दान वड़ौ कै दाता वड़ौ काहू के पास धन वहुत होय तो राज कहा करें जो देंय ताकौं जानियें और श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ सर्वस्व धन श्रीठाकुर जी हैं सो हम जीवन कौं दान किये तातें हम श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं सव ते वड़े करि जानत हैं ॥

वार्ताप्रसंग ३

और एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री गुसांई जी अपनी वैठक में वैठें हुते पास द्वै चार वैष्णव हंसिवे खेलवे के वैठे हुते आप उन सों हंसते खेलते मसखरी करते वहुत प्रसन्नता में उन सों खेलवे की वार्ता करत हुते ता समय दामोदर दास आये ता

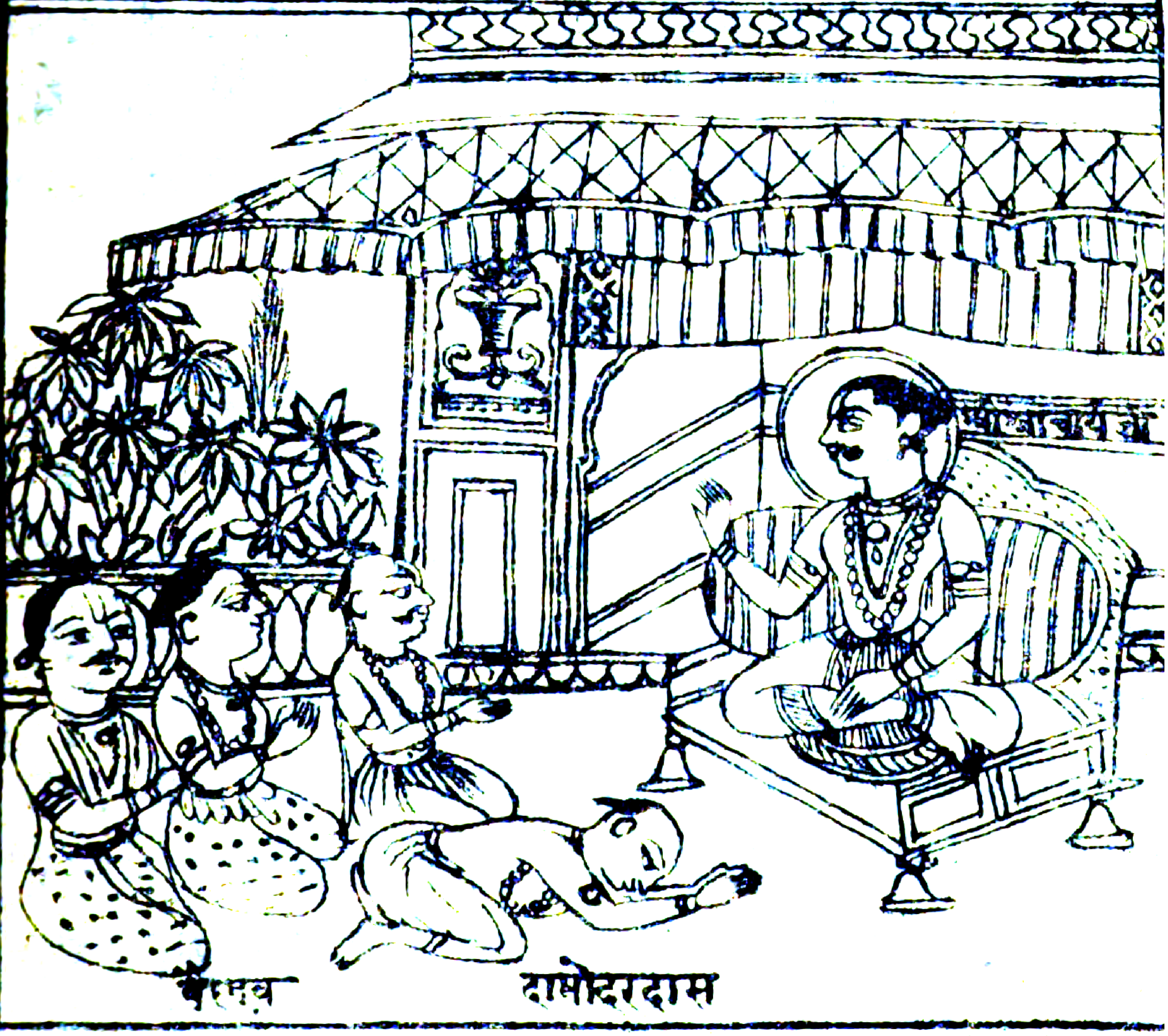

समय श्री गुसांई जी नें बहुत आदर सन्मान कियो पाछें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांई जी सों दामोदर दास नें कही जो महाराज अपनो मार्ग निश्चिंत ताकों नाहीं यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को है तब श्री गुसांई जी नें कही जो तुम आछी बात कहत हो परि हम कों जब श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा होयगी तब कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें न होय तब दामोदर दास साष्टांग दंडवत करि के बीनती की जो हम कों तो एक बार राज सों बीनती करनी है पाछें आप प्रभू हो भली जानोगे सो करोगे पर यह मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भए और कहें जो हम को यह वार्ता श्री आचार्य जी द्वारा है और कहें जो तुम न कहो तो कोंन कहे हम तुम को देखत हैं तब अति प्रसन्न होत हैं आप श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जानि कें दामोदर दास को सिक्षा मानत भये ताते बड़े सो बड़े ॥

वार्ता प्रसंग ४

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो जो मेरे आगे दामोदर दास की देह न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्न्यास ग्रहण करिवे को विचार मन में करें ता समें श्री गोपीनाथ जी श्री गुसांई जी ये दोऊ भाई बालक हुते तातें मार्ग को सिद्धांत वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू सन्न्यास ग्रहण कीए तब कितनेक दिना पीछें श्री गुसांई जी नें [illegible] जी सों पूछी जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें मा-

र्ग प्रगट कीयौ है सो उच्छव कौ कहा प्रकार है हम तौ कछू जानत नाहीं तब श्री अक्का जी ने कह्यो जो मार्ग तथा उच्छव कौ प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछौ तुम सों दामोदर दास कहेंगे तब श्री गुसांई जी दामोदर दास ने बहुत सन्मान करि भक्ति भाव सों घर में पधराये पाछें उच्छव कौ प्रकार श्री गुसांई जीनें पूछौ सो दामोदर दास ने सब कह्यौ ॥

वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समय दामोदर दास के पिता कौ श्राद्ध दिन हतौ वा दिन श्री गुसांई जी दामोदर दास के घर पधारे और दामोदर दास कौं श्राद्ध करवायो पाछें उत्थापन के समै दामोदर दास दर्शनं कों आये तब श्री गुसांई जी ने कही जो मो कों श्राद्ध करवाये की दक्षिणा देउ तब दामोदर दास कहें जो दक्षिणा में एक बात कहूंगो सो सिद्धांत रहस्य के डेढ़ श्लोक कौ व्याख्यान कहे यह ऐसी बात है तब श्री गुसांई जी ने कही जो आगें कहौ तब दामोदर दास ने कही जो मैनें तौ इतनों ही संकल्प कियौ है तब श्री गुसांई जी चुप कर रहे पाछें दामोदर दास ने मार्ग के प्रनालिका श्री गुसांई जी के आगे कही श्री भागवत की सुबोधिनी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ की टीका और रहस्य वार्ता श्री आचार्य जी महाप्रभू कहे हैं सो सब कही ता पाछें श्री गुसांई जी दामोदर दास को नमस्कार करन न देते याते जो श्री गुसांई जी अपने मन में विचारे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को स्वरूप दामोदर दास के हृदय विषे सदा सर्वद

विराजमान हैं तो इन पास दंडौत नमस्कार न करावते याते नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचार्यजी ······ महाप्रभून ने दामोदरदास कों दर्शन दीयो और आज्ञा दी जो अब ते तू श्री गुसांई को चरणोदक नित्य लीयो कर तब प्रातःकाल दामोदर दास श्री गुसांई जी के पास आये और चरणोदक मांग्यो तब श्री गुसांई जी ने चरणोदक की नाहीं कीनी तब दामोदरदास ने श्री गुसांई जी सों कही जो मोको ······ श्री आचार्य जी महाप्रभून की आज्ञा भई है और दर्शन भये हैं और कह्यो जो तू श्री गुसांई जी को चरणोदक नित्य लीजियो तब श्री गुसांई जी ने चरणोदक दियो और दामोदर दास को श्री आचार्य जी महाप्रभू तीसरे दिन दर्शन देते मार्ग की रहस्य वार्ता कहते ऐसी कृपा करते और कदाचित तीसरे दिन दर्शन न होतो ता दिन दामोदर दास के पेट में पीडा होती अत्यंत कष्ट पावते पाछें जब दर्शन होतो तब तत्काल कष्ट निवर्त हो जातो ऐसे करत कितनेक वर्ष पर्य्यंत दामोदर दास कों श्री गुसांई जी ने दर्शन दीनों तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून ने दर्शन दीनों ऐसी कृपा करते जो बात होती सो दामोदर दास श्री गुसांई जी के आगे कहते और मार्ग के प्रकार की वार्ता अहर्निश कहते जो दामोदर दास के हृदय में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजमान हैं ताते दामोदर दास कों दंडौत न करन देते और कहते जो दामोदर दास की वार्ता को पार नहीं ऐसे मार्ग के टेक के कृपा पात्र हैं ॥

वार्ता प्रसंग ६

तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास कों पूछे जो दामोदर दास तू श्री गुसांई जी कों कहा करि जानत हो तब दामोदर दास ने कही जो महाराज हम तो तुम्हारे पुत्र करि जानत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास कों आज्ञा दीनी जो जैसे तुम मोकों जानत हो तैसे इन कों स्वरूप जानिगों और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें शृंगार रस मंडन ग्रंथ कीयो है तामें लिये हैं तातें ये दामोदर दास ऐसे कृपा पात्र भगवदी हैं ॥

वार्ता प्रसंग ७

और प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास सों कह्यो जो यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कीयो है ताको हेत यह जो जहां लगिन श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास की स्थित गोप्य है पाछें दामोदर दास ने कह्यो जो मैं श्री ठाकुर जी के बचन तौ सुने पर कछु समझ्यो नहीं ता समें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो आजहू दश जन्म को अंतराय है ताको हेत यह जो जब लगन श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तहां तांई दामोदर दास के प्रागट्य फेर फेर हैं मार्ग के स्थंभ प्रथम या तें कहे श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास के हृदय में भगवद लीला स्थापी संपूर्ण सृष्टि कों सम्बोधन करिवे कों ताको यह हेत जो जब लगि श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की स्थित है तब लगि दामोदर दास की हू स्थिति है सो वे दामोदर दास ऐसे टेक के रूप

पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कों पार नहीं ताते इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ८

॥ वैस्नव १ ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक कृष्ण दास मेघन छत्री तिन्की वार्ता

सो एक समे श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा करी तव कृष्णदास मेघन साथ हे सो वद्री नारायण के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक वड़ी शिला गिरी सो कृष्ण दास ने हाथ सो थांभी तव श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रसन्न भये तव कृष्ण दास सों कहे

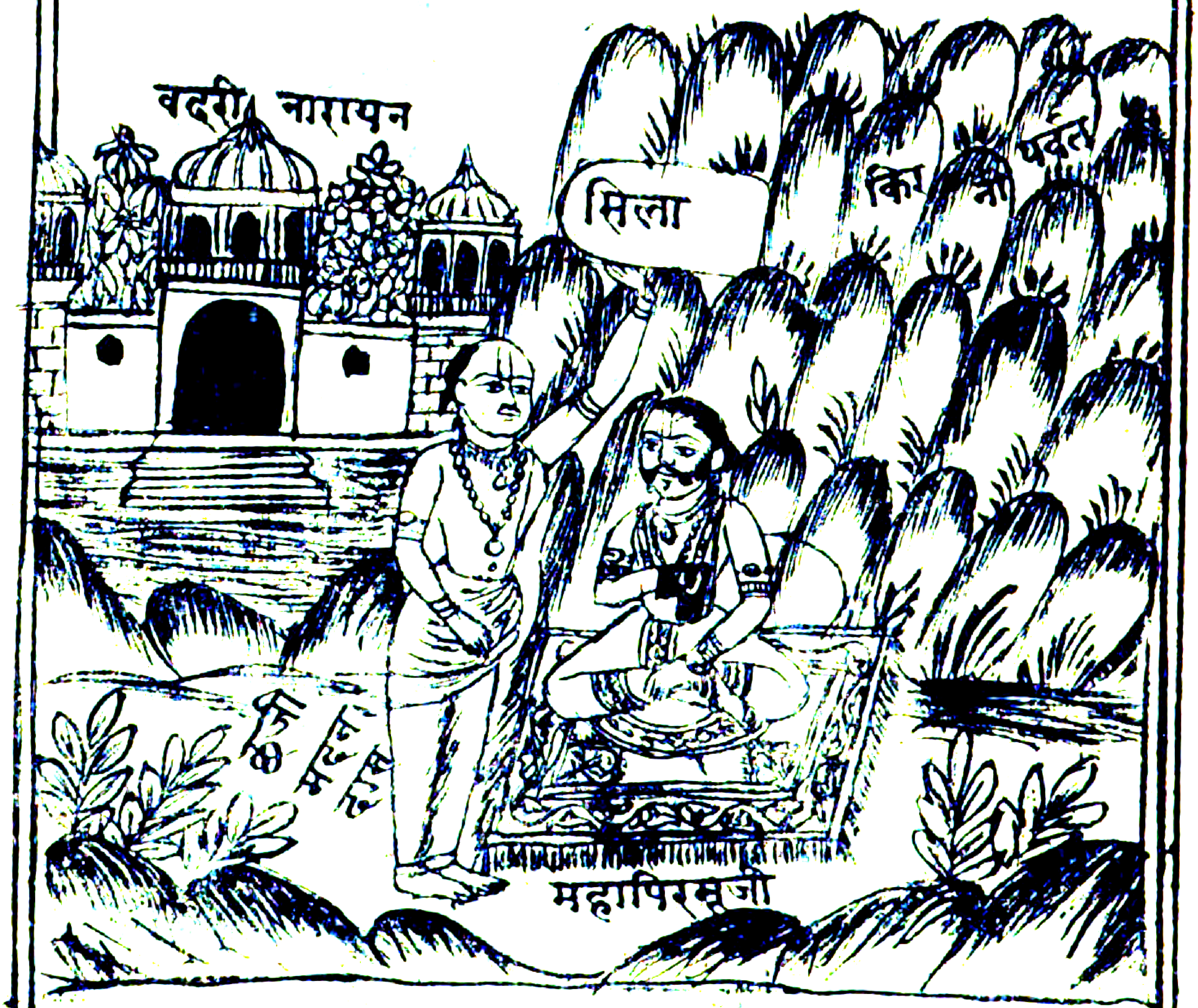
वदरी नारायन
सिला
किरनी पर्वत
क्रि सन दास
महापिरभूजी

जो मांगि कहा मांगत है तब तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझैं तीसरे मेरे गुरू के घर पधारौ तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी बदर बद्रिकाश्रम ने आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाहीं है तहां वेद व्यासजी कौ स्थान है तहां पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो तू ठाड़ो रहियौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आगें पधारे तब वेद व्यास जी साम्हें आये सो श्री आचार्य जी महाप्रभून कौं अपने धाम में लै आए पाछें वेद व्यासजी ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यौ जो तुमने श्री भागवत की टीका कीनी है सो मोको सुनावौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने जुगल गीत के अध्याय कौ एक श्लोक कह्यौ सो श्लोक

वाम वाहु कृत वाम कपोलो वल्लितभ्रू
धरार्पित वेणुं ॥ कोमलांगुलि भिराश्रित
मार्ग गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥१॥

या श्लोक कौ व्याख्यान कह्यौ सो तीन दिन में संपूर्ण भयौ तब वेद व्यास जीने वीनती करी जो मैं या भागवत के व्याख्यान की अब धारना करि सकत नाहीं तातें अब क्षमा करौ पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभूनने वेद व्यास जी सों कह्यौ जो तुम वेदांत के ऐसे सूत्र कहा कीये जो माया वाद पर अर्थ लाग्यो तब व्यास जीनें जो में कहा करूं मोकों आज्ञाही ऐसी हती जो ऐसे अर्थ करियों तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कही जो में ब्रह्मवाद पर अर्थ कियौ है सो व्यासजी कों सुनायौ सो व्यास

जी सुन कर वहुत प्रसन्न भए ता पाछें वेद व्यास जी सों विदा होय कें तीसरे दिन पधारे तव कृष्ण दास सों कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तव कृष्ण दास नें कही जो महाराज हों कहां जाऊं सो कों तुम्हारे चरणारविंद विना और आश्रय नाहीं हैं तव यह सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भये तव कह्यो जो मांगि तव वेंही तीन वस्तु मांगी एक तो मुखरता को दोष जाय दूसरे मार्ग को सिद्धांत समझौं तीसरे मेरे गुरू के घर पांव धारो सो तामें दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारवे की नाहीं कीनी ॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू गंगासागर पधारे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू पोढ़े हुते तहां कृष्ण दास पावदावत हुते तव श्री आचार्य जी महाप्रभू मन में विचारे जो धान के मुर मुरा होंयतो लीजिये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतःकरन की कृष्णदास मेघन नें जानी इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून कों निद्रा आई तव कृष्णदास उठि कें गंगासागर उपर आए तव देखे तो पार.. एक दीया वरत है ताकी अटकर ते पैर कें गंगाजी पार आये तहां गांव हो सो खेत में ते गीले धान कटवाये तहां गांव में जाय कें भरभूजा कों टका की जगह चार टका दे कें मुर मुरा सिद्ध करवाए तव लैकें आये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरणारविंद दाव कें जगाये और मुर मुरा आगें राखे तव कह्यो राज आरोगो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू

तनैं पूछी जो तू कहां ते लायो तब समाचार कहे जो महाराज मैं पार ते लायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये तब कह्यौ जो मांगि तब वेही तीनू वस्तु मांगी मुखरता को दोष जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे हृदय में आवै तीसरे मेरे गुरू के घर पाव धारो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू ने कह्यौ सो जीव कहा मांगि जानैं या समें जो मांगतो सोई देतो जो कहतो तो श्री ठाकुर जीको स्वरूप दिखावतो तहांते श्री आचार्य जी महाप्रभू सोरों पधारे तब कृष्ण दास ने बीनती करिकें कह्यौ जो महाराज मेरे गुरू हैं सो बुलाय लाउं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो तू खेद पावैगो पाछें कृष्ण दास अकेले गुरू के पास आयो तब कृष्णदास कों गुरु ने देख्यो तब कृष्ण दास सों गुरू नें कह्यौ जो अरे तेनें और गुरू कीयो तब कृष्ण दास ने कह्यौ जो मेनें तो और गुरू नाहीं कीयो मेरे गुरू तो तुमही हौ पर तुम्हारी कृपा ते मैंनें पूरण पुरुषोत्तम पाये हैं तब गुरू ने कही जो पुरुषोत्तम क्यों जानियें तब गुरू के आगें अग्नि की अंगीठी धक धकाती हुती तामें ते कृष्ण दास ने दोऊ हाथ की अञ्जुली भरि कें अंगार हाथ में लियें और कह्यौ जो श्री आचार्य जी महाप्रभू जो पूरण पुरुषोत्तम होय तो मेरे हाथ मति जरियों और जो और भांति होय तो मेरे हाथ भस्म होय जइयों सो एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राखी तब गुरू नें भय खाई और कह्यौ जो अग्नि डार देउ पाछें उन गुरून ने कृष्ण दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अग्नि

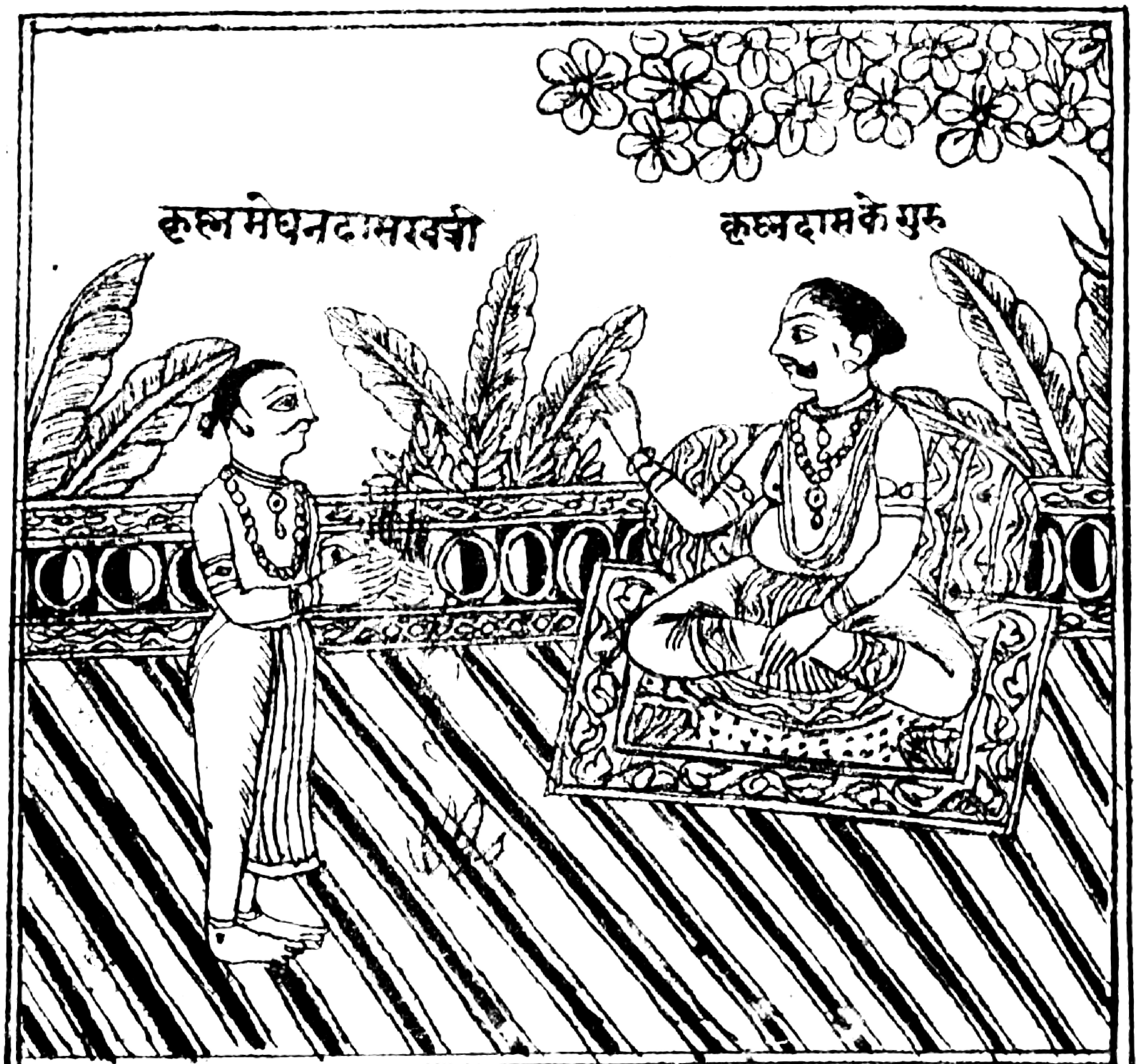

डर वाय दीनी तव कृष्ण दास उहांते खेद पाय के उठि आयो यह प्रसंग सव श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुलनाथ जी ने विस्तार करि कें लिख्यो है ॥

प्रसंग २

वहुर मार्ग हृदयारूढ़ भयो पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सवन के आगे कहे पाछें काहू वैष्णवनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो कृष्ण दास सवन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कृष्ण दास सों कह्यो जो क्यों रे तू सवन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तव कृष्णदास ने कह्यो जो महाराज आप उनही सों पूछिये जो मैंनें कहा कह्यो।

हैं तब उन वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछो जो तुम सों कृष्ण दास नें कहा वार्ता कही है तब वैष्णवन नें कही जो महाराज हम कों तो सुधि रही नाहीं तब श्री आचार्य जी महा प्रभू मुसिक्याय कें चुप करि रहे ॥

प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्री ठाकुर जी की इच्छा ते श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्ण दास ने प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों प्रिय वस्तु कहा है सो मोसों कहौ सो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभू कहें जो श्री ठाकुर जी उत्तम वस्तु के भोगता हैं परंतु गौर शब्देन वानी कहीयतु हैं गोरस अति प्रिय है ताके भाव आनि वचनो यहैं और सबन ते भक्ति को स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है ताते भक्ति वत्सल कहावत हैं तब कृष्ण दास ने फिर प्रश्न पूछो जो महाराज श्री ठाकुर जी कों अप्रिय वस्तु कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी कों धूंआं समान अप्रिय वस्तु कछू नाही और ताते अप्रिय भक्तन के द्वेषी हैं फिर कृष्ण दासनें प्रश्न पूछो जो महाराज श्री रघुनाथ जी संम्पूर्ण सृष्टि कों लैकें स्वधाम में पधारे हैं और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहेते ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो श्री रघुनाथ जी परम दयाल हैं ताते स्वर्ग दीयो नातर दशरथ कों स्वर्ग की योग्यता न हुती यातें अपनो वचन सत्य करिबे कों वनवास पठाय दीये ऐसो कर्म कीयो ॥

प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कृष्ण

दास ने प्रश्न पूछो जो महाराज भक्त होय के श्री ठाकुर जी की लीला को भेद नाहीं जानत सो काहेतें तब श्री आचार्य जी महाप्रभुन नें कह्यो जो ए विधि पूर्वक समर्पण जो कह्यो है सो नाहीं करत अनुभव क्यों जानें और भगवद भक्त को संग करें तो श्री ठाकुर जी की लीला को भेद जानें सो तो आप को योग्यता मान काहू को संग नाहीं करत और कछू करत हैं सो अंतःकरन पूर्वक नाहीं करत हैं सोतें श्री ठाकुर जी के स्वरूप को तथा लीला को भेद नाहीं जानत उत्तम भक्तन को संग करें श्री भागवत श्री सुबोधिनी ग्रंथन को अहर्निश अवगाहन करें तब भगवद भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी भक्तन के हृदै विषैं सदैव रहत हैं तथा सेवा करि के बंधे हैं तहां एक अन्य मार्गी वैष्णव जाके हृदय में श्री ठाकुर जी विराजत हैं ताको संग करनो तहां राजन धावन वैष्णव को दृष्टान्त दिए हैं जिन जिन भाव पूर्वक सेवा करी तिन के सकल निवर्त भए तातें लीलास्थ व्रज भक्तन के भाव को विचार करनों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी को स्वरूप जानत हैं तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जानों जाय जो आज्ञा होय सो जानों जे वैष्णव श्री ठाकुर जी कों जानत हैं सो जो कछु कारज करत हैं और श्री ठाकुर जी सों विरह भावना पकरत हैं अपनों स्व दोष भाव विचार करत हैं अपनो स्वरूप जानैं जो हों कौन हों पहलें कहा हुतो भगवद संबंध किये तें कहा भयो अब मोकों कहा करतव्य रात्र दिवस ऐसो विचार करत रहै तब अपनों स्वरूप जानें ए प्रागट्य व्रज भक्तन के अर्थ तथा ए

तन्मार्गीय के अर्थ तातें उत्तम संग होय तो एतन्मार्ग के ए ठाकुर जानें और प्रसिद्ध पुराण अनेक सिद्धान्त इतिहास हैं तातें व्रजराज के घर प्रगटे सो श्री ठाकुर जी न जाने जाय ए श्री ठाकुर जी कों तवही जानें तातें भगवद भक्त को संग करनो सेवा को प्रकार एतन्मार्गी वैष्णव जानत हैं तिन सों मिलि तिन को भाव पूछि कें सेवा करनी तव भगवद् भाव उत्पन्न होय श्री ठाकुर जी की स्नेह युक्ति सेवा करि जो श्री ठाकुर जी वाकों सब जतावें ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री वद्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे तव वेद व्यास जी साथ हैं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें वेद व्यास जी सों पूछी जो भ्रमर गीत को अध्याता में उद्धव जी कों व्रज भक्तन के पास पठाए हैं ता प्रसंग में श्लोक आधो घटत है तव वेद व्यास जी नें श्लोक आधो कह्यो ॥

श्लोक ॥ आतम त्वात् भक्त वसत्वात्
सत वक्तात् स्वभावत: ॥+

या की टीका श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पहले ही कीनी हैं सो सुनि कें वेद व्यास जी वहुत प्रसन्न भए तापाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू वद्रीनाथ जी के मन्दिर पधारे ता दिन वामन द्वादशी को दिन हतो सो ता दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून को विचार मन में व्रत करिवे को हतो तव श्री वद्रीनाथ जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो मैंने फलाहार को सर्वत्र योज कीनो·

परि पाइयत नाहीं ताते तुम रसोई करि श्री ठाकुरजी कों भोग धरि भोजन करो श्री ठाकुर जी की इच्छा ऐसी दीखत है इतने में श्री कृस्नदास ने आय कें कह्यो : जो महाराज यहां तो कछू पावत नाहीं पाछें ता दिन ने वामन द्वादशी के दिन व्रत न करते उत्साह ते च पारणां ऐसो वचन है पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू वद्रीनाथ जी ते विदा भये तब कृस्नदास साथ ही हे

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ६ ॥

प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभू वेद व्यास जी के मंदिर में पधारे तब कृस्नदास सों कह्यो जो तू ठाडो रहियो : तब कृस्नदास ठाडे रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे तब कह्यो जो तू गयो नाहीं सो काहे ते तब कृस्नदास कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानों तो सेवक काहे को सेवक की आज्ञा में चलनो सो कृस्नदास ऐसे कृपा पात्र भगवदीय प्रभून की आज्ञा मानते ताते श्री आचार्य जी महाप्रभू कृस्नदास के : ऊपर सदा प्रसन्न रहते पाछें मुरवता को दोय मन में न लावते ऐसे आप उदार राय जीवन की ओर न देखते दया राखते और अपनी ओर ते दया राखि जीवन को अंगीकार करते जीवन की ओर को विचार करते कृस्नदास मार्ग तथा घर में सदैव रहते सेवे कृस्नदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ७ ॥ वैस्नव ॥ २ ॥ सम्बंध ॥ १४ ॥

॥ अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के ॥ सेवक दामोदर दास सम्भलवारे क्षत्री ॥ कन्नौज के वासी तिनकी वार्ता है ॥

सो दामोदरदास कों एक पत्र नाम कों पायो और स्वप्न में वासों कह्यो जो या पत्र कों बंचनाकी तू समाजैयो सो वह पत्र काहू सों बांच्यो न जाय सो कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे तहां गांव के बाहिर आय उतरे और कृस्नदास मेघन कों गाव में पठायो और कह्यो जो सीधो सामग्री ले आउ परि काहू सों कहियो मती जो श्री आचार्य जी महाप्रभू यहां पधारे हैं तब कृस्नदास गांव में जाय सीधो सामग्री सब लीनी सो लेकें जब चलन लागे तब दामोदरदास ताही समय राजद्वार में आवत हुते सो मार्ग जात कृस्नदास कों देख्यो तब दामोदर दास घोड़ा ते उतर कें कृस्नदास के पास आये और दंडवत कीये पाछें पूछी जो तुम कहां ते आये और श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हैं तब कृस्नदास नें कह्यो जो आज्ञा नाहीं तब दामोदरदास नें कह्यो जो ये श्री आचार्य जी महाप्रभून बिना काहे कों आवे सो जब कृस्नदास चले तब पाछें २ दामोदर दास आये और घोड़ा हो सो पठाय दीयो सो कृस्नदास कों दूर ते आवत श्री आचार्य जी महाप्रभून नें देख्यो पाछें दामोदरदास कों देखे तब दामोदर दास ने दंडवत कीनी तब कृस्नदास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछी जो तेनें या सों क्यों कह्यो तब कृस्नदास नें कह्यो जो महाराज मैंने तो इन सों नहीं कही

तब

दामोदरदास ने बीनती कीनी जो महाराज इन मों सों नाहीं कह्यो हुतो इन के पाछें पाछें चल्यो आयो हुं और श्री आचार्य जी महाप्रभू नाहीं कोए मोयातें कन्नौज पधारेंगे तब पाछल करते हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभू मन में विचारे जो आज्ञा भई है सो आपही होयगी ताके लिये नाहीं कही हुती पाछें श्री आचार्य महाप्रभूननें दामोदरदास सों पूछी जो पत्र लायो है तब दामोदरदास नें बीनती कीनी जो महाराज पत्र को कहा काम है मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कही जो तोकों आज्ञा भई है जो यह पत्र बांचे ताकों तू शरण जइयो तातें तू पत्र लाउ तब पत्र मगायो । तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पत्र बांच्यो पाछें वा पत्र को अभिप्राय दामोदरदास सों कह्यो दामोदरदास कों पाछें नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दामोदरदास ने अपने घर पधराये पाछें दामोदरदास तथा दामोदरदास की स्त्री दोउ जने स्नान करि कें श्री आचार्य जी महाप्रभू की शरण आये तब दामोदरदास कों समर्पण करवायो और दामोदरदास की स्त्री कों प्रथम नाम सुनायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभूननें समर्पण करवायो तब दामोदरदास ने बीनती कीनी जो महाराज अब हम कों कहा आज्ञा है अब हम कहा करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें आज्ञा करी जो तुम सेवा करो तब दामोदरदास ने कही जो महाराज सेवा कौन भांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कही जो कहूं श्री ठाकुर जी को स्वरूप देखो सो एक

दर्जी के घर श्रीठाकुर जी को स्वरूप हुतो सो ताकों दामोदरदास द्रव्य देकें लै आये पाछें सब घर पोतो पात्र सब बदलाये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ने वा स्वरूप कों पंचामृत में स्नान करवायो श्री द्वारकानाथ जी नाम धर्यो पाछें सिंहासन बैठाये तब दामोदर के माथे सेवा पधराय कें पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय बीड़ा समर्पन लागे तब देखें तो पान हरे हैं तब श्री महाप्रभून नें कह्यो जो दामोदर दास हरे पान कबहूं नहीं समर्पिये उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी कों समर्पिये श्री ठाकुरजी तो उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं पाछें स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे तब श्री द्वारिका नाथ जी की सेवा भली भांति सों होन लागी और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो उतर्यो पर काल्हो होय सो श्री ठाकुर जी कूं कबहूं न समर्पिये वह काम न आवे सारे पर काल्हे में ते प्रथम श्री ठाकुर जी कों लीजिये और उत्तम कोमल वस्त्र होय सो श्री ठाकुरजी के काम आवें पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें और आज्ञा दीनी जो उत्तम सामग्री होय सो श्री ठाकुर जी के लिये अपने घर लै आइये श्री ठाकुर जी की सामग्री में ते और ठौर खर्च न करिये तब दामोदर दास स्त्री पुरुष दोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सामग्री उज्ज्वल होती जो रूपान के कटोरान में अपरस राखते सो ऐसी उज्ज्वल कोई जानतो नाहीं जो या में सामग्री है या भांति सों सेवा करन लागे ॥

• वार्त्ता प्रसंग १

और दामोदर दास श्री ठाकुर जी कों जल आप भरते सो एक दिन वा को सुसर दामोदर दास के घर आय कें दामोदर दास सों कहन लाग्यो जो तुम जल भरि ल्यावत हो सो हम कों जाति में लज्या आवत है तातें तुम जल मति भरो लोंडी के हाथ जल भरावो तब दामोदर दास ने एक घड़ा तो आप लीयो और एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीयो तब दोउ जने घड़ा लेकें वा की हाट के आगें होय के निकसे

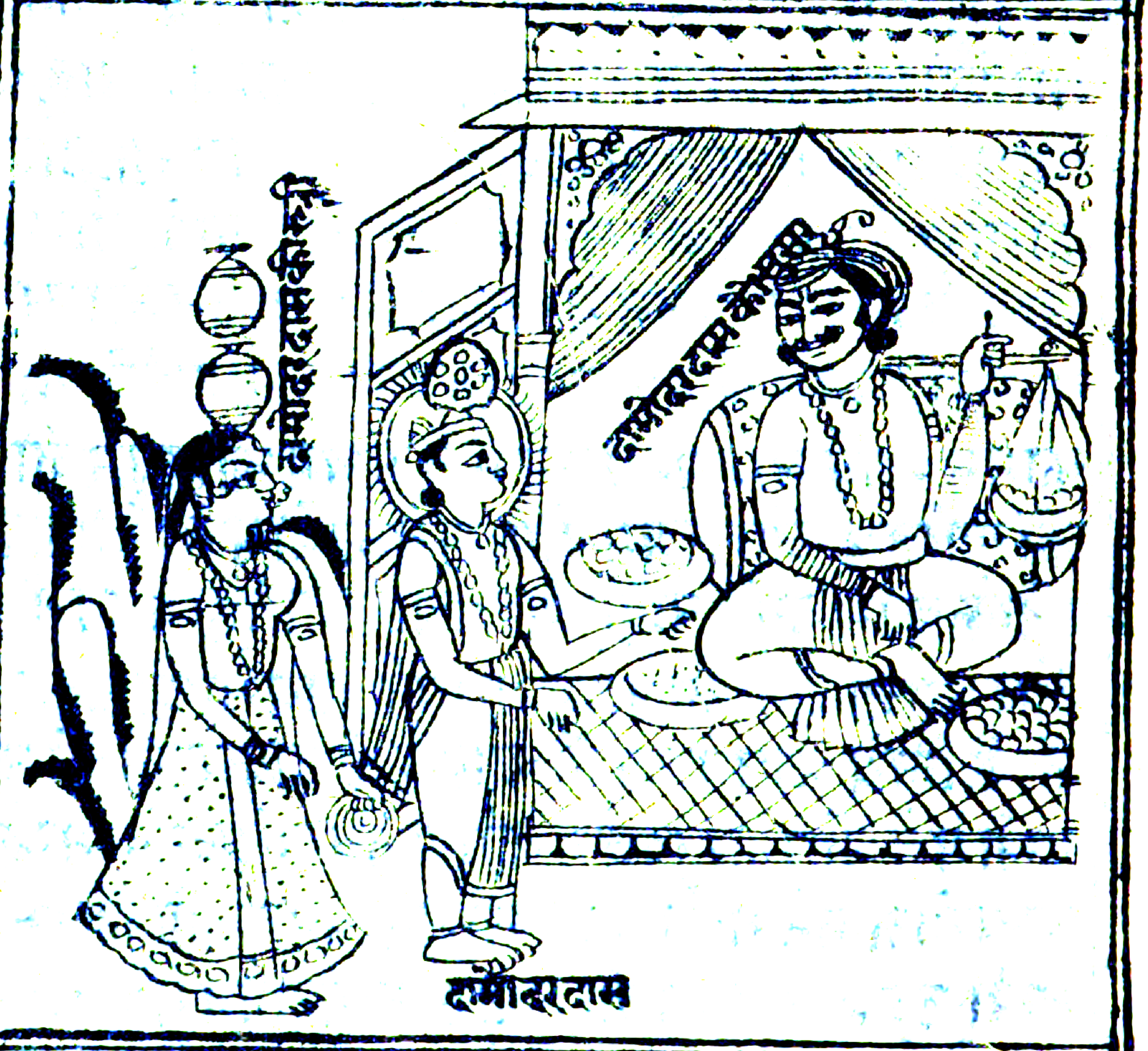
दामोदर दास की स्त्री
दामोदर दास को ससुर
दामोदरदास

तब जल भरि कें घर आये पाछें दामोदर दास ५ को सुसर आयो सो आय कें दामोदर दास के ५ पावन परयो और बीनती करि कें कह्यो जो में चूको

अवतें तुमही जल भरो परि स्त्री पास जल मति भरावो आज पाछें हम कछू न कहेंगे तव आपही जल भरन लागे जो चाहिये सो श्री द्वारकानाथ जी दामोदर दास से मांग लेते वातें करतें सेवा करि कें श्री ठाकुर जी कों ऐसें प्रसन्न किये तव श्री आचार्यजी महाप्रभु आपने श्री मुखतें कहे जो जिननें राजा अंवरीष न देख्यो होय सो दामोदर दास कों देखें ॰ राजा अंवरीष तो मर्य्यादा मार्गीय हुते और ये पुष्टिमार्गीय हैं इनमें इतनी अधिकता है ॥ ⁕३

वार्ता प्रसंग ⁕४⁕

और एक दिन उष्ण काल के दिन हुते तव श्री द्वारकानाथजी कों पोढ़ाये आप दामोदर दास जाय कें चौवारे में सोये सो वा दिन गरमी वहुत भयी तव श्री द्वारिका नाथ जीनें लोंडी कों आज्ञा दीनी जो किवाड़ खोल मोकों गरमी वहुत लागत है तव लोंडी नें किवाड़ खोले तव श्री द्वारिका नाथ जीनें लोंडी सों कह्यो जो पंखा करि तव लोंडी नें पंखा कीयो सो घड़ी १ लों पंखा कियो पाछें लोंडी सों कह्यो जो तू अव जाय कें सोय रहि⁕ तव सवारो भयो तव दामोदर दास देखे तो किवाड़ खुले पड़े हैं तव पूछी किवाड़ किन खोले तव लोंडी नें कही जो मोकों श्री ठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा करी है तव खोले हैं तव दामोदर दास लोंडी पे वहुत खीजे और कह्यो जो तेनें किवाड़ क्यों खोले जो मोकों श्री ठाकुर जीनें किवाड़ खोलन की आज्ञा क्यों न करी आप क्यों न खोले और लोंडी सों कह्यो पर प्रभू

⁕ तव लोंडी किवाड़ खुले छोड़ कर सोय रही

वडे दयाल हैं ता विषें स्नेह होय ताहीसों संभाषण करै श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीकार में सब समान हैं लौकिक में कोऊ उंच ····· नींच कहि लेउ श्री ठाकुर जी तो स्नेह के वस हैं पाछे श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मैंने किवाड खुलाए हैं तब इन खोले हैं तू तो चौबारे में जाय सोयो और मोकों भीतर सुवायौ मोकों गरमी वहुत लगी ताते खुलाए हैं तू लोंडी सों क्यों खीजत है सो कहि के वहुत खीजे तब दामोदर दासने कह्यौ जो प्रसाद तब लेउ जब मन्दिर सम्हराऊं तब। स्त्रीने कह्यौ जो प्रसाद न लेउ तो ऐसो क्यों बनै यह तो पांच सात दिन कौ काम नाहीं प्रसाद लीये विना क्यों चलैं तब कह्यौ जो प्रसाद तौ नाहीं लेउं फलाहार करूंगो तब ऐसे करत २ मन्दिर सिद्ध भयो तब श्री द्वारका नाथ जी के मन्दिर में पाट वैठाये तब उत्सव कीयो वैष्णव कों प्रशाद लिवायो ता पाछें आपनें प्रशाद लीयो ॥२॥ × महा

प्रसंग ॥३॥

और एक दिन दामोदर दास श्री ठाकुर जी कौं राज भोग समर्पि के सइया मन्दिर में समारन गये तब देखें तो दुलीचा ऊपर बिल्ली ने बिगार दीयो है तब दामोदर दास नें कही जो श्री ठाकुर जी अपनी सेवा हू राख सकत नाहीं ऐसें कह्यौ तब श्री ठाकुर जी ने थार चौकी ऊपर सों लात मारि कें डार दीनी और दामोदर दास सों श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो तू कैसो सेवक है सेवक होय के या भांति कहत है ऐसे वहुत खीजे

पाछें दामोदर दास नें वीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवाय के श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुर जी आरोगे पर तोहू मास दोय लों बोले नांहीं तब दामोदर दास नें वीनती बहुत कीनी तब फेर बोलन लागे ॥३॥

वार्त्ता प्रसंग ४

बहुर एक समय दामोदर दास हरसानी इनके घर पाउने आए सो दामोदर दास संबल वार के घर पांच सात दिन रहे तब इन ने भली भांति सों समाधान कीयो पाछें दामोदर दास हरसानी इन सों विदा होय कें अडेल आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने दामोदर दास सों कह्यो जो दमला तू कहां उतर्यो हो और कहां प्रसाद लीयो हो तब दामोदर दास हरसानी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सो वीनती कीनी जो महाराज कन्नौज में दामोदर दास संबल वार के घर उतर्यो हो पर अनसखड़ी महाप्रशाद लेतो सखड़ी न लेतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू दामोदर दास संबल वार के ऊपर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग सेवक याकों सखड़ी महाप्रशाद क्यौंन लिवायो सो यह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतः करन की दामोदर दास संबल वार नें घर बैठे जानी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो और में तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरन देखवे कों अडेल जात हों सो तब तहांत

चले सो अड़ेल जाय पहोंचे तव श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करिकें साष्टाङ्ग दंडवत कीनी तव श्री आचार्य जी महाप्रभू पीठि दै वैठे तव दामोदर दास संवलवार ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध कहा है और जीव तो अपराध करत ही आयो है परि अपराध जानिये तो भलो है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तैने दामोदर दास हरसानी कौ अपने घर महाप्रशाद अनसखड़ी क्यों लिवायो सखड़ी क्यों न लिवायो तव दामोदर दास संवलवार ने वीनती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछिये जो सखड़ी क्यों न लीनी तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यौ जो तैनें सखड़ी महाप्रशाद क्यों न लीनों तव दामोदर दास ने कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी प्रातःकाल वाल भोग आरोगते पाछें पकवान मिठाई दूध पाक वहुत लेतो सो सखड़ी की रुचि रहती नाहीं तातें न लेतो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तू तो अपनी इच्छा ते न लेतो परि मोकों तो याके ऊपर वड़ी खुन्स भई हती सो भक्तन के अंतःकरन की वृत्ति देखवे कों प्रभून कौ प्रागट्य है काहे ते जो दामोदर दास संवलवार नें अपने घर कन्नोज में श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतःकरन की जानी तो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो भक्तन के हृदय में सदा स्थित हैं तो भक्तन के हृदय की वात क्यों न जानें परि भक्तन की परीक्षार्थ यह

प्रभून कौ प्रागट्य हैं पाछें दामोदर दास संवल वार कौ वहुत सन्मान करि कें श्री आचार्य जी महा प्रभून नें वा कौं अपने घर कौ पठायौ तव दामोदर दास अपने घर कन्नौज में आए तव दोउ स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे ॥ ४॥

वार्ता प्रसंग ५

और सिंह नंद के वैष्णव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास जाते सो सव कन्नोज में दामोदर दास कौं मिलि कें जाते जो वैष्णव आवते तिन सवन कौं कन्नौज में अपने घर आदर सन्मान करि कें उतारते सवन कौं महा प्रशाद लिवावते पाछें जव अंडेल विदा होते तव तिन वैष्णव प्रति एक एक मोहर एक एक श्री फल आचार्य जी महाप्रभून कौं भेंट पठावते काहे ते जो मेरी दंडौत खाली हाथन कैसें करेंगे ऐंसे श्री आचार्य जी महाप्रभू इन पर सदां प्रसन्न रहते ॥ ५॥

वार्ता प्रसंग ६

वहुर दामोदर दास कौ सुसर वहुत प्रसन्न हुतो तिन नें १०० सौ लौंडी वेटी के दायजे में दीनी जो मेरी वेटी बैठी रहेगी काम काज सव लौंडी करेंगी परि ऐसें न करती सेवा सम्बन्धी कार्य्य सव आपु करती सो वह ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ७

वहुर एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास के घर पोढ़े हुते और दामोदर दास पांव दावत हुतो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोद

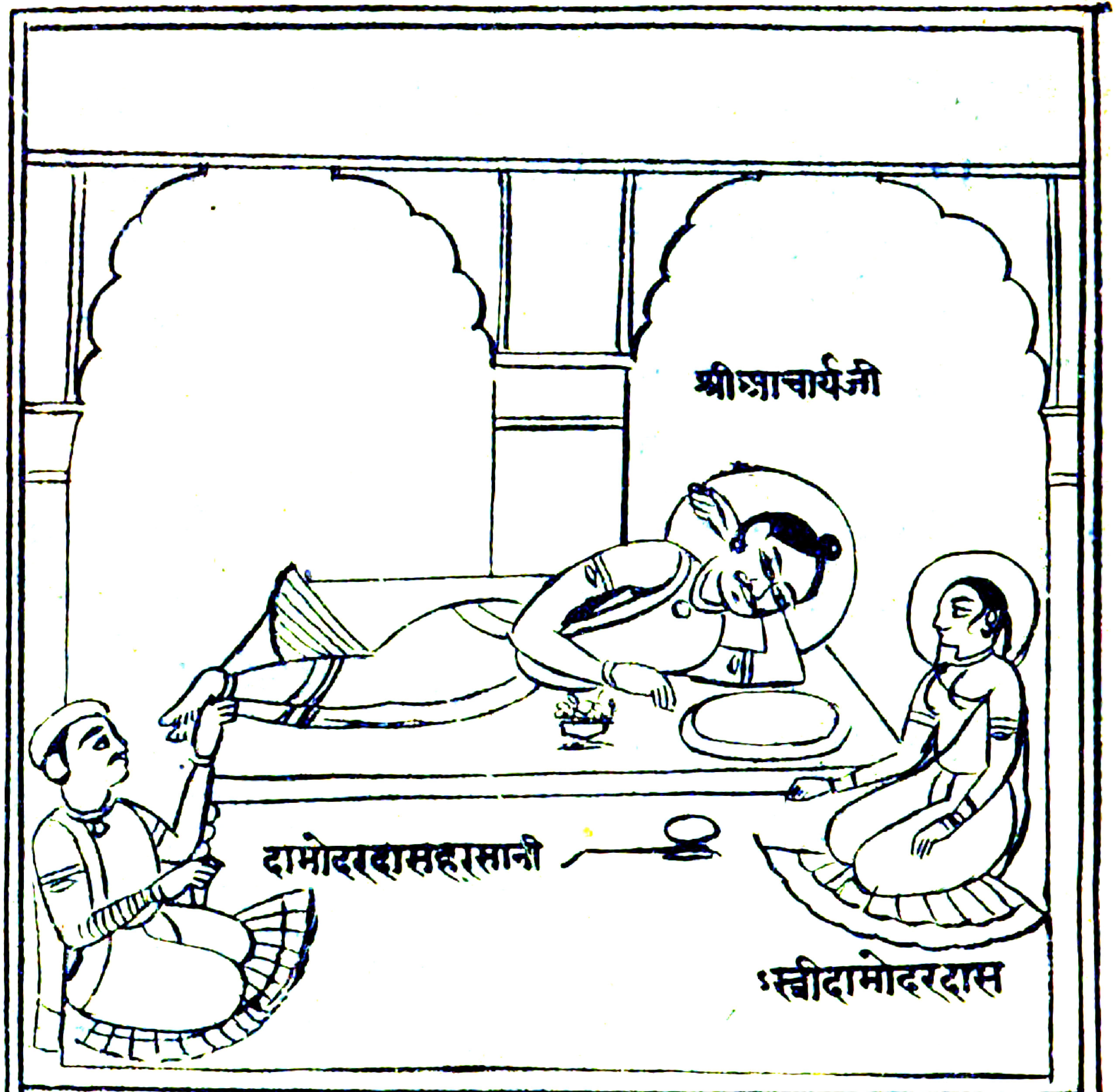
श्रीआचार्यजी
दामोदरदासहरसानी
स्त्रीदामोदरदास

र दास सों पूछौ जो दामोदर दास तेरे मन में काहू वात को मनोरथ है तव दामोदर दास नें कह्यौ जो महाराज मोकों तो काहू वात कौ मनोरथ आप के अनुग्रह ते रह्यौ नांहीं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तू अपनी स्त्री सों पूछि आउ जो तोकों काहू वात को मनोरथ है तव दामोदर दास जाय कें अपनी स्त्री सों पूछौ जो तेरे काहू वात कौ मनोरथ है तव स्त्री ने कह्यौ जो कोई वात कौ मनोरथ रह्यौ नाहीं एक पुत्र कौ मनोरथ है एक पुत्र होय तो भलौ तव यह वात दामोदर दास नें जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो महाराज

स्त्री को मनोरथ है जो एक पुत्र होय तो भलो है तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप कहें जो हां होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो श्री नाथ जी द्वार पधारे पाछें जव वाके समय भयो तव स्त्री गर्भ स्थित भई पाछें वा वाखर में कितनेक दिन में एक डांकोतिया आयो तव वाकों सव साथ की स्त्री पूछन लागी तव तामें ते काहू नें दामोदर दास की स्त्री सों कही जो अमुकी तू हू पूछि देखि जो कहा होयगो वेटा होयगो कै वेटी होयगी पाछें वाकी लोंडी ने जाय कें वा डांकोतिया सों पूछी जो दामोदर दास की स्त्री कें कहा होयगो वेटा होयगो कै वेटी होयगी तव वा डांकोतिया ने कही जो वेटा होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू कितनेक दिन में कन्नौज़ में पधारे तव दामोदर दास चरण छूवन लागे तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मोको छुवे मति तो कों अनाश्रय भयो है तव दामोदर दास ने कह्यो जो महाराज में तो कछू जानत नाहीं हों तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि आउ तव दामोदर दास ने स्त्री सों पूछो जो तेनें कछू अनाश्रय कीनों है सो स्त्री ने जो प्रकार भयो हुतो सो सव कह्यो सो वात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो या के पेट में म्लेछ होयगो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो अडेल पधारे पाछें यह वात दामोदर दास की स्त्री ने सुनी तव ते श्री ठाकुर जी के पात्रादिक सेवा सम्वन्धी वस्तु स्पर्शन करती और कहती जो मेरे पेट में म्लेछ है ताते श्री ठाकुर जी के पा

अतथा सामग्री कैसें करूं या भांति सों कहती पाछें जव प्रसूत के दिन आए तव दामोदर दास की स्त्री ने अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर लै जैयो हम वाकौ मुख न देखेंगे जो हम वाकौ मुख देखेंगे तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाकौ मुख न देखेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वाकी महतारी ने ऐसें ही कीयो प्रसूत मात्र होत अपने घर लै गई पाछें धाय कौ देकें वड़ो कीयो ॥७॥

वार्ता प्रसंग ८

वहुर किननेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तव वाकी स्त्री ने छिपाय राखो पाछें वा स्त्रीनें एक वैष्णव सों कही जो तुम अडेल कों एक नाव भाड़े करि ल्यावो सो वह वैष्णव भाड़े करि ल्यायो ता नाव में श्री द्वारिकानाथ जी और घर में की सामग्री तिनूका पर्य्यंत कछु घर में राख्यो नाहीं घर में जो हतो सो सव नाव में भर्यो तव वा वैष्णव सों कह्यो जो यह नाव अडेल कौं लै जाउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के मन्दिर में पहुंचाय आवो सो वह वैष्णव नाव लैकें चल्यो सो कोस तीस पर नाव गई ता पाछें स्त्रीने प्रगट करी जो दामोदर दास की देह छूटि गई है तव वैष्णव जुरि आये दामोदर दास कौ संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को वेटा तुरक भयो हतो सो आयो आय के घर में देखे तो कछु नाहीं जल कौ भर्यो करवा घर में धर्यो है सो देखि के मूड़ पीट रह्यो पाछें दामोदर दास कौ सुसर आयो तिन नें अपनी वेटी सों कह्यो जो वेटी तुमने घर में कछु राख्यो नाहीं सो तू अव कहा खा

पगी तव वाने कही जो तुम देउगे सो में खाउंगी सखीलोगन के पास में सगे सौंदरे कछू देत हैं ऐसी ग्याति की कछू रीति है तव दामोदर दास की स्त्री ने अन्न जल कौ त्याग कीयो सो थोरे से दिन में वाकी हू देह छूटी तव कृत्य दोउन कौ साथ ही भयो वह ऐसी भगवदीय ही सो यह वात कितनेक दिन पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे आय कही तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही इन कों योंही चाहिये वे दोउ जने ऐसे भगवदीय हे उन की सराहना श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री मुखते करते तातें इन की वार्ता अनिर्वचनीय है इन की वार्ता कहां तांई लिखियें ॥८॥

वार्ता प्रसंग ९ संवद ॥ २४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पद्मनाभ दास कन्नोजिया ब्राह्मण कन्नौज में रहते तिनकी वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू कन्नौज पधारे तव पद्मनाभिदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कौं आए तव पद्मनाभिदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के श्री मुखते भगवत वार्ता कौ प्रसंग सुन्यो तव जानी जो ए तो साक्षात् ईश्वर हे ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन भये प्रथम पद्मनाभि दास व्यासासन वैठते सो कन्नौज में अपने घर कथा कहते ऊंचे आसन वैठते श्रोता वहुत कथा सुनिवे कों आवते काहू के घर जानों न पड़तो इत घर वैठे चली-

आवती या भांति सों रहते सो पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के श्रीमुखतें भगवत् प्रसंग सुन्यौ तब तें जान्यौ जो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पुरुषोत्तम जानि कें पद्मनाभि दास श्री आचार्य जी महाप्रभून की सरण आये नाम पायौ पाछें समर्पण करवायौ तब उत्थापन के समय श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पोथी खोली तहां दामोदर दास संबलवार के घर बैठे हुते ता समय पद्मनाभि दास अपने घर तें आये श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दंडवत करि कें बैठे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पोथी खोली और स्लोक निबंधन कौ कह्यौ ॥

॥ स्लोक ॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्व हेतुविव
र्जिते ॥ वृत्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः
कण्ठ गतै रपि ॥ तदभावे तथे
वस्या तथां निर्वाह सांचरत् ॥

यह स्लोक पढे सो पद्मनाथ दास नें सुन्यौ पाछें दशमस्कंध की कथा कही सो सुनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभ दास नें जल की अञ्जुली भरि कें संकल्प कीयौ जो अब तें कथा कहिबे कौ वृत्त न करूंगो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें संकल्प कीयौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीमुखतें कह्यौ जो श्री भागवत वृत्त रथन कहनौ और तौ तुम्हारी वृत्य है तुम ब्राह्मण हौ और पुराण महाभारथी तौ इत्यादिक कहनौ तब पद्मनाभ दास ने कह्यौ जो महा

राज हमने अव तौ संकल्प कीयो सो तो कीयो यातें कछून कहनों तव श्री आचार्य जी महा प्रभू कहे जो तुम गहस्थ हौ सो कौंन भांति निर्वाह करोगे तव पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगि के निर्वाह करूंगा पाछें एक जिजमान के घर वृतर्थ गए तिन तव वहुत आदर सन्मान कीयो तव पद्मनाभ दास के मन में वहुत ग्लानि आई जो कवहूं पहलें तौ भिक्षा वृत्य करी नाहीं और अव वैष्णव भये ताकों तौ यह भिक्षा हू उचित नाहीं तव फेर संकल्प कीयो जो अव तो भिक्षा कतहूं न करूंगा तव फेर श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो अव निर्वाह कौंन भांति करोगे तव पद्मनाभदास नें कही जो अव वैष्णव वृत्य करि निर्वाह करूंगा पाछें कोड़ी वेचने लकड़ी लै आवने पर और वात न विचारी या भांति देहादि पर्य्यंत निर्वाह कीनो ऐसे टेक के कृपा पात्र भगवदीय हे ॥

वार्ता प्रसंग १

अव श्री आचार्य जी महा प्रभू प्रयाग में पधारे हैं तव पद्मनाभ दास साथ हैं रात्रि पहर १ गई ही तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पद्मनाभ दास सों कही जो श्री अक्काजी कों पार तें पधराय लावो सो सुनत ही पद्मनाभ दास उठि चले तव पांच सात वैष्णव तहां वैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राम्हण वावरो भयो है ये वेर कहां जायगो नाव सव वंधी हैं घटवार सव घर गये हैं तातें यह विरियां जाइवे को नहीं पर या कों तौ श्री आचार्य जी महाप्रभून की आज्ञा है ताको वि

स्वाम जो यह काम अधिक अवस्य होयगो सो घाट ऊपर आये तब इत उत देखन लागे इतने में देखें तो अकस्मात एक लरिका वर्ष दस को एक डोंगी लेकर आयो सो वाने पद्मनाभदास कों पूछो जो तू पार जायगो तब पद्मनाभदास नें कह्यो हां हां जाऊंगो तब उन

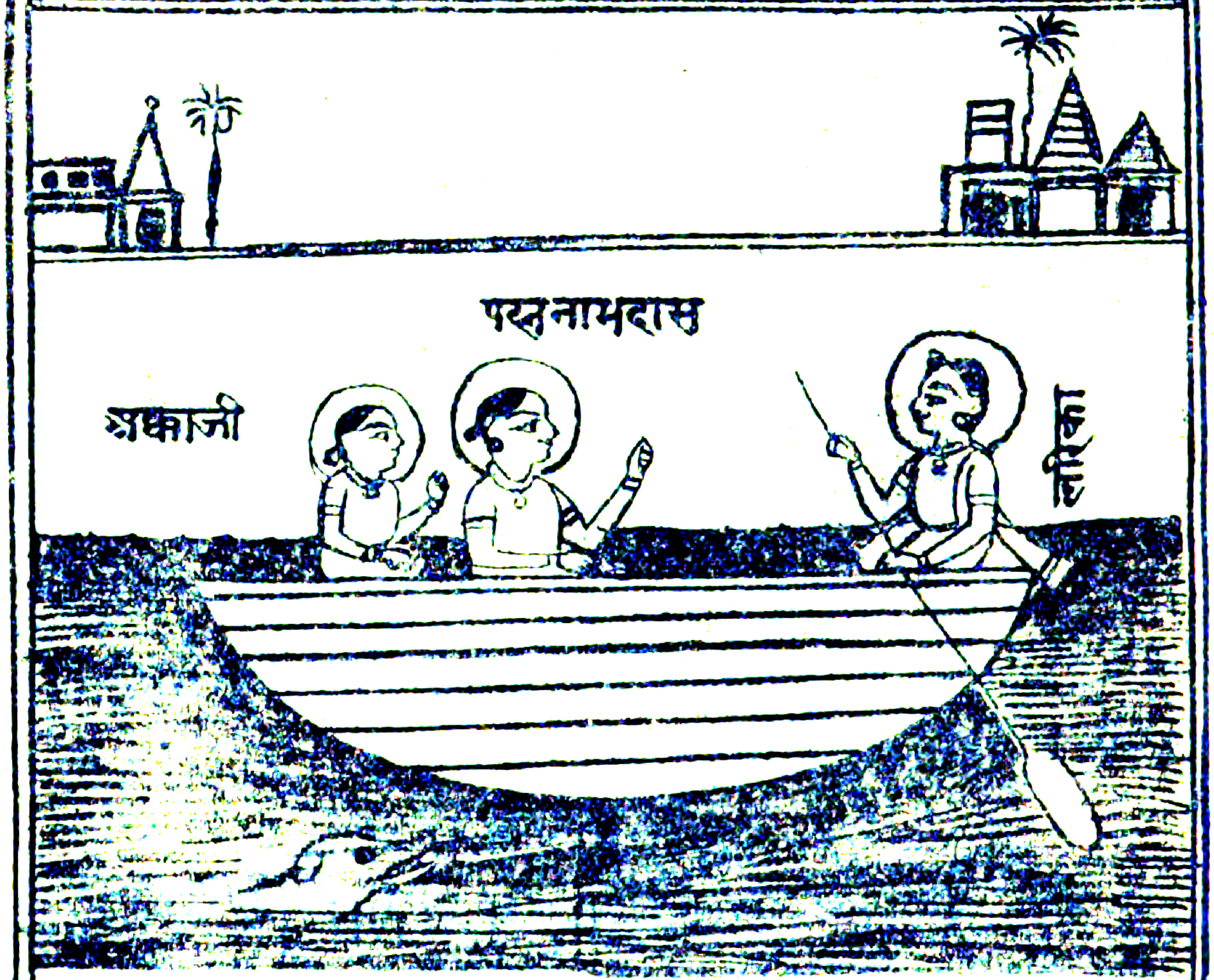

पार उतार दीनों पाछें फेरि पूछो जो तू फेरि आवेगो तब पद्मनाभदास नें कह्यो जो घड़ी दोय पाछें आउंगो तब लरिका ने कह्यो जो डोंगी राखत हों तू वेगी आइयो पाछें अडेल में जाय के श्री अक्काजी कों पधराय लाये तब वाही डोंगी में वैठार पार उतारे तब फिर देखें तो वहां डोंगी हू नाहीं और लरिका हू नाहीं पाछें श्री अक्काजी कों पधराय के घर आये पाछें श्री आ-

चार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभि दास कों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जव जहां वैष्णव सोये हुते तहां आये तव वैष्णव सव पूछन लागे जो तुम कहा करि आये तव पद्मनाभि दास नें सव समाचार कहे तव वैष्णवन नें कह्यौ जो तेनें श्री ठाकुरजी कों श्रम वहुत करवायो पाछें वैष्णवन नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पूछो जो महाराज पद्मनाभ दास नें श्री ठाकुरजी कों श्रम वहुत करवायो तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो यह जो भयो है कछू सो मेरी इच्छा ते भयो है ताते तुम पद्मनाभि दास सों कछू मति कहो॥

वार्ताप्रसंग २

वहुर एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीगोकुल ते अडेल कों जात हुते तव एक व्योपारी कछू वस्तु लैके साथ में चल्यो और श्री आचार्यजी महाप्रभू कन्नौज के वीच पधारे तव व्योपारी पीछें रह्यौ ताके ऊपर चोर आय पड़े सो वस्तु सव लूट लीनी और श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो दामोदर दास संवलवार के घर पधारे सो वहां उतरे रसोई करि श्री ठाकुरजी को भोग समर्प्यो इतने में वह व्योपारी रोवत पु रत आयो तव पूछो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तव पद्मनाभि दास ने कह्यौ जो भोजन करत होयंगे तव वा व्योपारी ने कह्यौ जो हमारो माल सव लुटि गयो है और श्री आचार्यजी महाप्रभू भोजन करत हैं तव पद्मनाभ दास ने अपने मन में विचार्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो भोजन न करेंगे

घडी दोय की अवार होयगी तातें पद्मनाभदास वा व्योपारी की बांह पकिर कें एक साह की दुकान पर लेगये ता साह नें पद्मनाभदास कौ बहुत आदर सन्मान कीयो तव वानें कह्यो जो आज्ञा करो कैसें पधारे हो तव पद्मनाभदास नें वा साह सों कह्यो जो या व्योपारी कों इतनों द्रव्य दियो चाहिये या द्रव्य कौ खत पत्र ब्याज हम लिख देयंगे तव साह ने कह्यो जो पद्मनाभदास जी तुम कों जितनों द्रव्य चाहिये तितनों लेउ खत पत्र की कहा बात है तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो पहिले तो खत पत्र लिखोंगो पीछें द्रव्य लेउंगो विना खत लिखे तो लेउंगो नाहीं तव साह ने कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभदास ने खत लिख दीनों तव साह नें वा व्योपारी कों द्रव्य दीयो तव वह व्योपारी तो अपनो द्रव्य लेकें अपने घर गयो तव पद्मनाभदास अपने घर आये तव पद्मनाभदास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछी जो पद्मनाभ तू कहां गयो हो तव पद्मनाभदास ने कह्यो जो महाराज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो साक्षात ईश्वर सो तत्काल जानि गये तव पद्मनाथ दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो हम वा व्योपारी कों संग तो लीनों न हुतो जो वा कों माल देनो वह पीछें रह्यो तो हम कहा करें परि तेंनें बहुत बुरी करी सो ऋण काढि कें पैसे दीनों तब पद्मनाभदास नें कही जो महाराज सो तो सांच परि वह व्योपारी पुकार सो तो राज भोजन में दो

य घड़ी की अवार होती तौ मेरौ जन्म सब वृथा जातौ और ऋण तौ कालि देउंगो यह कितनी क बात है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तैंनें धर्म गहने लिख दीनौ सो काहे तें तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज ऐसो गाढ़ो लिख दीयो जो बिना दिये न जाय पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अडेल पधारे पाछें पद्मनाभ दास एक राजा हुतौ ताके पास गए तब पद्मनाभ दास कौ वा राजा ने बहुत आदर सनमान कीयो पाछें राजा ने कह्यो जो मो कों कृपा करिकें कछु सुनावो तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो राजा श्री भागवत तौ नाही सुनाऊं कहौ तो महाभारत सुनाउं सो राजा ने कह्यो जो महाभारत ही सुनावो सो महाभारत ही कहन लागे सो जब युद्ध को प्रसंग आयो तब सबन के हथियार छुड़ाय धरे तब आगें कहन लागे सो कथा कहत में कोई वीररस ऐसो उपज्यो सो आपस में सब लात मुक्कान सों लरन लागे पाछें .... कितेक दिन में महाभारत सम्पूरण भयो तब राजा बहुत दक्षिणा देन लाग्यो तब पद्मनाभदास नें कह्यो जो इतनो तो में नाहीं लेउंगो मेरे मांथे ऋण है तितनो लेउंगो पाछें वा साह कौ मूल ब्याज देनौ हुतौ तितनों लीनों बाकी कौ फेर दीनों पाछें साह कौं द्रव्य देकें खत फारि डारो ॥ २॥

वार्ता प्रसंग ३

और पद्मनाभदास कें एक बेटी कुमारी हुती ताकें निमित्त एक बर श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ सेव

क चाहियत हुतो सों वैष्णवन सों पूछन लागे तब वैष्णवन नें कह्यो जो एक वर श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक है परि सनोढिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभदास कों लौकिक त्याग में विवहार की सुधि रही नाहीं वैष्णवन कह्यो जो भलो वैष्णव है सो याकों वेटी दीजिये तब पद्मनाभदास ने कह्यो जो भलो सो पद्मनाभदास नें वा वैष्णव कों तिलक कीयो विवाह सही करि कें अपने घर आये तब तुलसा वड़ी वेटी हुती तासों कह्यो जो अपनी वेटी को विवाह अमुके वैष्णव सों सही कर आयो हूं तब तुलसा ने कही जो वह तो सनोढिया ब्राह्मण है और आपुन कनोजिये ब्राह्मण है सो ऐसें कैसें होय तब पद्मनाभदास नें कही जो अब तो भई सो भई तब तुलसा नें कह्यो जो सगाई फेरो तब पद्मनाभ दास ने कही जो सगाई कैसें फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास ने कही छुरीला वो मेरो अगूंठा काटों तब तुलसा नें कह्यो जो अगूंठ कैसें काट्यो जाय तब पद्मनाभ दास ने कह्यो जो सगाई कैसें फेरी जाय जो अगूंठा काटे तो सगाई फेरी जाय पाछें पद्मनाभदास नें विवाह कर दीयो जात के सब झखमार रहे वैष्णव के कहे कौ विस्वास ताते सगाई न फेरी ॥३॥

वार्ता प्रसंग ४

और एक क्षत्राणि पद्मनाभ दास के घर नित्य आवती तब एक दिन तुलसा नें कह्यो जो क्षत्राणि जो तू नित्य कों आवत है तब वा क्षत्राणी ने कही जे

पद्मनाभदास वड़े भगवदीय हैं और महापुरुष हैं और मेरे संतति नाहीं होत है तातें आवत हौं ताते तुम पद्मनाभ दास सों मेरी वीनती करौ तब पद्मनाभ दास सों एक दिन तुलसा ने कही जो पद्मनाभ दास एक क्षत्राणी के संतति नाहीं होत है ताके लियें तुमसों वीनती करत हौं तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो तुलसा जल लाउ तब तुलसा नें जल लाय कें आगे धर्‍यो तब जल लैकें अंगूठा कौ चरणोदक करिकें पद्मनाभ दास ने वा क्षत्राणी कों चरणोदक दियो और कह्यो जो जा तेरे पुत्र होयगो ता कौ तू मथुरादास नाम धरियो पाछें वाके पुत्र भयो ॥

वार्त्ता प्रसंग ५

और एक समें वड़े रामदास जी अपने सेव्य ठाकुरजी कौं पद्मनाभ दास के घर पधराय कें आप श्रीनाथजी की सेवा करन लागे श्रीनाथजी के भीतरिया भये तब पद्मनाभ दास श्री ठाकुरजी की सेवा करन लागे सो कितेक दिवस पाछें मुग़ल की फौज आई ताने गांव लूट्यो सो श्री ठाकुरजी कौं मुग़ल लैगये तब पद्मनाभ दास वा मुग़ल के पीछे सात दिन लों रहे जलपान न कर्‍यो तब वा मुग़ल सों वाकी मुग़लानी नें कह्यो जो यह ब्राह्मण जल पान हू नाहीं करत याकों सात दिन भये हैं अन्नजल छोड़ें सो जो यह ब्राह्मण मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढ़ेगी तो तेरो संग छोड़ देउंगी नातर देव याके तेरे पास है सो तुम देव याके देउ तब वा मुग़ल नें पद्मनाभदास को श्रीठा

कुर जी दीये सो लैकें पद्मनाभदास अति आनन्द पाय कें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्री ठाकुर जी कों पंचाम्रत सों स्नान कराये अंग वस्त्र करि श्रृंगार कीयो रसोई करि भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग उसराय अनोसर करि पाछें महाप्रशाद आपु लीयो और जा दिन ते वा कन्नोज में श्री ठाकुर जी मुगल के हाथ परे सो ता दिन रामदास नें हू यह वात जानी सो ता दिन ते वडे रामदास ने हूं सात दिन तांई महाप्रशाद लीनों नाहीं परि श्री नाथजी की सेवा सावधानी सों करत रहे यह वात पद्मनाभदास नें घर बैठे जानी जो रामदास हू या वात के ऊपर वहुत दुख पायो सात दिन लों जल पान हू नाहीं लीयो यह जानि पद्मनाभ दास श्री नाथ जी के दर्शन तथा रामदास जी सों मिलिवे कों श्री नाथ जी द्वार आये तव श्री नाथ के दर्शन कीये पाछें रामदास जी सों मिले तव रामदास जी ने पद्मनाभदास सों कह्यो जो तुमनें वहुत दुख पायो तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो हूं तो दुख पायो सो तो न्याव है परि तुम मेरे मांथे सेवा पधराय आये और तुमनें सात दिन लों महाप्रसाद नाहीं लीयो सो काहे ते तव रामदासने कह्यो जो तुम कहत हो सो तो सांच है परि में हूं तो वहुत दिन लों सेवा कीनी है ताते इतनो तो सवन्ध चाहिये पाछें कितनेक दिन लों उहां रहिकें पद्मनाभ दास श्री नाथ जी सों तथा रामदास जी सों विदा होय कें अपने घर आए पाछें सेवा करन लागे

वार्ता प्रसंग ६

और एक समय पद्मनाभ दास अपने सेव्य श्री ठाकुर जी श्री मथुरा नाथजी तथा अपनो कुटुम्ब लेकर अडेल आय रहे परंतु द्रव्य को संकोच वहुत हुतो तातें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पते सो छोला तलि के समर्पते सो छोला आछी रीति सों वीन कें पहिले दिन भिजोय राखते दूसरे दिन ताकी भांति सों तलि कें परोसते एक मुट्ठी भरि कें कहैं जो यह दारि एक मुट्ठी भरि कें धरें और कहैं जो यह रोटी है या भांति जितने सालन होंय तितनेन को नाम लेकें एक एक मुट्ठी समर्पते या भांति सों नित्य करते सो श्री ठाकुरजी सोई आरोगते पाछें एक वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे कह्यो जो महाराज पद्मनाभ दास श्री ठाकुर जी कों या भांति समर्पत है सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू भोग समर्पिवे की विरियां आप पद्मनाभ दास के घर पधारे सो जैसें नित्य भोग समर्पते तैसेंई पद्मनाभ दास ने भोग समर्प्यो हो सो जब भोग उसरायो तब पद्मनाभ दास नें कह्यो जो महाराज यह खीर है यह भात है यह दारि है यह साक है यह सिखरन है यह रोटी है यह वरा है ऐसें कहि के सब सामग्रीन के नाम लैकें छोलान की ढेरी वताई तब श्री आचार्य जी महाप्रभून को हृदय भरि आयो और कह्यो जो द्रव्य को संकोच है ताके लियें .. ऐसें करत है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो घर कों पधारे तब श्री अक्का जी सों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित

रसोंई की सामग्री पठावति रहियो तव दूसरे दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मनाभदास के घर सीधो सामग्री पठायो तव पद्मनाभदास नें तुलसा सों कह्यो जो इहांतें प्रभू काढ़न हार भये हैं तव पद्मनाभदास ने दिन द्वै चारि को सामान करि पाछें अपने सेव्य ठाकुर जी श्री मथुरा नाथ जी सों कह्यो जो महाराज को मन होय तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास पधराय आऊं तहां सकल सामग्री सिद्ध है तव श्री मथुरा नाथ जी नें कह्यो जो मोकों तेरो ही कीयो भावत है तातें तेरे यहां वहुत प्रसन्न हों तू कछू संकोच मति करें ऐसे श्री मथुरा नाथजी आप कहे तव पद्मनाभ दासनें नाव भाड़े कीनी तामें श्री ठाकुरजी पधराये और सव कुटुम्ब नाव में वैठाय के आप श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होन गये और सीधो सामग्री दिन द्वै चार को आयो हुतो सो भंडारी कों फेर दैकें आप श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास विदा होय के दर्शन करिके दंडोत करि के कह्यो जो महाराज हम तो चलत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पूछो जो श्री मथुरा नाथ जी कहां हैं तव पद्मनाभ दास ने कह्यो जो महाराज श्री ठाकुर जी तो नाव में विराजत हैं श्री ठाकुर जी कों नाव में पधराय कें, हों महाराज के पास दर्शन करिवे कौं तथा विदा होयवे कौं आयो हूं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मनाभ दास कों विदा कीयो पाछें भंडारी नें आचार्य जी महाप्रभून सों आय कें कह्यो जो महाराज पद्मनाभ

दास के घर सीधो सामग्री दिन द्वै चार की पठाई हती सो पद्मनाभ दास फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तातें पद्मनाभदास गयो नातर न जानो यह बात आप श्रीमुखतें कही सो पद्मनाभदास की वार्त्ता श्री गोकुलनाथ जी श्री सर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं सो पद्मनाभ दास सो बिरला कोटि रूपी दुर्ल्लभ हैं सो वे पद्मनाभ दास श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्त्ता को पार नाहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनी कहाती हैं ॥६॥

वार्त्ता प्रसंग ७

वैष्णव ४ सम्बन्ध ॥३१
अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक पद्म
नाभ दास की बेटी
तुलसा तिनकी
वार्त्ता लि०
ख्यते

सो एक समय एक वैष्णव श्री आचार्य जी महा प्रभून को सेवक तुलसा के घर आयो सो श्री ठाकुर जी को दर्शन कीयो तब राज भोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें वा वैष्णव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रशाद लेउ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो हूं तो घर जाय कें महा प्रशाद लेउंगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप

ह्वै रही पाछें वह वैष्नव उठि कें अपने घर गयौ तव तुलसा के मन में वहुत खेद भयौ जो देखो मेरे घर तें वैष्नव भूखौ गयौ वहुरि मन में आई जो ग्याति व्यवहार के लियें सखड़ी न लीनी होगी पर भलौ सकारें पूरी करि महाप्रशाद लिवाउंगी पाछें मेदा छानि सिद्ध करवाई तव सोई पाछें रात्रि कों मथुरानाथजी पद्मनाभदास के सेव्य ठाकुर तिनने स्वप्न में तुलसा सों जतायौ जो सकारें वा वैष्नव कों सखड़ी महाप्रसाद लिवाइयो वह वैष्नव अपने घर प्रशाद नाहीं लेइगो पाछें वा वैष्नव सों स्वप्न में कही जो सकारें तू सखड़ी महाप्रसाद तुलसा के घर लीजियो पाछें प्रातः काल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्री ठाकुर जी कौं जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्नव आयौ श्री ठाकुर जी के दर्शन कर बैठि रह्यौ तव तुलसा भोग समर्पि कें वाहर आई तव वा वैष्नव सों कह्यौ जो उठौ स्नान करौ महाप्रशाद लेउ तव वैष्नव नें कह्यौ जो भलौ तव वा वैष्नव ने स्नान करि तिलक मुद्रा करि कें स्मरन कीयौ इतने में राजभोग सर्यौ तव वा वैष्नव नें दर्शन कीयौ पाछें तुलसा नें श्री ठाकुर जी कौं अनोसरि करि तुलसा वाहर आई तव पूरी वूरौ समाधौ वा वैष्नव के आग रख्यौ और कह्यौ जो महाप्रसाद लेउ तव वा वैष्नवनें कह्यौ जो यह तो नाहीं लेउंगो हूं तो सखड़ी महाप्रशाद लेउंगो तव तुलसा ने कह्यौ जो कछु सकोच मति करौ यह तो ज्ञाति व्यवहार है तव

वा वैष्णव नें कह्यो जो मोनो सांच पहिले तो ऐसें ही मन में आई हुती परि अव तो आज्ञा भई है पाछें वा वैष्णव नें सखड़ी महा प्रशाद लीयो तव दोउ जने परस्पर प्रसन्न भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक दिन तुलसा के घर श्री गुसांई जी पधारे तव तुलसा ने भली भांति सों सेवा कीनी तातें श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये और एक दिन श्री गुसांई जी भोजन करि के पोढ़े हुते तव तुलसाने भगवद वार्ता करी अति प्रसन्नता में श्री गुसं जी कही जो पद्मनाभ दास की संतति ऐसी ही चाहिये पाछें श्री गुसांई जी ने तुलसा सों पूछो जो श्री ठाकुर जी सानु भावना जनावत हैं तव तुलसा ने कह्यौ जो महाराज अव तो पेट भरि खाइयत है और नींद भरि सोइयत है और श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथन को पाठ करियत हैं तव श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भये वह तुलसा ऐसी भगवदीय हुती ताते श्री ठाकुर जी आर्ति सहि न सके ताते वा तुलसा के ऊपर श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न रहते ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग २

वैष्णव ५ सम्वन्ध ३३॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के।
सेवक पद्मनाभ दास को वेटा।
ताकी वहू पार्वती की वार्ता

सो पारवती श्रीठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिकरती और पुरुषोत्तम दास मेहरा इनकों नीकी भांतिसों जानती जब कन्नौज जाती तब पार्वती के घर उतरती तब किननेक दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव स्वत है गये तब ते श्री ठाकुर जी की रसोई करत तथा स्परस करत बहुत बहुत ग्लानि आवती तब पुरुषोत्तम दास महरा कों पार्वती नें पत्र लिख्यो तामें लिख्यो जो मेरी बीनती श्री गुसांई जी सों कहियो मेरी देह को यह प्रकार भयो है ताते मोकों सेवा करत पाक करत बहुत ग्लानि आवत है सो मैं कहा करूं सो पुरुषोत्तम दास महरा ने पार्वती को लिखो पत्र श्री गुसांई जी कों बांचि सुनायो और बीनती कीनी भेंट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री गुसांई जीने पुरुषोत्तम महरा कों आज्ञा दीनी जो दिन द्वै चारि में कहेंगे पाछें दिन द्वै चार बीते तब श्री गुसांई जीने पुरुषोत्तम दास महरा कों आज्ञा दीनी जो पार्वती को पत्र लिख तामें लिखियो जो तू श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करियो काहू बात की ग्लानि मति लाइयो श्री ठाकुर जी तेरो रोग सब आपही ते दूर करेंगे तब पुरुषोत्तम दास महरा ने पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्री गुसांई जीने श्री मुख ते वचन कहे सो लिख पठाये सो वह पत्र पार्वती पै पहुंचो सो पत्र बांचि के श्री गुसांई जी की आज्ञा ते सेवा प्रसन्नता सों करन लागी कछू ग्लानि मन में नहीं लावती पाछें महीना तीन चारि में

हाथ पांव नीके भए तव पार्वती वहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी वहुर श्री गुसाई कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महाराज के प्रताप तें नीको भई हों सो पत्र बांचि कें श्री गुसांई जी वहुत प्रसन्न भए सो वह पार्वती वड़ी कृपा पात्र भगवदी हुती प्रभून के प्रमान चलती ताते श्री गुसांई जी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सव पद्मनाभ दास के कुटुम्ब की भई तातें पद्मनाभ दास वड़े भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १॥

वैष्णव ॥६॥ सम्बन्ध ३४॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पद्मनाभ दास को नाती पार्वती को वेटा रघुनाथ दास ताकी वार्त्ता।

सो रघुनाथ दास वनारस में वहुत शास्त्र पढ़ि कें श्री गोकुल आयो तव श्री गुसांई जी कों दंडौत कीनी सो गुसांई जी वड़ेन की कानि तें इन के ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथ दास सुनते सो एक दिन परमानन्द सोनी ने इन सों पूछो जो रघुनाथ दास तुम तो वहुत शास्त्र पढ़े हो पण्डित हो आज श्री गुसांई जी ने कहा कथा कही हुती सो कहो तव रघुनाथ दास ने परमानन्द सोनी सों कह्यो जो तुम तो सांच पूछत हो परि हमतो कछु समझत नांहीं

तव यह वात परमानन्द सोनीने श्री गुसांईजी के आगें कही जो महाराज रघुनाथ दास तौ कछु समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईजी नें रघुनाथ दास कौं ग्रंथ दोय चार पढाए और मार्ग की प्रनालिका कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यो बडो पंडित भयौ सो कितनेंक दिन पाछें अपने घर कन्नौज में आयौ तव माता सों कही जो हूं तौ न्यारो होयगो श्री ठाकुरजी की सेवा करूंगो तव माता नें कही जो भलेंई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाकी। माता जल भर लावती पार्वती पात्र मांजती श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती पर चारगो सव करती जव राज भोग सरतो तव अपनें घर अकेली लीटी करि श्री ठाकुरजी कौं भोग समर्पि भोग सराय आप प्रशाद लेती या भांति सों करती ऐसें करत दिन पांच सात वीते तव अपने सेव्य श्री ठाकुर जी नें कह्यो जो अरी पार्वती मेरो गरो खरखरात है अकेली लीटीन ते तातें तू दारि तो कस्यो करि तव पार्वती ने कह्यो जो महाराज तुम तौ दारि भात सालन सों आरोगत हो तव श्री ठाकुर जी ने कह्यो जो मैं तो तेरौ कीयौ आरोगत हों पाछें दार भांत सव सालन करन लागी तातें पार्वती वडी कृपा पात्र भगवदीय हती ये वार्ता सव पद्मनाभदास के परिवार की भई तातें वे पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता ऐसी ऐसी कितनीक हैं तातें अव

कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ १

वैष्णव ७ ॥ सम्वन्ध ॥ ३५

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून की सेवक रजो क्षत्राणी अडेल में रहती । ताकी वार्त्ता

सो व रजो क्षत्राणी नित्य पकवान सामग्री करि श्री आचार्य जी महा प्रभून के लिये ले आवती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आरोगते वाकौ नित्य नेम हुतौ सो एक दिन लक्षमन भट्टजी कौ श्राद्ध दिन आयौ सो श्री आचार्य महा प्रभून नें व्राह्मण भोजन कौं वुलाए हुते तहां घृत थोरो सो चहियत हुतौ तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें एक वैष्णव सों कही जो रजो कैसें घृत ले आउ तव वा वैष्णव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें घृत मंगायो है तव रजो ने वा वैष्णव सों कह्यौ जो घृत काहे कौं चहियत है तव वा वैष्णव नें कह्यौ जो आज श्री लक्षमन भट्ट जी कौ श्राद्ध दिन है सो व्राह्मण भोजन कौं वुलाए गये हैं सो थोरो घृत रसोई में घट्यौ है तातें मंगायो है तव रजो ने कह्यौ जो मेरें तौ घृत नाही है तव वह वैष्णव फिर आयौ आय कें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो कें घृत नाहीं है तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यौ जो तू फेरि जा और खोज कें

कहियो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें घृत मंगायो है तव वह वैष्णव फिर गयो और रजो सों कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू खीजत हैं तवहू रजो ने घृत नाहीं दियो तव वह वैष्णव फिर आयौ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अव कें फेरि जा और कहियो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू खीजत हैं ताते घृत देउ तवहू नाहीं दियो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें और ठौर तें मचलायो तव रात्री कौं रजो पकवान लैकें आई तव रजो कों देखि क श्री आचार्य जी महाप्रभू पी

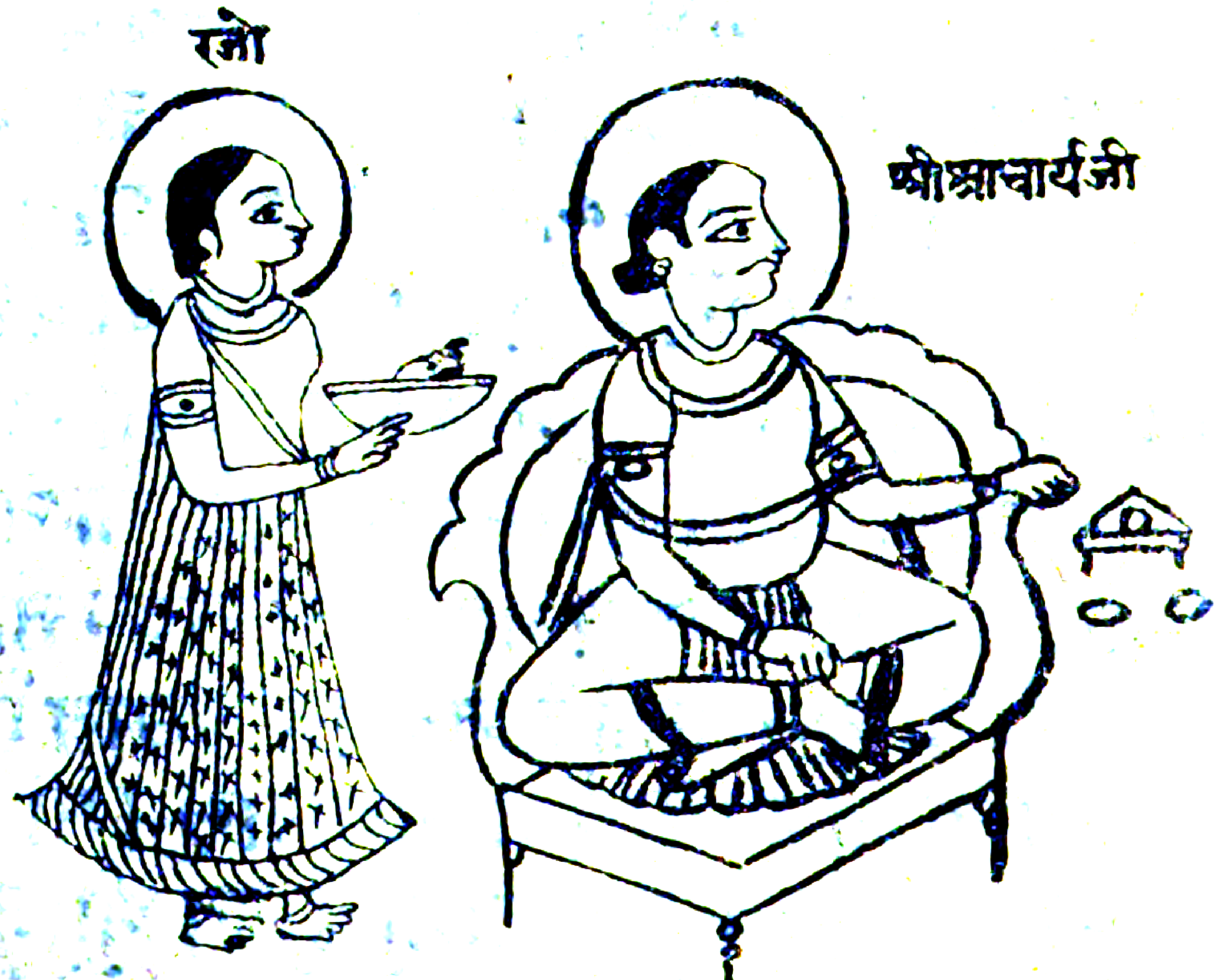

रजो का पकवान लेकर श्री आचार्य जी महाप्रभू के पास आना और श्री
॥ महाप्रभू का पीठ दे बैठना ॥

है बैठे तब रजो ने कही जो महाराज मेरो अपराध कहा है तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तैं घृत न हुतौ तौ सामग्री कहां ते कर लाई तब रजो ने कह्यो जो हूं लछमन भट्ट की लौंडी तौ नाहीं मेरे घृत न हुतौ ताते न दीनों ताते तुम्हारे घृत हुतो सो क्यों न दीनों तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मैं श्री ठाकुर जी कौ घृत क्यों कर के देउं तब रजो नें कही जो मैं श्री ठाकुर जी कौ घृत क्यों कर कें देउं तब आप बोले नाहीं तब रजो नें सामग्री आगें राखी और कही जो राज आरोगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो आज श्राद्ध दिन है ताते दूसरी वार लेनों नाहीं तब रजो ने कही जो महाराज तुम्हारे घर कौ होय सो मति लेउ यह तौ लीयौ चाहिये तब रजो के आग्रह ते श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आरोगी रजो श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताते इन रजो की वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग १

वैष्णव ८ सम्बन्ध ३६

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास काशी बनारस में रहते तिनकी

॥ वार्त्ता ॥

सो सेठ पुरुषोत्तम दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभू

न की आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नाम लेन आवे ताकों तुम नाम दीजियो तातें सेठ पुरुषोत्तम दास नाम देते और अपने घर श्री मदन मोहन जी की सेवा करते परि कवहू विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के दर्शन कों न जाते ऐसें करत वहुत दिन वीते तव एक दिन विश्वेश्वर नाथ महादेव जीनें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो सेठजी तुम हम सों गांव कौ नातो तो राखो कवहूं हम कों प्रशाद तो दियो करो ऐसें स्वप्न में कही तव सवारें सेठ पुरुषोत्तम दास उठि सेवा सों पहुच के वाहर आये तव वस्त्र पहर के वीड़ा दोय प्रशादी लेकें डवरा प्रशाद कों लेकें विश्वेश्वर नाथ मह

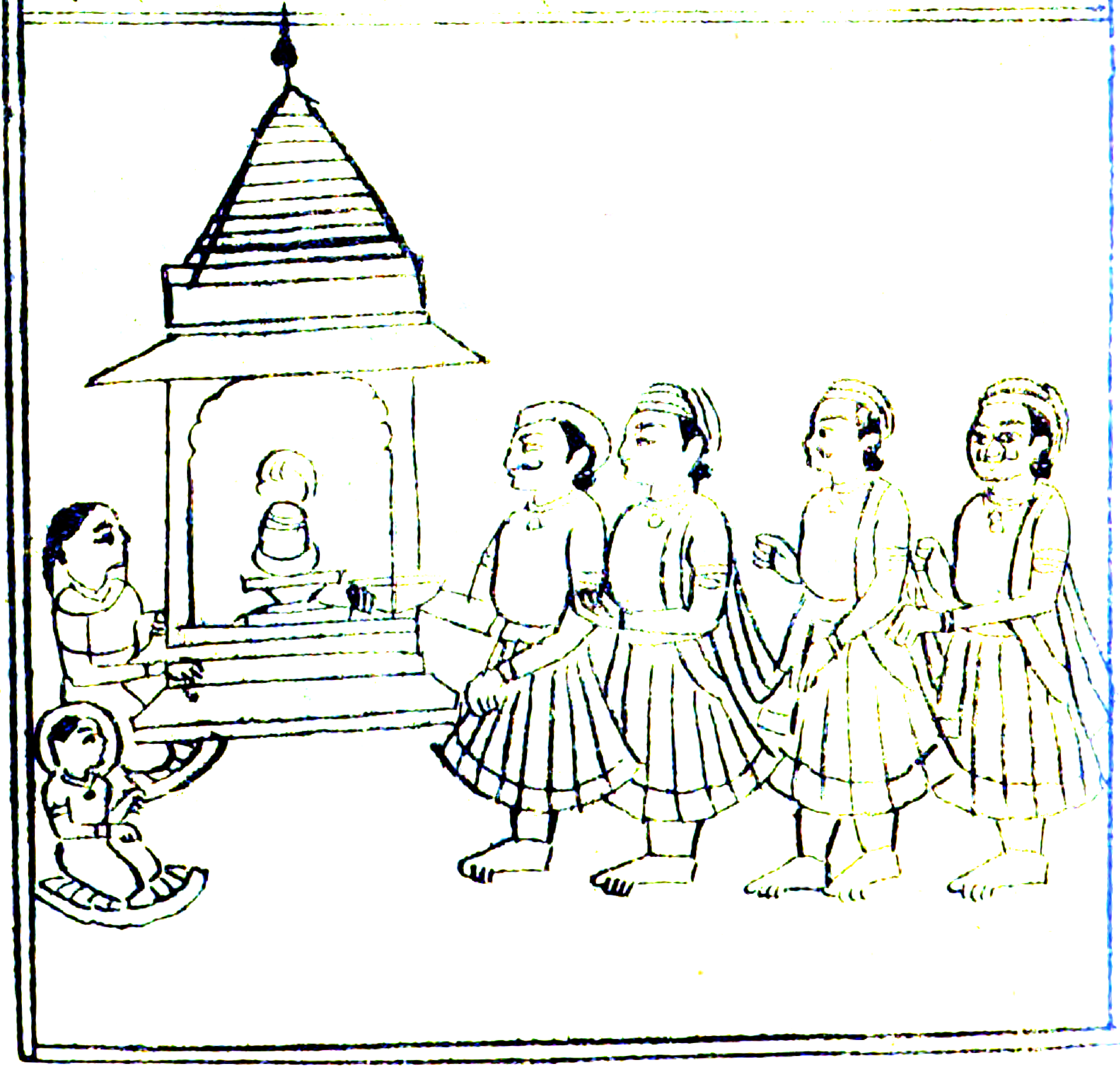

देवजी के दर्शन कों चले तव गांव के लोग आश्चर्य भए जो सेठ पुरुषोत्तम दास कवहूं दर्शन कों न आवते सो आज क्यों आये सो सव लोग साथ आए सो सेठ पुरुषोत्तम दास ने देवालय में जाय कें विश्वेश्वर नाथ महादेवजी के आगे वीड़ा दोय धरि प्रशाद के डवरा धरि श्री कृष्ण स्मरन कहि कें उठि चले तव वडे वडे पंडित ब्राह्मण हते तिननें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तम दास दंडौत नमस्कार कछून कीनों श्री कृष्ण स्मरन कहि कें उठि चले सो तो तुम कौं उचित नाहीं तव सेठ पुरुषोत्तम दास ने उन ब्राह्मणन सों कह्यौ जो तुम महादेव जी कौं पूछि लीजियों तुम सों महादेव जी कहेंगे पाछें उन ब्राह्मणन में एक महादेव जी कौ वड़ौ कृपापात्र भगवदीय हतौ तासों महादेव जी ने स्वप्न में कह्यो जो हमनें इन सों महा प्रसाद मांग्यौ हौ सो देन आये हैं हमारो इन कौ व्यौहार जैश्रीकृष्ण कौ है तातें तुम इन सों कछू मति कहौ पाछें सेठ पुरुषोत्तम दास वडे उत्सव कौ प्रसाद कवहू कवहूं ले जाते तव एक दिन महादेव जी नें काल भैरव सों कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अवेरो सवेरो आवत है तातें तू इन के घर कौ चौकी पहरा नित्य देत रहियो सो काल भैरव नित्य इन के घर कौ चौकी पहरा देतौ सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्णवन के घर ते अवारे आवत हे सो सेठ पुरुषोत्तम दास घर के द्वार आये तव

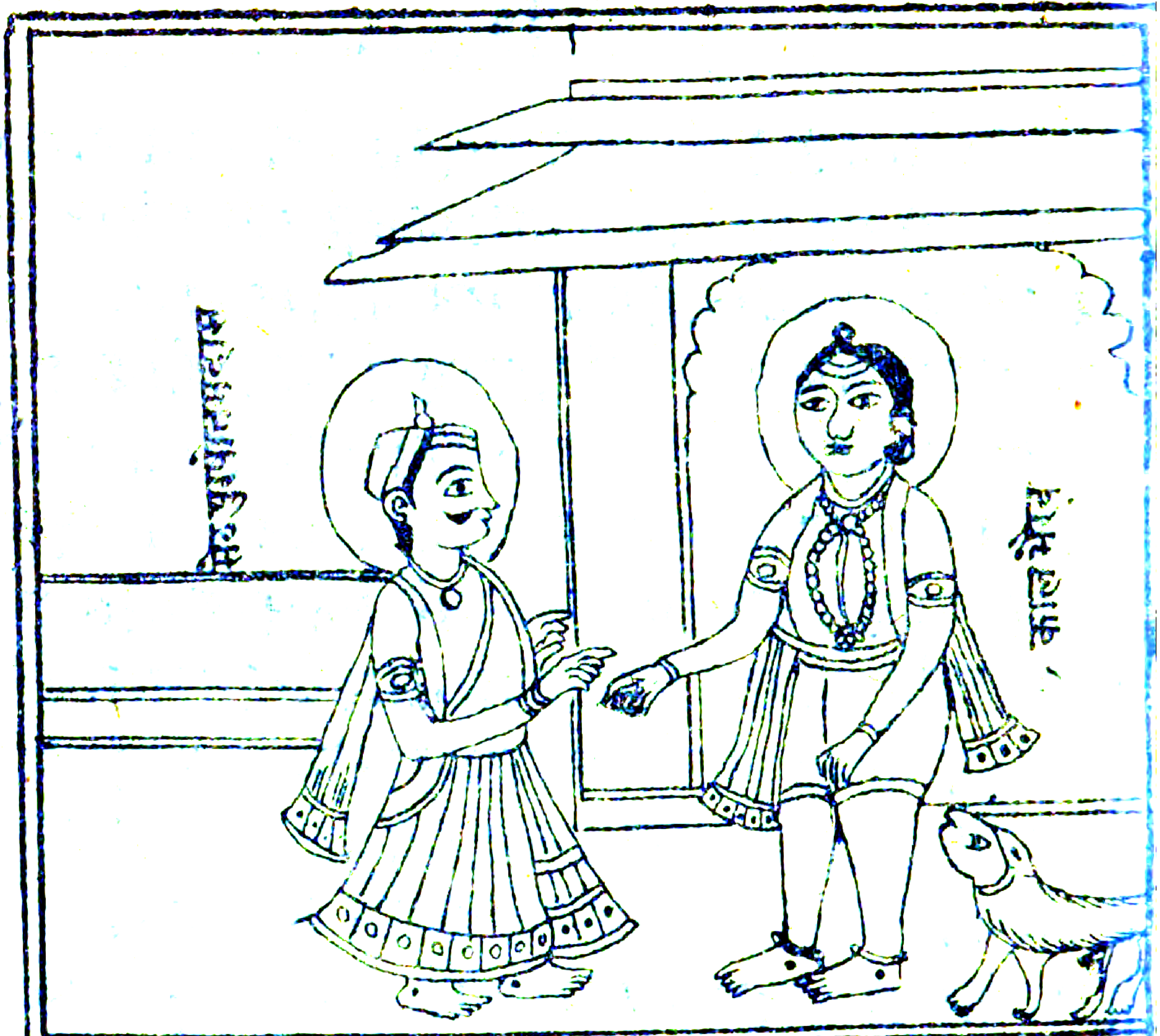

फिर कें देखें तो काल भैरव एक ठौर ठाडो हैं तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें वा सों पूछो जो तू कौन है तब वह बोल्यो जो हूं काल भैरव हों मोकों महादेव जीनें आज्ञा दीनी है ताते तुम्हारे घर की चौकी पहरा देत हों तब सेठ पुरुषोत्तम दास खिरकी दे कें भीतर गए ॥१॥

वार्त्ता प्रसंग १

वहुर एक दक्षिण देशको ब्राह्मण सेवीहतौ सो बडो पंडित महादेव जी कौ कृपा पात्र हतौ सो वा ब्राह्मण कों महादेव जी कौ साक्षात् दर्शन होतौ सो वह ब्राह्मण नित्य प्रति महादेव जी के दर्शन करतौ तब जल पान करतौ ऐसो महादेव

जी कौ भक्त हतौ सो एक समैं जन्माष्टमी कौ उत्सव आयौ सो विश्वेश्वर नाथ महादेव जी सेठ पुरुषोत्तम दास के घर गये जन्माष्टमी कौ उत्सव देखन कौं सो वा ब्राह्मण ने जन्माष्टमी के उत्सव के दिना दर्शन न पायौ और नवमी के दिना दुपहर लों जब सेठ पुरुषोत्तमदास के घर से महादेव जी विदा होय के आये तब वा ब्राह्मण ने महादेवजी कौ दर्शन पायौ तब वा ब्राह्मण नें महादेवजी सों पूछी जो कालि और आज हम दर्शन दुपहर लों नाहीं पायौ सो काहे तें तब वा ब्राह्मण सों महादेव जी नें कह्यौ जो हम कालि सेठ पुरुषोत्तम दास के घर उत्सव देखन गए हे सो अबही सेठ पुरुषोत्तम दास के घर ते विदा होय के आवत हैं तब वा ब्राह्मण ने कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास कौन है तिन के घर तुम उत्सव देखन कौं जात हैं तब महादेव जी ने कह्यौ जो बड़े भगवद भक्त हैं तब वा ब्राह्मण ने कही जो मोहू को भगवद भक्त करौ तब महादेव जी ने कह्यौ जो सेठ पुरुषोत्तम दास के पास तू जाय के नाम लै आउ तब वा ब्राह्मण नें कही जो तुमहीं मोकों नाम देउ तब महादेव जी ने कही जो मैं तो तोकौं नाम देउंगो सही परि मेरौ दीयौ नाम तोकों फलैगो नाहीं ताते तू सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लै आउ वे तोकों नाम देयंगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नाम लेवे गयो सो आय के भीतर खबर

कर बाई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें कही जो बैठागे माथौ खाली करन आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा सों पहुंचि कें बाहर आये तब वा ब्राह्मण ने दंडौत कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो ऐसो अनुचित क्यों करत हो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसें यांत घटै है तब वा ब्राह्मण ने सेठ पुरुषोत्तमदास सों कही जो हमको नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम ने कह्यो जो हूं तो नाम नाहीं देउंगो बहोरि ब्राह्मण ने बहुत आग्रह कीनों परि पुरुषोत्तम दास नें नाम न दीनो तब वह ब्राह्मण महादेव जी के पास आयो तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नाम नाहीं देत तब महादेव जी ने कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नाम लीजियो जो मोकों श्री महादेव जी ने पठायो है तुम सों महादेव जी ने कह्यो है तब वह ब्राह्मण फेर सेठ पुरुषोत्तम दास के पास आयो और कह्यो जो मोकों महादेव जी ने पठायो है ताते मोकों नाम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम दास ने वा ब्राह्मण कों नाम दीयो नाम सुनाय कें हाथ जोरि कें श्री कृष्ण स्मरन कह्यो तब वा ब्राह्मण ने कह्यो जो अब मोकों प्रनाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यो जो अब तुम भगवद भक्त भये सो तुम वंदनीय हो तुम्हारे और हमारे वंदनीय श्री आचार्य जी महाप्रभू हैं में तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें नाम देत हों याते वह ब्राह्मण श्री आचार्य जी म

हाप्रभून के पास अंडल आयौ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम समर्पण करवायौ पाछें कितनेक दिन रह कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ पढ़े ॥ ❋

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुरि एक समय सेठ पुरुषोतम दास वैठे वैठे मंदिर वस्त्र करते हुते इतने ही में गोपाल दास वेटा श्री ठाकुर जी कों सेन भोग सरायवे कों मन्दिर में न्हाय कें आयौ तव देखें तो सेठ पुरुषोतम दास वैठे वैठे मन्दिर वस्त्र करत हैं तव गोपालदास के मन में आई जो अव तौ सेठजी वृद्ध भए हैं तातें में सेवा में तत्पर में होउ तौ आछौ तव यह वात गोपालदास के मन की सेठ पुरुषोतम दासनें जानी तव कह्यौ जो वेटा आगें आउ तव गोपालदास जाय कें देखें तौ वर्ष वीस तथा पच्चीस के वैठे हैं तव पुरुषोतम दासनें कह्यौ जो वेटा यह भगवदीयन कौ मन में न लावनी भगवदीय सदा तरुन हैं परि अवस्था होय ताकों मान दीयो चाहिये॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥

वहुर एक समय सेठ पुरुषोतम दास झाड़खंड में मदार मधुसूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर मन्दिर है पर्वत कौ नाम मंदार पर्वत है ता ऊपर ते मनुष्य गिरे तौ चोट न लगे और अपने सव पाप कौहि कामना करि गिरै तौ देह छूटे पा

प दूर होंय और जो कामना करी होय सो दूसरे जन्म में सिद्ध होय वह ऐसो स्थल है तहां एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पधारे हते तहां सेठ पुरुषोत्तम दास और एक ब्राह्मण श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक सो दोउ जने मंदार मधु सूदन जी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढ़े सो

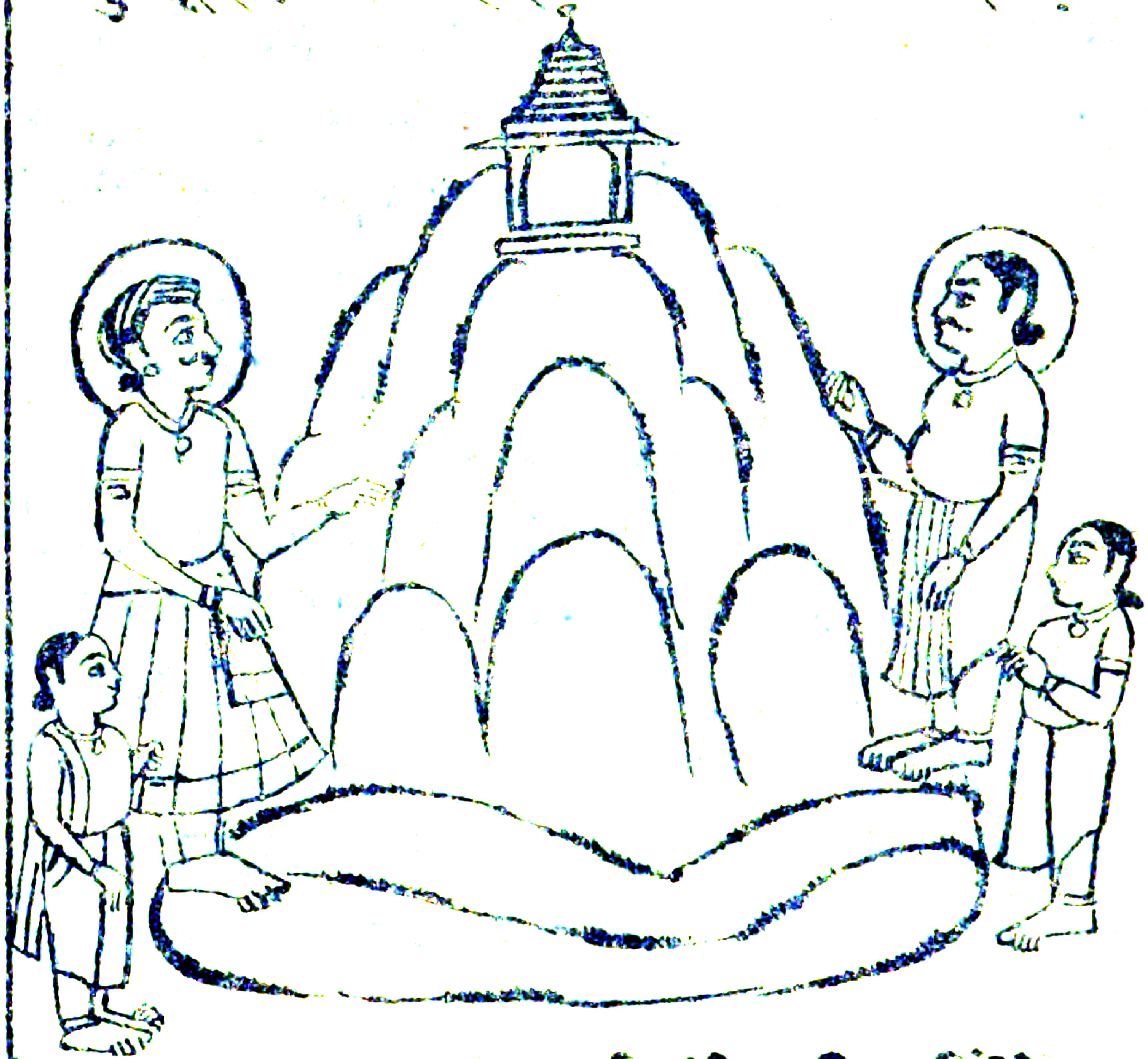

उहां जाय कें मधुसूदन जी कौ दर्शन कीनो पाछें रात्रि पर गई तातें उहां ही सोय रहे पाछें रात्रि कों एक सिद्ध आयो वह जाति कौ ब्राह्मण हुतो वाने सेठ पुरुषोत्तमदास के साथ के ब्राह्मण सों पूछी जो तुम कौन हो तब वह बोल्यो हम वैष्णव हैं श्री आचार्य जी महाप्रभू के सेवक हैं।

तव वा सिद्ध व्राह्मण ने कह्यो जो मेरे पास एक मणि है सो तुम लै जाउ तौ लेउ तव वा वैष्णव नें कह्यो जो यह मणि कौंन काम आवत है तव सिद्ध व्राह्मण नें कही जो यह मणि ऐसी है जो मांगे सो देत है तव वा व्राह्मण नें कही जो मैं तौ विरक्त हौं मैं मणि लैकें कहा करूं परि मेरे साथ एक क्षत्री है सो वह गृहस्थ है सो वह सोवत है जो वाकौं देउ तौ जगाऊं तव वा सिद्ध व्राह्मण ने कही जो जगावो तव वा वैष्णव ने सेठ पुरुषोत्तम दास कौं जगायो और कही जो यह व्राह्मण मणि सो तुम लेउ तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें कही जो यह मणि कौंन काम आवत है तव वा मणि कौ प्रभाव कह्यो तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो यह मणि हमारे काम की नाहीं तातें हूं तो न लेउंगो तव सिद्ध व्राह्मण फिर गयो तव सेठ पुरुषोत्तम दास के संग व्राह्मण हतो तानें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो तुम तौ गृहस्थ हो वहुत कुटुम्बी हो तुम्हारे माथे सेवा है तुम नें मणि क्यों न लीनी तुम कों तौ मणि लेनों उचित हो तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो अरे व्राह्मण वावरे मैं श्री ठाकुर जी कौ तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ आश्रय छोड़ि कें कहा मणि कौ आश्रय करूं तैंनें मणि क्यों न लीनी तव वानें कह्यो जो मैं तौ विरक्त हौं मैं मणि लैकें कहा करूं मोकों जगदीस सेर चून देयगो तव सेठ पुरुषोत्तम दास नें वा वैष्णव सों कह्यो जो तोकों जगदीस सेर

चून देयगो तो मो कों कहा जगदीस दशसेर चून न देयगो जगदीस के काहू बात की न्यूनता है ऐसें कहि कें दोउ जनेन नें सो मगिा न लीनो वे सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ ३ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ४ ॥

बहुरि एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू सेठ पुरुषोतम दास के घर पधारे तब दामोदर दास हरिसानी श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सेठ पुरुषोतम दास के सेव्य श्री ठाकुर जी मदन मोहन कों पंचामृत स्नान करवायो और आप पाक करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसर करि श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आप भोजन कीयें तब दामोदर दास हरिसानी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा तें नाम देत हे तथापि थी कों या की इतनी मर्य्यादा राखे चाहिये सो वे सेठ पुरुषोतम दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ४ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ५ ॥

वैष्णव ॥ ८ ॥ ॥ सम्बध ४१

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून

के सेवक सेठ पुरुषोतम दास की वेटी रुक्मनी ५ ताकी वार्ता॥

सो एक समय श्री गुसांईजी कासी में पधारे हुते तब तहां सूर्य्य ग्रहण आयो तब श्री गुसांईजी मन कर्णिका स्नान कों पधारे तब रुक्मनी हू श्री मदन मोहन जी कों स्नान कराय कें आप मनकर्णिका स्नान कौं गई श्री गुसांईजी पधारे जान कें तब श्री गुसांईजी सों वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज सेठ पुरुषोतम दास की वेटी रुक्मनी आई है तब श्री गुसांईजी नें कह्यो जो रुक्मनी आगें आउ तब अपने पास वुलाय लीनी तब श्री गुसांईजी ने पूछो जो तू कितेक दिन पाछें गंगास्नान कूं आई

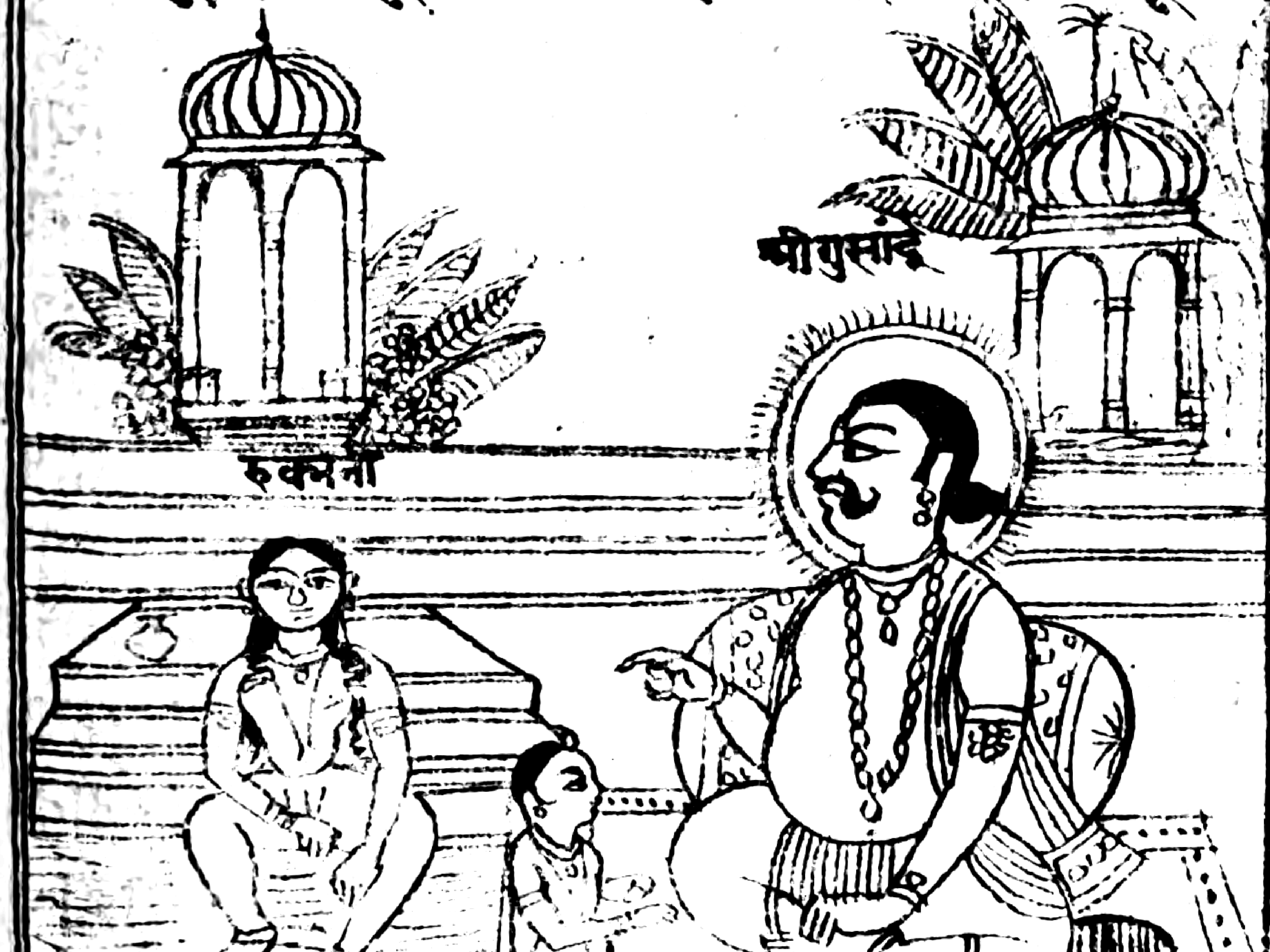

है तब रुक्मनी नें कह्यौ जो महाराज चौवीस वर्ष पर्यंत पाछें आई हौं तब यह सुनि कें श्री गुसांई जी कौ हृदौ भरि आयौ और कह्यौ जो ऐसी भगवदीय जिन को एक क्षण हू अवकाश नाहीं है जो गंगास्नान कौं आवै श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और रुक्मनी कों देखि कें श्री गुसांई जी कहते जो याके श्री ठाकुर जी आरोगा कब होयंगे ॥

वार्त्ता प्रसंग १

बहुत क्षत्री लोग सब कार्तिक मास में गंगास्नान करते तब रुक्मनी नें सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यौ जो तुम आज्ञा करौ तौ मैंहू कार्तिक स्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कह्यौ जो भलें हूं स्नान करि जो चाहिये सो लीजिये तब रुक्मनी ने कह्यौ जो खांड घृत दिवाय देउ मैदा तौ घर मेंहै तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें खांड घृत दिवाय दीयौ। तब रुक्मनी पहर रात्रि पिछली रहे जब उठ सोनै तन सामग्री करि कें समय राज भोग लों श्री मदन मोहन जी कौं समर्पि फिर उत्थापन सों सामग्री करै सो सैन भोग लों समर्पै ऐसे कार्तिक मास में करै और वैशाख में शीतल सामग्री करै श्री ठाकुर जी कौं आरोगावै सो प्रसाद वैष्णवन कौं लिवावै या भांति सों करै सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदास नें रुक्मनी सों कही जो रुक्मनी तू स्नान कब करत है तोकों प्रात कबहू देखियत नाहीं तू कार्तिक कौन बेर न्हाति है तब रुक्मनी ने क-

हौ जो मोकों स्नान सों कहा काम है मैं तौ या भांति सों करत हौं तब यह सुनि कें सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भए श्री गुसांई जी आप श्री मुख तें सराहना करतें रुक्मनी ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ॥

वार्त्ता प्रसंग २

बहुरि कितेक दिन में रुक्मनी की देह आसक्ति भई तब रुक्मनी ने कह्यौ जो अब यह देह छूटै तौ भलौ है श्री ठाकुर जी की सेवा न होय आवै तौ यह देह कौन काम की है तब कितेक दिन पाछें रुक्मनी देह छूटी सो एक वैष्णव नें श्री गुसांई जी सों कही जो महाराज रुक्मनी नें गङ्गा पाई तब श्री गुसांई जी श्री मुख तें कहें जो ऐसें मति कहो जो रुक्मनी नें गङ्गा पाई ऐसें कहो रुक्मनी गङ्गा नें पाई वह रुक्मनी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भावदीय ही तातें इनकी वार्त्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई लिखियै ॥

वार्त्ता प्रसंग २।

वैष्णव ॥ ८ ॥ सम्बन्ध ४४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सेठ पुरुषोत्तमदास कौ बेटा गोपालदास ताकी वार्त्ता ॥

सो गोपालदास सों श्री मदनमोहन जी सानुभाव हते जो चहिये सो मांगि लेते ऐसें सदैव कृपा क

रते वहुरि गोपाल दास कीर्तन वहुत करते और गोपालदास की देह आसक्ति भयी तब भगवद्नाम को उच्चारण करते तब श्री मदनमोहन जी आप हुंकारी देते ऐसी कृपा करते श्री आचार्य जी महाप्रभून के ग्रंथ सुबोधिनी जी श्री भागवत निबंध और रहस्य ग्रंथ सो सब पाठ करते भगवद लीला में मग्न रहते सदैव लीला को विचार करते ऐसें करि कें सर्व काल व्यतीत कीयो॰ पाछें देह छूटी तब श्री गुसांई जीनें सुनी जो गोपालदास की देह छूटी है तब आप श्री मुखतें कही जो गोपालदास की सराहना करी सो वे गोपालदास ऐसें भगवदीय हैं सो ये वार्ता सब सेठ पुरुषोत्तम दास के परिवार की भई तातें इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ✤ ॥ ४ ॥

वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥११॥ सम्बंध ॥४५

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रामदास सार
स्वत ब्राह्मण ता॰
की वार्ता है

सो वे रामदास श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करते अपरस में जल भरते बीड़ा हू अपरस में राखते या प्रकार सों करते सो रामदास के पास द्रव्य बहुत हतो सो कितेक दिन पाछें वह॰ द्रव्य खरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तब

मन में विचारी जो कछु आवत होय तो भलो है तब तादिन ते वह द्रव्य तातीन कों व्याजू दीनों तब व्याज वहुत आमन लाग्यो लोभ के लिये तातीन कों व्योपार कीयो पूरब देश में फटे वस्त्र वुनत हैं तिन सों ताती कहत हैं तब राम दास जी के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री नवनीत प्रिया जीने कह्यो रामदास तू तो हम कों तातीन पर राखत है तब रामदास जी यह वात सुनि कें चौंकि उठे और कह्यो जो महाराज मोसों चूक परी तब रामदास जी तातीन पर गए और कह्यो जो मेरो द्रव्य देउ तब उन तातीन नें रामदास जी सों पूछो जो यह कारन कहा है सो द्रव्य मांगत हो तब रामदास जी नें कह्यो जो मैं कहा करूं मो कों तो लरिका संग काम पर्यो है तातें लरिका को मन राख्यो चाहिये तब तातीन नें कह्यो जो हम द्रव्य इक ठोरो करत हैं तब कितेक दिन पाछें उन तातीन नें द्रव्य दीयो सो द्रव्य लेकें घर आए फेर वैसें ही सेवा करन लागे सो सब द्रव्य निवर्यो तब वनियांन की दूकान ते उचापति करन लागे तब ऋण वहुत है गयो तब उचापति वनियां की दूकान ते दूर कीनी और वनियां की दूकान ते उचापति करन लागे परि वा वनियां की हाट आगे होय कें निकसते नाहीं और गैल होय के जाते तब एक दिन वनियांनें राम दास सों कही जो भलो तुम मेरी दुकान के आगे होय कें नाहीं निकसत हो और उचापति नाहीं करत तो मेरो लेखो करि कें मेरो

पैसा चुकाय देउ तगादो वहुत करडो कीयौ तब श्री ठाकुर जी राम दास जी कौ स्वरूप धरि के वा वनिया की हाट ऊपर गए और श्री मुख ते कह्यो जो लेखौ लाउ पैसा चुकाय देउं तब वा वनिया ने वही देखि लेखौ करि के पैसा चुकाय दीनो रुपैया एक सो अधिक दीए श्री ठाकुर जी आप श्री हस्त सों लिखि आये परि यह वात रामदास जी ने न जानी तब एक दिन राम दास जी कों वुलाय वे वैष्णव आए तब उन वैष्णव के पाछें पाछें रामदास जी गए सो रामदास जी वा वनियां की दुकान के आगे होय के निकसे तब आना कानी दै के निकसे इतने में वा वनियां नें कही जो रामदास जी तुम मेरी हाट ते उचापति नाहीं करत सो तो मेरो अभाग्य है परि तुमारो मांये अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तब रामदास जी ने कह्यो जो उहां ते फिर आवत हों तब रामदास नें मन में विचार्यो जो मैंनें याकूं कछु दीयो नाहीं और यह कहत है जो तुम्हारो अधिक द्रव्य है सो तो उठाय लेउ यह कारन कहा है परि जानियत है जो यह श्री ठाकुर जी की ओर ते काम भयो है पाछें रामदास जी वैष्णव के घर ते आये तब वा वनियां की हाट पै जाय कें लेखो मांगो जो लेख्यौ लाउ तब वा वनिया नें कह्यो जो कहा लेखो देखोगे तब वा वनियां ने वही दिखाई तब वा वही में रामदास जी ने श्री ठाकुर जी के हस्ताक्षर देखे तब चुप करि रहे तब घर

आय रामदास जी नें स्त्री सों कही जो हूं तो घर में नाहीं रहूंगो चाकरी करूंगो तब सिपाहगीरी कौ विचार कीयो तब घोड़ा मोल लीयो सब हथियार बांधन लागे तब जल और बीड़ा अपरस में लेत हे सो अपरस छूटो बिना अपरस में लेन लागे सो किते क दिन पाछें रामदास जी अडेल आये सो हथियार बांधे ही जाय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के

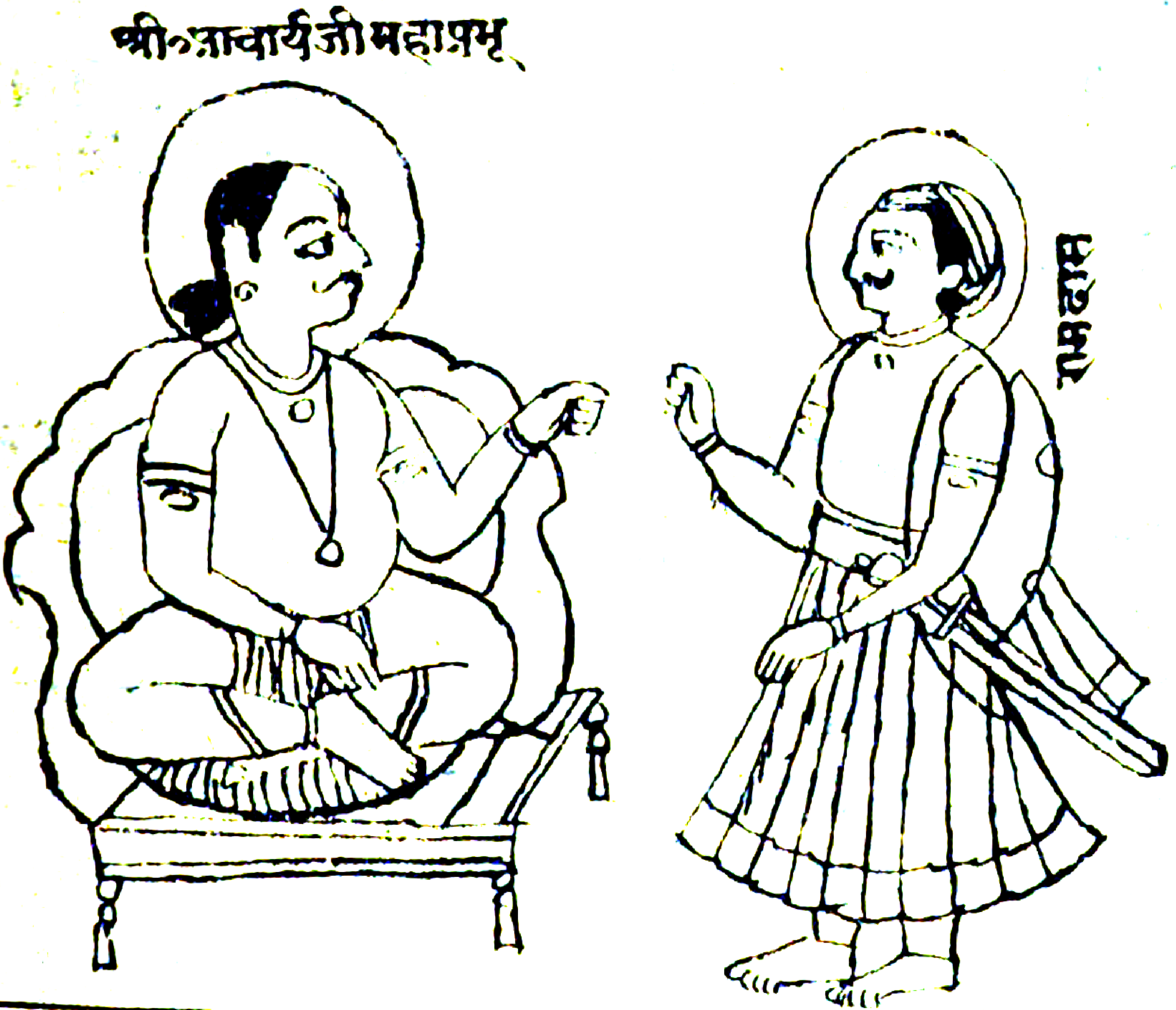

दर्शन कीने दंडवत कीनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री मुख ते धन्य धन्य कह्यो जो रामदास तू धन्य हे तब और वैष्णव पास बेठे हे सो कहन लागे जो महाराज अब याकों धन्य क्यों कहत हो अब तो यह अपरसता मों नाहीं रहत हे सि-

पाहीन में चाकरी करत हे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यह धन्य याते हे श्री ठाकुर जी कों श्रम नाहीं करवावत याकी वरावर कोउ धीरजवंत नाही श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ता समें गंगास्नान को पधारे तब मार्ग में एक खाड़ देख्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह खाड़ अजहू भर्यो नाहीं सो इतनो कहत ही वैष्णव सब खाड़ भरन लागे वागो पहेरें ही तब रामदास जीहू एक टोकरा लैकें खाड़ भरन लागे तव श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पधारे तब तांई खाड़ भर दीनों तब रामदास जी कों देखि कें श्री महाप्रभू जी वहुत प्रसन्न भए ॥

वार्ता प्रसंग । २

और रामदास जी कें कछु संतत न हुती तब स्त्रीनें रामदास जी सों कह्यो जो तुम और विवाह करो तो तुम्हारे वालक होय तब रामदास जी नें कह्यो जो हम को तो वालक की इच्छा नाहीं तब स्त्री ने कह्यो जो मोकों तो वालक की इच्छा हे तब रामदास जी ने कह्यो जो तो कों वालक की इच्छा हे तो हमारे श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भाव सों सेवा करि जेसें वालक कूं खवाइये प्याइये खिलाइये हित करिये तेसे तुम श्री नवनीत प्रिया जी को लडावो तब तेरें वालक होयगो तब रामदास जी की स्त्री नें श्री नवनीत प्रिया जी की वाल भाव सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करि जो वा

लक भयौ है सो वे रामदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो इन की वार्ता अब कहां तांई लिखियै ॥

वार्ताप्रसंग २

वैष्णव ॥ ७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गदाधर दास० सारस्वत ब्राह्मण कंडा में रहते तिनकी वार्ता।

सो गदाधर दास के माथे श्री मदनमोहन जी की सेवा हुती सो श्री ठाकुर जी बड़े गोर हते सो नित्य

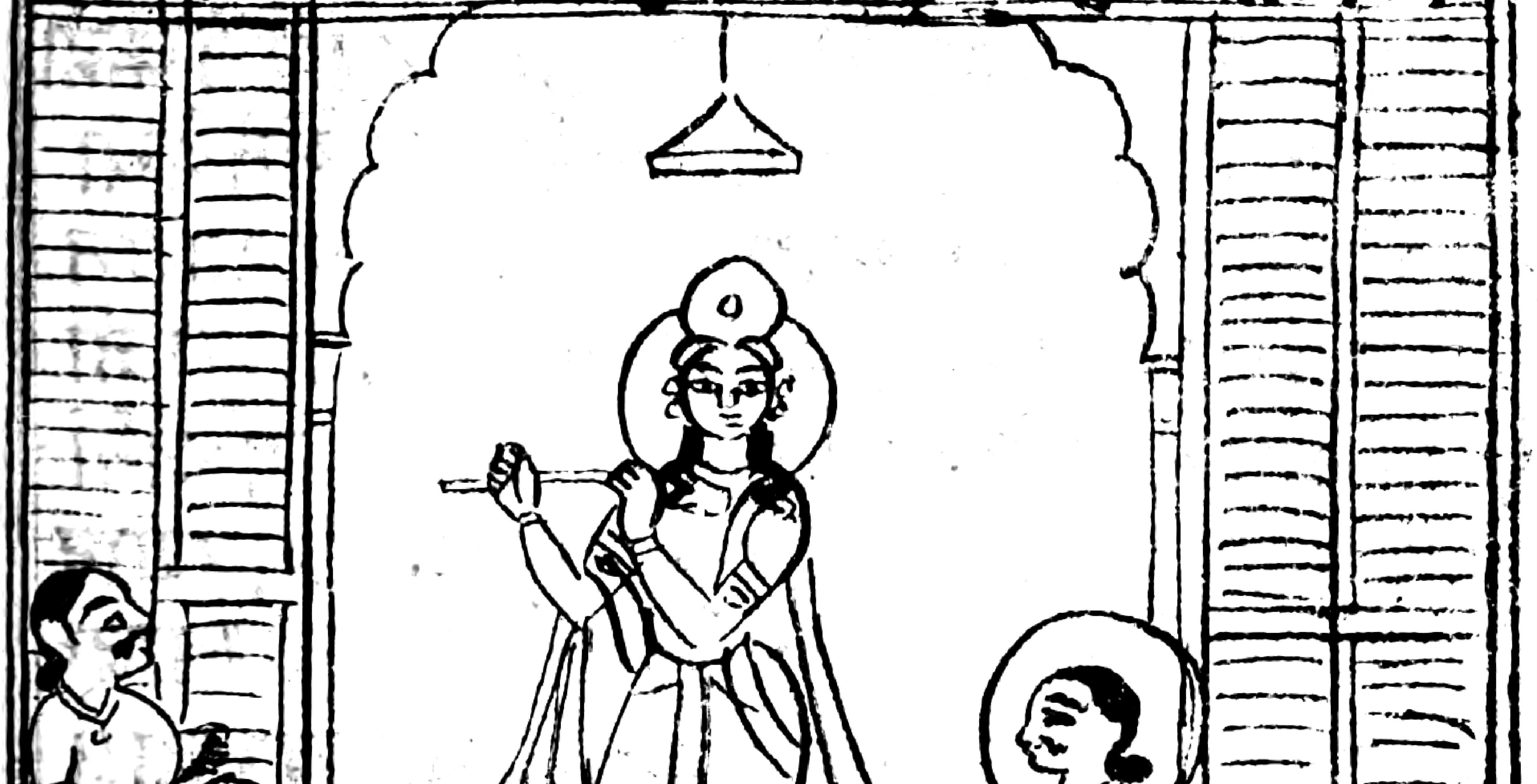

र्थात जैसो उनके जिजमान के में आवतो तैसो श्री ठाकुर जी कों समर्पते सो एक दिन जिजमान के में कछु आयो नाहीं तब जल ही छान के समर्प्यो परि मन मे बहुत खेद भयो छाती में आगिन सी उठी ऐसें करत रात्रि पर गई तब एक जिजमान द्वार पे आय पुकार्‍यो और कह्यो जो किवाड़ खोलो तब गदाधर दास ने किवाड़ खोले तब वा जिजमान नें एक वागो और चार रुपैया और कछु सामग्री गदाधर दास कों दीये और कह्यो जो आज मेरे पिता कौ श्राद्ध दिन हतो ताकी यह दक्षिणा लेउ तब गदाधर दास ने लीनो सो वागो सामग्री घर में धरि के आप बाज़ार में गये सो एक हलवाई मिठाई आछी करत हुतो ताकी हाट पे गए तब जाय के वा हलवाई सों पूछी जो तेरे मिठाई आछी है तब वा हलवाई नें कही जो मिठाई जलेबी अबही कीनी है या मैंने बेची नाहीं तब जलेबी तुलाय मोल दैके घर आए तब गदाधर दास आप के स्नान करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समया नुसार भोग सराय अनोसर करकें पाछें वैष्णवन कों बुलाय महाप्रशाद सबन कों लिवायो सो अति अलौकिक स्वाद भयो ऐसो जो कछु कह्यो न जाय सो सब महाप्रशाद वैष्णवन कों लिवायो और आप भूखे ही सोय रहे पाछें सवारे उठि सीधो सामग्री लाए तब स्नान करि रसोई करी श्री ठाकुर जी सेवा श्रृंगार करि श्री ठाकुर जी कौ भोग समर्प्यो भोग सराय वैष्ण-

व फेर बुलाये जब वैष्णव प्रशाद लेवे कों आये बैठे तब पूछन लागे जो रात्रि को महा प्रशाद हमनें लीनों सो बहुत स्वाद भयो सो क्यों कोर समर्प्यो तब गदाधर दास नें सब प्रकार कह्यो तब सब वैष्णव बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो गदाधर दास नें सत्य कह्यो ॥

॥ वार्ता प्रसंग २

बहुरि एक दिन गदाधर दास नें सब वैष्णव महाप्रसाद कों बुलाए हुते पर साक भाजन कछु न हुतो तब गदाधर दास नें कह्यो जो ऐसो कोउ वैष्णव है सो साक लै आवे तब तिन में एक वैष्णव बेणीदास को भाई माधोदास सो बड़ो विषयी हुतो तातें वेश्या घर में राखी हुती तिन नें कह्यो जो मैं लै आऊंगो तब गदा धर दास नें कह्यो जो भले लै आवो तब माधोदास गयो सो बथुवा को भाजी लै आयो सो माधो दास नें नीकी भांति सों दीनी रसोई में पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनोसर कर के वैष्णवन कों महा प्रशाद लेन बैठाए पर वह भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दास ने माधो दास को आसीर्वाद दियो जो तू हरि भक्त दृढ़ होयगो पाछें गदा धर दास के आसीर्वाद तें माधोदास भलो वैष्णव भयो सो वे गदाधरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हुते तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें

इनकी वार्त्ता अव कहां तांई लिखिये॥

वार्त्ता प्रसंग १॥

वैष्णव॥८॥ सम्वन्ध॥४८

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक वेणीदास माधोदास दोउ भाई तिन की वार्त्ता

सो वड़े भाई वेणीदास छोटे भाई माधोदास सो माधोदास वही जो गदाधर दास के घर वथुवा की भाजी लै आयो हो सो माधोदास वड़ो विषयी हतो ता नें घर में वेश्या राखी हती ताते सव वैष्णव माधोदास की निंदा करते सो वात श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनी जो माधोदास वड़ो विषयी भयो है घर में वेस्या राखी है सो एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभून नें माधोदास सों पूछी जो क्यों रे माधोदास तैनें घर में वेश्या राखी है तव माधोदास नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्त भयो है तासों राखी है तव श्री आचार्य जी महा प्रभू आप चुप कर रहे सो तीन वेर आपने माधोदास सों पूछी तव तीन्यो वेर माधोदास ने यांही कही जो महाराज मेरो मन वासों आशक्ति भयो है तासों राखी है तव वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों कही जो महाराज अव लों तो आप की कानि ही परि अव तो तुम्हारे आगें कह्यो तासों तुम नें तो कछू न कही तव श्री आ

चार्य जी महाप्रभून नें उन वैष्णवन सों कही जो वाकौ मन वासों आसक्त भयो है सो श्री ठाकुर जी कौं फेर तें कितनी वार लागेगी और गदाधरदास नें याकों आसीर्वाद दीयो है जो याकों दृढ भक्ति होयगी सो यह माधोदास है तव कितेक दिन पाछें माधोदास की बुद्धि श्री ठाकुर जी ने फेरी तव तौ वानें वेश्या दूर कीनी पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते माधोदास भलो वैष्णव भयो ॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर कितेक दिन पाछें एक माला मोतीनकी वहुत सुन्दर वहुत मोल की विकवे कों आई सो देखकें माधोदासनें वड़े भाई वेणीदास सों कह्यो जो यह माला श्री ठाकुर जी के कंठ लायक है तव वड़े भाई वेणीदासनें कही जो यह माला को कहा है हमारे पास जो है सो सव श्री नवनीत प्रिया जी कौ है ऐसें कहि कें वात टार दीनी तव माधोदास नें कही जो अपने घर में है सो सब ठाकुर जी कौ है तो माला क्यों न लेउ तव वड़े भाई वेणीदास ने कही जो हम गृहस्थ हैं हम को विवाह काज सव करनों है ऐसें क्यों वनें तव छोटे भाई माधोदास नें कही जो हूं तो न्यारो होंउगो सो न्यारो भयो द्रव्य सव वांट लीनी सो द्रव्य की वस्तु लेकें दक्षिण गयो तव वस्तु सव वेची तव व्यवहार करकें द्रव्य वहुत उपज्यो तव एक माला मोतीन की पहिले मोल ते उत्तमोत्तम लीनी सो माला ले

कें घर कों चले सो आवत वाट में एक वड़ी नदी आई तव नाव में वैठे तव नवनीत प्रिया जी लाल छड़ी हाथ में लेकर आये और कह्यो जो नाव डुवाऊं तव माधोदास नें कह्यो जो निजेछातः कारिष्यति: तव श्री ठाकुर जी नें कही जो तू क्यों गयो

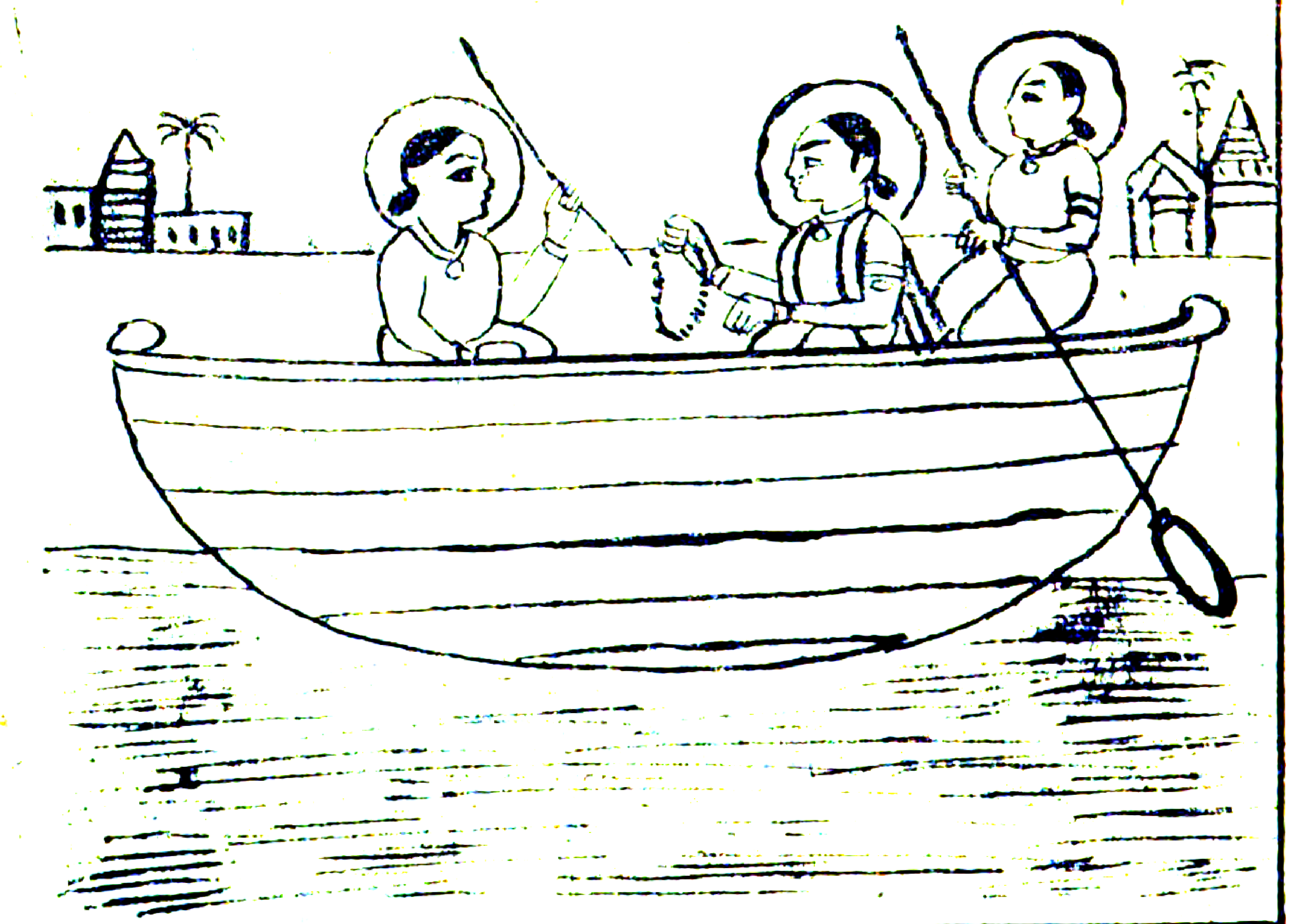

हो तव माधो दास नें कही जो महाराज में माला लैन गयो हो तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो हमारे को माला न हुती हमारे माला वहुतेरी हैं तव माधोदास नें कह्यो जो तुम्हारें माला वहुतेरी हैं पर सेवक कों तो उपाय करनो तव नाव डूवते ने रही जितने मनुष्य नाव में वैठे हुते ते सव हलकल करन लागे और माधोदास कों।

मन प्रसन्न हुतो तव सवन के मन में आई जो एवड़े महा पुरुष हैं पाछें माधोदास उहां ते घर आये तव श्री आचार्य जी महा प्रभून कों दंडवत कीनी और हाथ में माला दीनी तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो नाव डूवते ने कैसें रही तव माधोदास ने सव समाचार कहे तव और वैष्णव पास वैठे हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो वही माधोदास है जो श्री महाप्रभून की कृपा ते श्री ठाकुर जी ने माधोदास कौ मन फेर्यो और भगवद भाव उत्पन्न भयो आप्य ऊपर आसक्ति ना हुती सो श्री ठाकुर जी के ऊपर भई सो माधोदास ऐसे भगवदीय हैं तातें इन वेणादास माधोदास की वारता कौ पार नाहीं सो इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ८ ॥

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक हरिवंश पाठक सारस्वत ब्राह्मण वनारस में रहत ॥

तिनकी वार्त्ता

सो वे हरिवंश पाठक पटना में गये हे सो वहां के हाकिम सों वहुत मिलाप हुतो सो वा हाकिम अपने मन में कहे जो ए मेरे पास कछु मांगे तो मैं इन कौं देउं परि वे कछु मांगे नहीं यों करत डोल उत्सव के दिन है रहे तव अपने सेव्य ठाकुर जीहु

तें तिनने स्वप्न में जताई जो तू मोकों डोल नृमकुं लावेगो। तव हरिवंश पाठक नें मन में विचारयो जो अब कहा करूं तव हरि वंश पाठक हाकिम पास गये सो जाय कें कही जो आप के पास कछु मागन आयो हूं सो मोकों दीयो चाहिये तव राजा ने कही जो कहा चाहिये तव हरि वंश पाठक नें कह्यो जो मोकों दिन द्वै में वनारस पहुंचनों है तव हाकिम नें कह्यो जो भलो तव हाकिम नें घोड़ा और मनुष्य साथ दीये पैंडे में डांक चौकी वनाई ऐसे करत अपने घर आये पाछें आप मन्दिर में आय कें डोल सिद्ध कीयो डोल की सामग्री सव सिद्ध करकें पाछें श्री ठाकुर जी कों डोल में वैठाये वहते-

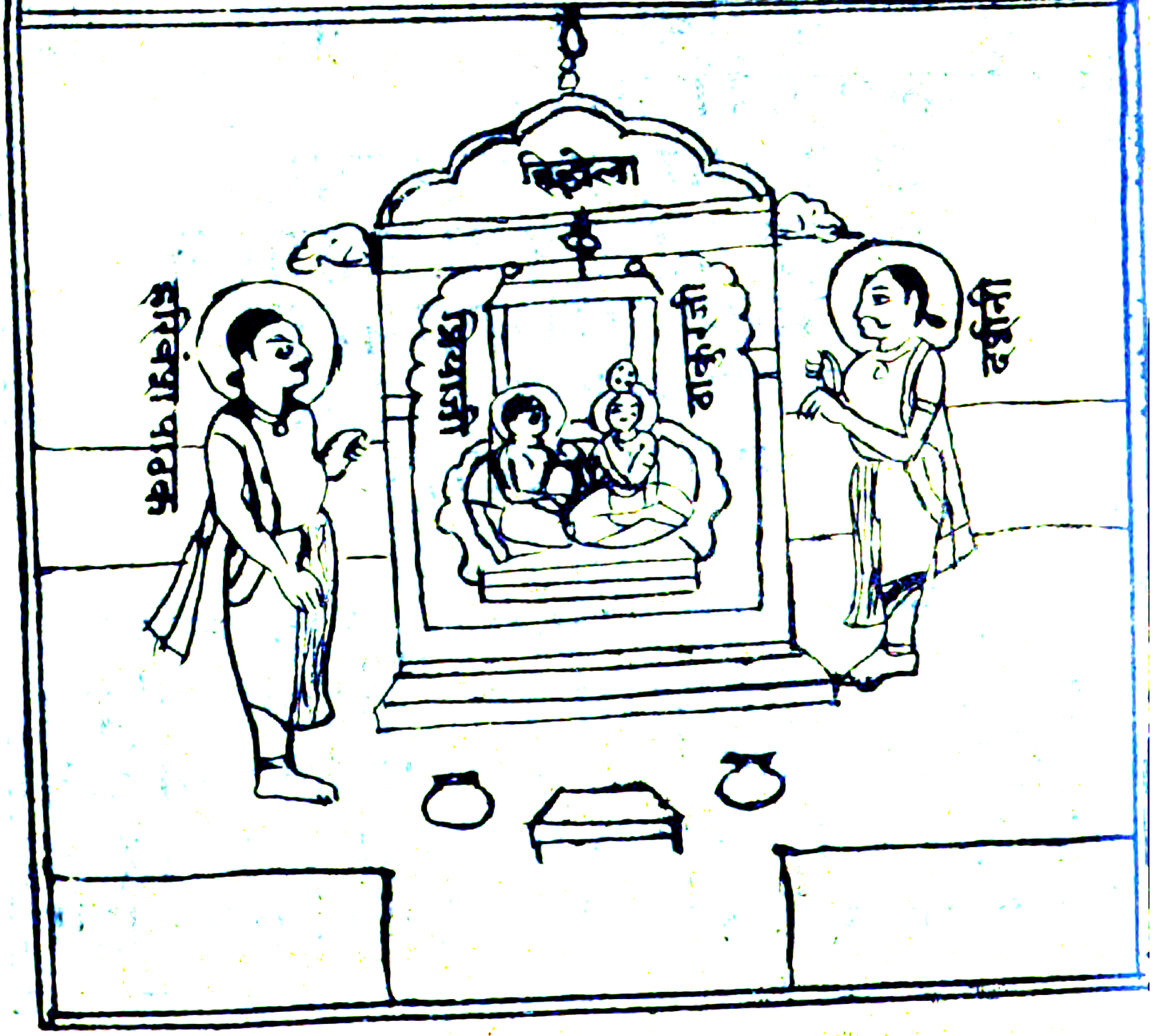

सुख भयो सो थोरे से दिन पाछें फिर पटना गये तब हाकिम ने कही जो तुम को ऐसी कहा जलदी हुती। तब हरि वंश पाठक नें कही जो कछु काम हुतो परि मन की बात कछु न कही सो वे हरिवंश पाठक श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव १० ॥ संबंध ५२

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गोविंद दास भल्ला ताकी वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो श्री आचार्य महाप्रभून के सेवक भये तब गोविंद दास ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो महाराज मेरी गांठि में द्रव्य है सो मैं कहा करूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी की सेवा करि तब गोविंद दास ने कह्यो जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनुकूल नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू स्त्री कों त्याग करि तब गोविंद दास ने स्त्री कौ त्याग कीयो पाछें कह्यो जो महाराज द्रव्य को कहा करूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अब द्रव्य के चार विभाग करि तब गोविंद दास नें द्रव्य के चार बट कीये तब फेरि कह्यो जो महाराज कहा आज्ञा है तब श्री आचार्य

जी महाप्रभून ने कह्यौ जो विभाग तो श्री नाथ जी कों समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कों दै· और एक विभाग सेवा के लिये तू राखि तब गोविंद दास नें कही जो महाराज कछू आप अंगीकार करिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो भलौ एक विभाग हमें दै तब सब विभाग जहां के तहां दैकें अपने बट कौ द्रव्य लैकें आपु महावन आय रहे सो महाप्रसाद वैष्णवन कों लिवावते वैष्णव न मिले तौ गायन कों खवावते तामें· ते आप रंचक हू न लेते आप न्यारी लीटी करि भोग समर्पि कें लेते ऐसी भांति सों सेवा करते सो सब द्रव्य निवर्यौ तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी· की सेवा में आय रहे तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी की परिचारगी करते रसोई की टहल सब करते दोऊ वार के पात्र मांजते और रात्रि डेढ़ तथा सवा पहर पाछली रहती·· तब उठते सो गागरि तहां ते लैकें चलते सो मथुरा में विश्रांत घाट पै स्नान करि कें श्री यमुना जल की गागरि भरि कें चलते सो राजभोग पहिले आय पहुंचते बहुरि पात्र मांजि रसोई पोति अपनी सब सेवा सों पहुंच कें नीचे आवते पाछिं तिलक पोंछि माला उतार गांठि बांधि कें आस पास के गामन तें भिक्षा मांगि लावते सो सेर चार पांच कौ आहार करते सो आहार माफ़िक जुरतो तब आवतो तब आप पास रोटी करि श्री नाथ जी की ध्वजा कें

सन्मुख दिखाय तामें चरणोदक मिलाय प्रशाद लेते ऐसें निर्वाह करते तव ऐसी भांति करत वहुत दिन वीते परि यह वात श्रीनाथ जी कों न भावै तव श्रीनाथ जीनें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम्हारो एक सेवक मो कों वहुत दुःख देत है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून अडेल ते चले सो आगरे में आए तव तहां के वैष्णव सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछी जो श्री ठाकुर जी किन रूठाए हैं तव उन वैष्णवन नें कही जो महाराज हम तो कछू जानत नाहीं तव वहां ते श्री आचार्य जी महाप्रभू मथुरा पधारे तव मथुरा के वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछी जो श्री ठाकुर जी किन रूठाए हैं तव वहां के वैष्णवन नें कह्यो जो महाराज हम तो कछु समझत नाहीं तव श्री आचार्य जी महाप्रभू उहां ते श्री जीद्वार पधारे तव श्रीनाथ जी के दोऊ कपोल हाथन सों छुई कें कह्यो जो वावा अनमने कैसें हो तव कही जो तुम्हारो सेवक मो कों वहुत खिजावत है तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें सव सेवकन सों पूछी जो तुम कहा कहा सेवा करत हो और कहा प्रसाद लेत हो तव सवने अपनी अपनी सेवा कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो पाछें गोविंद दास सों पूछी जो तू कहा सेवा करत है तव जो सेवा करत हुतो सो सव कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो सो सव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी तव अ-

यने मन में जानी जो इन रुठाए हैं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें गोविंद दास भल्ला सों कही जो तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तव गोविंद दास ने कह्यो देव अंस कैसें लेउ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई में प्रशाद लै तव गोविंद दास ने कह्यो गुरु अंस कैसें लेउ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तू सेवा मति करै तव गोविंददास भल्ला अहंकार सों सेवा छोड़ि कें मथुरा गए सो केसोराय जी की सेवा को इजारो पठान के पास ते लीयो तव सेवा करन लागे सो एक वार श्री केसोराय जी की सिज्या निवार ते बुनाई सो सिज्या बहुत अद्भुत भई तव श्री केसोराय जी वा सिज्या के ऊपर पौढन लागे तव तैसी ही निवार वा गाम के हाकिम नें बुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तव वा कारीगर नें कही जो वह निवार तो श्री ठाकुर जी की है तव हाकिम नें कही जो वह निवार मैं देखूंगो पाछें हाकिम श्री ठाकुर जी कें दिवाले में जाय के सिज्या ऊपर चढि वैठ्यो सो गोविंद दास नें सुनी तव गोविंद दास नें आय कें गुसी लेकैं हाकिम को गारी दीनी जो तू कौन है सो हमारे श्री ठाकुर जी की सिज्या ऊपर वैठ्यो है ऐसें वा हाकिम कौं ठौर मार्यो तव हाकिम के मनुष्यन नें गोविंददास को ठौर मार्यो सो यह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे काहू वैष्णव नें जाय

कही और कह्यो जो ऐसी गति वैष्णव कों क्यों बूझिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो याके परलोक में तो कछु हानि नाहीं परि इन मेरी आज्ञा न मानी तासों याकी देह या भांति सों छूटी है. यह गोविंददास पहिले जन्म में श्री नंदरायजी को भैंसा हुतो याने माटी पानी बहुत ढोयो सो वे गोविंददास भल्ला श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

वैष्णव ॥५१॥ सबन्ध ॥५३

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवक अम्मा क्षत्राणी जो । कड़ेस में रहती तिन की वार्ता

सो अम्मा के दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्णव हुते आप वैष्णव हुती और वाके लरिका वासों अम्मा कहते और श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुर जी श्री बालकृष्ण जी वासों अम्मा कहते सो कितेक दिन पाछें एक बेटा वाको मर गयो तब श्री ठाकुर जी की रसोई करि श्री ठाकुर जी को भोग समर्पे समयानुसार भोग सराय पाछें रोवन लागी तब अम्मा को रोवत देखि कें श्री ठाकुर जी खेद पावन लागे श्री ठाकुर जी कहें अम्मा तू रोवे मति परि वह रोवन ते रहे नाहीं

ऐसें करत वाकौ दूसरौहू वेटा मरगयौ तव तौ वहुत रोमन लागी तव श्री ठाकुर जी वाकों रोवते सों राखें और कहें अम्या तू मति रोवें तव अम्या रोवन ने रहे नाहीं तव श्री ठाकुर जीने श्री गुसांई जी सों कह्यौ जो अम्या रोवति है सो मैं वहुत खेद पावत हौं तव श्री गुसांई जी अम्या के घर पधारे और कह्यौ जो अम्या तू मति रोवे श्री ठाकुर जी खेद पावत हैं तव रोवत ते रही और अम्या सेवा को सव साज करि कें पाछें स्नान करि कें पाछें मन्दिर में जाय कें दोऊ हाथ सों सोंधो लगाय कें श्री ठाकुर जी कें लगावे या भांति सों सेवा आछी तरह करती॥

वार्ता प्रसंग १

वहुर एक दिन दूध कौ कटोरा श्री ठाकुरजी के आगे भरि राखो हुतो ता समय श्री गुसांई जी अम्या के घर पधारे मन्दिर कौ टेरा सरकाय कें दर्शन करन लागे तव श्री गुसांई जी देखें तो ठाकुर जी दूध पीते हैं तव श्री गुसांई जी देखि कें पाछें फिर आये तव अम्या नें कही जो वावा पाछें क्यों फिर आए तव श्री गुसांई जी ने कह्यौ जो श्री ठाकुर जी दूध पावत है तव अम्या ने कही जो श्री ठाकुर जी तो लरिका हैं तुम कहा जानत नाहीं तव श्री गुसांई जी दर्शन करि कें पाछें फिरे और अम्या सों श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो यह दूध हमारे घर पठाय दीजियो तव अम्यानें कह्यौ जो राज आपही तो सें

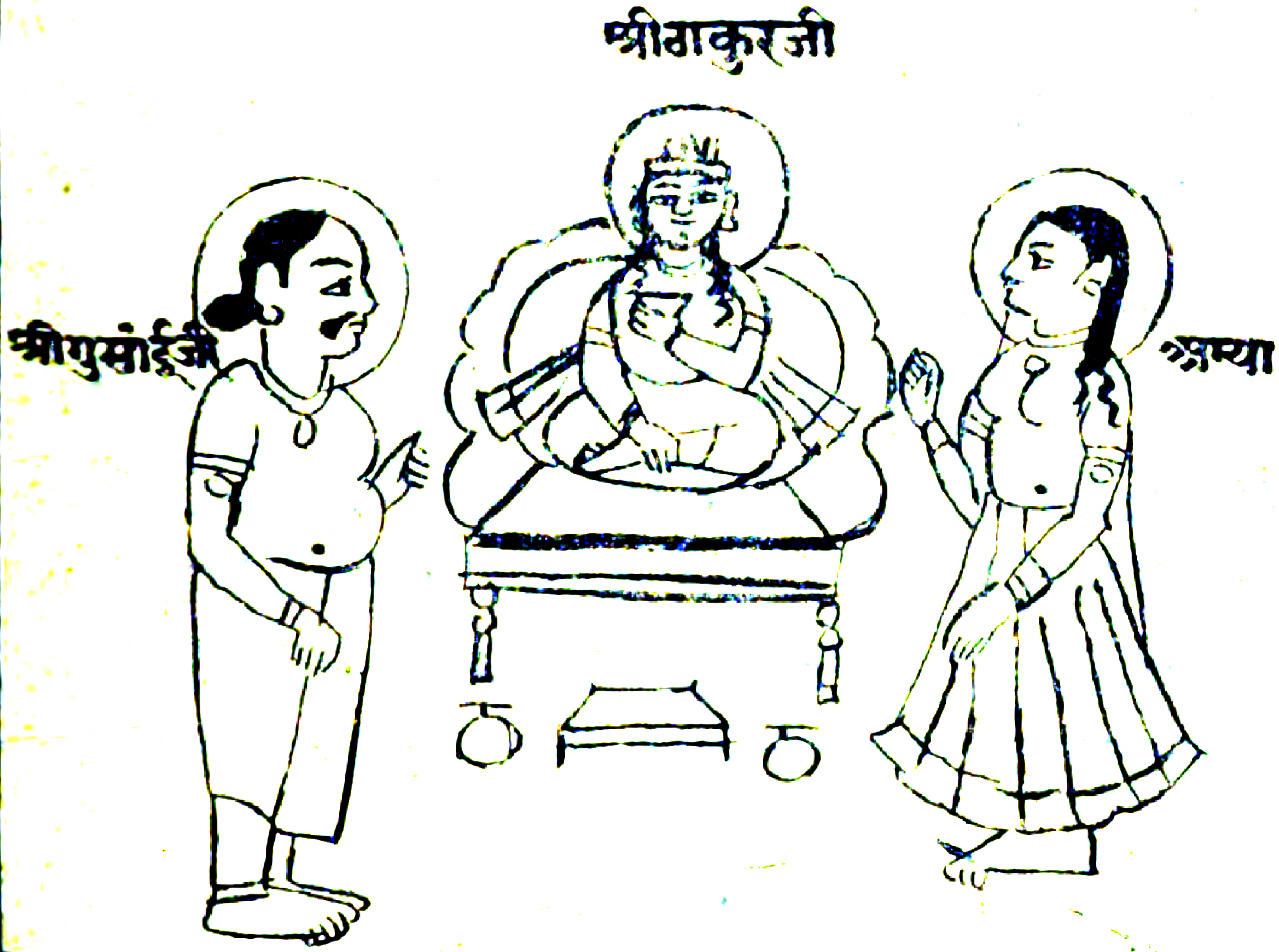

रोगन वारे भावै तौ इहां आरोगो भावै उहां आरोगो पाछें श्री गुसांईं जी आपनै घर पधारे तब अम्मा नें वह दूध श्री गुसांई जी के घर पठायदीयो सो अम्मा सों श्री ठाकुर जी ऐसें सानु भाव हुते प्रत्यक्ष वार्त्ता करते जो वस्तु चहिये सो मांगि लेते सो अम्मा श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्त्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये॥

वार्त्ता प्रसंग २

वैष्णव ॥१२॥ सम्बन्ध ५४

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक रज्जन धावन

दात्री आगरे के वा।
सीतिन्की वार्ता

सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी की सेवा नीकी भांति सों करते श्री ठाकुर जी सानुभाव हुते गज्जन के साथ श्री नवनीत प्रिया जी खेलते गज्जन कों कबहूं गाय करते कबहूं बछरा करते तब गाय को मुख अपने पीताम्बर सों पोंछते तब बछरा करते तब पकर राखते चलन न देते और जब घोरा करते तब पीठ ऊपर असवारी करते जब हाथी करते तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते

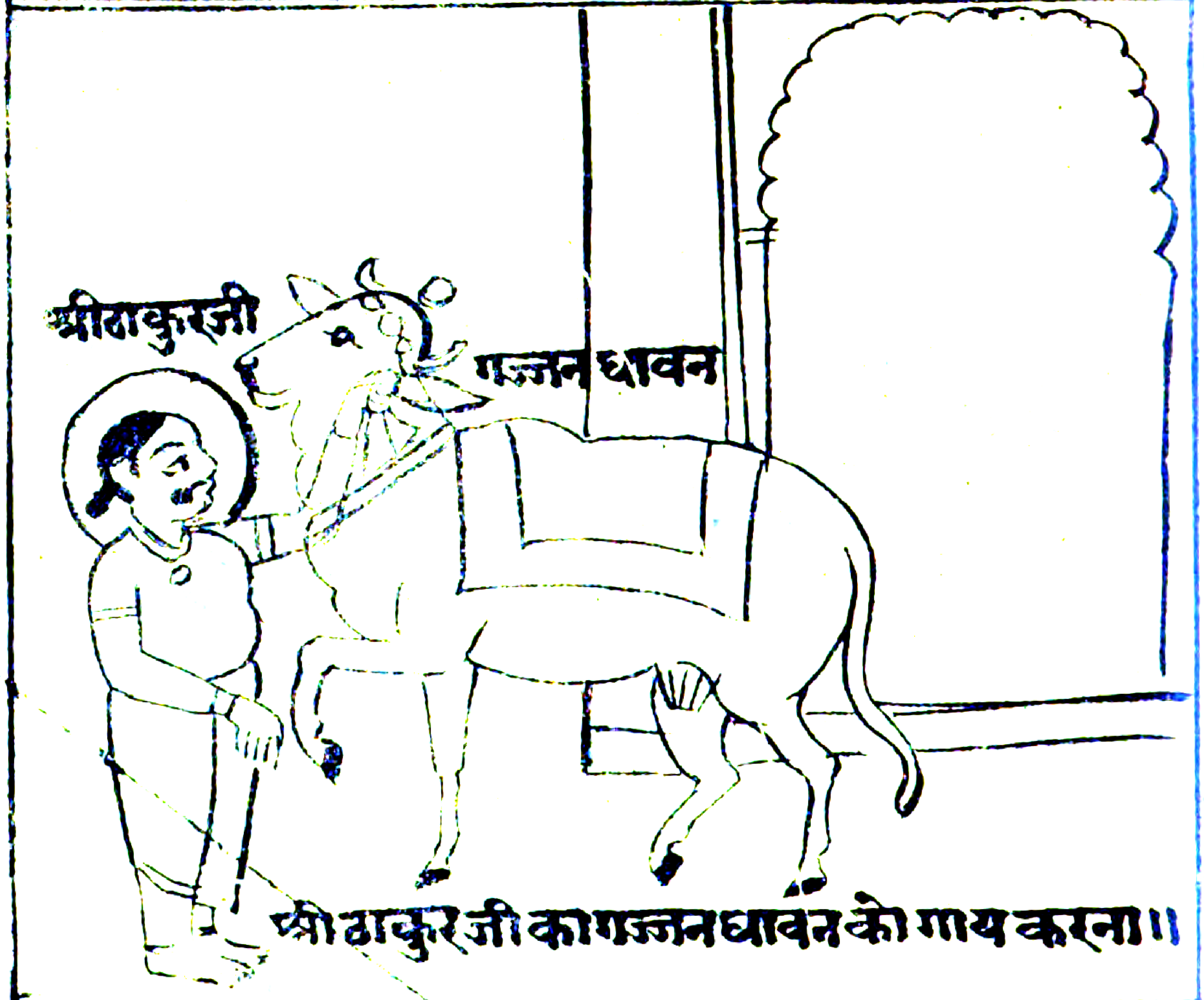

श्री ठाकुर जी का गज्जन धावन को गाय करना॥

ऐसें करत गज्जन के घूटरू घिसि गये ऐसी कृपा श्री नवनीत प्रिया जी .. गज्जन धावन के ऊपर ऐ·

सी करने भोग सामिग्री जो चहिये सो मांगि लेने ऐसी कितनीक वार्ता हैं सो कहां तांई लिखिये और एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी ने गज्जन धावन सों कही जो मोकों श्री गुसांई जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के घर पधराय ता समय श्री आचार्य जी महाप्रभू गोकुल में हुते ताहां गज्जन आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज श्री नवनीत प्रिया जी की ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास पधराय तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो भलें पधराय तव गज्जन धावन नें श्री नवनीत प्रिया जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के मन्दिर में पधराये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें जैसो प्रस्ताव वन्यो तैसें पधराय भोग समर्प्यो पाछें रात्रि कों आप वहुत सोंधो लगाय कें श्री नवनीत प्रिया जी कों अपनी सिज्या ऊपर लै पोढ़े दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ता ऊपर पोढ़े परि वह सिज्या छोटी भई तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो हूं तो या सिज्या ऊपर न पोढूंगो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो ऐसें कैसें वनें तव श्री नवनीत प्रिया जी नें कही जो कछू वाधक नाहीं है तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सोंधो लगाय कें पास ही लै पोढ़े पाछें दूसरे दिन सिज्या वड़ी करवाई ता पर पोढ़ाए तव पोढ़े ता पाछें थोड़े से दिन रहि कें श्री आचार्य जी महाप्रभू जी गोकुल तें अड़ेल कों पधारे तव गज्जन हू साथ ग

यों गज्जन धावन विना श्री नवनीत प्रिया जी एक क्षण हूं न रहते ऐसें ही नवनीत प्रिया विना गज्जन एक क्षण न रहते तव एक दिन श्री नवनीत प्रिया जी के लिये श्री अक्का जी ने गज्जन धावन को पान लेवे पठायो कह्यो जो पान लै आवो तब गज्जन ऐसें तो कह न सक्यो जो श्री नवनीत प्रिया जी मोसों हिले हैं सो मैं कैसें जाऊं ताते अनबोल्यो पान लेंन कों उठि चल्यो सो थोरी सी दूर गयो इतनें में ज्वर चढ़ि आयो सो उहां ही पड़ि रह्यो और इहां श्री अक्का जी ने श्री नवनीत प्रिया कों भोग समर्प्यो तव अक्का जी सों नवनीत प्रिया जीनें कह्यो जो गज्जन कों वुलावो मेरो गज्जन आवैगो तव भोजन करूंगो तव श्री अक्का जी नें मनुष्य दोय वुलावन कों पठाये तव वे मनुष्य देखें तो गज्जन थोरी सी दूर पै पर्यो है ज्वर चढ़ि रह्यो है मनुष्य तहां ते वुलाय लाये तव गज्जन आप स्नान करि मन्दिर में गयो तव तत्काल ज्वर उतर गयो तव गज्जन नें श्री नवनीत प्रिया जी सों कह्यो जो वावा भोजन क्यों नाहीं करत अव भोजन करो तव भोजन श्री नवनीत प्रिया जीनें कीयो गज्जन धावन सों श्री नवनीत प्रिया जी ऐसे सानुभाव हुते श्री नवनीत प्रिया जी तें एक क्षण न्यारो भयो जो तत्काल ज्वर चढ़ि आयो और जव निकट आयो तव तत्काल ………… ज्वर उतर गयो तातें गज्जन धावन श्री नवनीत प्रिया जी के सदा

पास रहते सो ऐसे गज्जन धावन श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनको वार्त्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥÷

वार्त्ता प्रसंग १॥

वैष्णव १३ सम्बन्ध ५५

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास ब्रह्मचारी सारस्वत ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी

॥ वार्त्ता ॥

सो नारायणदास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री गोकुलचन्द्रमा जी सों नारायणदास श्री गोकुलचद्रमा जी की नीकी भांति सों सेवा करते और गायन कों घास खवावते सो धोय पौंछि के खवावते ताको तात्पर्य्य यह जो श्री ठाकुर जी दूध आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवै ऐसें करते और श्री आचार्य जी महाप्रभू जब श्री गोकुल पधारते तब नित्य प्रातःकाल श्री गोकुल तें महाबन पधारते श्री गोकुलचन्द्रमा जी की सेवा करिवे कों सो सेवा करि भोग समर्पि कें पाछें श्री गोकुल पधारते और नारायणदास जहां हाथ पांव धोयवे को वरहे में जाते जा ठौर ते माटी खोदते ता ठौर द्रव्य निकसनो ता ऊपर माटी

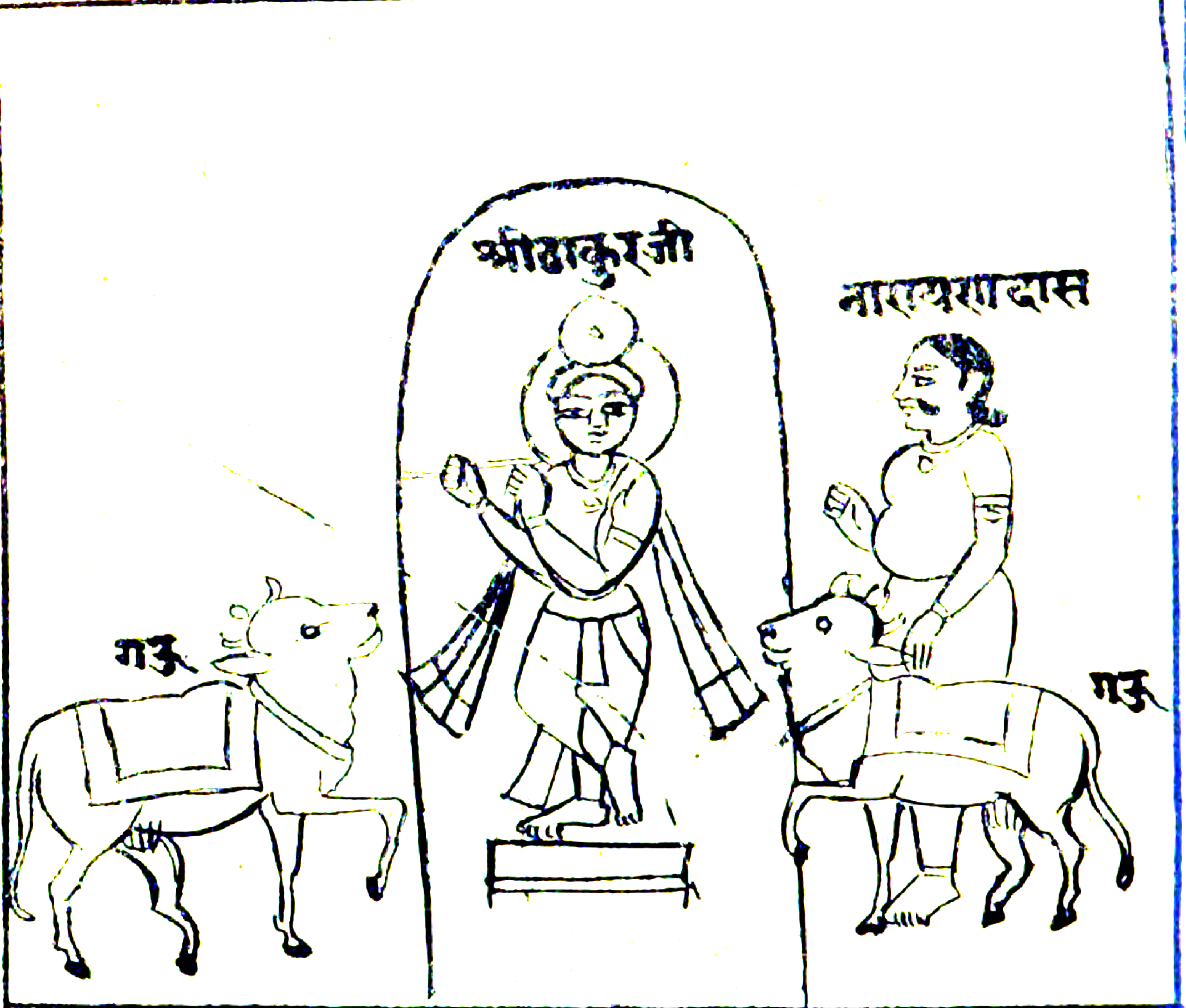

डारि उठि आवते परि द्रव्य कों स्पर्शन करते सो नारायण दास ऐसे त्यागी हते सो नारायणदास एक दिन सोवत हतो तहां खाट के आसपास द्रव्य के ढेर भये हुतेतव नारायणदास देखे तो खट के आस पास द्रव्य के ढेर भये हैं तव नारायणदास ने भतीजी सों कही जो बेटी वेगि उठि .... घर में विगार वहुत भयो है वुहारि कें कूरो सव वाहर डारि आउ तव नरायणदास नो वाहे में देह कृत कों गये पाछें भतीजीनें सोई कीयो सव वुहार कें कूडे की नांई वाहर डार दीनो जो सव लीप डारी पाछें नारायणदास स्नान करि मन्दिर में गये तव सेवा सिंगार सव करिकें श्री

ठाकुर जी के साम्हे देखें सो श्री ठाकुर जीनें नारायणदास कों अति सुन्दर दर्शन दीनो तब अति प्रसन्न श्री ठाकुर जी कों देखि कें नारायण दासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनहीं हैं न जानें कहां बरसेगी पाछें आपही कह्यो जो यह घटा श्री आचार्य जी महा प्रभून कों सरवस्व हैं उहां बरसेंगी पाछें नारायणदास श्री गोकुलचन्द्रमा जी कों राजभोग समर्पि कें बाहर आय बैठे तब हृदो भरि आयो जो श्री ठाकुर जी कौन भांतसों आरोगत हैं ऐसो विचार मन में लागे तब भतीजी ने कही जो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जहां भोग समर्पित हैं सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कानितें आरोगत हैं सो तुमतो श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक परम कृपा पात्र भगवदीय हो ताते तुम्हारो समर्प्यो कों न आरोगेंगे तुम सन्देह कों करत हो तब नारायणदास नें कह्यो जो बेटी आरोगें जब जानियें तब कोई वैष्णव अपने घर आय अचानक महा प्रसाद लेय तब जानियें जो श्री ठाकुर जी आरोगे होयगे वैष्णव ऊपर नारायणदास को ऐसो भाव हुतो ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

बहुरि एक दिन नारायण दास श्री गोकुल चंद्रमा जी कौ शृंगार करि रसोई में गये तहां शृंगार भोग कों सिद्धि करि कें सरायवे कों थार धर्यो इतने में एक वैष्णव नें नारायण दास के पास आय कें वधाई दीनी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू गोकुल ते पधा

रत हैं सो नारायण दास सुनत ही ताती खीर कों दवरा में मेलि श्री ठाकुर जी को भोग समर्पि उतावले श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आए तब आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करकें दंडवत कीनों सो श्री आचार्य महाप्रभून के चरणारविंद ऊपर माथौ मेलि रहे तब नारायण दास को माथौ पकरि आप श्री हस्त सों उठायो और पूछो जो श्री गोकुलचन्द्रमा जी के यहां कहा समय है तब नारायण दास नें कही जो महाराज अबही सिंगार भोग समर्पि कें आयो हूं सो सुनि कें श्री आचार्य जी महाप्रभू तत्काल पधारे तब जातही स्नान करि कें मन्दिर में हाथ धोय आचमन कों झारी हाथ में लैकें भोग सरायवे कों मन्दिर में पधारे तब भीतर जाय कें देखें तो श्री गोकुलचंद्रमा जी के श्री हस्त खीर में भरे हैं और श्री हस्त कमल खेंचि रहे हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोकुलचन्द्रमा जी सों कही जो महाराज श्री हस्त कों क्यों खेंचि रहे हो तब गोकुलचन्द्रमा जी नें कही जो तुम कों आये जानि कें मोकों नारायणदास ताती खीर समर्पि कें तुमारे पास गयो सो खीर मेरे हाथ सों ताती लागी सो मैंनें थोरी सी चाट कें हाथ झटके सो सब मन्दिर में छींट लागी हैं और मेरे हाथ और ओठ राते भए हैं सो श्री गोकुलचन्द्रमा जी के हाथ और ओठ अजहूं लाल हैं पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें खीर पंखा सों सीरी

करि भोग समर्पि कें वाहर आये तव नारायणदास सों खीजे औंर कह्यौ जो तेनें श्री ठाकुर जी कौं तेनौ खीर समर्पी तव नारायणदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो में राज कौं पधारे जानि उतावलो राज पास आयौ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो आज पीछें ऐसो काम मति करियो पाछें समय भयो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें भोग सरायौ तव श्री गोकुलचंद्रमा जी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दोउ श्री हस्त पकरि कें कह्यौ जो तुम खीर महाप्रसाद लेउ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो महाराज जाति व्यवहार कौ कठिन है तव श्री गोकुल

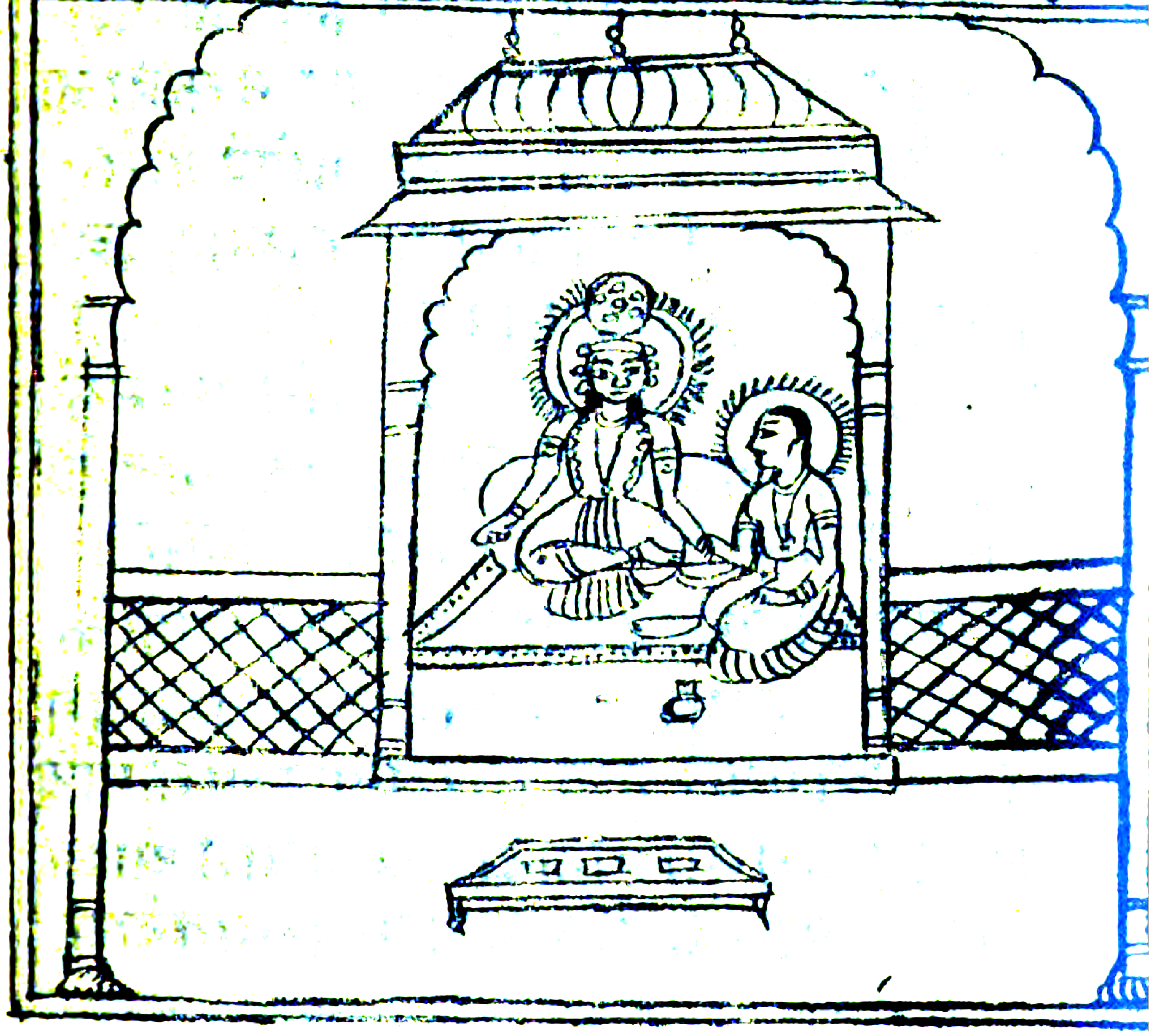

चन्द्रमाजी नें कह्यौ जो यह मेरी आज्ञा है ताते तुम कछु विचार मति करौ खीर कौ महा प्रसाद लेउ तब श्री गोकुलचंद्रमाजी नें खीर कौ महाप्रसाद हो सो अपने आगे ही श्री आचार्य जी महा प्रभून कों लिवायौ तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें लीनो तादिन ते खीर अनसखड़ी में होत है नारायणदास सों श्री गोकुल चन्द्रमा जी ऐसी भांति सेवा करवावते वे नारायणदास ऐसे भगवदीय है ताते श्री गोकुलचन्द्रमा जी ऐसी कृपा करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि कितनेक दिन पाछें नारायण दास की देह थकी सो बहुत आशक्ति भई तब एक दिन श्री गोकुल चन्द्रमाजीने नारायणदास सों कह्यो जो नारायनदास तू कछु मांगि तब नारायन दास ने कही जो महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्री गुसांई जी के घर पधार सेवा करवावो नारायन दास के मन में यह जो श्री ठाकुर जी और कहूं सुख न मानेंगे सेवा आछी भांति सो न होयगी सो नारायणदास नें अंत समें श्री ठाकुर जी के पास यह मांग्यो पाछें कितनेक दिन में नारायणदास की देह छूटी तब श्री गोकुलचन्द्रमा जी ने कितेक दिन तांई कृष्णदास स्वामी के पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर मथुरा में पधारे सो श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथ जी के माथे पधराय दीए सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय

है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥॰

वार्ता प्रसंग ३ ॥

वैष्णव १४ ॥ सम्बन्ध ५८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक क्षत्राणी महावन में रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणीकों चारि स्वरूप प्राप्त भए हैं सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महा प्रभून के आगें आनि राखे सो तिन चारों स्वरूपन के नाम एक तो श्री नवनीत प्रिया जी और एक श्री गोकुल चन्द्रमा जी और एक श्री ललित त्रिभंगी जी और एक श्री लाडले जी ये चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महा प्रभून नें चार वैष्णवन के मांथे पधराय दीए सो या भांति श्री गोकुल चन्द्रमा जी तो नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे पधराये और श्री लाडले जी जीयदास क्षत्री के मांथे पधराये और श्री ललित त्रिभंगी जी देवा क्षत्री के माथे पधराये और श्री नवनीत प्रिया जी गज्जन धावन के मांथे पधराये या भांति चारों स्वरूप चार वैष्णवन के माथे पधराय दीए तब चारों वैष्णवन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह मेरे सर्वस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे माथे पधराये हैं सो इनकी सेवा तुम नीकी भांति सों करियों और तुम सों जब सेवा न होय आवै तब हमारे घर पधराय जैयों॰

पाछें नवनीत प्रिया जीने तो कछूक दिन गज्जन धावन के माथे सेवा करवाई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून के घर पधराये सो सब तो गज्जन धावन की वार्त्ता में लिख्यो है और श्री गोकुलचन्द्रमा जीने कितनेक दिन ताई नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे सेवा करवाई पाछें कृष्णदास स्वामी के पास सेव करवाई पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे पाछें श्री गुसांई जीने श्री रघुनाथदासजी के माथे पधराये सो प्रकार नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्त्ता में लिख्यो हैं और श्री लाडलेजी को प्रकार सब जीयदास की वार्त्ता में लिख्यो है सो अब श्री आचार्य जी के कुल में बिराजत हैं सो ललित त्रिभंगी जी अंतरध्यान भए सो प्रकार देवा क्षत्री कपूर की वार्त्ता में लिख्यो है सो वह क्षत्राणी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही ताकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव १५ सम्बंध ५८ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जीयदास क्षत्री सूरत तिन की वार्त्ता लिख्यते

सो जीयदास के माथे श्री आचार्य जी महाप्रभूनने श्री लाडिले जी की सेवा दीनी सो जीयदास के पास श्री लाडिले जीने चार पहर सेवा करवाई सो जीयदास के चार बेटा हुते तिन में पुरुषोत्तमदास

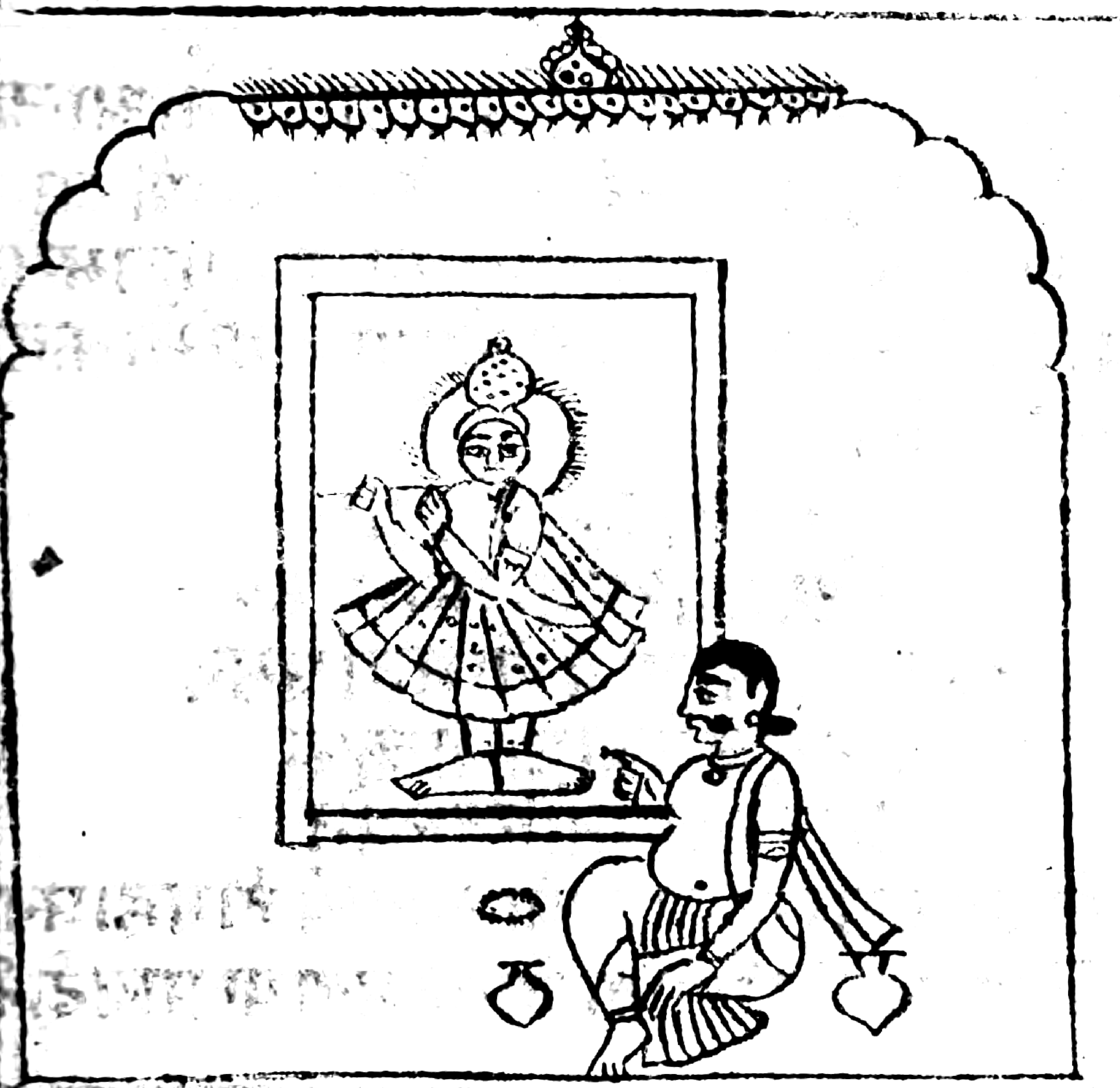

छबील दास इन दोउ भाईन नें कोई एक दिन सेवा कीनी पाछें दोउ भाईन के संतति न भई तव इनके पाछें इन के मामा कृष्णदास चोपडा हते तिन के माथे श्री लाडले जी पधारे सो कितेक दिन तांई कृष्ण दास चोपडा सों सेवा करवाई सो भली भांति सों सेवा कीनी सो एक समय महामरी आई सो कृष्णदास कें घर के सव कुटुम्व की देह छूटी तव कृष्णदास अकेले रहे तव कृष्णदास के मित्र हरजी तथा मथुरामल्ल खत्री हते सो कृष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिन तांई कृष्णदास और हरजी दोउ मिल कें सेवा कीनी पाछें कृष्ण दास की देह छूटी तव हरजी भाईनें डेढ़ वर्ष लों सेवा-

कीनी पाछें श्री गुसांई जी के घर पधारे सो श्री ल्ला डल्ले जी अब विराजत हैं सो वे जीय दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो कहां तांई लिखियै ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वैस्नव ॥९६॥ सम्बन्धर्द०

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक देवा छत्री कपूर
तिनकी वार्ता लिख्यते

सो देवा कपूर के माथे श्री आचार्य जी महा प्रभून नें श्री ललित त्रिभंगी जी की सेवा पधराय दीनी

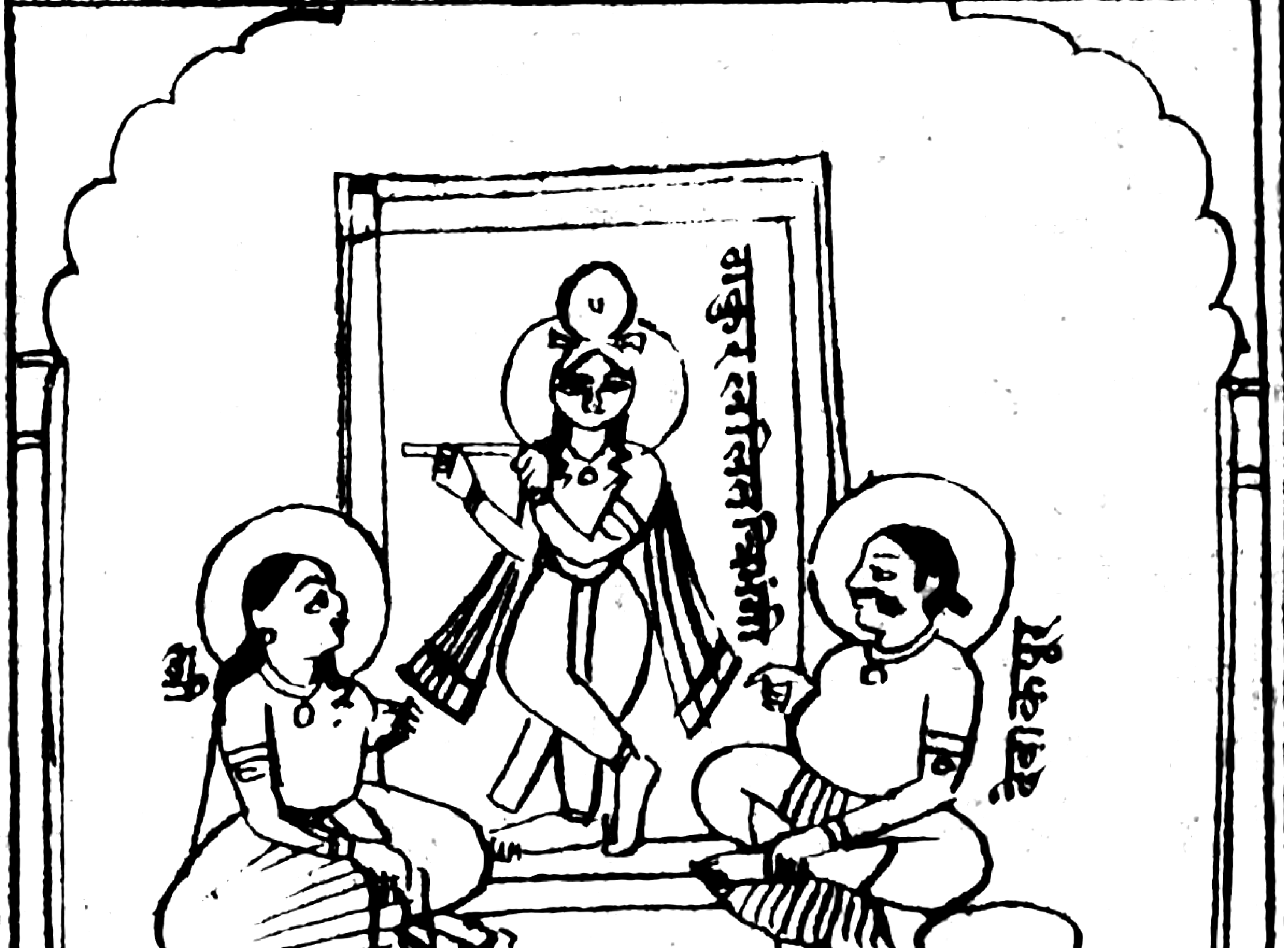

सो देवा कपूर की जव लों देह रही तव लों सेवा कीनी ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताकौ संस्कार कर आये ता पाछें मन्दिर उघार कें देखें तौ श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सव धरी हैं एक श्री ठाकुर जी नाहीं हैं सो जानें कहां अन्तर ध्यान भए यातें यों जानी परी जो देवा कपूर के चार वेटा हुते पर उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुर जी तौ स्नेह के वस हैं सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई तातें देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आचार्य जी महा प्रभून की ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये॥

॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव १७ ॥ सम्वन्ध ८१ ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक दिन कर दास सेठ तिनकी वार्त्ता लिख्यते॥

सो दिन कर दास कों कथा के ऊपर वहुत रुचि हुती सो श्री आचार्य जी महा प्रभू आप अडेल में कथा कहते तहां दिन कर दास नित्य सुनते सो एक दिन दिन कर दास रसोई करत हुते सो आटौ सान्यौ हुतौ ऊपरा वनाय दीने हे लोटी कोरी राखी हुती इतने में श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक जल घरिया जो श्री ठाकुर जी कौं जल भरिवे कौं आयौ तव दिन कर दास ने पूछी जो श्री आचार्य जी महा प्रभू कहा करत हैं तव वा जल घ-

रिया नें कह्यो जो पोथी खोली है अब कथा कहैंगें तब दिनकर दास नें काची ही अंगाकरी लीनी॰ सेकी नाहीं वेगि उठि वस्त्र पहर कें आयो आय कें कथा सुनी श्री आचार्य जी महाप्रभु कथा कह रहे हैं तब वा जलघरिया नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज दिनकर दास नें काची॰ अंगाकरी लीनी सेकी हू नाहीं तब दिनकर दास सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो तू काची अंगाकरी क्यों खाय आयो है तब दिनकर दास नें कही जो महाराज अंगाकरी तो नित्य लेउंगो परि यह अम्रत कथा कब सुनूंगो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अब ते तू रसोई करि श्री ठा…

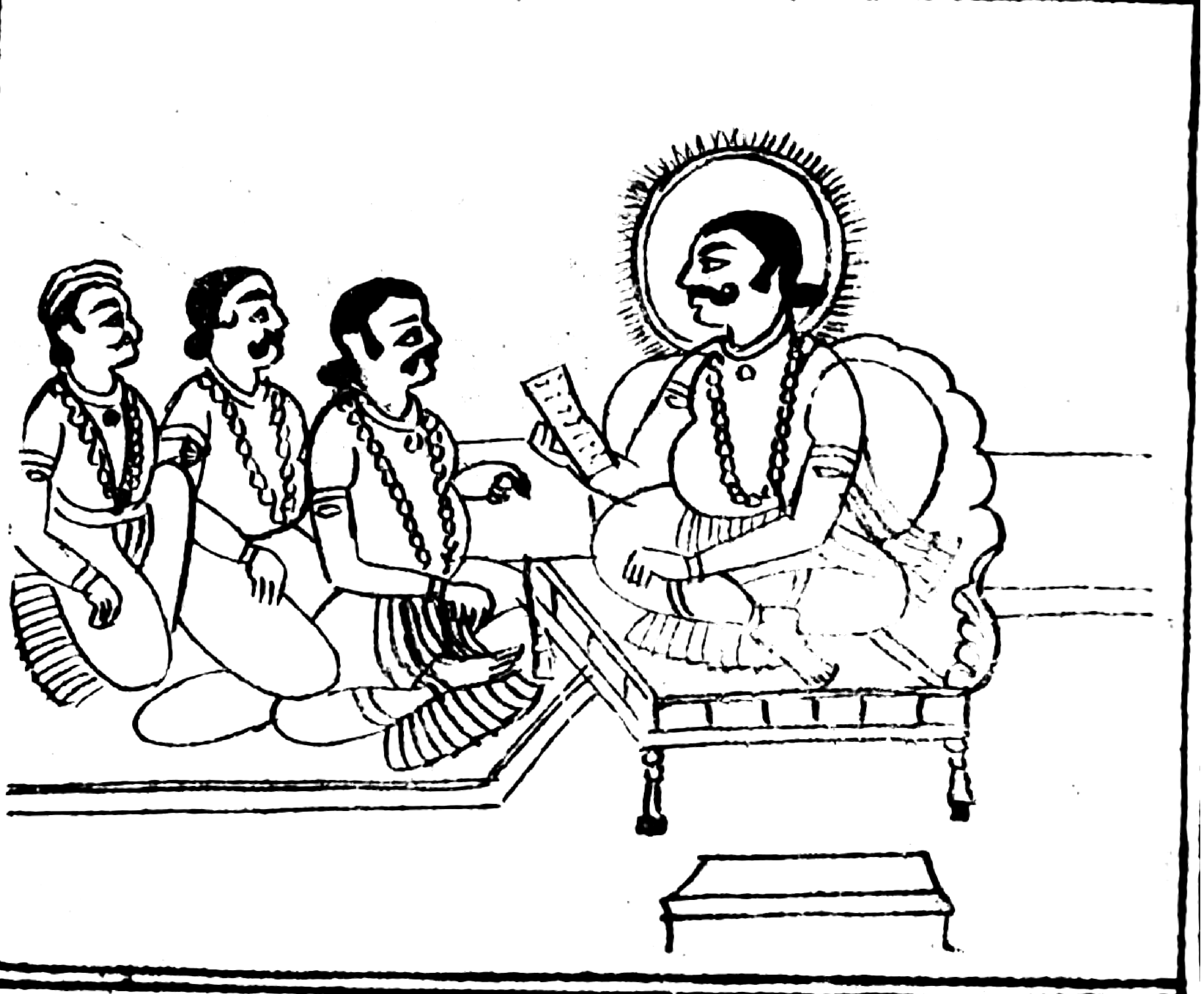

कुरजीकौं भोग समर्पि प्रसाद लेहू पहुंचि कें जव आवैंगो तव पोथी खोलूंगो तेरे आगा विना कथा न कहेंगे आजते हमारी कथा कौ श्रोता तू तातें तू निश्चंत होय कें आइयो तव ता दिन ते दिनकरदास वेगिही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जव कथा के समय आवते तव श्री आचार्यजी महाप्रभू पोथी खोलते सो वे दिनकरदास सेठ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कौ पार नाहीं तातें अव कहां तांई लिखिये ॥ ❋

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव १८ ॥ संवंध ६२ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक मुकन्ददास कायस्थ तिनकी वार्ता लिख्यते

सो मुकन्ददास आप कवि हुते सो कवित करते सो कवित्त वहुत कीये हैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री ठाकुरजी के वहुत कवित कीये हैं और मुकंद सागर एक ग्रंथ कीयो सो एक समय मुकन्ददास उज्जैन के कारकुन होय कें आए तव तहां के पंडित सव आय मिले तव पंडितन नें मुकन्ददास सों कह्यौ जो तुम हमारे पास श्री भागवत सुनों तो सुनावें तव मुकन्ददास नें कह्यो जो तुम हमारे भागवत जानत हो तव उन पंडितन नें कह्यौ तुम

कहा भागवत न्यारी है तव मुकन्ददास नें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो पाछें महीना लों सुनायो· परि आप काहू पास कथा न सुनी कोई पंडित कदाचित व्याख्यान करतो ताकों बहुत भांति दूषण देके आवते जो काहे ते सुबोधिनी में बहुत प्रवेश हो मुकन्ददास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के चरणकमल पर दृढ़ता हुती ताते सुबोधिनी स्फुर्दरूप हुती ऐसें करत करत कितनेक दिन में उज्जैन में मुकन्ददास की देह छूटी तव काहू वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आय कही जो महाराज मुकन्द दास नें अवंतिका पाई तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो ऐसें मति कहो तातें ऐसें कहो जो मुकन्द दास कों अवंतिका नें पाए सो वे मुकन्ददास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसें परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनको वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिखिये॥

वार्ता प्रसंग १॥ वैष्णव १८॥ सम्बन्ध ६३॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक प्रभु दास जलोटा।
क्षत्री सीहनन्द के।
वासी तिनकी।
वार्ता।

सो प्रभुदास के सेव्य ठाकुर श्री मदन मोहन जी सो राज नगर सिकन्दर पुर में बैठे हैं सो जव श्री आचार्य जी महाप्रभु मथुरा पधारे तव प्रभुदास साथ हे

तव एक दिन श्री आचार्य जी महा प्रभू आप संध्या वन्दन करि कें स्नान करत हुते विश्रांत के ऊपर तहां दो चार वैस्नव और बैठे हे तव तहां रूप सनां

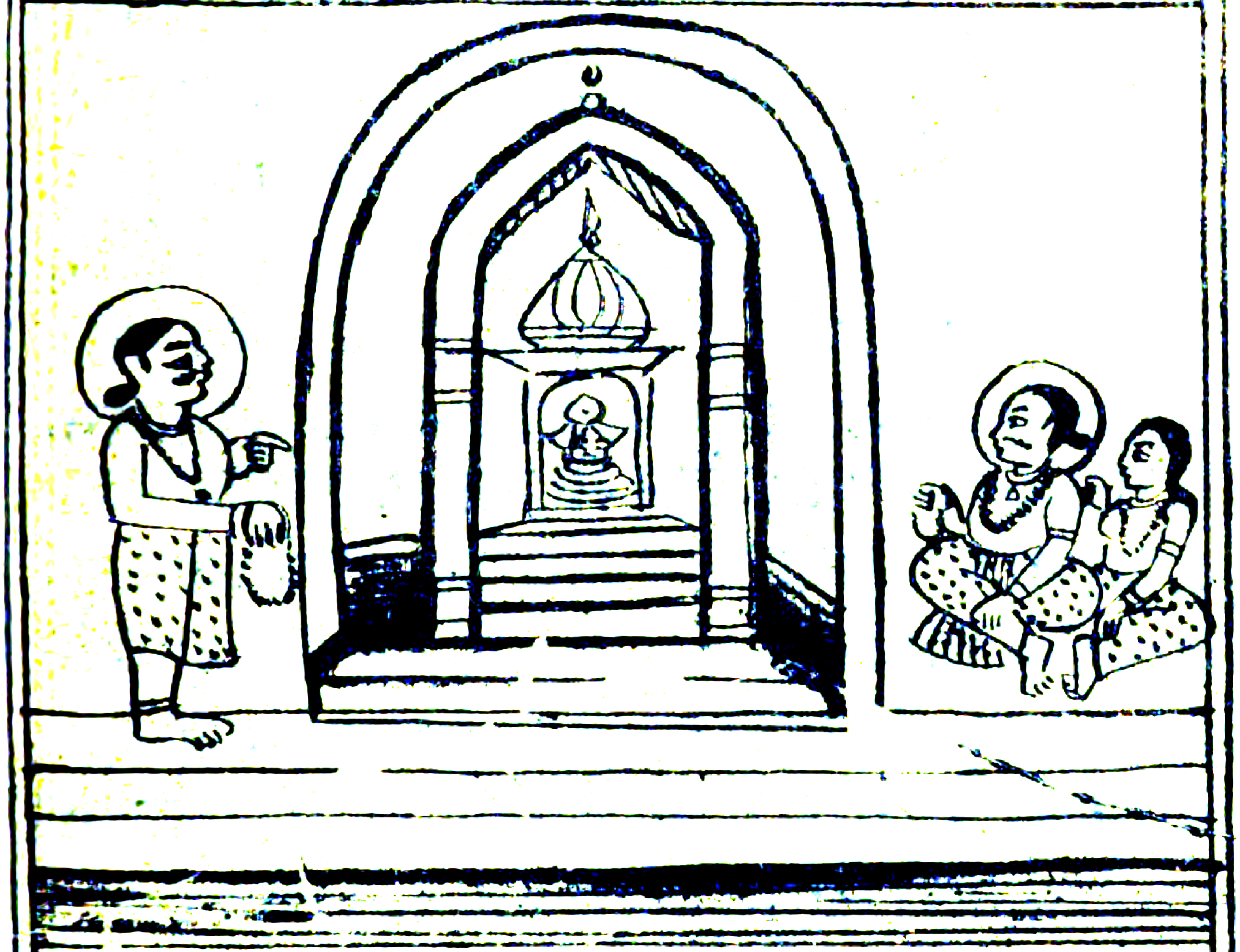

तन कृस्न चैतन्य के सेवक नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों पूछी जो यह वैस्नव कौन हैं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो ये हमारे सेवक हैं तव रूप सनांतन नैं कह्यो जो ऐसे दुर्लभ क्यों रहत हैं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो मैं इन को बहुत वरजे जो तुम या मार्ग में मति परो परि इन मेरो कह्यो न मान्यो ताको फल ये भोगत हैं परि रूप सनातन कछू समझे नाहीं तव श्री आचार्य जी महा प्रभून के दर्शन करि कें रूप सनातन तो गए पाछें

कितनेक दिन में एक वैस्नव रूप सनातन के साथ को श्री जगन्नाथ जी के दर्शन को गयो तहां कृस्न चैतन्य मिले तब कृस्न चैतन्य नें वा वैस्नव सों श्री आचार्यजी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे और कह्यो जो नीके हैं कहां मिले हुते कहा करत पाये हुते तब वा वैस्नव नें कृस्न चैतन्य सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते और विश्रांत ऊपर मिले हुते बहुत नीके हैं और श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों रूप सनातन हू गए हुते विश्रांत ऊपर सो श्री आचार्यजी महाप्रभून सों रूप सनातन नें और वैस्नवन की बात पूछी जो ये ऐसे दुर्लभ कों रहत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही प्रभूदास की बात कही जो में इनकों बहुत बरजे परि इन मेरो कह्यो न मान्यो ताको फल ये भोगत हैं सो यह बात सुनि कें कृस्न चैतन्य कों मूर्छा आई सो एक मुहूर्त लों मूर्छा रही पाछें सावधान भये तब फेरि पूछी जो तुमनें कहा बात कही तब वा वैस्नव नें फेरि कह्यो जो श्री आचार्यजी प्रभूननें कह्यो जो या मार्ग में मेंमति परो तब कृस्न चैतन्य कों फेरि मूर्छा आई सो दोय महूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐसें तीन बार पूछो सो तीनों बार मूर्छा आई चौथी बार फेरि वा वैस्नव सों पूछी जो कहा कही तब वा नें कृस्न चैतन्य सों कह्यो जो अब मोपै कही न जाय जो यह बात ऐसी है जो केवल विरही होय सो जा

नें रूप सनातन कहा जानें ॥

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय प्रभूदास नें वेगि रसोई करी सो दार तो काची रही और अंगाकरी जर गई तब प्रभूदास के मन में आई जो ऐसी सामग्री श्री ठाकुरजी कूं कहा समर्पूं सो चरणोदक मेलि कें प्रसाद लीयो और श्री ठाकुर जी तो वाट देखत ही रहे जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और मैं आरोगूंगो और प्रभूदास नें तो विगरी सामग्री जानि के न समर्पी तब श्री ठाकुर जी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो आज मोकों प्रभूदास नें भोग समर्प्यौ नाहीं मैंनें वाट देखी जो अब मोकों प्रभूदास भोग समर्पेगो और मैं आरोगूंगो परि प्रभूदास नें भोग समर्प्यौ तब उत्थापन के समय प्रभूदास दर्शन कों आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें प्रभूदास सों कह्यो जो आज तेंनें श्री ठाकुर जी के विनु समर्पे प्रसाद लीयो तब प्रभूदास नें सांची वात कही जो महाराज दार तो काची रही और अंगाकरी जर गई ताते ऐसी सामग्री जानि भोग समर्प्यौ नाहीं चरणोदक मेलि प्रसाद लीयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो ऐसी रसोई क्यों करी श्री ठाकुर जीने तो वड़ी वार लों वाट देखी जो प्रभूदास भोग समर्पेगो और मैं आरोगूंगो ताते तैंने ऐसी रसोई क्यों करी सावधान ह्वैकें स्नान करी पाछें सावधान ह्वैकें रसोई करन लगे

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू व्रज में पाव धारे हुते तब प्रभूदास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून नें व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछें भोग सरायो तब प्रभूदास सों श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो प्रसाद लेउ तब प्रभूदास नें कह्यो जो महाराज मैंनें स्नान नाहीं कीनो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें प्रभूदास सों कही जो तू देखि तब श्लोक करि कें दिखायो ॥ ॰ सो॥

✻ श्लोक ✻

वृक्षे वृक्षे वेणु धारी पत्रे पत्रे
चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्र
लक्ष्या लक्ष कथा कुतः ॥१॥
जला दिभिः रजः पुण्यरज सो
पि जलंवरं ॥ पत्र वृंदावनंत
त्र स्नानां स्नान कथा कुतः ॥२॥

यह श्लोक पढ़ि कें प्रभूदास कों दिखायो व्रज कों स्वरूप वृक्ष वृक्ष बिषें वेणु धारी पत्र पत्र विषें चतुर्भुज देखे या भांति कों प्रभूदास कों दर्शन करवायो ऐसो सादृष्य व्रज कों स्वरूप दिखायो पाछें प्रभू दास नें प्रसाद लीयो दंडवत करि कें प्रभूदास के ऊपर श्री आचार्य जी महा प्रभून की ऐसी कृपा हुती सो आप नें कृपा करि कें व्रज को स्वरूप दिखायो ॥ ॰ ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप मन्दिर में हुते तव ऐसी मन में आई जो श्री ठाकुर जी को भोग समर्पिये सो दही को भोग समर्पिये ता समें प्रभूदास वाहिर हुते सो प्रभूदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंतःकरन की जानी तव प्रभूदास वाहिर गये तव गांव में जाय कें एक अहीरी मिली तासों पूछी जो तेरें दही है तव वा अहीरी ने कह्यौ जो हां दही है तव प्रभूदास ने कह्यौ जो लाउ तव अहीरी दही ले आई तव प्रभूदास नें कह्यौ या को मोल कहि तव वा अहीरी नें कही जो तू मोकों कहा देयगो तव प्रभूदास नें कह्यौ जो तू मांगेगी सो देउंगो तव वा अहीरी कही जो एक टका दे और कहा मुक्ति देयगो तव प्रभूदास ने कही जो यह तो टका ले और तोकों मुक्ति दीनी तव वा अहीरी नें कही जो तू मोकों लिख दे जो मुक्ति दीनी तव प्रभूदास नें लिख दीनी और दही लैकें घर आए सो दही भीतर दीयो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें वह दही भोग समर्प्यो सो श्री ठाकुर जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयो पाछें गुसांई जी जव सांझ के समय दर्शन कों आये तव यह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो महाराज प्रभूदास नें दही के ऊपर मुक्ति दीनी सो लिखि आये तव श्री आचार्य जी महाप्रभू जी ने प्रभूदास सों पूछी जो प्रभूदास वह दही अति स्वाद भयो हुतो

सो तैनें वाकौ मोल कहा दीयो हुतो तब प्रभूदास नें कह्यौ जो महाराज वा अहीरी नें एक टका और मुक्ति मांगी सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तैंनें कछु न दीनों तब प्रभूदास नें कही जो महाराज हूं कहा करं जो मोपै मांग्यो हुतो सो दीनों जो भक्ति मांगती तौ भक्ति देतो पाछें वा अहीरी की सखी नें कह्यौ जो तोकों तो ठग लीनो तब वा अहीरी नें सखी सों कह्यौ जो तू कहा जानें ये बड़े भागवद भक्त हैं इन कौ वचन सत्य है तब कितनेक दिन में वा अहीरी की देह छूटी तब यम दूत आए इतने में विष्णुदूत हू आए सो आपुस में झगरन लागे तब यमदूतन सों विष्णु दूतन नें कही जो याकों तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक प्रभूदास नें मुक्ति दीनी है सो कागद याकी साड़ी की खूंट ते बंध्यो है सो यह बात वा अहीरी के संग सोदरेन नें सुनी परि आंखि न देखे पाछें वा अहीरी कों विष्णुदूत लै जानि लगे तब वा अहीरी नें विष्णुदूतन सों कह्यो जो मेरी सखी कौं दर्शन देउ वाकों अविस्वास है पाछें विष्णुदूतन नें वाकों दर्शन दीनें तब वह कहन लागी जो मोहू कों लै जाउ तब विष्णु दूतन नें कह्यौ जो हमारे हाथ कहा है हम तो आज्ञाकारी हैं तातें तू प्रभूदास सों कहि तब वह सखी प्रभूदास के पास आई तब प्रभूदास नें वाकों श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम दिवायो

तब दाह को कार्य भयो पाछें विस्मृदत वा अहीरी कों लै गये तब वाकी मुक्ति भई पाछें वा अहीरी के सगे कुटुम्ब नें वाकी माडी के खूंट ते कागद खोलि कें देखो तब बांचि कें गैवनले रहे सो प्रभूदास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी सामर्थ्य हतो सो वे प्रभूदास बडे भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ता प्रसंग ४ वैष्णव २० सम्बन्ध ६७

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक प्रभूदास ॥ भाट सींहनन्द ॥ के तिनकी ॥ वार्त्ता ॥

सो वे प्रभूदास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करते सो बहुत दिन सेवा करत बीते पाछें वृद्ध भयो तब बहुत अशक्ति भए तब जानी यह देह दिन चार पांच में छूटेगी तब सावधान ता छूटी असावधान भए तब सगरे मिल कें प्रभूदास कों प्रयोदक तीर्थ है तहां लै गये जब प्रयोदक आयो तब सावधान भए आंखि खोल कें देखें तो प्रयोदक तीर्थ है तब प्रभूदास ने कह्यो जो मोकों इहां क्यों लाए हो तब सगरे जनेन नें कह्यो जो यह प्रयोदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देखि कें लाये हैं तब प्रभूदास ने कही जो मोकों प्रयोदिक में कहा काम है मैं तो श्री आचार्य जी महाप्रभून

कौ सेवक हौं मोकों प्रथादिक कहा कृतार्थ करोगो मोकों बरस १ लों इहां राखोगे तोऊ मेरी देह यहां न छूटैगी ताते मोकों सीहनन्द ले चलो जब अपने श्री ठाकुर जी के चरण देखूंगो तब देह छूटैगी तब दिन पन्द्र सात लों राखे पीर दिन दिन प्रभूदास को शरीर नीको भयो सावधान भए तब फिर सीहनन्द लै गये तब अपने सेव्य श्री ठाकुर जी को देखे दर्शन कीर कें दंडवत कीनो तब प्रभूदास नें श्री ठाकुर जी सों कह्यौ जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें तुम कों मेरे साथे पधराए हैं और ये तो बावरे लोग तुम्हारो आश्रय छुडाय कें मोकों तीर्थ आगें ले गये पीर श्री आचार्य जी महाप्रभू ऐसी क्यों करें जो मेरी देह तीर्थ पै छूटे पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा सिंगार करिकें वेगिवेगि भोग समर्प्यौ भोग सराय अनोसर कीयौ पाछें सबन ते कह्यौ जो तुम वेगिवेगि प्रसाद लेउ ता पाछें मेरी देह छूटैगी तब सब प्रसाद लै चुके तब सबन सों प्रभूदास नें जै श्री कृष्ण कह्यौ और प्रभूदास नें तत्काल देह छोडी पाछें सीहनन्द में एक कीरत चौधरी हुतौ सो प्रभूदास की निन्दा करन लाग्यो और कह्यो जो प्रभूदास प्रथादिक तें उलटो फिर आयौ और सीहनन्द में देह छोडी ऐसी निन्दा करतौ सो एक दिन रात्रि कों सोयो हुतो तहां कोऊ चारि जने हाथ में मुगदर लैकें आये सो कीरत चौधरी कों बहुत मार्यो तब कीरत चौधरी नें कह्यो जो तुम मोकों क्यों मारत हौ तब उन नें कह्यो जो प्र

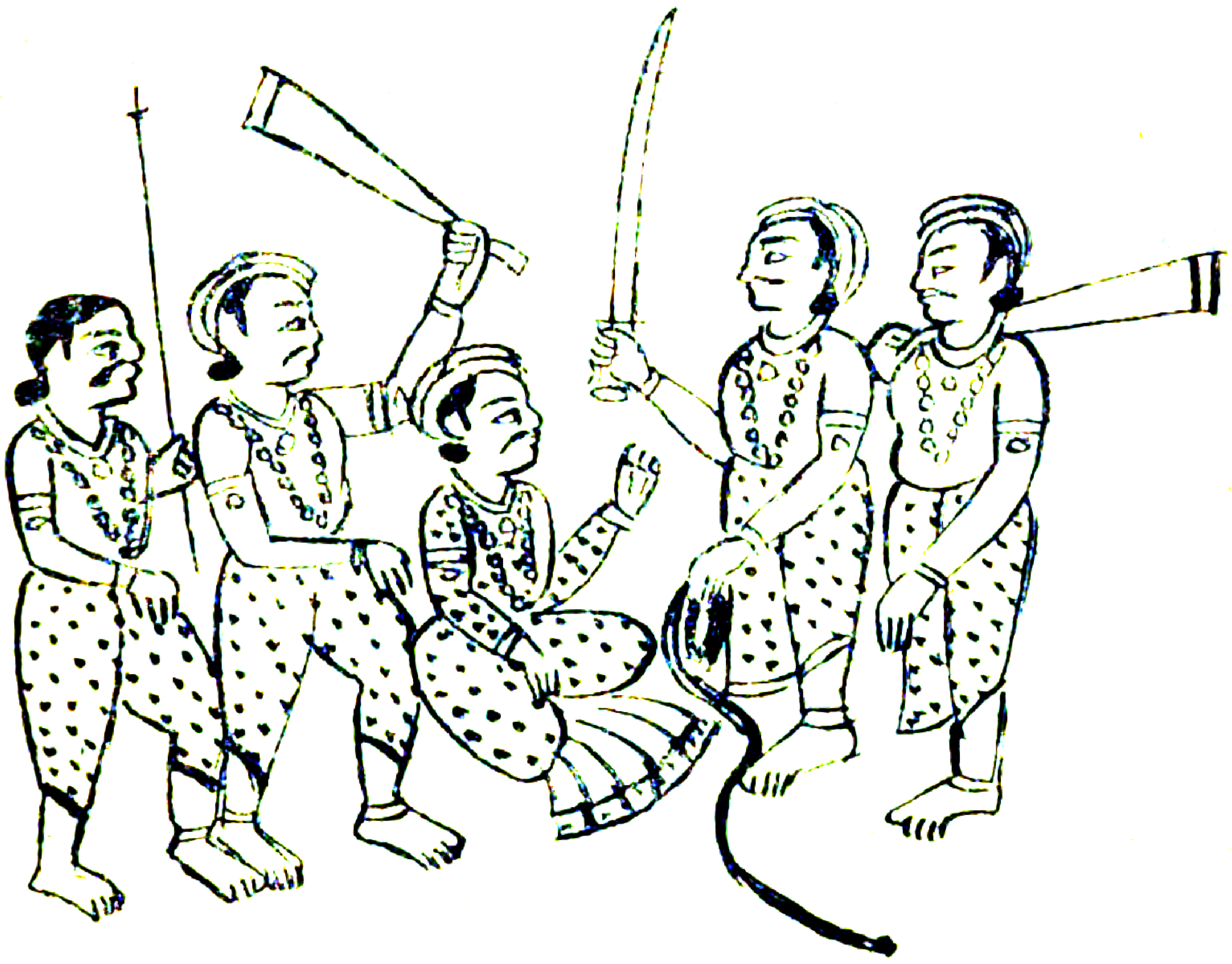

भूदास की निन्दा तू क्यों करत है तव कीरत चौधरी नें कह्यौ जो अव मैं निन्दा न करूंगो और वहुत मनुहार करी तव उन कह्यौ जो तू फेरि निंदा करैगो तौ तोंकों याही भांति सों मारेंगे तव कीरत चौधरी नें कह्यौ जो अवतें निन्दा न करूंगो भक्ति करूंगो पाछें स्तुति करन लागे तव प्रभूदास की वात चले तव कीरत चौधरी कहै जो वे वड़े महापुरुष हैं तव और लोग कहन लागे जो पहले तौ तुम प्रभूदास की निन्दा करत हुते और अव स्तुति क्यों करत हौ तव सवन कों कीरत चौधरी ने अपने देह की व्यवस्था दिखाई और कह्यौ जो रात्रि कौं कोउ चारि जने आय के मार मारहा

ड़ कृतन कीयो तातें भगवदीय की निन्दा सर्वथा न करनी और जो करे तो या लोक में यही हाल होय और परलोक में अघोर नर्क में जाय सो वे प्रभूदास भाट श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✻

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२१॥ ✻

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तम दास आगरे में राजघाट ऊपर रहते हुते तिनकी वार्ता है ॥ ✻

सो एक समय श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तव पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तव पुरुषोत्तम दास की स्त्री छिप रही तव पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जी नें पूछी जो तेरी स्त्री कहां गई है तव पुरुषोत्तम दास नें कही जो जनेउ टूटो होयगो पाछें श्री गुसांई जी वेगि वेगि रसोई करि दार भात साक चार पांच करे तव रोटी वेलिवे की वीर पुरुषोत्तम दास की स्त्री आई तव श्री गुसांई जी ने पूछी जो अवलों तू कहं ही तव पुरुषोत्तम दास की स्त्रीने कही जो राज कछु काम करत हुती पाछें पुरुषोत्तम दास की स्त्रीने रोटी वेल वेल दीनी तव रसोई सिद्ध भई तव श्री गुसांई जीने श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय पाछें वही थार कटोरा पडगी सव उन पात्रन में श्री गुसांई जी सों कही जो भाजन-

करियै तब श्री गुसांई जीनें कह्यौ जो येतो श्री ठाकुर जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें तातें हम इनपात्रन में भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम दास तथा उस की स्त्री ने कह्यौ जो महाराज की कृपा तें कछु द्रव्य निबट्यौ नाहीं और पात्र नये मंगावेंगे आप इनमें भोजन करिये तब श्री गुसांई जी भोजन करन कों बैठे तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री गुसांई जी के पास बैठि कें पंखा करन लागी और कह्यौ जो महाराज और सामिग्री आरोगो तब श्री गुसांई जी ने कह्यौ जो मोकूं रुचेगी सो मैं आरोगूंगो तब पुरुषोत्तमदास नें कह्यौ जो महाराज श्री नन्दराय जी के घर कैसें आरोगत हो ऐसें कहि कें स्त्री पुरुष दोउ जने श्री गुसांई जी कों बहुत सामग्री लिवाय सो तिन के संकोच के लिये श्री गुसांई जी कहैं जो तुम कहोगे सो करेंगे तब भोजन कीये पाछें अपने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया ऊपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों पोढ़ाये पुरुषोत्तम दास चरण सेवा करन लागे स्त्री पंखा करन लागी पाछें घड़ी एक रहि कें श्री गुसांई जी नें दोउन सों कह्यौ जो अब तुम जाय कें महाप्रसाद लेउ तब उन कह्यौ जो महाराज महाप्रसाद तो नित्य लेत हैं परि तुम्हारी सेवा कब करेंगे सो ये स्त्री पुरुष दोउ जने श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इन की वार्ता अब कहां ताईं लिखिये ॥ ❖

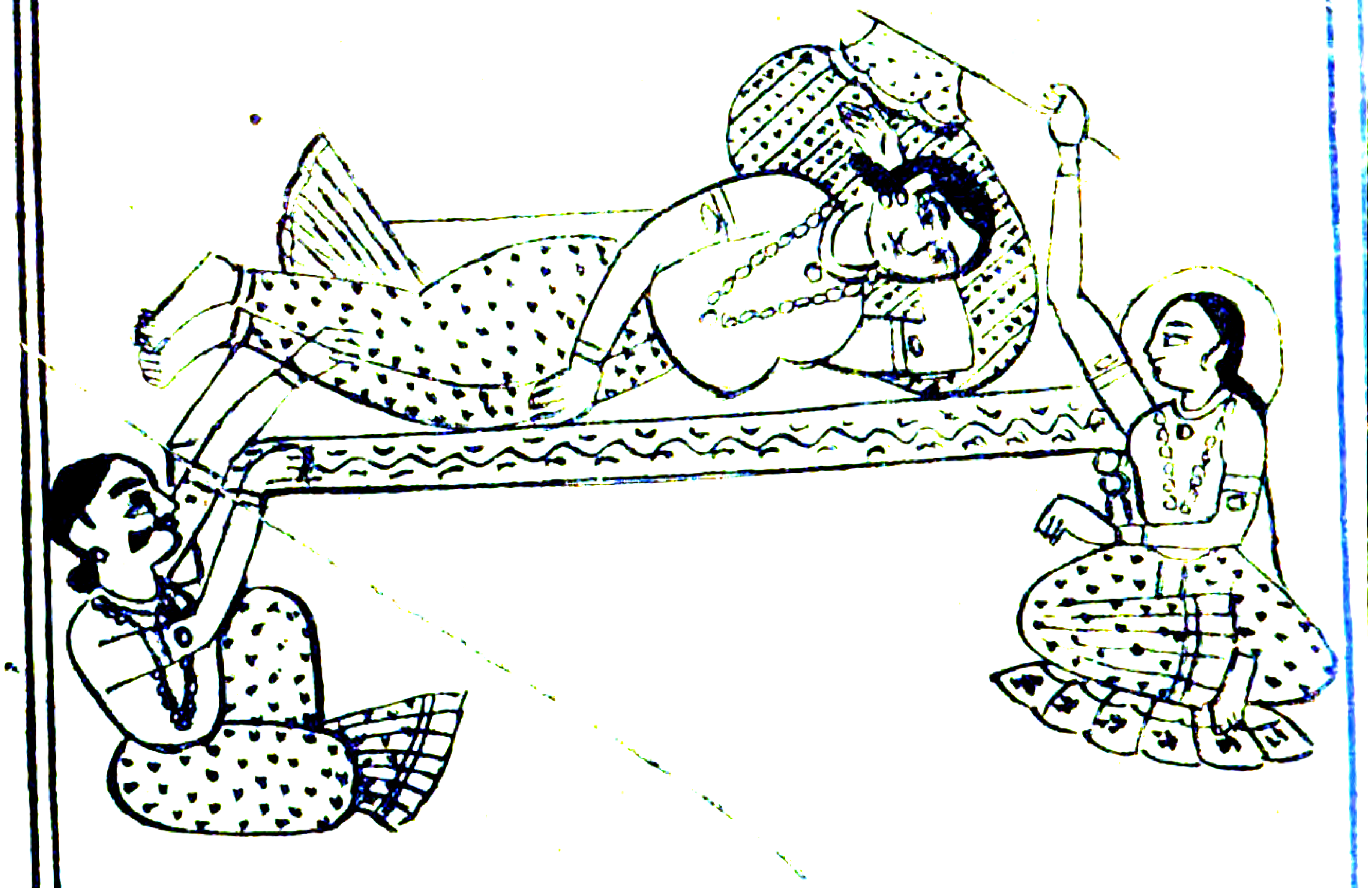

✻ ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२२॥ ✻

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक त्रपुरदास कायस्थ शेरगढ़ के॥
वासी हुते॥
तिनकी
वार्ता

सो त्रपुरदास को श्री आचार्यजी महाप्रभून ऊपर तथा श्री गोवर्द्धननाथजी के विषें बहुत ममत्व हुतो जहां बैठते जहां ठाड़े होते तहां श्रीनाथजी को पीठ न दैकें बैठते पीठ दैकें ठाडे न होते सो त्रपुरदास एक तुरक कें चाकरी करते परगना बहुत

कमायो जो कछु वस्तु आवती सो पहिलें श्रीनाथ जी कों पहुंचावते और मालन साक पहुंचावते ऐसें सदा सर्वदा करते सो एक दिन वा तुरक नें त्रपुरदास कों बन्दीखाने में दीए और कह्यौ जो तेंनें मेरो द्रव्य बहुत खायो है सो जब वह तुरक सोयो तब काऊ चार जनें हाथ में मुगदर लेंकें आए सो आयकें वा तुरक कों खाट तें औंधो पटकि बहुत मारे तब वा तुरक नें कह्यौ जो तुम मोकों क्यों मारत हो

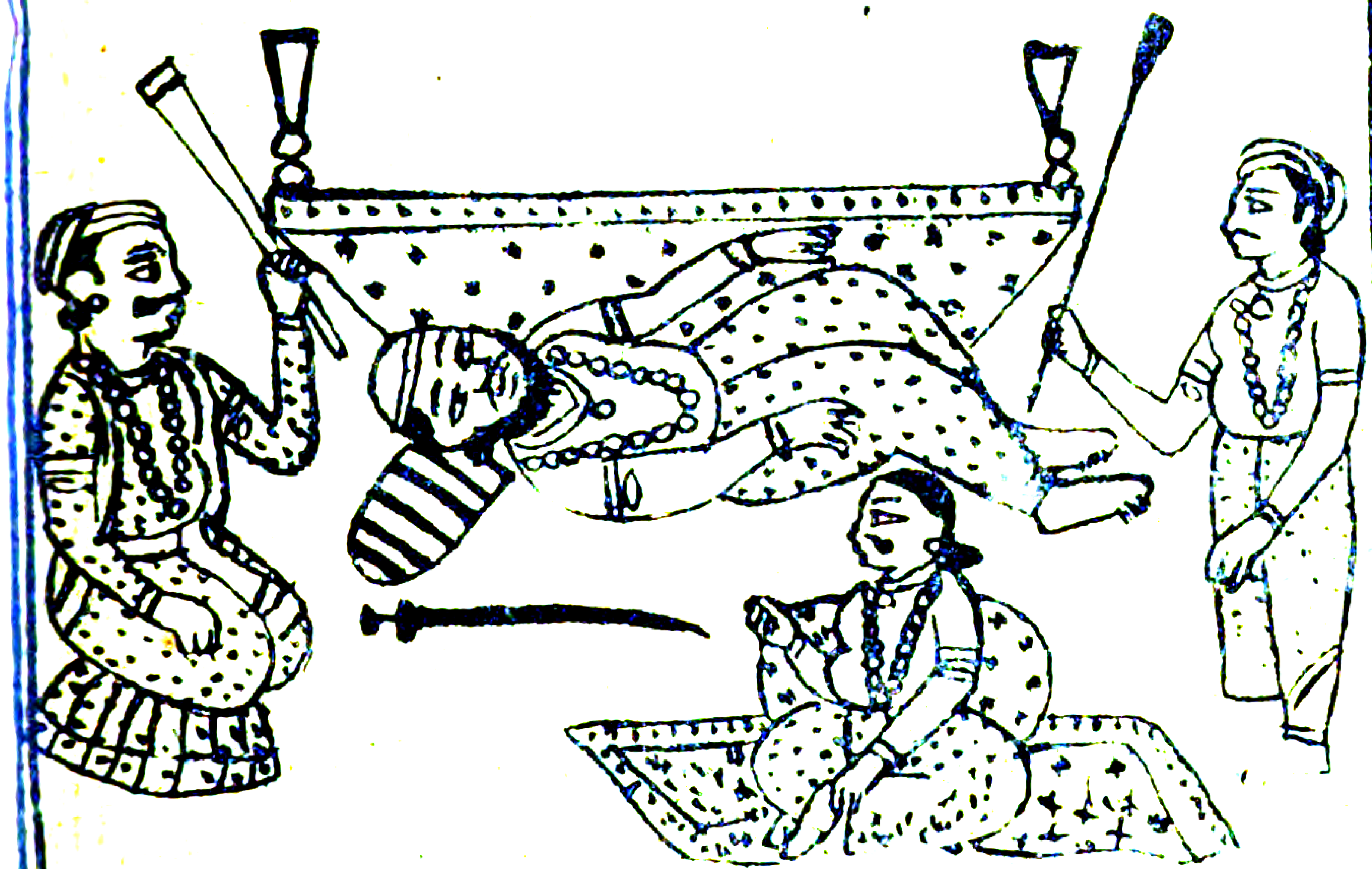

तब उनों नें कह्यौ जो तेंनें त्रपुरदास कों बन्दीखानेमें क्यों दियो है तब वह तुरक बहुत बिलबिलानों हाहा करिकें नाक भूमि में घिस कें उनसों कह्यो जो मोकों तुम मारो मति मैं अबही त्रपुरदास कों

छोड़त हों तब उन कह्यौ जो त्रपुरदास कों न छोड़ेगो तो हम याही भांति सों नित्य मारेंगे ऐसें कह्यौ तब वे तो गये तब वा तुरक नें आयकें अपने लोगन सों कह्यौ जो त्रपुरदास कों बन्दीखाने में तें अबही छोड़ देउ तब मनुष्य त्रपुरदास कों छोड़न गए तब त्रपुरदास नें उनसों कह्यौ जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारें छोड़ियो तब वे मनुष्य फिर आये और वा तुरक सों कह्यौ जो साहिब त्रिपुरदास कहत हैं जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारें छोड़ियो तब वा तुरक नें अपने मनुष्यन सों कह्यौ जो तुम अबही त्रिपुरदास कों छोड़ लावो तब वे मनुष्य वेग ही जाय कें त्रिपुरदास कों छोड़ लाए तब वा तुरक नें त्रिपुरदास सों कह्यौ जो तुम आपने घर जाउ तब त्रिपुरदास नें कह्यौ जो अब तो रात्रि बहुत गई है सवारें जाउंगो तब वा तुरक नें त्रिपुरदास सों कह्यौ जो तू कहा काहू कौ जीव लेयगो तातें तू अबही इतनी बेर अपने घर जाउ तब त्रिपुरदास अपने घर आये॥

❋ वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुर कितनेक दिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरक के साथ अटक गये पाछें एक दिन रसोया नें त्रपुरदास सों कह्यौ जो चरणोदक महाप्रसाद निबट्यौ है रंचकहू नाहीं तब त्रिपुरदास नें रसोइया सों कह्यौ जो पांडे तें नें हम सों पहिलें क्यों न कह्यौ हम चरणोदक महाप्रसाद मगाय देते अब कहा

करियें तव रसोइया चुपि कर रह्यौ तव सवारे उठिकें त्रिपुरदास वा तुरक के दरवार जान लगे तव कह्यौ जो पांडे रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट मति देखियो मेरो आवनों न वनेगो और मन में यह निश्चै कीयौ जो जवलों यहँ चलेगी तव लों काम काज करूंगो और देह जव न चलेगी तव पड़ रहूंगो परि चरणोदक महाप्रसाद लीये विना जल पान न करूंगो यह निरधार कीयो तव तुरक के दर्वार गये तव रसोइया ने स्नान करि रसोई करन लागो तव आधी रसोई भई इतने में एक लरिका वर्ष दस कौ नोन थैली लायौ सो एक थैली में तो चरणामृत और एक

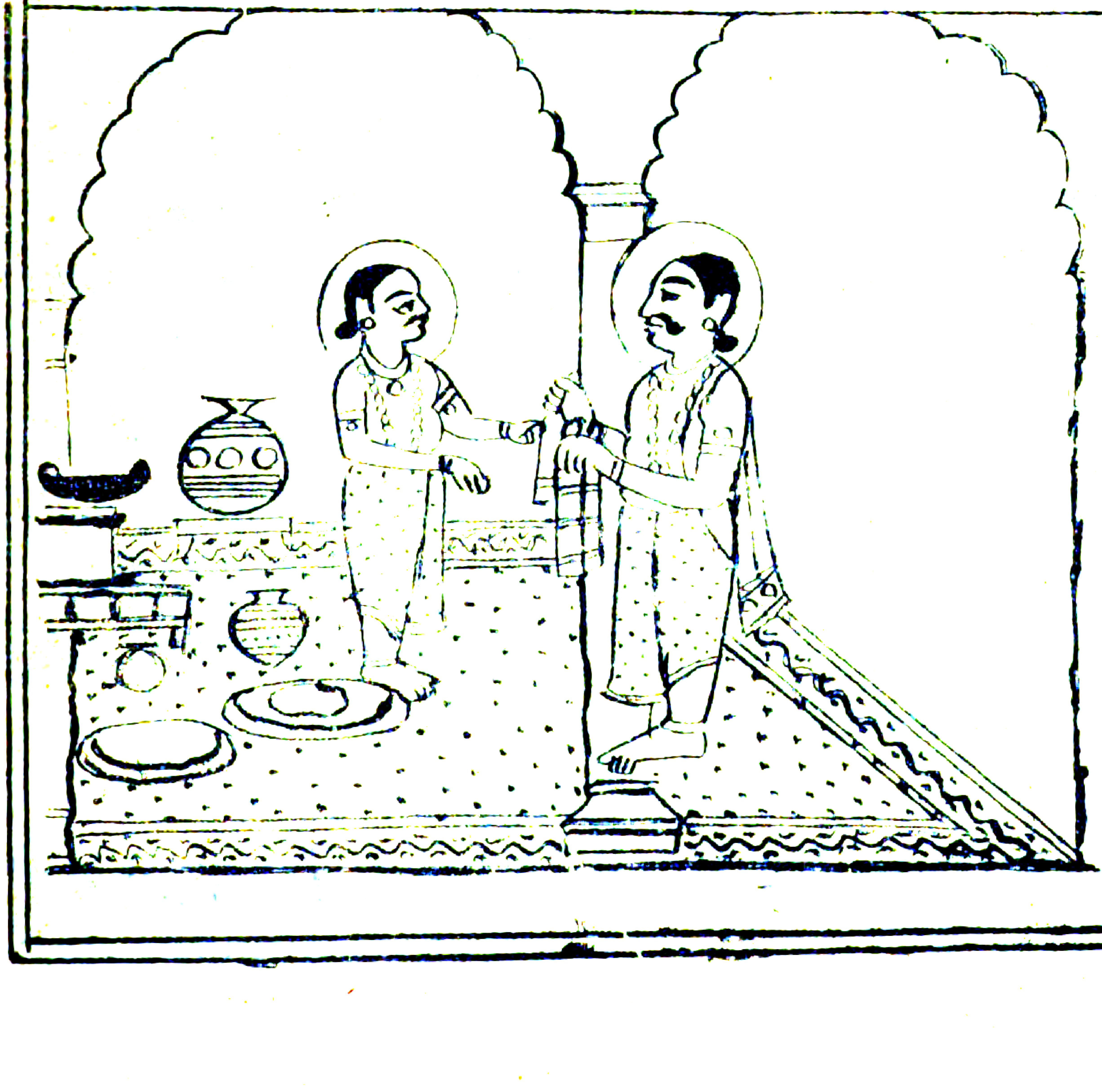

थैली में श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ चरणामृत और एक थैली में श्री नाथजी कौ महाप्रसाद सो वे तीनों थैली रसोइया कौ दीनी और कह्यौ जो ये तीनों थैली त्रिपुरदास ने पठाई हैं सो थैली देकें वह लरिका तुरंतही चल्यौ गयो पाछें रसोई सिद्ध भई तब श्री ठाकुरजी कौ भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सरायो तब रसोईया नें त्रपुरदास कों बुलायवे कों मनुष्य पठायो परि त्रिपुरदास आये नाहीं तब दोय तीन वार मनुष्य बुलायवे कौं पठायो तब त्रपुरदास ने रसोईये सों कह्यौ जो पांडे तुम मोकों काहे कौं बुलावत हो मैं तो चरणामृत महाप्रसाद लीये विना जल पान न करूंगो तब रसोइया नें त्रपुरदास सों कह्यौ जो चरणामृत महाप्रसाद की थैली तो तुमही नें पठाई है एक लरिका वर्ष दश कौ हतो सो तीन थैली देगयो है तब त्रपुरदास नें कह्यौ जो वह लरिका कहां है मोकों दिखाय तब रसोईया नें कह्यौ जो वह लरिका तौ तुरतही थैली देकें चल्यौ गयो तब त्रपुरदास नें जान्यौ जो ये श्री ठाकुर जी के काम हैं तब आप को धिक्कार करन लाग्यो जो मैंनें ऐसो हट क्यों कियो जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करनों पड्यो सो आप धिक्कार बहुत करन लागे जो मैंनें श्री ठाकुर जी कों श्रम बहुत करवायो पाछें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लीये पाछें समर्प्यो महाप्रसाद लीयो ॥

वार्ता प्रसंग २

बहुरि कितनेक दिन में त्रिपुरदास की चाकरी छूटी

सो शीतकाल के दिन आए तब श्री नाथ जी कों कवाय पठावे सो कहां ते पठावे इतनों शकों घर में नाहीं त्रपुरदास की कवाय हू दई जाती सो श्री नाथ जी आप अंगीकार करते तब त्रपुरदास नें कह्यो जो अब कहा कीरिये तब एक दुलि पीतर की हुती सो बेची ताके दामन की गजी मंगाई सो रंगाई ताकी कवाय बनवाय कें श्री नाथ जी कों पठाई सो रंगीन देखि कें भंडारी नें भंडार में डार दीनी तब कितनेक दिन में श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे सो जब श्री नाथ जी को शृंगार करन लागे तब श्री गुसांई जी सों श्री नाथ जी ने कह्यो जो मोकों शीत बहुत लागत है तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो दूसरी अंगीठी लावो तब दूसरी अंगीठी लाए तोहू कही जो मोकों सीत बहुत लागत है तब श्री गुसांई जीनें गद्दल उठायो तबहू श्री नाथ जीनें कही जो मोकों सीत लागत है तब श्री गुसांई जीनें तीसरी अंगीठी मंगाई तबहू कही जो मोकों शीत लागत है तब श्री गुसांई जीनें भन्डारी कों बुलायो और वासों पूछो जो कौन कौन वैष्णवन की कवाय आई हुती तब जा जा वैष्णव की आई हुती ता ता वैष्णव को नाम लीयो तब श्री गुसांई जीनें कही जो त्रपुरदास की कवाय नाहीं आई तब भन्डारी ने कह्यो जो त्रपुरदास की एक रंगीन कवाय आई है सो भंडार में पडी है तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो वह रंगीन कवाय ले आवो तब भंडारी वह रंगीन कवाय ले आयो तब श्री गुसांई जी देखें तो मे

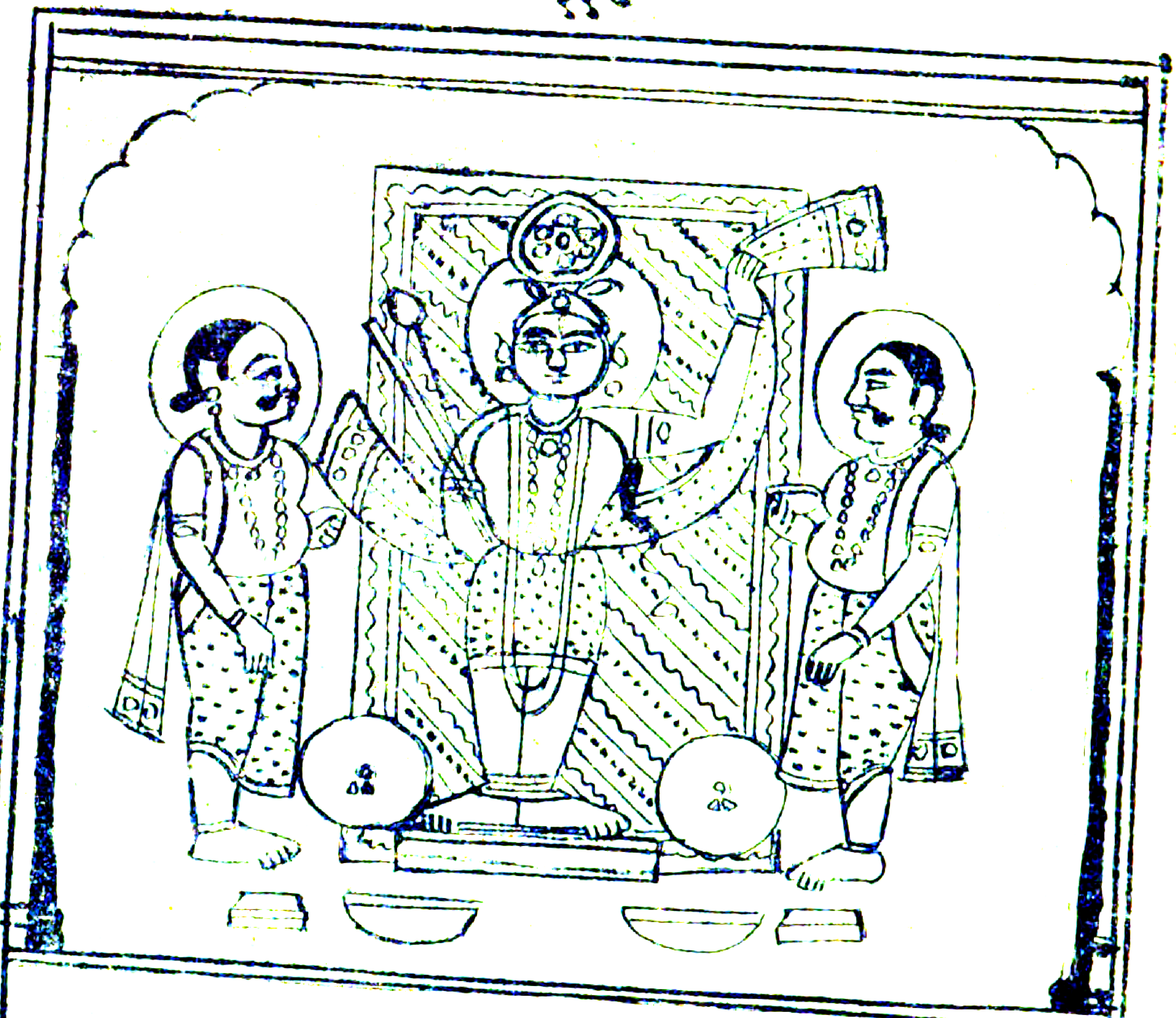

सौ मरगजी सौ होरह्यौ है तब वाकौं झार पौंछि कें तत्काल दरजी बुलाय कें फरगुल सिद्ध कर वाई तब वह फरगुल श्री नाथ जी कौं उढाई तब श्री नाथ जी नें कह्यौ जो अब मेरो सीत निवर्त भयौ ऐसें श्री नाथ जी भक्ति के पक्षपात जो भक्ति भाव की वस्तु कौं या भांति अंगीकार करें सो वे त्रपुरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✣

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैस्नव २३॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक पूरनमल खत्री।
✣ तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पूरन मल्ल की गांठि में द्रव्य वहुत हतौ सो पूरनमल्ल कों श्री नाथजी की आज्ञा भई हती जो तू मेरो मन्दिर समराउ तव पूरनमल्ल श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आयो और आय कें कह्यो महाराज मोकों श्री नाथजी की आज्ञा ऐसी भई है जो तू मेरो मन्दिर समराउ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो मन्दिर वेग समरावो तव पूरन मल्ल नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों नाम पायो पाछें मन्दिर उठावन लाग्यो सो द्रव्य हतौ सो सव नीव खोदवे में लगायो जव सव द्रव्य निवट्यो पाछें पूरनमल्ल पूरव चाकरी कों गये तव राजसी लोगन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछी जो महाराज आज्ञा देउ तौ हम मन्दिर समरावें तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री नाथजी सों पूछी जो महाराज ये राजसी लोग मन्दिर सवरावन कहत हैं सो समरावें तव श्री नाथजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो पूरनमल्ल आवैगो तव मन्दिर समरावैगो तव राजसी लोगन सों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तव वे फिर गये तव कितेक दिन में पूरनमल्ल पूरव तें वहुत द्रव्य कमाय कें लायो तव पूरनमल्ल नें कितेक दिन में मन्दिर समराय कें सिद्ध करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आछो मुहूर्त देख कें श्री नाथजी के मन्दिर में पाट वैठाये तव पूरन मल्ल ने वहुत द्रव्य खरचो ॥ ÷

वार्ता प्रसंग १

बहुरि श्री गुसांई जी श्री नाथ जी द्वार पधारे तब पूरनमल्ल श्री नाथ जी के दर्शन कों आयो सो अति आनन्द सों दर्शन कीयौ तब श्री गुसांई जी नें कह्यो जो पूरनमल्ल तेरे मन में और कछु मनोरथ है सो राखि मति तब पूरनमल्ल ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज मेरे मन में एक मनोरथ रह्यो है जो अति सुन्दर अति सुगन्ध को अरगजा अपने हाथन सों मैं समर्पूं तब श्री गुसांई जी नें आज्ञा दीनी जो ता समर्पि तब पूरनमल्लने अत्युत्तम सुगन्धि को अरगजा करि कें श्री नाथ जी कों समर्प्यो तब पूरनमल्ल नें अपने मन में अति आनंद पायो ता पाछें पूरनमल्ल श्री नाथ जी के पास तें श्री गुसांई जी के पास आयो तब श्री गुसांई जी पूरनमल्ल के ऊपर बहुत प्रसन्न भए तब श्री गुसांई जी आपपोढ़े हें सो उपरना पूरनमल्ल कों उढ़ायो तब पूरनमल्लनें अति आनन्द पायो पाछें श्री गुसांई जीने श्री नाथ जी कों पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें अंग वस्त्र करि कें सेवा शृंगार करि कें रसोई की भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय के पाछें श्री गुसांई जीनें श्री नाथ जी को प्रसादी गहल पूरनमल्ल कों [illegible]यो पाछें प्रति वर्ष प्रसादी गहल श्री गुसांई जी पूरनमल्ल कों देते सो [illegible] पूरनमल्ल श्री गुसांई जी के तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ❋ ९ जी

॥वार्त्ताप्रसंग॥२॥ वैष्नव॥२४ सम्बन्ध॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पादवेन्द्रदास कुम्हार॥

तिनकी वार्ता

सो श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्री गुसांईजी जव परदेश कों पधारते तव पादवेन्द्रदास इनके साथ सामग्री लेकें चलते हड़वाई कनात विना वांस की छोटी रावटी तथा एक दिन को सीधो सामग्री इतनों वोझ लेकें संग चलते और रसोई की चाकरी सव करते रात्रि कों पहरौ देते॥

वार्ता प्रसंग॥१॥

वहुरि श्री गुसांईजी श्री गोकुल में हुते तव रात्र पहर एक गई हुती तव श्री गुसांईजी ने कह्यो जो या विरियां मन्दिर की नींव खोदी जाय तो मंदिर में लो दृढ़ होय अव भलो मुहूर्त्त है ऐसें कहि कें श्री गुसांईजी तो पोढ़े पाछें पादवेन्द्रदास ने एक पहर में नींव खोदी सो खोदि सिद्ध कर राखी सो जव पिछली रात्रि कों श्री गुसांईजी पोढ़ के उठे तव देखें तो माटीन के ढेर पड़े हैं तव पूछी जो यह माटी कैसी है तव वैष्नवन नें कह्यो जो महाराज पादवेन्द्रदास ने खोदी है तव श्री गुसांईजी ने पादवेन्द्रदास सों पूछी जो यह नींव तेनें खोदी है तव पादवेन्द्रदास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कों

वा वेर आपने आज्ञा करी हुती ताही वेर खोदी है सो नीव ऐसी वड़ी खोदी जो महीना एकलों राज मजूर दश पन्द्रह लगें तोहू भरी न जाय सो ऐसी सामर्थ पादवेंन्द्र दास में हुती॥ १॥

वार्त्ता प्रसंग॥ २॥

और पादवेन्द्र दास ने श्रीनाथ जी द्वार कौ कूआ अपने ही हाथन सों खोद्यो सो मांटी निकसी ताकी ईंट पकाई अपने हाथन हीं कूआ चिन्यों परि जल खारी निकस्यो तब पादवेन्द्रदास सोरों गयो श्रीगङ्गाजी मेंते जल लैकें अंजुली भरि भरि के डारे और कहै है जो वा कूआ कौ जल आपसो करौ ऐसें कहिकें तर्पण कीयो ऐसें करत जव जान्यो जो जल मीठौ

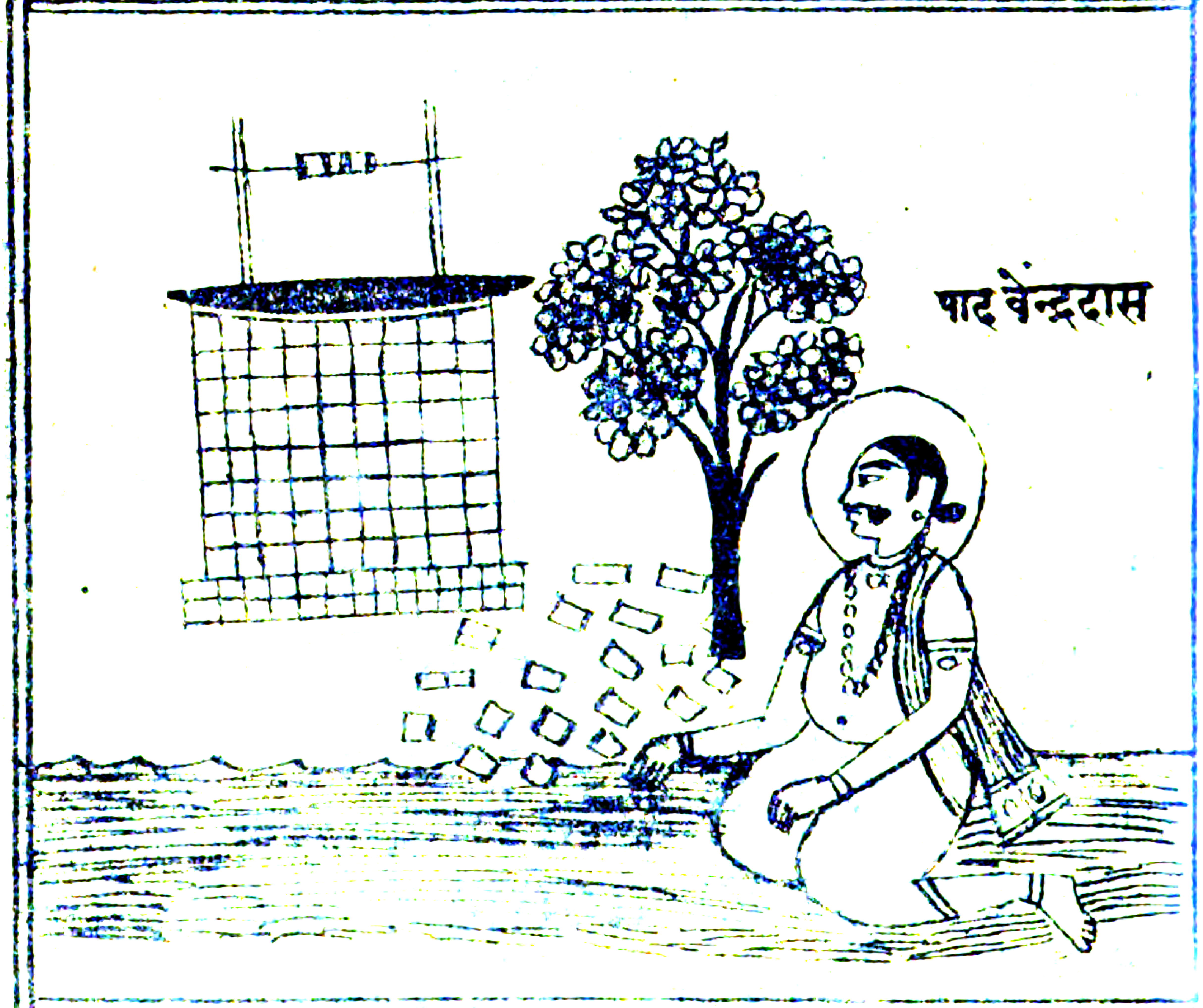

भयौ तब श्री गंगाजी में ते निकस्यौ पाछें श्री नाथ जी द्वार आए तब वा कृष्णा कौ जल श्री नाथ जी कों अंगीकार करवायौ सो पादवेन्द्र दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ता तें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै ॥+

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैस्नव २५ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक गुसांई दास सारस्वत ब्राह्मण तिनकी

॥ वार्ता ॥

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून कों श्री ठाकुर जी कौ स्वरूप प्राप्त भयौ सो स्वरूप गुसांई दास के माथे सेवा कों पधराय दीये और कही जो इनकी सेवा तू नीकी भांति सों करियो सो गुसांई दास सेवा नीकी भांति सों करन लागे सो गुसांई दास सों श्री ठाकुर जी सानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितेक दिन में एक वैस्नव सों गुसांई दास नें कही जो तुम इहां रहौ तो हम कों सहायता होय हम तुम मिलि कें सेवा करै परि वह वैस्नव हांन करै पाछें एक दिन श्री ठाकुर जी नें गुसांई दास सों कह्यौ जो तू मो कों वा वैस्नव के माथे पधराय पाछें वा वैस्नव सों गुसांई दास नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी की आज्ञा तो ऐसी भई है जो तू मो कों वा वैस्नव के माथे पधराय ता तें भगवद इच्छा ऐसी ही दीसत है तब वा वैस्नव नें गुसांई दास सों कह्यौ जो तुम कहा करोगे तब गुसांई दास

नें कह्यौ जो हूं तो बद्रिकाश्रम जाऊंगो उहां मेरी देह छूटेगी तब वा वैष्णव नें गुसांई दास सों कह्यौ जो श्री ठाकुर जी की गति नाहीं जानी जात है जो तुम्हारी देह उहां न छूटे और तुम इहां फिर आवो तो में श्री ठाकुर जी कों देउंगो नाहीं तब गुसांई दास नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी ऐसी तो न करेंगे और कदाचित करेंगे तो तुम्हारो द्वार पौरिया रहूंगो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर्यौ करूंगो तब वा वैष्णव नें श्री ठाकुर जी पधराये सो नीकी भांति सों सेवा करन लाग्यो पाछें गुसांई दास तो बद्रिकाश्रम गये सो बद्रिकाश्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें वा वैष्णव ने गुसांई दास की देह छूटी की खबर पाई तब वह वैष्णव सुख सों सेवा करन लाग्यो तब वह वैष्णव श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते भलो वैष्णव भयो सो वे गुसांई दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ २६ ॥ सम्बंध ॥ ⁂

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक माधोदास भट्ट
काश्मीर के वासी।
तिनकी वार्ता।
लिख्यते।

सो माधो भट्ट प्रथम केशव भट्ट के सेवक हुते सो केशव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आ

ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू कथा कहते सो केशव भट्ट सुनते सो माधौ भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन में जाय बैठते तब भागवत वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग चले तब माधौ भट्ट सों केशव भट्ट ने कह्यौ जो तू मेरौ संग छाड़ि के उहां के सेवकन में क्यों जात है वहां जाय के हांसी ठठोरी करत है तब माधौ भट्ट नें केशव भट्ट सों कह्यौ जो मोकों तुम्हारौ संग तथा तुम्हारी कथा तें उहां की हांसी आछी लागत है तातें हौं जात हौं तब केसव भट्ट नें जान्यौ जो अब यह हमारे काम कौ नाहीं अब हमारे काम ते गयो पाछें केसव भट्ट ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ जो मैंने श्री भागवत तुम पास ते सुन्यो पर मोकों कछू बोध न भयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तुम मेरी बराबर बैठि कें सुनौ और ज्ञाति कौ भाव राखौ तातें बोध न भयो और माधौ भट्ट की भागवत की स्फुर्ति भई यह दैवी सृष्टी कौ प्रकार जाननो तब श्री भागवत की कथा सम्पूर्ण भई तब केसव भट्ट ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही जो कछू गुरु दक्षिणा लेउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो हम कछू लेत नाहीं तब केसव भट्ट नें कह्यौ जो मैं तुम कों एक सेवक समर्पित हों सो माधौ भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सोंपे पाछें केशव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास तें बिदा होय कें अपने देश कों गयो पाछें माधौ भट्ट नें

श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पायो पाछें समर्पण करवायो ॥

वार्ता प्रसंग १

और जा गाम में ······ माधो भट्ट रहत हुतो ता गाम में एक वड़ो ग्रहस्थ रहत हुतो ताके एक वेटा हुतो सो मरगयो तव वह ग्रहस्थ वहुत रोवन लाग्यो विलाप करन लाग्यो और कहन लाग्यो जो कोउ याकों जिवावेगो तो मैंहू जीउंगो नाहीं तो मैंहू मरूंगो ऐसें कहि कें वहुत सोक करे तव एक वैष्णव पेंडे में जात हुतो तव वा ग्रहस्थ कों विलाप करतो देखि कें वाने कह्यो जो या गाम में माधो सारि के भगवदीय रहत हैं वे वड़े भगवदीय महा पुरुष हैं तिन के पास तू जा वे कृपा करेंगे तव तेरो लरिका जीवेगो तव वह ग्रहस्थ माधो भट्ट के पास आयो और वहुत विलाप करन लाग्यो और माधो भट्ट सों कह्यो जो यह लरिका मेरो जीवेगो तो मैंहू जीऊंगो नातर मैंहू मरूंगो या भांति सों वहुत विलाप करे और रोवे तव वा ग्रहस्थ कों देखि कें माधो भट्ट कों दया आई तव मन में विचार करने लागे जो याको वेटा जीवे तो आछो है यह ग्रहस्थ भलो है यह वहुत विलाप करत है वहुत दुख पावत है यह विचार कें माधो भट्ट के मन में बहुत खेद भयो और कह्यो जो याको दुख दूर होय तो भलो है पाछें माधो भट्ट मन्दिर में जाय कें श्री ठाकुर जी सों बिनती कीनी एक श्लोक-

करि कें श्री ठाकुर जी के आगें कह्यौ ॥ सो

श्लोक ॥ +

दया सर्व समर्थस्य दुखवारो व
दयालुता ॥ विष्णोद्धारणा दक्ष
स्य उत्तवे कस्य सोभिने ॥१॥

यह श्लोक श्री ठाकुर जी ने सुनि कें कह्यौ जो यह कितनीक वात है जो तुम कों दया आई तो वा सों कहौ जो जा तेरौ वेटा जीवेगो पाछें माधौ भट्ट श्री ठाकुर जी कों पोंढाय कें वाहर आये तव वा ग्रहस्थ सों कह्यौ जो जा तेरौ वेटा जीवैगो परि वा ग्रहस्थ कों विस्वास न परे मन में विचारे जो हूं घर जाउंगो और जो कदाचित न जीयौ होय तो कहा करूं मुख तें तो कछु कह्यौ न जाय परि मन में विस्वास परे नाहीं इतने में घर के लोग दौरि कें आय वा सों कह्यौ जो तेरौ वेटा जीयौ है ताकी वधाई देउ तव वह ग्रहस्थ माधौ भट्ट कों दंडवत करि कें अपने घर आयौ पाछें वधोया कूं वधाई दीनी और वहुत हर्षित भयौ पाछें माधौ भट्ट नें अपने मन में विचार कीयौ जो वहुत अनुचित कीयौ अव ये लोग याही भांति सों नित्य दुख देंगे यातें अव या गाम में रहिवे कौ काम नाहीं ऐसौ विचार कें रात्रि जव आधी गई तव श्री ठाकुर जी कों जगाय संपुट में पधराय कें तुरत ही गांव छोड़ि कें चले सो अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास आय रहे दया आये ते स्थल छूटो श्री ठाकुर जी कों

आधी रात्रि के समय भाजनों परो ताते भगवदीय कों जो काम करनों सो विचार कें करनों विना विचारें सर्वथा नहीं करनों ॥

वार्ताप्रसंग २

और श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री भागवत की सुवोधिनी कहते सो माधौ भट्ट वेगि वेगि लिखत जाते और जा ठौर न समझ परै ता ठौर लेखनी छोड़ कें वैठि रहते तव श्री आचार्य जी महाप्रभू माधौ भट्ट कों समझाय कें अर्थ कहते तव माधौ भट्ट समझ के आगे लिखते और श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें माधौ भट्ट या भांति सों वैठते सो पावन दीसें ऐसी सावधानी सों रहते ॥+

वार्ताप्रसंग ३

और एकसमय श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रदेस कों पधारें तव माधौ भट्ट साथ हे तव श्री आचार्य जी महाप्रभू पेंडे में एक गांम में उतरे तव रात्रि पहर डेढ़ गई हुती तव माधौ भट्ट उठि कें लघुवाधा कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चलायौ सो माधौ भट्ट कें लाग्यौ तव श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम लेत माधौ भट्ट नें देह छोड़ी तव इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ के वैष्णव आय गये तव देखें तौ माधौ भट्ट की देह छूटी है तव वैष्णवन के मन में सन्देह भयौ जो माधौ भट्ट मारि के वैष्णव की ऐसी गति क्यों वूझिये तव साथ के वैष्णवन नें श्री आचार्य जी महाप्रभून

सों पूछो जो महाराज यह वात कैसें होय जो माधो सारिके वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूझिये तव श्री आचार्य महाप्रभून नें उन वैस्नवन सों कह्यो जो माधोभट्टनें तो श्री ठाकुर जी के चरणारविंद चांपे सो इनकों कछु कर्तव्यता रही नाहीं यह बड़ो भगवदीय है पर इन सों एक भगवद अपराध पर्यो हो तव वैस्नवन नै पूछी जो महाराज ऐसो कहा अपराध पर्यो हो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो यह पहलें अपने सेव्य श्री ठाकुरजी की सैया ऊपर फूलन बिछावत हो सो एक दिन विना जानें फूलन में सुई रह गई सो माधोभट्ट नें नाहीं कीनी सो वा सुई को श्री ठाकुरजी के श्री अंग में स्पर्श भयो सो ता अपराध तें ऐसें भयो परि याकी देह सावधानता सों छूटी है भगवद नाम लेत छूटी ताते यह श्री नाथजी कृपा सहे मेरी कांन ते श्री नाथजी बुरी गति कवहूं न करेंगे अपने पास ही राखेंगे यह श्री आचार्य जी महाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो ताते वैष्णवन कों श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी वहुत सावधानी सों वे माधोदास भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ✣

वार्त्ता प्रसंग २ वैसव ॥२७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गोपाल दास तिनकी वार्ता ॥

सो गोपालदास नें मार्ग चलन वारेन कों अपने घर के पास विश्राम के लीये अस्थल करि राखे हुतो जो मार्ग में विश्राम करे ताकों हेत यह जो कोई भगवद भक्त आय रहे तासों भगवद वार्ता करें ता कारन अस्थल करि राख्यो हुतो सो वहां एक समय पद्मरावल उज्जैन के वासी सो द्वारिका आवते हे सो रात्रि कों वा गांव में आय रहे सो गोपालदास सेवा सों पहुंचि कें पद्मरावल के पास आए और पद्मरावल सों पूछो जो तुम कहां ते आए हो तब पद्मरावल नें कह्यो जो हम श्री द्वारिका ते आए हें तब गोपालदास नें श्री रणछोड़ जी के कुशल समाचार पूछे तब उहां के समाचार पद्मरावल नें गोपालदास सों कहे पाछें पद्मरावल की जो वालपने ते अवस्था हुती सो वात चाली जो पद्मरावल द्वारिका में वहुत रहते श्री रणछोड़ जी के दर्शन बहुत करते सो जब खरची निवड़ती तब अपने घर आवते सो पद्मरावल के जिजमान मावजी पटेल आजन कुनबी गांव के देसांई हुते सो पद्मरावल द्वारिका जी ते आवते तब मावजी पटेल खरची देते सो लेकें जब पद्मरावल द्वारिका जी कों जाते ऐसें वरस दिन में तीन वार जाते पद्मरावल को श्री रणछोड़ जी के विषें बहुत आसक्ति हुती सो श्री रणछोड़ जी की वार्ता पद्मरावल नें गोपालदास के आगें कही तब गोपालदास नें अपने मन में कही जो जैसी इनकों श्री रणछोड़ जी के

दर्शन में आसक्ति है तैसी इनकों श्री महाप्रभून के विषें आसक्ति होय तो इनको कार्य होय तातें इनसों कछू कहिये तब गोपालदास नें पद्मरावल सों पूछो जो तुम सों कबहू श्री रणछोड़जी बोलत हैं कछू कहत हैं कछू मांगत हैं तब पद्मरावल नें कहौ जो मोसों तो कबहू कछू कहत नाहीं तब पद्मरावल नें गोपालदास सों पूछो जो कहा श्री रणछोड़जी काहू सों बोलत हैं तब गोपालदास नें कहौ जो हांहां बोलत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता कही जो तुमनें एते दिन श्री रणछोड़जी सेए हैं सो श्री रणछोड़जी प्रगट भए हैं तब पद्मरावल नें पूछो जो वे कहां हैं तब गोपालदासनें कही जो वे अडेल में हैं तब पद्मरावल नें कही जो जैसो दर्शन श्री रणछोड़जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देयंगे तब गोपालदासनें कही जो हांहां देयंगे तब पद्मरावल के मन में विश्वास आयो जो यह बात सत्य ताही दिनते पद्मरावल कों आतुरता भई जो कब में जाऊं और कब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन पाऊं सो ऐसें वहां हो रहे .. ता पाछें सवारे गोपालदास सों विदा होय कें तहांते चलो सो मार्ग में विचार करत जाय जो मैं कब जाऊं और कब श्री आचार्यजी महप्रभून के दर्शन पाऊं ऐसें विचार करत घर अपने उज्जैन में आए परि चित्त उदास में रहौ पाछें मावजी पटेल सों मिले तब मावजी पटेल ने पूछो जो

गुरूजी अब कें तुम्हारो मन प्रसन्न देखियत नाहीं सो काहे तें तब पद्मरावल ने गोपालदास सों सुनी हुती सो बात कही जो श्री रणछोड़जी अडेल में प्रगट भए सो मेरो मनोरथ दर्शन करिवे को है सो जानें हौं कब जाउंगो। तब भावजी पटेल नें कह्यौ जो तुम रणछोड़ जी के दर्शन कों जात हौ सो मोहूं कों अपने साथ ले चलो। तब पद्मरावल नें कह्यौ जो तुम राजश्री भेगा हो तुम्हारी साथ बहुत मनुष्य होयंगे और यह दर्शन तो एकांत स्थल कौ है तातें यह बात तो मोकों भावत नाहीं तब भावजी पटेल नें कह्यौ जो हूं तो सर्वथा तुम्हारे संग अकेलो ही चलूंगो तब पद्मरावल नें कह्यौ जो भलो तब यह समाचार अपनी स्त्री सों कहे और कह्यौ जो में तो पद्मरावल के संग अडेल दर्शन कों जात हौं तब स्त्री ने कह्यौ जो वहां कहा है तब भावजी पटेल नें कह्यौ जो वहां श्रीवल्लभाचार्य जी प्रगट भए हैं सो साक्षात श्री रणछोड़जी प्रगट भये हैं और जैसो दर्शन श्री रणछोड़जी देत हैं तैसो दर्शन श्री आचार्य जी महाप्रभू देत हैं सो यह बात सुनि कें भावजी पटेल की स्त्री के मन में बहुत उत्साह भयो और कह्यौ जो आप के संग में हूं चलूंगी तब भावजी पटेल ने कह्यौ जो में तो पावन चलोंगो तू कैसें चलैगी तब स्त्री ने कह्यौ जो मेहूं पावन चलूंगी मेरें कछु लरिका तो है नाहीं तब फेरि भावजी पटेल नें कह्यौ तो हम तुम दोउ जन चलेंगे तो घर कौन के भरोसे रहैगो

स्त्री नें कह्यो जो मेरो घर ते कछू पयोजन नांही है हौं सर्वथा तुम्हारे साथ चलूंगी तव मावजी पटेलनें अपने मन में विचार्यो जो याकों वहुत आतुरता भई दर्शन को वहुत मनोरथ है तव कह्यो जो भलो तूहू चल तव मावजी पटेलनें अपनों घर काहू भले मनुष्य के हवालें कर दीनें तव पसरावल मावजी पटेल तथा उसकी स्त्री विरजो ये तीनों चले सो जव पयाग पहूंचे तव अडेल को दर्शन ... भयो तव बहुत आतुरता भई जो श्री यमुनाजी होय के चल्यौ जैये ता समें श्री .... आचार्य जी महापभू श्री यमुनाजी ऊपर पधारे हुते सो सन्ध्यावन्दन करत हुते तहां सेव-

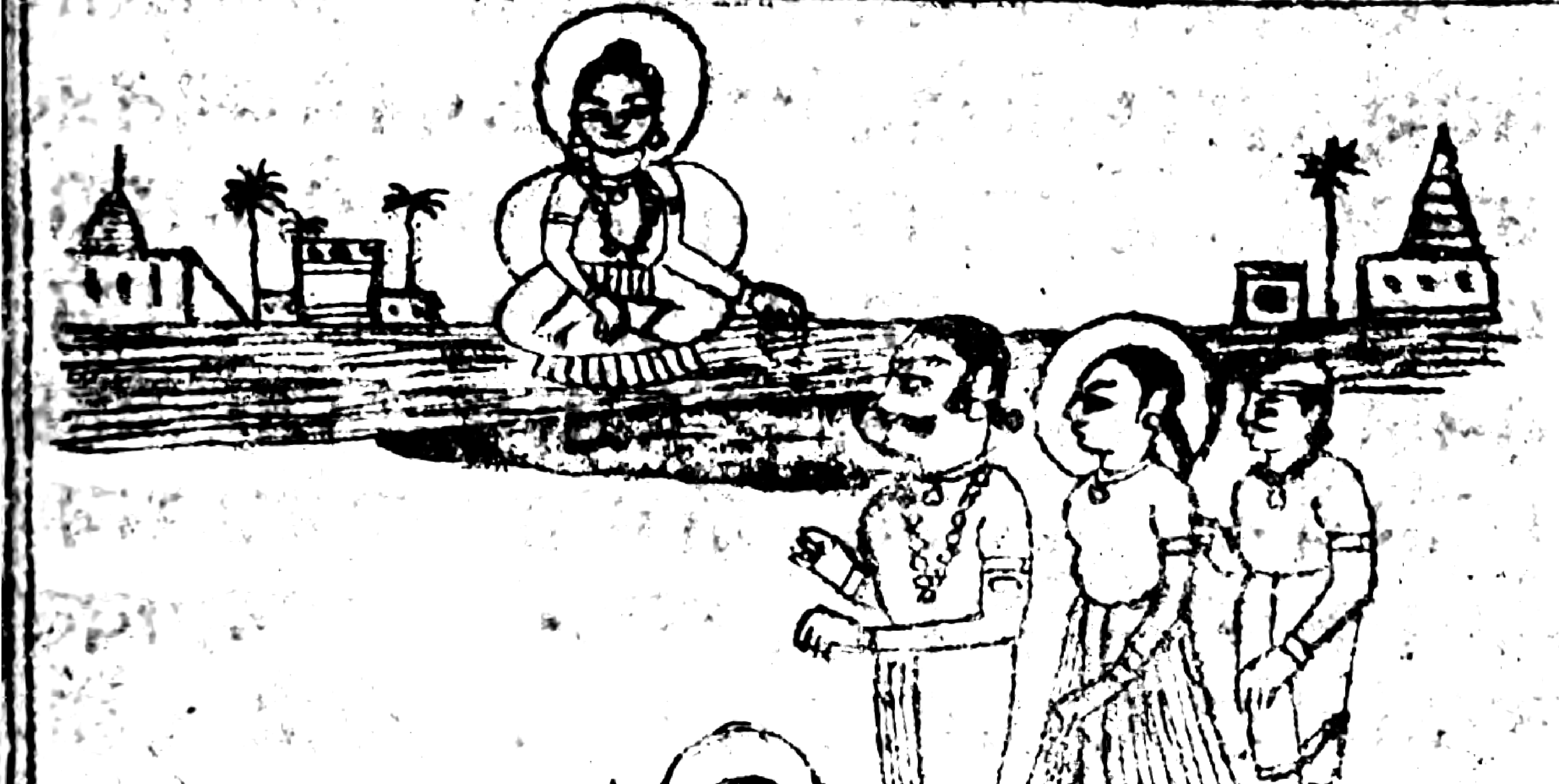

क दोय चार साथ हुते तब इन तीनोंन कौं श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भयो तब तो बहुत ही आतुरता भई ता समै श्री आचार्य जी महाप्रभून नें इन कों देख्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवकन सों कह्यौ जो यह नाव पार लै जाउ पद्मरावल श्री रणछोड़ जी के सेवक आये हैं सो इन तीनोंन कूं नाव में बैठारि कें बेगि लै आउ सो नाव लै कें वैष्णव पार आए तब उन वैष्णवन नें कह्यौ जो पद्मरावल तीनों जने होंय सो आवौ श्री आचार्य जी महाप्रभून ने नाव पठाई है तब पद्मरावल और मावजी पटैल तथा उनकी स्त्री विरजो इन तीनों जनेन कों नाव में बैठाय के लै आए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन भयो सो जैसो गोपालदास ने कह्यो हुतो तैसोई दर्शन भयो सो दर्शन करि कें मन में बहुत प्रसन्न भये पाछें पद्मरावल नें श्री आचार्य जी महाप्रभू पास नाम पायो सो नाम पाय कें उठे तब पद्मरावल नें बीनती करि कें कह्यौ जो महाराज अंगीकार करियै तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें प्रसन्न होय कें कह्यौ जो तू कहा कहत है तब पद्मरावल ने कह्यौ जो मो कों गोपालदास नें कह्यो है तासों निवेदन करवाइये और पद्मरावल ने बीनती कर कें कह्यो जो महाराज मावजी पटैल और मावजी पटैल की स्त्री विरजो ये दोऊ जने आपकी सरणाये हैं सो इन कों नाम निवेदन करवाइये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करके नाम समर्प

णा करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप भीतर पधारे तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पद्मरावल सों कह्यौ जो तुम महाप्रसाद इहां ई लीजिये तव पद्मरावल नें वीनती करि कें कह्यौ जो महाराज मोकों तुमनें श्री रणछोड़ जी को दर्शन दीनों है सो स्वरूप आप कृपा करि कें आरोगोगे तव श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन भोजन करत में पद्मरावल कों श्री रणछोड़ जी को दर्शन भयो सो साक्षात श्री रणछोड़ जी भोजन करत हैं तव पद्मरावल को दृढ़ विस्वास भयो तव श्री आचार्य जी महाप्रभू आप भोजन करि कें विराजे तव महाप्रसाद की पातर पद्मरावल कों कृपा करिकें दीनी पाछें पद्मरावल नें वीनती कीनी जो महाराज मोकों कहा आज्ञा है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा करो तव पद्मरावल नें कह्यौ जो जैसो मेरो मन महाराज के स्वरूप में लग्यो है तैसो मन सेवा में लगे तो सेवा करूं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो तुम श्री ठाकुर जी की सेवा सो करो जो तुम्हारो मनोरथ श्री ठाकुर जी सव पूरन करेंगे तव पद्मरावल श्री आचार्य जी महाप्रभून सों विदा होय कें अपने देश कों गये तव पद्मरावल अपने देस में जाय कें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागे तव अपने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया वनवाई सो सैया छोटी भई तव श्री ठाकुर जी ने कह्यौ जो या सैया

पे मोपे सोयो जाय नाहीं पाछें पद्मरावलनें दूसरी सेया बड़ी करवाई ताके ऊपर श्रीठाकुर जी पौढ़न लागे और श्री ठाकुर जी सानुभाव जनावन लागे और एक समय पद्मरावल की स्त्रीने श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तामें खीर ताती समर्पी तब श्रीठाकुर जीनें खीर में श्री हस्त मेल्यो तब खीर बहुत ताती लागी सो श्री ठाकुर जी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो और श्री हस्तकमल दिखायो सो लाल परि गयो तब पद्मरावल श्रीआचार्यजी महाप्रभून के पास बैठे हते तब पद्मरावल सों श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो तेरी स्त्रीने श्री ठाकुरजी कों ताती खीर समर्पी सो

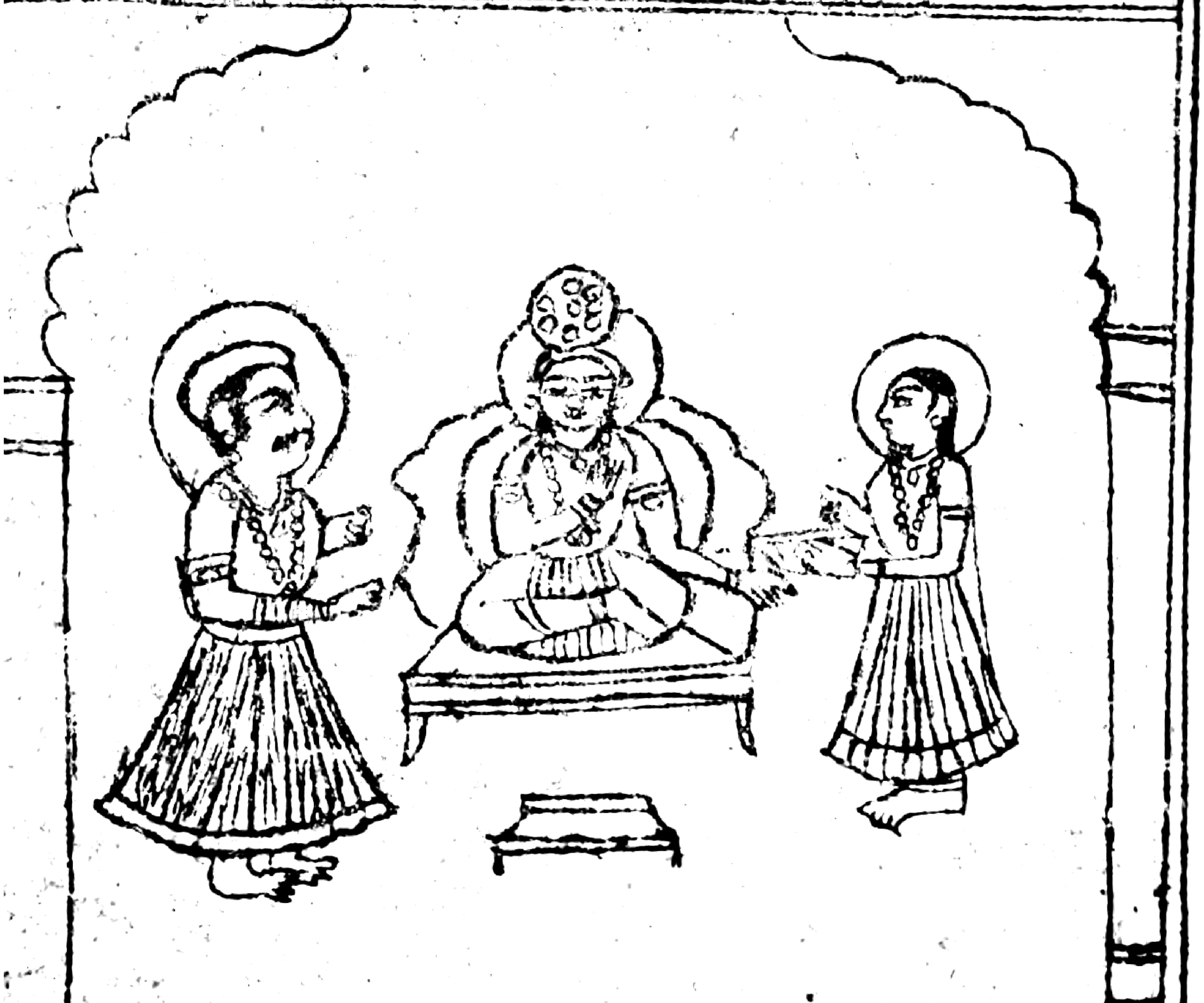

श्रीठाकुरजी कों ताती खीर न समर्पिये तब पद्मरावल ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो श्रीठाकुरजी ने एक मुहूर्त्त लों सीरी क्यों न होंने दीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो श्रीठाकुरजी तो बालक हैं श्रीठाकुरजी कों भोग धरे पाछें विलंब न सहि सकें याते जो भोग धरिये सो बहुत तातो न धरिये सो पद्मरावल कों श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें ऐसी आज्ञा दीनी आज्ञा दैकें श्रीठाकुरजी कों ऐसौ अनुभव जनायो पाछें पद्मरावल अपने घर आये तब यह बात अपनी स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल बहुत सावधानी सों सेवा करन लागे श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे जो चहिये सो मांगि लेते अपनी सब बात कहते सो वे पद्मरावल गोपालदास के संग ते ऐसे भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग १ वैष्णव २८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पद्मरावल सो चौरा ब्राह्मण उज्जैन के वासी तिनकी वार्ता लिख्यते

सो पद्मरावल अडेल में आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भए सो गोपालदास बांसवाड़ा

के तिनकी वार्ता में लिख्यो है विस्तार करि कें पाछें अपने देस कों चलन लागे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज हों तो अति मूर्ख हों जड़ हों कछु जानत नाहीं और मेरी जाति के ब्राह्मण महा कर्मी जड़ हैं स्मार्ती हैं सो मोकों दुख देत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें अपने चरणारविंद को चन्दन और चरणामृत दीनें। और कह्यो जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत लीनो। सो इतने ही में सब सिद्धांत स्फुर्द भये पाछें देश उज्जैन में आए पाछें बड़े २ ब्राह्मण प्रतिवृति पूछन लागे तब जितनेन ने पूछो तिनकूं प्रति उत्तर दैकें सब विदा किये सो पद्मरावल कों श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते ऐसी विद्या स्फुर्द भई जो बड़े २ पंडित जीत कें विदा कीये वे पंडित प्रति उत्तर दैन सके ॥ +

वार्ता प्रसंग १

और पद्मरावल द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों चले तब श्री रणछोड़ जीनें स्वप्न में कह्यो जो राज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तू जैयो और पाक उहांई करियो तब पद्मरावल नें कह्यो जो महाराज मैं तो जानत नाहीं और विना बुलाए मैं कौन के घर जाउं तब श्री रणछोड़ जीनें कही जो वह तोकों आपही बुलावन कों आवेगो पाछें श्री रणछोड़ जीने अपने सेवकन सों कह्यो जो पद्मरावल इहां आवेंगे सो उनकी से

वा तू नीकी भांति सों करियों और अपने घर पधराय पद्मरावल कों रसोई भली भांति सों करियों तब वा सेवक नें श्री रणछोड़ जी सों कह्यो जो महाराज में उन कूं कैसें जानूंगो तब श्री रणछोड़ जीने कह्यो जो वे तो प्रसिद्ध हें तू आपही तें जानेगो तब कितनेक दिन में पद्मरावल उहां आये सो वा गांव के वाहिर उतरे सो पद्मरावल के साथ विद्यार्थी एक हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यो जो तू गांम में जाय कें कोरी भिक्षा मांग लाउ तब वह विद्यार्थी गांव में गयो सो चार पांच ठौर ते कोरी भिक्षा मांग लायो तब पद्मरावल ने वा विद्यार्थी सों कह्यो जो तू अन्न जाजा कैसें लायो है ताता कैसें उलटो फेर आउ तब वह विद्यार्थी जाजा को अन्न लायो हो सो ताकों फेरन लाग्यो तब एक ने कह्यो जो तुम लेगये हे अब फेरन क्यों आए हो तब वा विद्यार्थीने कह्यो जो में कहा करूं हमारे वड़े गुरू हें तिनकी आज्ञा मानी चाहिये तब वा विद्यार्थी सों कह्यो जो तुम्हारे गुरू को नाम कहा है तब वा विद्यार्थी ने कह्यो जो मेरे गुरू को नाम पद्मरावल है तब वह श्री रणछोड़ जी को सेवक विद्यार्थी के साथ चल्यो आयो सो आय के पद्मरावल सों कह्यो जो मेरे घर पधारो तब पद्मरावल नें कह्यो जो हूं तो काहू के घर जात नाहीं तब वा ने कह्यो जो मोकों श्री रणछोड़जी ने आज्ञा दीनी है जो तू पद्मरावल कों अपने घर पधराइयो सो रसोई भली भांति सों करवाइयो तब

पद्मरावल कों अपने घर पधराए रसोई भलीभांति सों करवाई सो पद्मरावल ने रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और रात्रि कों उहांही सोय रहे तब सवारें पद्मरावल चलन लागे तब श्री रणछोड़जी को सेवक राखन लागो तब पद्मरावल रहे नाहीं ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

वहुर एक दिन आटो वहुत मिल्यो और घृत थेरो मिल्यो तब जितनी रोटी वा घृत में चुपड़ी गईं सो तो ऊपर धरी और कोरी हुती सो नीचे राखी तब श्री ठाकुर जी को भोग समर्प्यो और कह्यो जो महाराज विनु चुपरी रोटी तो रहन दीजियें और चुपरी रोटी आरोगियें तब श्री ठाकुरजी नें तो सवही रोटी आरोगी पाछें पद्मरावल सों कह्यो जो तेने मेरे आगे काहे कों धरीं मेरे आगे जो तू धरेगो सो आरोगूंगो पाछें महाप्रसाद लेन कों वैठे तब रोटी वहुत अद्भुत स्वाद भयी तब पद्मरावल ने कतनीक रोटी वची सो साथ वांधि लीनी सो नित्य जव पाक करि भोग समर्पे पाछें प्रसाद लेन कों वैठते तव रोटी में ते एक टूंक मेलि लेते तव महाप्रसाद लेते पाछें कितनेक दिन में द्वारका जाय पहुंचे तव श्री रणछोडजी को दर्शन कीयो दिन पांच सात रहि कें श्री रणछोड़जी सों विदा होय कें चले तव मार्ग में गोपालदास वासवाड़ा के घर आये तव रात्रि कों उहाहीं रहे तव पद्मरावल

ने गोपालदास सों कह्यो जो तुम्हारी कृपा ते मोकों श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन भयो और तुम्हारी कृपा ते मोपे श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कृपा करी सो पद्मरावल श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ २९

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक पुरुषोत्तम जोसी सांच्योरा व्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते ॥

सो एक समय पुरुषोत्तम जोसी वनारस कों चले सो मार्ग में उज्जैन आये सो उज्जैन आय के पूछो जो पद्मरावल के वेटा कहां रहत हैं .... सो पद्मरावल के वेटा चारि हुते सो तीन वेटा तो इकठौरे हुते और वड़े वेटा कृष्णभट्ट सों न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावल के तीन्यो वेटा इकठौरे हुते तिनके घर गये तिननें पुरुषोत्तम जोसी कों थोरो सो अन्न दीयो सो कछु भूखे रहे तव मन में कह्यो जो पद्मरावल के वेटा ऐसे क्यों वूझिये वे तो सूधे व्राह्मण हे पाछें कृष्णभट्ट नें सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी आए हैं तव कृष्णभट्ट ने पुरुषोत्तम जोसी कों अपने घर पधराय तव भली भांति सों प्रसाद लिवायो तव

पुरुषोत्तम जोसी वहुत प्रसन्न भये दिन चार राखे तव पुरुषोत्तम जोसी चलन लागे तव कृष्ण भट्ट साथ चले सो मजल जाय उतरे तव रात्रि कों जव कृष्ण भट्ट सोये तव पुरुषोत्तम जोसी ने अपनी स्त्री सों पूछो जो कृष्ण भट्ट सोये तव स्त्री ने कही जो हां सोये तव पुरुषोत्तम जोसी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता कही पाछें कृष्ण भट्ट ने मन में विचारो जो पुरुषोत्तम जोसी नें मेरे आगें श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हौं अव कछू चर्चा वार्ता चलाउं सो जव श्री गोकुल मजल पांच सात रह्यो तव कृष्ण भट्ट ने प्रसंग चलायो सो पुरुषोत्तम जोसी घोड़ा पै हुते सो वे तो विह्वल भए तव कृष्ण भट्ट नें पुरुषोत्तम जोसी की

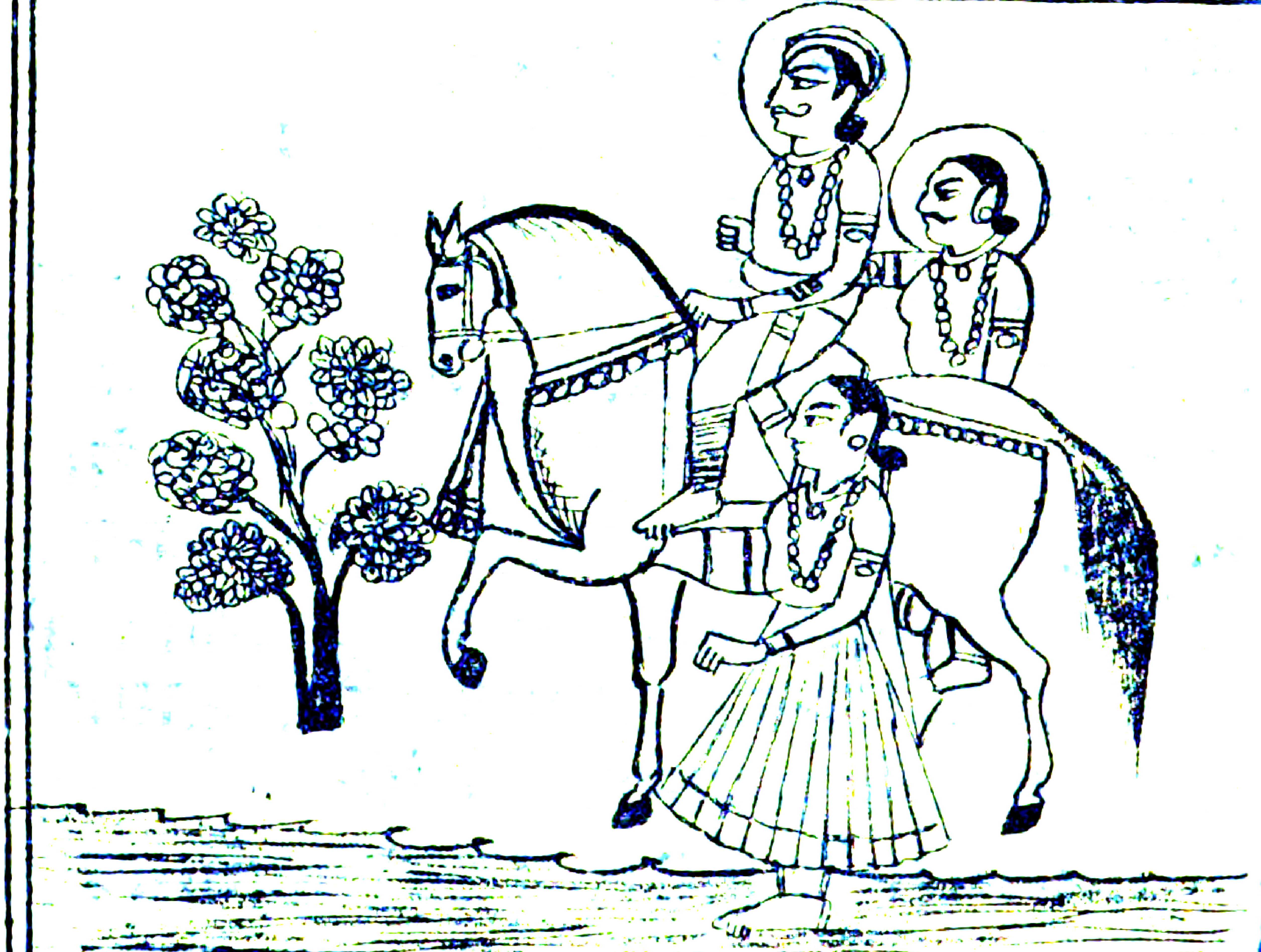

श्री सों कह्यो जो एक ओर ते तुम थामे रहो और एक ओर ते मैं थामत हौं तब कृस्न भट्ट ने वार्ता चलाई सो भगवद वार्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वल भये सो घोड़ा ऊपर रह्यो न जाय तब दोउ जने आस पास थामें जाय ऐसे करत मजल आय उतरे तब घोड़ा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जोसी ने कह्यो जो मोकों तुम क्यों उतारत हो तब कृस्न भट्टनें कह्यो जो मजल कौ मुकाम आय पहुंचो है ताते उतारत हैं परि पुरुषोत्तम जोसी कों मंजल आयवे की खबर नाहीं भगवद वार्ता में रसाविष्ट भए सम्पूरण दिवस भयो परि प्रसाद लेवेहू को कछु सुधि रही नांही ऐसें करत कितनेक दिनमें श्री गोकुल आय पहुंचे तब पुरुषोतम जोसी ने श्री गुसांई जी कौ दर्शन कीनों और श्री गुसांई जी सों पूछो जो महाराज कृस्न भट्ट के ऊपर ऐसी कृपा काहे ते भई है तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो याकों चाचा हरिवंस जी कौ संग है ताते ऐसो भयो तब पुरुषोतम जोसी को गर्भ निवर्त भयो और अति प्रसन्न भये और कृस्न भट्ट सों आप वार्ता पूछन लागे पाछें कितनेक दिन रहि कें श्री गुसांई जी सों विदा होय के चले सो उज्जैन आये मार्ग में भगवद वार्ता करत चले आये और दोउ जने अति प्रसन्न भए सो वे पुरुषोतम जोसी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वैस्नव ३०॥ संवंध ८७।

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून सेवक जगन्नाथ जोसी तिनकी वार्ता

सो जगन्नाथ जोसी ने श्री ठाकुर जी कों वागो पहराय सव सिंगार करि कें राजभोग को थार आगे आन राख्यो तव जगन्नाथ जोसी के मन में आई जो श्री ठाकुर जी वागे पहरें ही आरोगत हैं ताते थार छूइ जायगो तव श्री ठाकुर जी ने जगन्नाथ जोसी के मन की जानी तव थार में लाल मारि कें डार दीनों तव जगन्नाथ जोसी ने और पाव वेगि वेगि करि कें थार परोसि श्री ठाकुर जी के

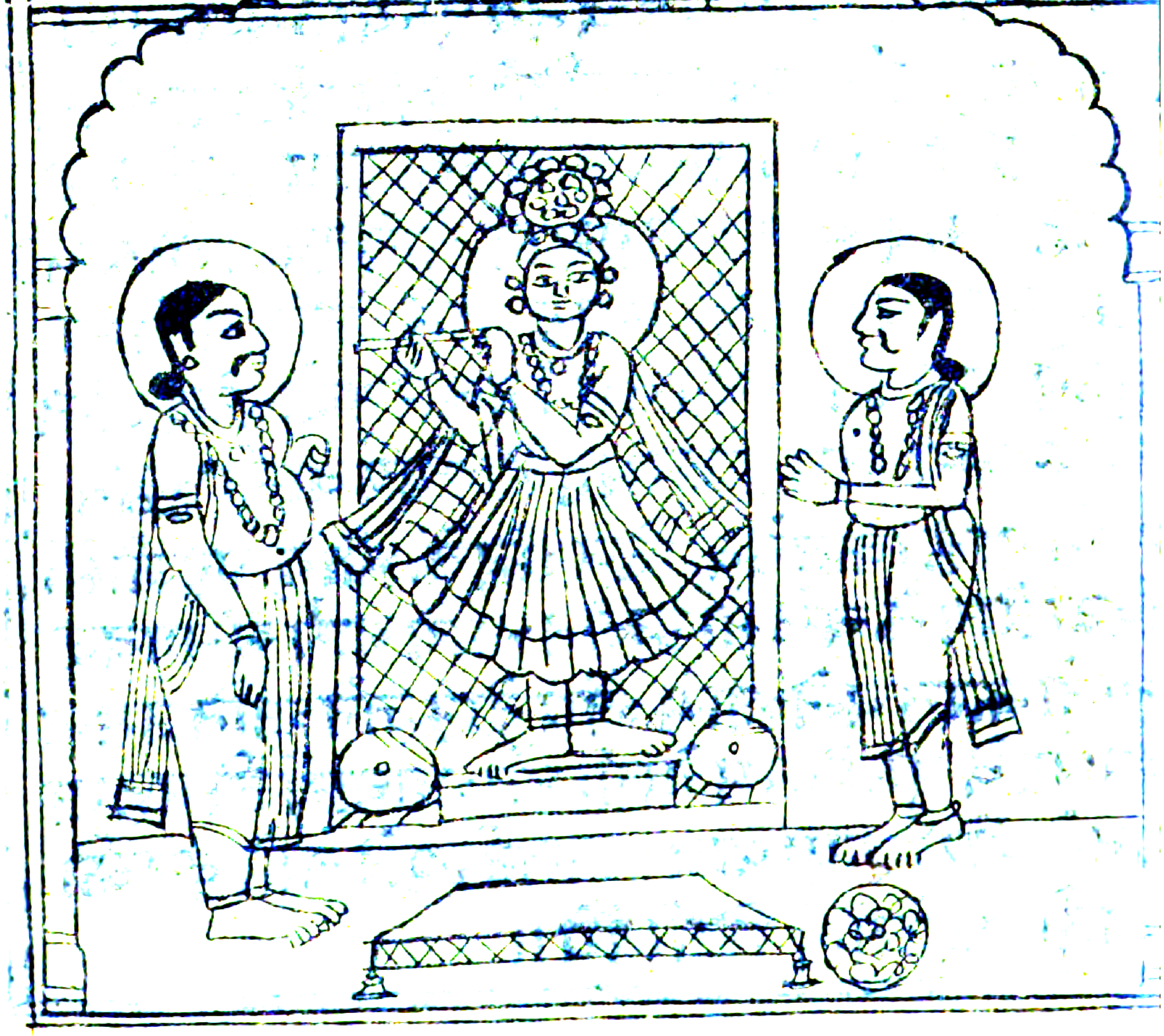

आगें आनि राख्यो तव श्रीठाकुर जी के मनमें आई जो वैसें ही फेरि लात मार कें डार दीनों तव फेर तीसरी वेर पाक करिकें श्रीठाकुर जी के आगें आनि राख्यो तवहू श्रीठाकुर जी ने लात मारिकें डारि दीनों तव चौथी वार पाक करन लागे तव जगन्नाथ जोसी वहुत खिन्न भये पाछें नीचौं माथो करिकें विचार करन लागे जो कौंन अपराध ते श्रीठाकुर जी आरोगत नाहीं थार डार देत हैं पाछें वहुत वीनती कीनी तव श्री ठाकुर जीने यह वात जताई जो तू थार छुइ वेते डरपत है तो तू हमारे आगे काहे कों आनि राखत है इतनों वचन श्री ठाकुर जी को सुनि कें जगन्नाथ जोसी चौंक उठे तव नाक भूमि में घिस वहुत मनुहार करिकें कह्यो जो महाराज मैं तो कछू जानत नाहीं अव मेरो अपराध छमा करिये पाछें श्रीठाकुर जी आरोगे परि मास दोय लों वोले नाहीं फेर वहुत वीनती कीनी तव वोलन लागे ऐसो सरल भाव हुतो॥ + ॥ + ॥ × ॥ × ॥

वार्ता प्रसंग १ ॥

और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुर जी कों भोग समर्पिते तामें ताती खीर वहुत समर्पिते सो श्री ठाकुर जी वैसें ही ताती खीर आरोगते सो कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गुजरात पधारे तव खिरालू में जगन्नाथ जोसी के घर उतरे तव श्री ठाकुर जी को दर्शन कीयो तव दे

हैं तो श्री ठाकुर जी के ओठ राते हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री ठाकुर जी सों पूछी जो [illegible] जिह्वा और ओठ राते क्यों हैं तब श्री ठाकुर जी नें कहौ जो जगन्नाथ जोसी मोकों ताती खीर बहुत समर्पत है सो तैसो ही में आरोगत हों तब जगन्नाथ जोसी सों श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो तू ताती खीर श्री ठाकुर जी कों क्यों समर्पत है तब जगन्नाथ जोसी ने कह्यौ जो महाराज हम तो कछू जानत नाहीं जो ऐसी बात है हम तो जानत हे जो ताती खीर भली तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो खीर सुहाती भली खीर बहुत ताती न समर्पियें ता पाछें जगन्नाथ जोसी वैसें हीं करन लागे ॥÷

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करिवे कों जगन्नाथ जोसी अडेल कों चले तब मार्ग में अन्नकूट को दिन आयौ तब एक सेवक साथ हतो तासों कह्यौ जो चामर दार घृत खांड और कछू आछी सामग्री मिलै सो सब लै आउ तब वह सेवक गयो तब देखें तो गांव में कछू नाहीं तब वह सेवक फिर आयो और कह्यौ जो इहां तो कछू मिलत नांही एक ज्वार मिलत हैं तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यौ जो भलैं ज्वार ही लै आउ तब गाम में जाय कें ज्वार लीनी तब वा की भांति कूट फटक छानि बीन चुनि कें लै आये पाछें जगन्नाथ जोसी नें वा ज्वार को ठोमर कीयो तब वा सेवक नें॰

कह्यौ जो भूसी निकसी है सो ताकों टोकरा में करि ऊपर राख्यौ जो ताकी वाफ सों जल्दी होय आवेगो तव जगन्नाथ नें कह्यौ जो भलें तव वह ठोमर खदखदान लाग्यौ तव वह टोकरा वामें गिर पर्यो सो सव इकठोरो मिलि गयो पाछें भगवद इच्छा मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय महाप्रसाद लीयो तव जोसी रात्रि कों सोयो तव श्री ठाकुर जी ने कह्यौ जो मेरे पेट में दूखत है तव जगन्नाथ जोसी ने सुनि वा और सोंठ और अजवायण समर्पी परि मन में पश्चात्ताप वहुत भयो पाछें श्री ठाकुर जीनें कह्यौ जो अव मेरे पेट में सुख भयो ॥+

वार्त्ताप्रसंग ३

वहुर एक समय जगन्नाथ जोसी अपने सेव्य श्री ठाकुर जी कों उत्थापन करि कें पास ठाड़े हुते श्री ठाकुर जी कों मूंठा करत हुते और वैष्णव ठाड़े दर्शन करत हुते ता समय एक रजपूत गरासिया आयो सो वे वैष्णव हुतो सो आय कें वैष्णवन में ठाड़ो भयो ता समय एक डोकरी फूल की माला लैकें आई सो वह माला दूर तें श्री ठाकुर जी के ऊपर वानें डारी तव जगन्नाथ जोसी कों रिस चढ़ी सो माला वैष्णवन के ऊपर डारी सो वह माला वे वैष्णव के गले में जाय परी तव वा गरासिया रजपूत कों रिस आई तव गरासिया नें अपने मन में विचारी जो देखो या जोसी ने माला वाको दीनो औ

र याकों न दीनों परि भलौ जो रजपूत को जायौ जो या
जोसी कों ठौर मारूं तब वह रजपूत तरवार हाथ में
लेके नित्य तकत फिरे दाव पावे तो घात करे त
ब जगन्नाथ जोसी एक दिन बहिर्भूमि तें आवत
हुते तब वा रजपूत नें जगन्नाथ जोसी के ऊपर पी
छे ते तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जी ने वह तर
वार श्री हस्त मों थांभी और श्री मुख सों कह्यो जो

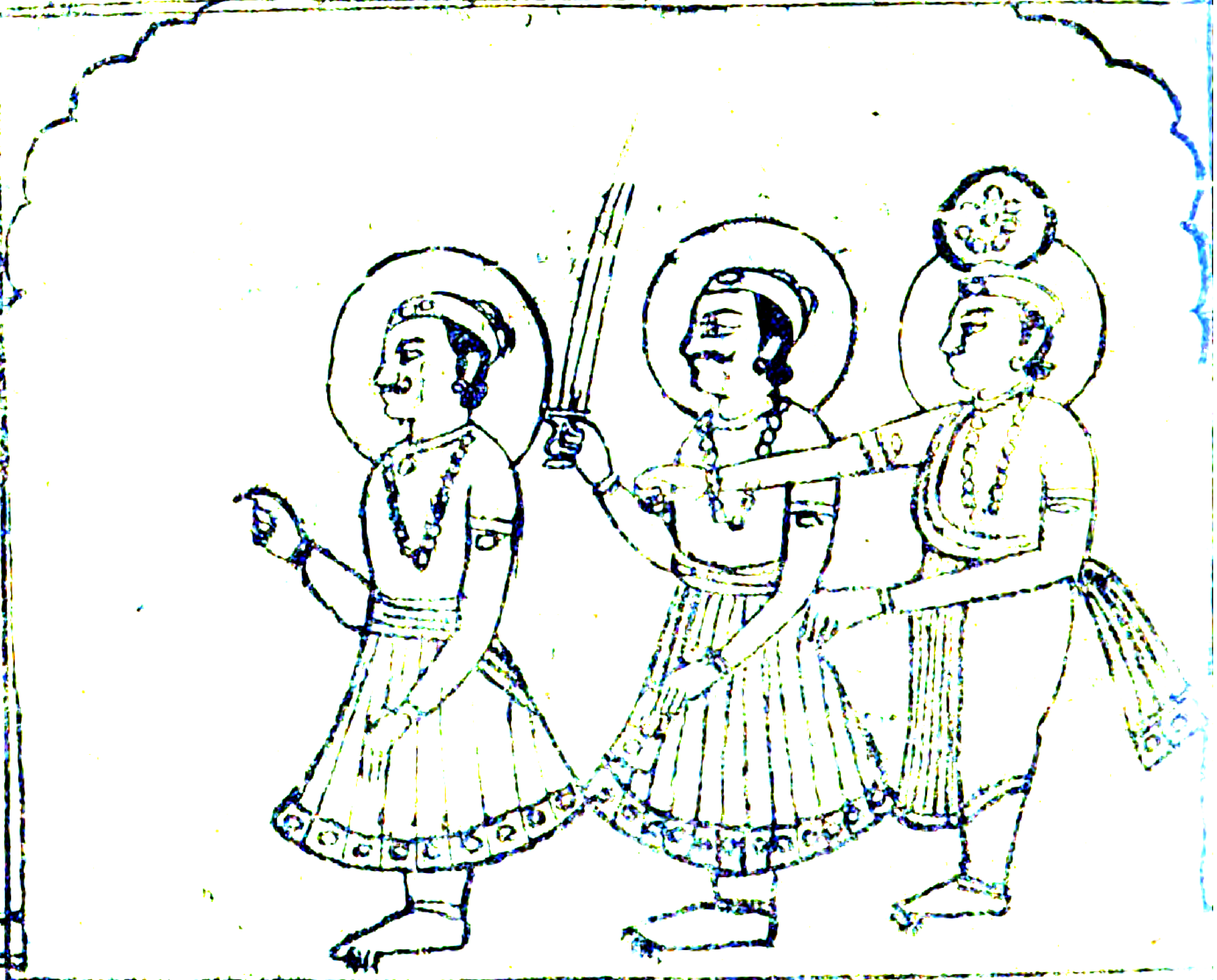

याकों मारे मति वह तब गिरि गयो तब जगन्नाथ
जोसी फिर के देखे तो श्री ठाकुर जी आमन भये
पीछें ठाडे हैं तब जगन्नाथ जोसी ने वा गरासिया
सों कह्यो जो फिटरे पापी तैनें यह कहा कीयो
तब वह रजपूत तरवार डारि कें जगन्नाथ के पा
वन परयौ और कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा कीजै

अनुग्रह कीयें और जगन्नाथ जोसी के पाव हाथ सों पकर रह्यो तब जगन्नाथ जोसी कों दया आई तब वा कों नाम दीयो सो जगन्नाथ जोसी ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तब वा रजपूत कों जगन्नाथ जोसी ने नाम दीयो निवेदन करवायो तब वह भलो वैष्णव दीय भयो वैष्णव के बीच ठाड़ो रह्यो ताको फल सिद्ध भयो सो जगन्नाथ जोसी ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ४ ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जगन्नाथ जोसी की माता तिन की वार्ता ।

लिख्यते

ताकें द्वै बेटा हुते बड़े बेटा तो नरहर जोसी और छोटे बेटा जगन्नाथ जोसी गिदालू के वासी तिन दो उन सों माता नें कह्यो जो तुम जाय के श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पाइ आवो और समर्पण करवाय आवो और बेटान के हाथ में एक एक मोहर दीनी सो मोहर एक लाटी में मेलि कें वे दोउ भाई अड़ेल कों चले सो कितनेक दिन में अड़ेल जाय पहुंचे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू तो अड़ेल में हुते नाहीं .. आप तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ रायजी के दर्शन कों पधारे हुते पाछे जगन्नाथ जोसी

नरहर जोसी ने विचार कीयो जो हम फिरि चलेंगे तो हमारी माता खीजेंगी जो नाम समर्पण कीये विनु तुम को आश नाते आपुन पुरुषोत्तम क्षेत्र चलैं यह अपने मन में विचार करकें जगन्नाथ जोसी और नरहर जोसी ये दोउ भाई पुरुषोत्तम क्षेत्र कों चले सो थोरे दिन में पुरुषोत्तम क्षेत्र जाय पहुचे जाय के पूछी जो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप कहां रहत हैं तब एक वैष्णव ने घर बताय दीनों तहां ये दोऊ भाई गये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करिकें बैठे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो तुम्हारी माता नाकी है तब इनको बहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम को पहचानत हैं और हम तो कबहूं देखे नाहीं और श्री आचार्य जी महाप्रभून नें फेरि पूछी जो श्री ठाकुर जी के दर्शन कर आये तब इन दोउनें कह्यो जो महाराज नाहीं किये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो जाय कें दर्शन करि आवो तब ये दोऊ भाई दर्शन कों गये तहां देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभू जगन्नाथ राय जी के पास ठाढ़े हैं तब इनकों आश्चर्य भयो जो यह कहा हमनें तो इनकों अबही घर देखि आये हुते तब मन में फिर जानी जो दूसरी वाट होयगी तहां होयकें आये होयंगे फेरि मन में सन्देह भयो पाछें दर्शन करिकें आये तब देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभू बैठे हैं तब आय कें दंडोत करिकें बैठे तब दोऊ भाई विस्मय

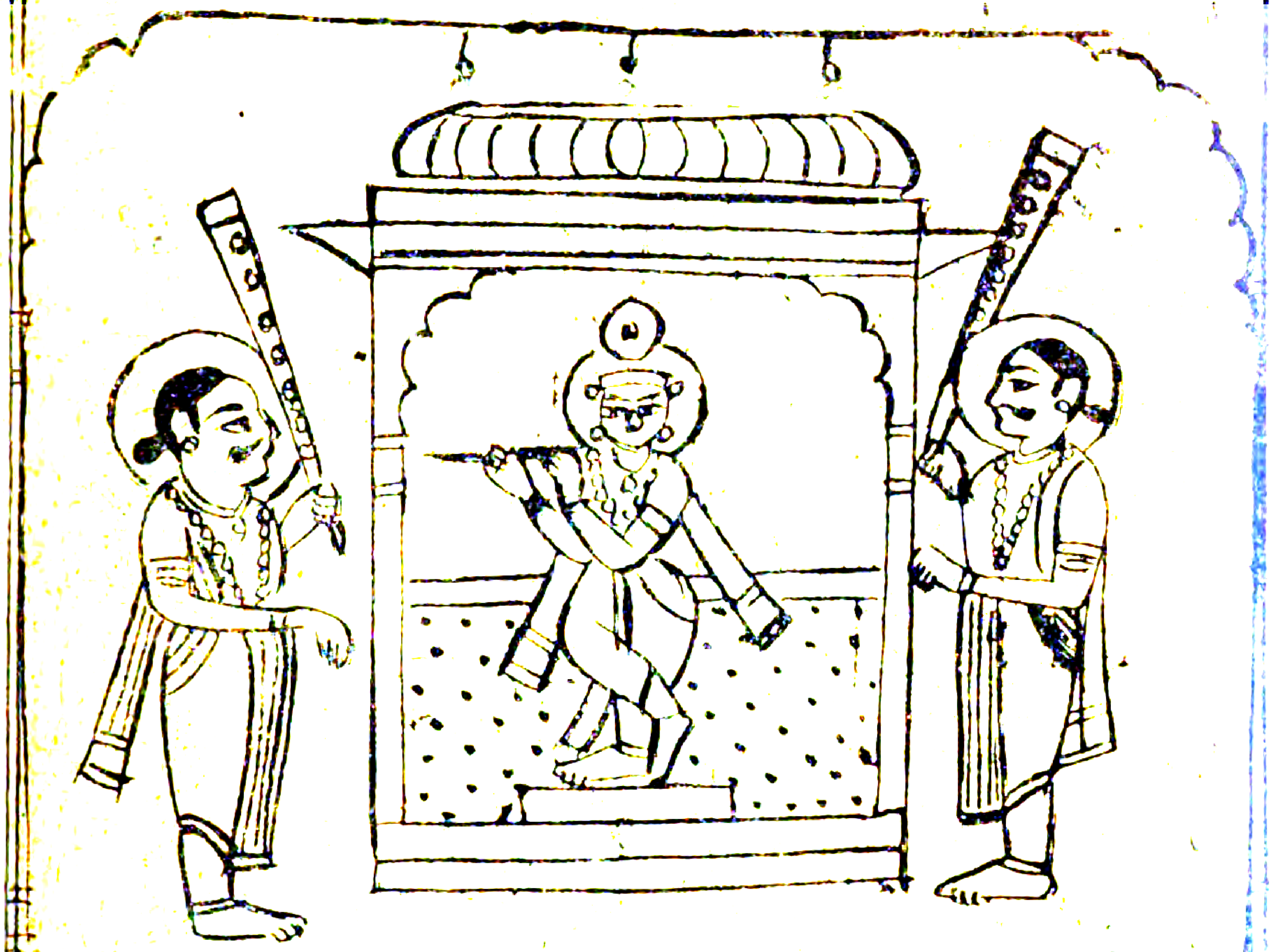

भये आपस में मोहंडो देखन लागे चकृत होय रहे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पूछी जो दर्शन करि आये और जो तुम्हारे मन में सन्देह आयो हतो सो निवर्त भयो तब इन दोऊ भाई ने कही जो सन्देह तो निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो तुम्हारी माता ने भेट मोहर पठाई हैं सो लावो तब गांठि में ते मोहर काढि के आगे राखी पाछें नाम निवेदन करवायो अपनो महात्म इन दोउ भाईन कों आपने ऐसो दिखायो सो स्वरूपासक्ति भई ता पाछें वहां कितेनक दिन रहि के आज्ञा मांगि के चले सो मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को वि-

चार करत जाय ऐसें करत अपने घर आय पहुंचे सब माता सों सब समाचार कहे तब माता बहुत प्रसन्न भई पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून का कृपा ते भले भगवदीय भए ताते इनकी वार्त्ता अब कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक नरहर जोसी जगन्नाथ जोसी के बड़े भाई। तिनकी वार्त्ता। लिख्यते ॥

सो एक समय नरहर जोसी पुरुषोत्तम क्षेत्र श्रीजगन्नाथ राय जी के दर्शन कों चले सो तहां मजल जाय उतरे तब स्नान करिकें रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तब देखे तो एक बालक वरस दस को एक रूख ऊपर ते उतर कें आय ठाड़ो भयो तब वा बालक कों देखि कें नरहर जोसी कों आश्चर्य भयो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तब वह लरिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसार कें मांगन लग्यो तब नरहर जोसी ने अपने मन में विचारो जो यह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसारे तब नरहर जोसी नें द्वै रोटी घी सों चुपरि कें तिनके ऊपर दारि धरि कें बालक के हाथ में दीनी तब वह बालक इमली के रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें फेर नरहर जोसी देखे तो वह बालक नाहीं तब दूसरे दि

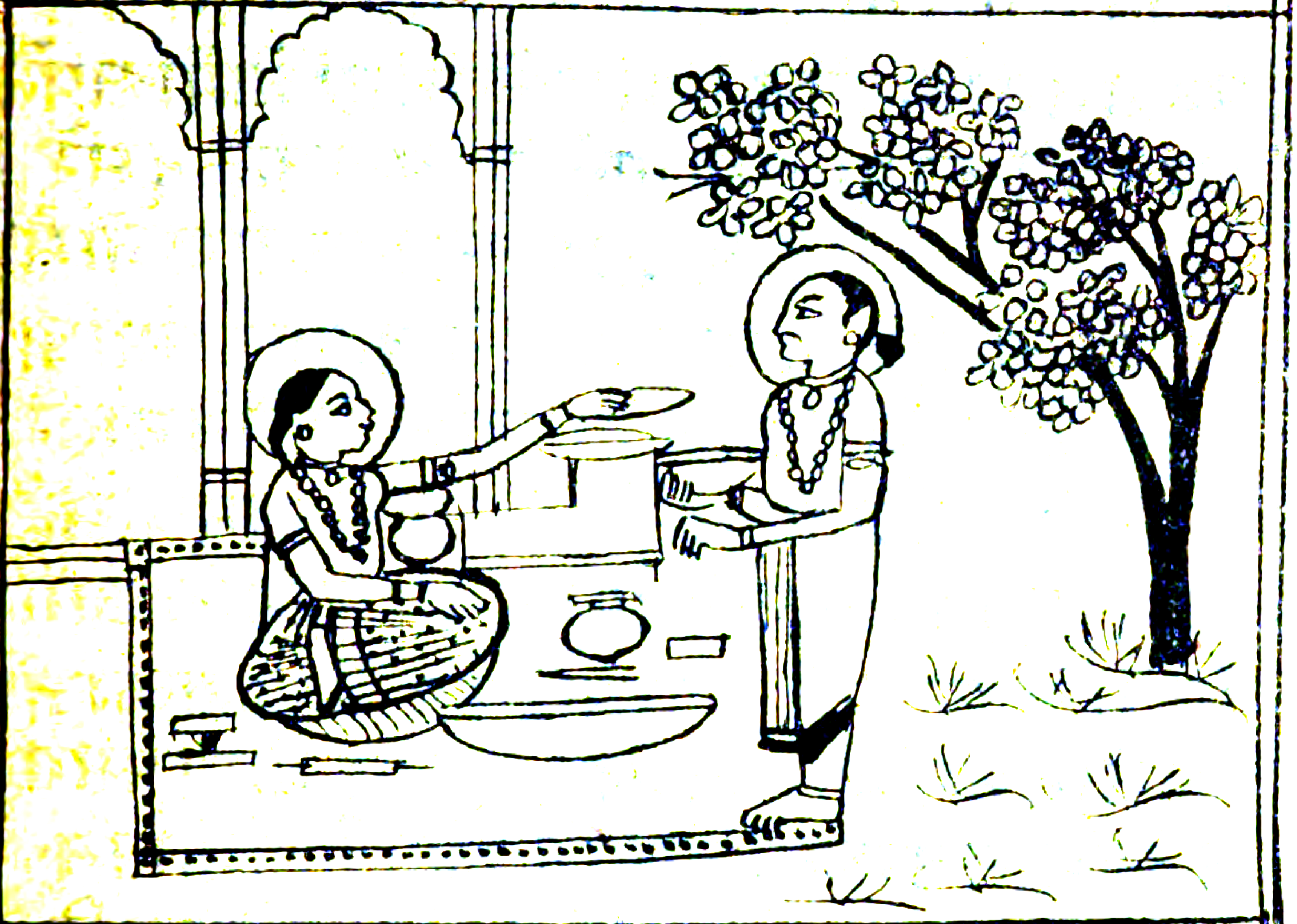

न मजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो तव तैसें ही वह वालक इमली के रूख ऊपर ते उतर कें आयो और तैसें हीं हाथ पसार्यो तव नरहर जोसी कों और सन्देह भयो जो कोउ छलिवे कों आयो होय तो कैसें देउं और जो भगवद स्वरूप होय तो प्रसादी महाप्रसाद कैसें देउं तव यह सन्देह करि कें वा वालक कों कछू न दीनो तव वह वालक रूख ऊपर चढ़ि गयो पाछें नरहर जोसी नें महाप्रसाद लीयो सो यह वात सिवालू में जगन्नाथ जोसी सों श्री ठाकुर जी ने कही जो आज में नरहर जोसी के पास गयो हो तहां में हाथ पसार कें माग्यो परि मोकों कछू न दीयो तव जगन्नाथ जोसी ने वह दिन वह महीना वह सम्वतव

हू वार लिखि राख्यौ जो नरहर जोसी आवेंगे तव पूछेंगे तव कितनेक दिन पाछें नरहर जोसी अपने घर आये तव माता सों भाई सों मिले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में न्हाए तव जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे जो नीके हैं पाछें जगन्नाथ जोसी ने नरहर जोसी सों कह्यौ जो अमुके सम्वत में अमुक महीना में अमुकी तिथि में अमुके वार पटना तें आगें पेंडे में मजल उतरे तव रसोई करिकें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यौ तहां कोऊ वालक हाथ पसारत देख्यौ तव नरहर जोसी ने कह्यौ जो एक दिन तौ में सुन्दर वालक देख कें द्वै रोटी घी सों चुपरि ता ऊपर दार धरिकें दीनी और दूसरे दिन तौ मोकों सन्देह भयौ जो कोऊ छलिवे कों आयौ होय तौ कैसें देउ तातें न दीनी तव जगन्नाथ जोसी नें कह्यौ जो तुमने वुरी कीनी जो न दीनी वे तो श्री ठाकुरजी आप हुते और जव आपन दोऊ भाई श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों गये हुते तव हमारी माता नें मोहर भेंट पठाई हुती सो आपन सन्देह करि राखी हुती तव आप श्री आचार्यजी महाप्रभून ने मांग लीनी तातें अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभून विना श्रीठाकुर जी विना और संदेह न करनों अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू के वल प्रताप तें उन विना कछू न संभवे तव दोऊ भाईन के मन में यह निश्चय भयो ॥ +

वार्त्ताप्रसंग ॥ १ ॥

औरएक समय नरहर जोसी कों जिजिमान अलियान गाव में रहतो ताकौ नाम महीधरजी हुतो तथा वाकी वहन कौ नाम फूलबाई हुतौ तिनसों नरहर जोसी ने कह्यौ जो तुम श्री गुसांईजी के पास नाम पावौ वैस्नव होउ तव उन कह्यौ जो भलें अवश्य तुम श्री गुसांईजी कों पधरावो तव नरहर जोसी आगें आय कें श्री गुसांईजी कों पधराय कें अलियान में गये तव महीधरजी तथा फूलबाई सों कह्यौ जो श्री गुसांईजी पधारे हैं तव दोउ भाई बहन अत्यंत प्रसन्न भए तव महीधरजी ने नरहर जोसी सों कह्यौ जो मैं श्री गुसांईजी को खालि

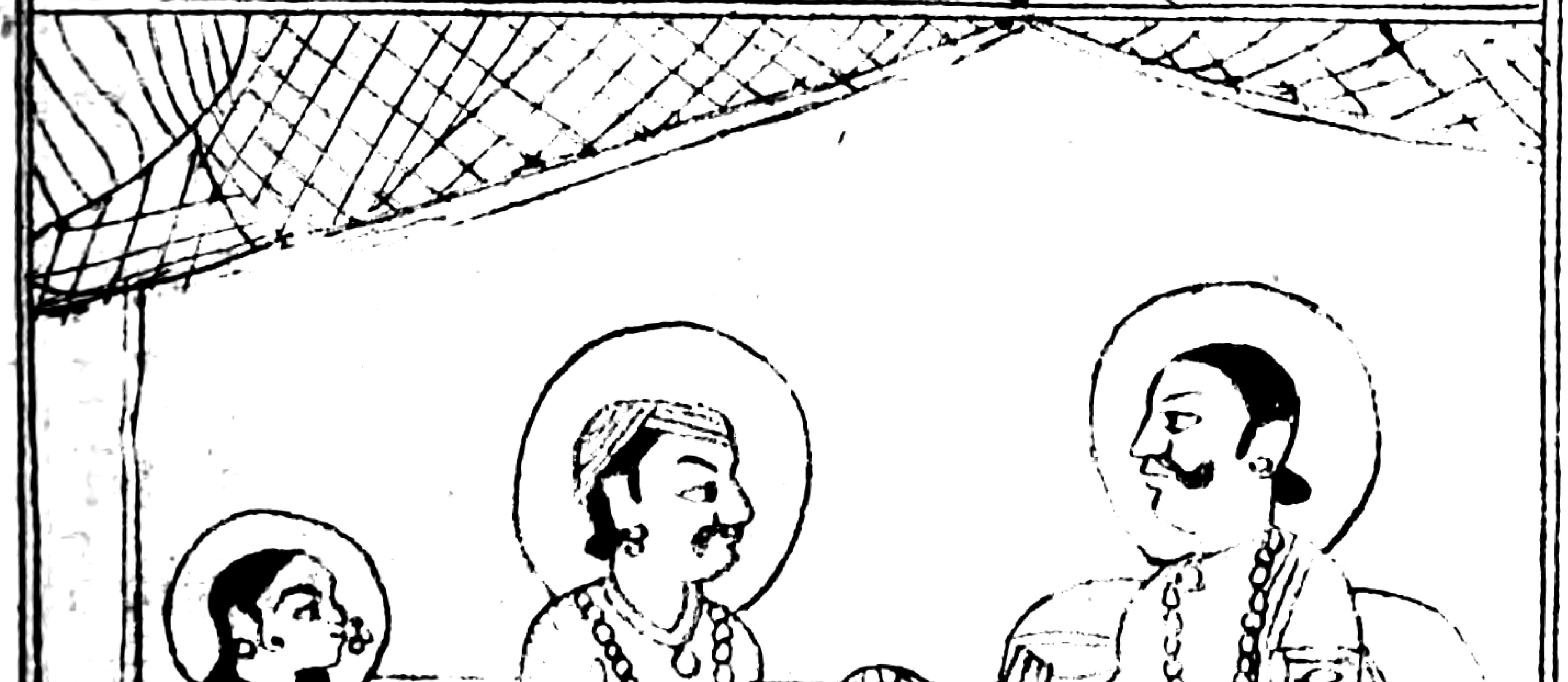

हाथन कैसें पधराऊं तव मह्मीधर जी ने नरहर जोसी सों रुपैया मोहरन की खीचरी करवाय कें न्यौंछावर करि कें श्री गुसांई जी कों अपने घर में पधराय ता पाछें मह्मीधर जी फूलवाई तथा सव वाल गोपाल सव कुटुम्व कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवायौ निवेदन करवायौ और भली भांति सों श्री गुसांई जी की सेवा करि कें विदा किए पाछें श्री गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तव नरहर जोसी खिराल् अपने घर आये ता पाछें कितनेक दिन में वा अलियान गांव में आगि लगी ता समय नरहर जोसी खिराल् के तालाव के ऊपर ते नित्यकर्म करि कें तुलसी फूल की डारी तथा झारी हाथ में लैकें घर आवत हुते ता समय नरहर जोसी के मन में आई जो अलियान गाम में आग लगी तव नरहर जोसी पैंडें ठाड़े होय कें तुलसी दल बीच में धरि कें झारी में ते जल लैकें अंजुली सों तुलसीदल के पास पानी की धारा करि कें कुंडलिया कीनो इतने ही में अलियान में आग बुझी और मह्मीधर जी की हवेली घर सव वच्यौ ता पाछें कितनेक दिन में नरहर जोसी अलियान में गए तव फूलवाई ने नरहर जोसी सों कह्यौ जो यहां आगि कौ उपद्रव वहुत भयो है सो श्री गुसांई जी की कृपा ते अपने तो कल्याण भयौ तव नरहर जोसी ने कह्यौ जो प्रभून की कृपा ते सदा कल्याण ही होय इतनों कहि कें नरहर जोसी खिराल् आये तव महाप्रसाद लीयो पाछें

दोऊ भाई एकांत बैठे तब नरहर जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो जो मैं एक दिन नित्य कर्म कर कें तालाव के ऊपर ते आवत हुतो तुलसी फूल कीडारी तथा झारी मेरे हाथ में हुती और अलियान गांव में आगि लगी सो बात कही तब नरहर जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपुन कों इतनों हट। कीयो न चाहिये जो श्री ठाकुर जी कों श्रम करवायो यह अपने मार्ग की रीति नांही तब नरहर जोसी ने कह्यो जो मैं तो हठ नाहीं कीयो परि मेरे मन में ऐसी आयी जो ये अबही वैस्नव भए हैं और आगि लगी ताते मैनें ऐसो कीयो तब दोऊ भाई हंसि मुसिक्याय चुप कर रहे पाछें कह्यो जो प्रभू बड़े कौतुकी हैं इनकी कृपा ते सब भलो होय आपन हठ न कीजे यह अपनों धर्म नाहीं ताते श्री वल्लभ राजकुमार की अद्भुत लीला है सरण आये तिनकों अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा जगन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे जो परमार्थ के लिये ऐसें कीयो ताते इनकी वार्ता कौ पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ + ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ ३२ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक राणाव्यास साचोरा। ब्राह्मण गोधरा के वासी तिनकी वार्ता लि०॥

सो जगन्नाथ जोसी ने प्रथम गणाव्यास पास नाम पायो हुतो फिर श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम पायो परि जगन्नाथ जोसी गणाव्यास के पास बहुत रहते सो एक समय गणाव्यास भगवद इच्छाते गाधरा की वेस्या नें इनसों संग कीयो सो वात राजद्वार में सुनी तव हाकिम के प्यादे गणाव्यास कों लेन आये तव जगन्नाथ जोसी ने गणाव्यास कों और गाम में करदीनों पाछें जगन्नाथ जोसी तहां अकेले रहे और वे प्यादे आये हुते सो गणाव्यास कों ढूंढन लागे तव जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो गणाव्यास तो इहां नाहीं चलो हों उत्तर देउंगो तव जगन्नाथ जोसी कों लायकें हाकिम के आगे ठाढ़ो कीयो तव हाकिम ने कह्यो जो गणाव्यास कहां है उननें पराई स्त्री सों अन्याव कीयो है तातें वाकों लावो और मैं तो जगन्नाथ जोसी कों नीकें जानत हों जो जाकों नाम जगन्नाथ जोसी सों कवहूं अन्याव न करै यह तो गणाव्यास नें अन्याव कीयो है तातें उनकों लाउ तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही सुनों तो में कहूं तव हाकिम ने कह्यो जो कहो तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो गणाव्यास ने अन्याव नाहीं कीयो गणाव्यास ऐसो काम कवहूं न करै तव हाकिम ने कह्यो जो क्यों जानिये तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो मेरी कही मानों तो में कहूं जो गणाव्यास के बदले जो कछु कहो सो में करूं तव हाकिम ने एक पैया को मुगदर मगायो सो अ

ग्नि में मेलि कें तातो कीयो तव जगन्नाथ जोसी स्नान करिकें आयो तव जगन्नाथ जोसी नें ठाढ़ो होय कें कह्यो जो राणाव्यास नें अन्याय कीयो होय तो मोकों अग्नि जराय के भस्म करि डारियो और नाही अन्याय कियो होय तो मुगदल शीतल होय जइयो पाछें वह मुगदल अग्नि मेंसे काढ़ि कें दोऊ हाथन सों उठाय अपने गरे में मल्यो सो घड़ी १ लों राख्यो सव जनें बोले जो जोसी तू काढ़ि तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो हूं काढ़ि कें कौन कें गरे में डारूं तव हाकिम नें कह्यो जो मेरे गरे में डारो पाछें जोसी ने भूमि में डार दीनों तव भूमि जर गई तव सव जनें कहन लागे जो जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हों तुम सांचे हो तुमकों तुम्हारे धनी को ऐसो सांच है यों कहि कें जगन्नाथ जोसी को समाधान करि कें कह्यो जोसी तुम कछू मांगो में तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों जो जोसी ने कह्यो जो इतनों मांगत हों जो जानें यह चुगली करी है तासों कछू मति कहियो तव यह सुनि कें हाकिम तथा सव जने बहुत प्रसन्न भये पाछें जगन्नाथ जोसी अपने घर आये वे ऐसे भगवदीय हे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते कहा न होय ॥ ✢ ॥ ✢

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और पहिले राणाव्यास नें माधोदास सारस्वत के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये तव परम वैष्णव भये सो वे राणा

व्यास सिद्धपुर में रहते सो गगाव्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती में स्नान करत हुते ता समय एक रजपूतानी सती होयवे कों आई तव गगाव्यास के पास जगन्नाथ जोसी हुते तिनने पूछो जो सती होत हैं ताको प्रकार कहा तव गगाव्यास नें कहो जो प्रेत के संग वृथा ऐसो शरीर जरावत हैं जो गगाव्यास नें मूंड हिलाय के कह्यौ जो वह रजपूतानी सती होन आई हुती ताने देख्यो तव वा रजपूतानी नें साथ के मनुष्यन सों कह्यौ जो हूं तो न जरूंगी मोकों सत नाहीं है तातें मेरी हत्या चढेगी ऐसें कहि कें वहुत हसि दीनी और जरी नाहीं तव वे लोग वा मृतक कों जराय कें वा स्त्री कों गाम के वाहिर झोंपरी करि दीनी तव स्त्री उहां रही ता पाछें गगाव्यास न्हायवे कों आये तव वा स्त्री ने गगाव्यास सों आय कें पूछो जो तुमने मूंड हलाय के कहा वात कही ता वात के देखतें हों न जरी तातें मोसों कह वात कहो तव गगाव्यास नें कह्यौ जो हम तो आपुस में हसत वात करत हुते तव स्त्री ने कह्यौ जो हमसों काहे कों दुरावत हो जो वात होय सो कहो और बहुत आग्रह कीयो तव गगाव्यास ने कह्यौ जो हम आपस में हसत हुते जो यह ऐसी उत्तम देह पाय के नाहक प्रेत के साथ जरावत है या देह सों श्रीठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीये ऐसी उत्तम देह धरि कें श्री ठाकुर जी कों न भज्यो तव वा स्त्री ने गगाव्यास सों कह्यौ जो हूं तो तुम्हा-

री प्रारणा हों जो जा भांति यह देह श्री ठाकुर जी के काम आवै सो करौ तब यह बात सुनि के गंगाव्यास ने कह्यौ जो अब तौ तोकों सूतक है सूतक उतरेगो तब होयगो तब स्त्री अपने स्थल कों गई परि वाकों बहुत विरह उत्पन्न भयौ जो दिन प्रति दिन आवै सो गंगाव्यास को दर्शन करि जाय ऐसें करत सूतक उतर्यौ तब सुद्ध होय कें गंगाव्यास के पास आई तब गंगाव्यास ने कही जो तू सवारें आइयो सो वा स्त्री ने वा दिन कछू खायौ नाही पहिलें चना चबाय कें रहती सो वा दिन वा स्त्री ने जल पान हूं नाहीं कीयौ पाछें प्रातःकाल भयौ तब गंगाव्यास के आयवे कौ समौ भयौ तब आय के बैठि रही तब गंगाव्यास आये और स्नान करिकें भगवद स्मरण कीयौ तब वा स्त्री सों कह्यौ जो तू स्नान करिकें बैठि रही पाछें गंगाव्यास ने श्री आचार्यजी महाप्रभून को ध्यान धरिकें वाके कान में नाम सुनायौ तब नाम सुनत ही वा स्त्री कौं भगवद भाव उत्पन्न भयौ तब वा स्त्रीनें गंगाव्यास सों पूछो जो अब में कहा करूं तब गंगाव्यास ने कह्यौ जो अब भगवद सेवा करि तब वा स्त्रीने कह्यौ जो मेरी स्थिति तौ ऐसी है जो तुम कछू टहल देउ सो में करूं पाछें गंगाव्यास उपरना परदनी धोयवे कों देते सो धोयकें सिद्ध करिकें पहुंचावती प्रसाद गंगाव्यास के घर लेती ऐसें करत गंगाव्यास के घर कौ काम काज सब करन लागी पाछें भगवद

सेवाको सब काज काम करन लागी सो कितनेक दिन पाछें गणाव्यास के घर श्री आचार्यजी महाप्रभू पधारे तब गणाव्यास नें वा स्त्री कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम निवेदन करवायो तब वह स्त्री परम वैस्नव भई सो गणाव्यास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग। २। वैष्णव ॥ ३३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक रामदास सारस्वत ब्राह्मण राजनगर में रहते तिन की वार्ता

सो रामदासजी के मांथे नटवर गोपालजी श्री आचार्यजी महाप्रभूननें और अपनी पादुकाजी सेवा के लिये पधराय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो रामदास विवाह करिकें पृथ्वी परिक्रमा कों चले सो। कितनेक दिन में पृथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर आये परि रामदास स्त्री कों अंगीकार न करते तब दिन द्वै तथा चारि रहिकें द्वारिका कों चले तब रामदास की स्त्रीहू साथ चली परि रामदास स्त्री को साथ न आवन देहि ईंटन सों मारें परि रामदास की स्त्री तो दूर दूर साथ ही भई और रामदास के दास की पातर में झूंठ न उबरें सो खाय नाहीं भूखी ही परि रहे परंतु पति के साथ साथ ही रहे तब एक दिन श्री रणछोड़जी नें रामदास सों कही जो तू अपनी स्त्री कों अंगीकार करि त्याग काहे कों

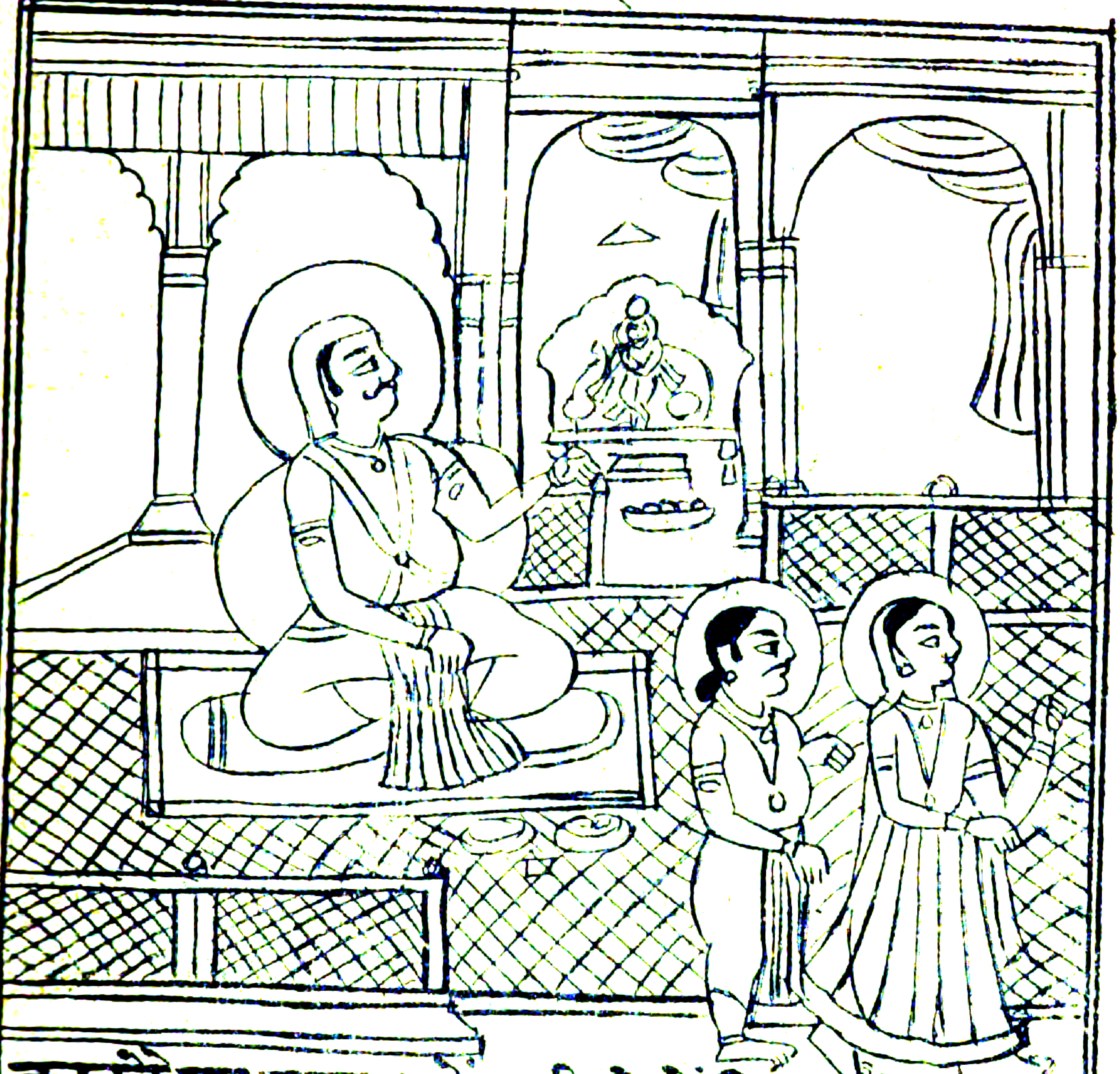

करत हे तब रामदास ने कही जो में विरक्त हों वैरागी हों मेरो स्त्री सों कहा काम हे तब श्री रणछोड़ जी नें कह्यो जो तेने विवाह काहे कों कियो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक हे तोकों ऐसी निठुरता न चाहिये जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक जानि कछु कहत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री कों अंगीकार करि तब रामदास ने अपनी स्त्री सों कह्यो जो तू मेरे साथ चली आउ तब मार्ग में रामदास के साथ जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साज लैकें डेरा में बैठी रहियो और में ऊपरा बीनि लाउं पाछें आप

स्नानकरि रसोई करी श्रीठाकुरजी कौं भोग समर्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयौ और स्त्री कों प्रसाद दियो सो कितनेक दिन मार्ग में चले आये पाछें एक दिन श्रीरणछोड़जीनें रामदास कौं आज्ञा दीनी जो तू अपनी स्त्री कौ नाम दै तब रामदास ने कह्यौ जो हूं नाम कैसें देउं तब श्रीरणछोड़जी ने कह्यौ जो तू नाम दै मेरी आज्ञा है तब श्रीआचा जी महाप्रभून कौ नाम लै श्रीरणछोड़जी की आज्ञा ते स्त्री कौ नाम दीयौ तब स्त्री के हाथ कौ महाप्रसाद लैन लाग्यौ पाछें कितनेक दिन में श्री आचार्यजी महाप्रभू राजनगर पधारे तब रामदासनें आयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कीये तब रामदास ने कह्यौ जो महाराज मेरी स्त्री कौं नाम समर्पण करवाइये तब आपने कह्यौ जो अब तो तैनें नाम दीयो है फेरि कहा तब रामदासने कह्यौ जो महाराज मैं तो श्रीरणछोड़जी की आज्ञा ते नाम दीयो है और मोकों श्रीरणछोड़जी की आज्ञा है जो श्रीआचार्यजी महाप्रभून पास नाम निवेदन करवाइयो तब यह सुनि कें श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें नाम निवेदन करवायो पाछें घर आय गृहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ~

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभू

न के सेवक गोविंद दुवे सांचोरा व्राह्मण तिन की वार्ता ॥

सो गोविंद दुवे श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करें परि मन में विग्रह हुतो तव गोविंद दुवे ने श्री आचार्य जी महाप्रभून कों वीनती पत्र लिख पठायो जो महाराज मेरे मन में विग्रह वहुत रहत है ताते में कहा करूं तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुवे कों लिख पठायो और पत्र में लिख्यो जो या ग्रंथ कों पाठ तू नित्य करियो सो तेरी विग्रहता सव मिट जायगी सो कृपापत्र आयो तव गोविंद दुवे नवरत्न कौ पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंद दुवे की सव विग्रहता मिट गई तव श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करन लागे ॥

वार्ता प्रसंग १

और एक समें गोविंद दुवे मीरा वाई के घर हुते तहां मीरा वाई सों भगवद् वार्ता करत अटके तव श्री आचार्य जी ने सुनी जो गोविंद दुवे मीरा वाई के घर उतरे हैं सो अटके हैं तव श्री गुसांई जी ने एक श्लोक लिखि पठायो सो एक व्रजवासी के हाथ पठायो तव वह व्रजवासी चल्यो सो वहां जाय पहुंच्यो ता समय गोविंद दुवे संध्या वन्दन करत हुते तव व्रजवासी नें आय कें वह पत्र दीनो सो पत्र वांचि कें गोविंद दुवे तत्काल उठे तव मीरा वाई

वहुत समाधान कीयो परि गोविंद दुवे नें फिर पाछें न देख्यो ॥१॥

वार्ताप्रसंग २

और एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे तव गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी और पांच सात वैस्नव हुते सो आप के साथ हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून सों द्वारिका में वीनती कीनी जो महाराज कछू कथा कहिये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूनने गोविंद दुवे सों कह्यो जो अवही तो मोकों अवकाश नाहीं तव गोविंद दुवे नें वीनती कीनी जो महाराज थोरी सी कहिये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे कों पोथी

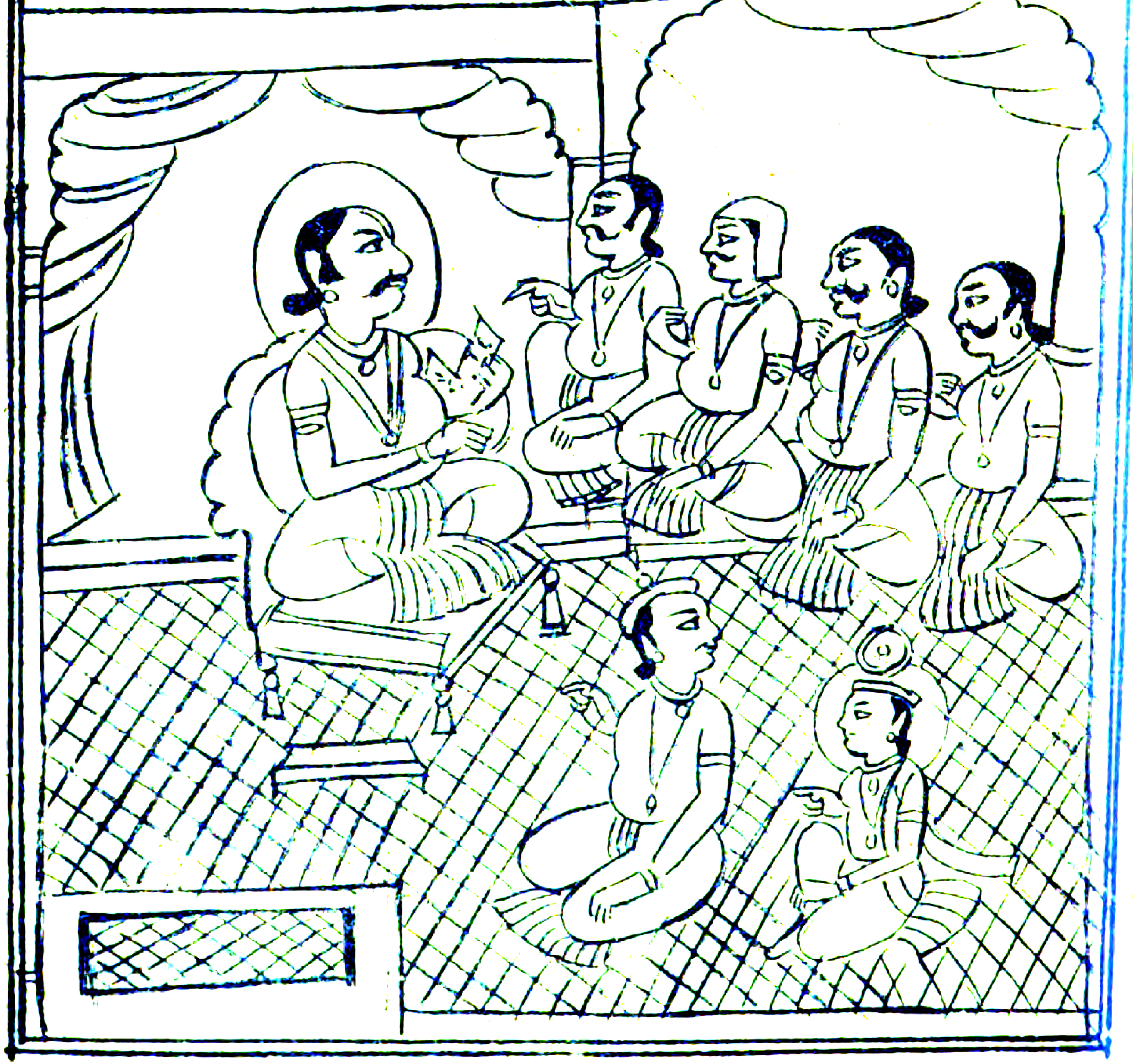

खोली तव इतने में गोविंद दुवे सों श्री रणछोड़जी वातें करन लागे तव आपनें गोविंद दुवे सों कह्यौ जो पोथी खुलाय कें वातें कौंन सों करत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें फिर देख्यौ जो श्री रणछोडजी सों वातें करत हैं तव आपनें पोथी वांधी और फिर आप पोढ़े ॥२॥

वार्ताप्रसंग ३

और सव वैस्नव श्री आचार्यजी महाप्रभून के थार कौ म प्रशाद पावते तव एक दिन श्री आचार्यजी महा प्रभून नें खवास सों कह्यौ जो तुम इन वैस्नवन कौं थार कौ महाप्रशाद मति देउ सो ता दिन श्री आचार्यजी महा प्रभू भोजन करि कें उठे हुते सो उठत ही खवास नें थार छूय कें मांजि धसौ तव श्री आचार्यजी महाप्रभून के थार कौ महाप्रशाद न मिल्यौ सो तादिन सव वैस्नवन नें उपवास कसौ तव श्री रणछोडजी नें श्री आचार्यजी महा प्रभून सों कह्यौ जो तुम इन वैस्नवन कौं थार नित्य देत हो तैसें इनकौं नित्य दीजियो तव दूसरे दिन श्री आचार्यजी महा प्रभून नें गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यौ जो तुम नें कालि महा प्रसाद कों नहीं लीनों भूखे काहे कों रहे तव गोविंद दुवे और जगन्नाथ जोसी ने श्री आचार्यजी महा प्रभून सों वीनती करि कें कह्यौ जो महाराज कालि आप के थार कौ महा प्रशाद न मिल्यौ तव श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यौ जो तुमकों अपने थार कौ महाप्र

साद तौ न देतौ परि तुम्हारी सिपारस वड़ी ठौर तें भई है तातें अव देंनो पर्यौ पाछें जो नित्य थार कौ महाप्रसाद देत हुते तैसें ही देंन लागे तव पे वैष्णव प्रसन्न होय कें रसोई करन लागे तव तहांतांई श्री आचार्य जी महाप्रभू द्वारिका में विराजे तहां तांई वैष्णव पास रहे पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री रणछोड़ जी सों विदा होय कें अडेल कों पधारे तव सव वैष्णव श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ आए सो श्री आचार्यजी महाप्रभून कों अडेल में पहुंचाय कें फेर अपने अपने घर आये पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागे सो वे गोविंद दुवे श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें इन की वार्ता अव कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३४ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक राजा दुवे माधौ। दुवे दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ना गाम में दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मण और रहते सो एक कौ नाम हरिकृष्ण हुतौ और एक कौ नाम रामकृष्ण हुतौ सो वड़ौ भाई रामकृष्ण पढ्यौ वहुत हुतौ और छोटो भाई मूरख हुतौ और वह वड़ौ जो पढ्यौ हुतौ सो गाम के चौंतरा ऊपर

वैठि कें पटेल के आगें कथा कहतो और छोटो भाई मूरख हुतो सो खेती की रखवारी करतो सब टहल करतो सो वह वड़ो भाई कछू काम गयो हुतो दूसरे गाम में सो तादिन इहां की कथा रहगई पाछें एकदिन मेह की वर्षा वहुत भई सो वह छोटो भाई खेत तें उठि कें घर आयो तव भावज नें कह्यो जो तुम रोटी जें लेउ तव वा देवर नें कह्यो जो सीत वहुत लागत है और में वहुत भीज्यो हूं तातें तू ताती परोसे तो मैं जेऊं तव भावज नें कह्यो जो तू खाय तो खा नातर में जाय कें सोय रहत हूं अव तू कहा गाम के चोंतरा ऊपर वैठि के पटेल के आगे कथा कहेगो कै वादे की गरास फेरेगो तातें खानो होय तो खा नातर हूं तो जाय कें पड़ि रहूंगी और जैसो है तैसो खा नातर कहूं उठि जा तव वा देवर के मन में वहुत दुख लाग्यो और अपने मन में विचार्यो जो हूं या देस को त्याग करूं कहूं निकस जाऊं ता पाछें घर में तें निकस कें मन में विचार करन लाग्यो जो राजा दुवे माधो दुवे वड़े महापुरुष हैं तातें इनकों नमस्कार करि कें जाऊं पाछें तहां गयो तव राजा दुवे माधो दुवे दोउ भाईन कों नमस्कार कीयो और रोवन लाग्यो तव दुवे जीने पूछो जो तू कौंन है पाछें देखि कें पहिचान्यो तव वासों कह्यो जो तू तो अमुके को वेटा है हरिकृस्न तेरो नाम है और तू हमारी जाति कौ है सो तोकों ऐसो कहा दुख है तासों तू रोवत है तव वाने कह्यो जो मेरे दुख कौ पार नाहीं तव

दुवेजीने कह्यो जो तू अपनों दुख कहि तो कों कहा दुख है तब यानें कह्यो जो तुम मेरे दुख कों दूर करो तो में कहूं तुम बड़े हो महा पुरुष हो तब दुवेजी ने कह्यो जो श्री ठाकुर जी बड़े हैं वे सब को दुख दूर करेंगे तू अपनों दुख कहि तब याने सब समाचार कहे जो मोकों भावज ने ऐसे ऐसे वचन कहे हैं सो मेरे हृदय में खटकत हैं ताते तुम्हा पास आयो हूं सो मेरो दुख तुम से दूर होयगो पाछें दुवेजीनें वाकों समाधान कीयो समाधान करि कें वाकों महा प्रसाद लिवायो पाछें रात्रि को समय रह्यो तब प्रातःकाल भयो तब वासों दुवेजी ने कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जाय के देहकृत करि स्नान कर के आयो तब माधो दुवे सों राजा दुवे ने कह्यो जो अब कहा करिये तुमहीं जानों तुम्हारी जीभ चली है जो तुम करोगे नाहीं तो कैसें छूटोगे झाड़ लग्यो है तब माधो दुवेनें कह्यो जो अब तो तुम्हारी शरण आयो है तुम श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक हो अब तो याको कार्य कीयो चाहिये तब पहिले तो याको क्षौर करवायो पाछें स्नान करवाय के मन्दिर के द्वार के आगें बैठायो तब माधो दुवे ने राजा दुवे सों कह्यो जो अब यासों कहनों होय सो कहो तब राजा दुवे ने माधो दुवे सों कह्यो जो तुम्हारो यह काम है मेरो काम नाहीं ताते तुमहीं कहो तब माधो दुवे ने राजा दुवे सों कह्यो जो तुम बड़े हो ताते

तुमहीं कहो तव राजा दुवे ने माधो दुवे सों कह्यौ जो मेरी आज्ञा है ताते तुमहीं कहो तव माधौ दुवे ने वाकूं उपदेश दीयौ अष्टाक्षर मंत्र कान में कह्यौ पाछें वाकूं अष्टोत्तर सत नाम कौ जप करवायौ सो जप कीयौ सो एक एक माला जप कीधे पाछें संस्कृत वोलन लाग्यौ तव माधो दुवे ने राजा दुवे सों हँसि कें कह्यौ जो अव आज्ञा होय तो एक वार याकों फेरि जप करवाइये तव राजा दुवे ने माधो दुवे सों कह्यौ जो अव पूय करवाइये पाछें माधो दुवे ने दूसरी वार जप करवायौ तव भगवद् स्वरूप स्फुरे भयो और पुराण इतिहास में ज्ञान भयौ तव माधौ दुवे नें राजा दुवे सों कह्यौ हँसि के कह्यौ जो आज्ञा होय तो अव फेर याकों जप करिवाइये तव राजा दुवे नें माधो दुवे सों कह्यौ जो अव यह इतने ही कौ पात्र है अधिक सभाय नाहीं और कह्यौ जो तुम केछु मन में मति लाइयो जो हमते भयौ है ताते यह केछु भयौ है सो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते भयौ है हमारो तुम्हारो स्वरूप तो वे जानत हैं पाछें वाने उहां ही प्रसाद लीयौ पाछें दुवे जी की आज्ञा मांगि कें अपने गांम के चौंतरा ऊपर जाय वैठो और कथा कहन लाग्यौ पहलें वडो भाई कथा कहतो सो वह गांव गरीं जानि कें कोई न आवतो सो वा दिन अहं ते वा कौ सेवक आयो ताने कथा कहत देख्यौ तव वाने गांम के पटैल सों आय कह्यौ जो तुम कथा सुनिवे

कों कैांन गए भट्ट जी तो कथा कहि रहे हैं तव पटेल
य के देखे तो भट्टजी कहा कथा कहे हैं तव पटेल नें
कह्यो जो भट्टजी अव तांई तुम कथा कहन कों नाहि
आए तव भट्ट जी नें कह्यो जो पहिले वड़े भाई कथा
कहते ताते में नाहीं आवतो अव वे और गाम गए हैं
ताते मैं कथा कहिवे कों अव आयो हूं तव वे भगव
इच्छा ते भट्टजी भली भांति कथा कहन लाग्यो ताते
सव कोउ वहुत प्रसन्न भए और सव कोउ कहन
लागे जो हमारो वड़ो भाग्य है जो अव कें ऐसो व्रा
ह्मण मिल्यो तव कितने क दिन में वह कथा सम्पू
र्ण भई तव सवनें मिलि कें भट्टजी की पूजा करी
और कह्यो जो अव तो तुमहीं कथा कहिवो करो
कथा को आइयो पाछे वह व्राह्मण माधो दुवे के
पास आयो आय कें वीनती करी जो तुमारी कृपा
ते मैंनें कही जो जाको यह पूजा मिली है सो तुम
लेउ यह सव द्रव्य तुम्हारो है तुम मेरे गुरू हो तव
जादुवे माधो दुवेनें वासों कह्यो जो हमारे और तुम्हा
गुरू श्री आचार्यजी हैं ताते यह द्रव्य सव उनको
है हमारो यामें कछू नाहीं ताते यह द्रव्य सव अडेल
पहुंचावनो तव वा व्राह्मण नें सव द्रव्य अडेल
पहुंचायो सो कितनेक दिन पाछें रामदास सांचौ
व्राह्मण और जगन्नाथ जोसी ये वैस्नव श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल जात हैं तिन
के साथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयो तव कित
नेक दिन में वाको वड़ो भाई आयो वह गांव गयो

हुतौ सो आयौ तब यानें राजा दुवे माधौ दुवे सों कह्यौ जो तुम आज्ञा देउ तौ मेरे पिता कौ ग्रास है सो फेरौं तब दुवे जी ने कह्यौ जो अब कहा कछु संदेह है तू जा सब सिद्धि होयगी तब वह दुवे जी सों आज्ञा लैकें वा गाम कों चल्यौ सो जाय पहुंच्यौ पाछें वा राजा सों मिल्यौ आशीर्वाद दीयौ तब वह रजपूत वा भट्ट कों देखिकें बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो हमारो बड़ौ भाग्य जो तुम कृपा करि कें आये और कह्यौ तुम डेरा करौ तब उन डेरा कीयो पाछें रसोई की सामिग्री चलती करी पाछें सब जने भट्ट जी के पास आय बैठे तब भट्ट जी नें एक श्लोक कौ व्याख्यान करौ तब वे सब जने बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो तुम पांचरात्र कृपा करिकें रहो.. पाछें तुम्हारी बिदा करेंगे ऐसें कहि कें वे तो अपने घर कों गये पाछें रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय कें महा प्रसाद लीयो तब दूसरे दिन सब मिलि कें विचार करन लागे जो भट्ट जी की बिदा कब करिये और कहा करिये और यह ब्राह्मण बहुत योग्य है और बहुत दिन में आयो है तब उन सबन में एक वृद्ध हुतौ तिन नें कह्यौ जो याकों १००८ मन तौ अन्न देउ और एक सत याकों मुद्रा देउ और याके पिता कौ ग्रास पुरातन भूमि है सो एक १०० सौ बीघा है सो याकों लिखि देउ – इतनों लिखि देउ जो हम हूं ब्राह्मण रिण तें छूटें तब सबन नें कह्यौ जो यह ठीक बात कहे है सो याके

कह्यो सबन कों करनों चाहिये पाछें सबनें मिलकें चीठी लिखि दीनी और कह्यो जो याकों अन्न सिद्धि है सो लै जाउ तब भट्ट ने कह्यो जो यह सब अन्न मेरे घर पहुंचाओ तब वा अन्न कों गाडा भरि दीने और कह्यो जो अपने साथ लिवाय लै जाउ और सबनें मिलि कें वस्त्र दीने और गाय और एक भैंस और सत मुद्रा इतनें याकों दीये और कह्यो जो तुम इतनो प्रति वर्ष आय कें लै जायो करो तब भट्ट जी सबन सों विदा होय कें अपने गांव कूं चले सो आय पहुंचे तब अपने द्वारे के आगें आय पुकार्यो और पुकार कह्यो जो भामी किवाड़ खोलि हों पटैल के चौंतरा ऊपर कथा कहि कें और

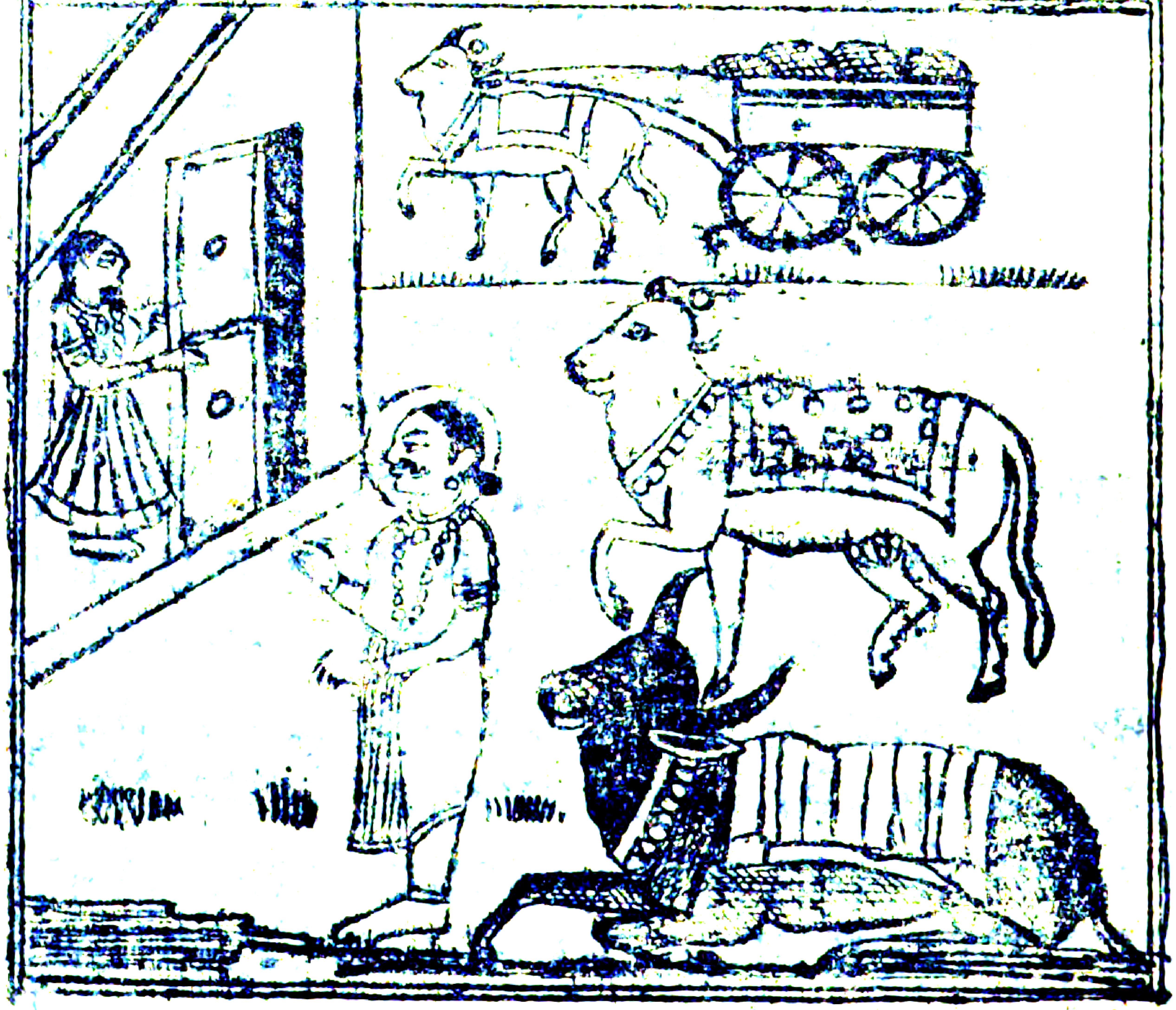

पिता कौं ग्रास फेरि कें आयो हों ताते अब हारि खेलि तब भाभी खोल कें देखें तो देवर साचें ही ठाढ़ो है तब देख कें बड़ो भाई उठि आयो तब देखे तो छोटे भाई के ऊपर भागवद तेज विराजत है तब वह बड़े भाई डर्प्यो जो मति यह कछु मन में बुरी लावे तब वह छोटो भाई भाभी के पाय लाग्यो और कह्यो जो तुम्हारे वचन ते मोकों श्री ठाकुरजी की कृपा भई है तब वा के बड़े भाई ने कह्यो जो स्नान करो महाप्रसाद लेउ तब छोटे भाई ने कह्यो जो मैं तो राजा दुबे माधो दुबे कों नमस्कार कीये विना जलपान न करूंगो तब वा के बड़े भाई नें कह्यो जो यह कहा तब छोटे भाई नें कह्यो जो यह भयो है सो सब उन की कृपा ते भयो है मोकों तो तुम नीकें जानत हो जैसो हो तैसो तब बड़े भाई ने कह्यो जो मैं तुम्हारे साथ चलूंगो तब दोऊ भाई राजा दुबे माधो दुबे के घर गये तब जाय कें बड़े भाई ने उन कों नमस्कार कीयो और छोटे ने दंडोत करी तब राजा दुबे ने माधो दुबे सों कह्यो जो तुम्हारो सेवक आयो है और यह प्रसंग वा के बड़े भाई के आगें मति कहियो तब दुबे जी ने कह्यो आवो बैठो तब वे दोउ भाई बैठे ता पाछें दुबे जी सों छोटे भाई नें सब वार्ता निवेदन करी तब दुबे जी ने कह्यो जो तेरे ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभून को हाथ है ताते ऐसो क्यों न होय तब वा के बड़े भाई नें कह्यो जो हम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन नाहीं करे हम

ने तौ तुम देखे हौ और जैसें याके ऊपर कृपा करकें याकौं कृतार्थ कीयो है तैसें मोकूं हूं कृपा करकें कृतार्थ करो तब वाकूं हूं दुबेजी ने कृतार्थ कीयो नाम सुनायो पाछें दोऊ भाईन कों महाप्रसाद लिवायो पाछें छोटे भाईनें दुबेजी सों कह्यौ जो आज्ञा होय तौ अन्न ये मुद्रा गाय भेंसि कपड़ा उहांसों जो लायो हौं सो आप के मन्दिर में आवे तब दुबेजी ने कह्यौ जो तुम तौ जानत ही हो जो या द्रव्य के धनी तौ श्री आचार्यजी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यौ जो आप की आज्ञा प्रमान तब दुबेजीनें कह्यौ जो अन्न और गाय भेंसि और सब द्रव्य इकठोरो करो पाछें दुबेजीसों दोऊ भाई बिदा होय कें अपने घर आये तब सब द्रव्य हुतो सो इकठोरो कीयो पाछें दिन थोरे से में श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका पधारे तब सिद्धपुर में राणाव्यास के घर उतरे तब राजा दुबे माधो दुबे और वह सब द्रव्य लेकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों सिद्धपुर में आये तब आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कीये पाछें इन दोउ भाईन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास । नाम निवेदन करवायो और वह द्रव्य हुतो सो सब भेट कीयो तब दिन है चार रहि कें आप आगें पधारें तब राजा दुबे माधो दुबे और वे दोऊ भाई ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभून सों बिदा होय कें अपने घर आये पाछें वे दोऊ भाई ब्राह्मण राजा दुबे माधो दुबे के संग ते

बड़े भगवदीय भए तातें संग करनें सो भगवदीय के करनें ते राजा दुबे माधौ दुबे ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३५॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक श्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते ॥

सो उत्तम श्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते और सबन कूं आप परोसते तातें सब सेवक उत्तम श्लोकदास कों महतारी करि बोलते सेवकन कों प्रीत से परोसते तातें श्री गुसांई जी इन के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते हैं उत्तम श्लोकदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥३६॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक ईश्वर दुबे सांचोरा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो ईश्वर दुबे श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते और उत्तम श्लोकदास हू श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते सो तब उत्तम श्लोकदास की देह छूटी तब श्री गुसांई जी नें ईश्वर दुबे को नाम उत्तम श्लोकदास राख्यो सो वे श्रीनाथजी की

सेवकन की रसोई करते सो अपनी गांठि ते घृत म
मगाय कें सवन कें थारीने अधिक घृत परोसते ताते
याह सों सब सेवक महतारी कह कें वोलते सो य
ह वात श्री गुसांईजी ने सुनी सो सुनि कें वहुत प्रसन्न
भये तव ईश्वर दुवे सों श्री गुसांईजी ने पूछी जो तुम
अपनी गांठि ते द्रव्य को घृत मगाय कें काहे को
परोसत हो तव ईश्वर दुवे ने कह्यो जो महाराज दु
न को सेवा में श्रम वहुत होत है तव यह सुन कें श्री
गुसांईजी वहुत प्रसन्न भये और कहे जो याकों-
सव सेवकन ऊपर ऐसी वात सत्य है तव ईश्वर दु
वे सों श्री गुसांईजीने कह्यो जो तू मांगि हों तेरे-
ऊपर वहुत प्रसन्न भयो हों तव ईश्वर दुवे ने प्रसन्न
होय कें कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपर तें अ
प्रसन्न होय तव श्री गुसांईजी सूं वैस्नवन नें कही
जो महाराज याने यह कहा मांग्यो तव श्री गुसांई-
जी सुनि कें चुप करि रहे तव श्री गुसांईजी सूं हरिदा
स नें पूछी जो महाराज मेरे मन में सन्देह है जो उत्तम
श्लोक ने यह कहा मांग्यो तव श्री गुसांईजी ने क
ह्यो जो यह सन्देह तो उनही सों मिटेगो तव उन
वैस्नवन नें उत्तम श्लोक दास सों पूछी जो तुमने श्री
गुसांईजी पास कहा मांग्यो तव उत्तम श्लोकदास
ने कह्यो जो जव श्री गुसांईजी मोपर प्रसन्न होय-
कें कह्यो जो हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों ताते तू
मांगि तव श्री गुसांईजी मोकों प्यारे लागे तव म
न में विचार भयो जो आज प्रभूजी को प्रसन्नता ते

ऐसो प्यारो लागत हों और में सेवक हों और जो कदाचित् कोऊ अपराध तें मन प्रसन्न होय जाय तो न मेरो मन कहूं बिगरे तातें यह मांग्यो जो सदा निरंतर तुमारे चरणारविंद पर मन रहे सो उनके दीए ते रहे तब यह बात सुनि कें सब वैस्नव प्रसन्न भए तब विचारी जो सेवक कों ऐसोई धर्म चाहिये पाछें श्री गुसांई जी प्रसन्न होय के श्री अंग की सेवा दीनी सो वे मुखिया भीतरिया भये — वे उत्तम श्लोक दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्त्ता को पार नाहीं तातें इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये

वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ३७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक वासुदेव दास छकड़ा सारस्वत ब्राह्मण सो सीहनंद के। तिनकी।

वार्त्ता

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभून के बड़े पुत्र श्री गोपीनाथ जी सो अड़ेल ते आगरे पधारे सो आगरे में वैस्नवन नें एक सौ एक मोहर भेट कीनी पाछें आगरे ते श्री गोपीनाथ जी नें आज्ञा करी जो कोऊ ऐसो वैस्नव है जो एक सो एक मोहर हमारे घर पहुंचावे तब वासुदेव दास नें कह्यो जो महाराज मोहर मोकों देउ में पहुंचाउंगो तब वे

मौहर वासदेव ककड़ा कों दीनी सो मौहर लाय कें मेलिकें गोला कीयो सो गोला की पूजा करत मार्ग में चलेगाये सो दिन पांच में अडेल जाय पहुंचे सो गांव के बाहर गोला फोरि कें मौहर काढि पाछें श्री गुसांई जी कों दीनी और श्री गोपीनाथ जी को पत्र श्री गुसांई जी कों दीनौ पाछें श्री गुसांई जीनें वह पत्र वांचि कें मौहर गिनलीनी पाछें श्री गुसांई जीनें वासदेव दास कों महाप्रसाद लिवायौ पाछें "वासुदेव दासने श्री गुसांई जी सों वीनती कीनी जो महाराज पत्र कौ जुबाव लिखिये और पत्र में मौहरन की पहुंच लिखिये जो हूं तौ सवारे जाउंगो तब श्री गुसांई जीनें वा पत्र कौ जवाव लिखि दीनो जो मौहर पहुंची ताकी पहुंच लिखि ... "पत्र दीयौ सो वीड़ कें वासदेव दास कों दीनों पाछें वासुदेव दास सोय रहे तब रात्रि घड़ी एक रही तब वासदेव दास उठि कें श्री गुसांई जी के पास आय कें दंडौत करिकें अडेल तें चले सो पांच दिन में श्री द्वार आए श्री गुसांई जी कौ पत्र श्री गोपीनाथ जी कों दीनौं दिन दश में अडेल आए और गये सो पत्र वांच कें गोपीनाथ जी वहुत प्रसन्न भए और पूछी जो वासदेव दास मौहर कौन भांति सों लेगये हते तब वासदेव दास नें कह्यौ जो महाराज मौहरन को गोला करिकें वा गोला की पूजा करत ले गयो तब श्री गोपीनाथ जी नें कह्यौ जो या भांति कवहू

न राखिये जो स्वरूप करि मानिये ताकों या भांति कैसें करिये तब वासुदेव दासनें कह्यौ जो महाराज प्रतिज्ञा तौ न भई हुती ॥ +

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

वहुरि एक समय श्री गुसांईंजी श्री मथुरा में विराजत हुते सो एक समय श्री गुसांईंजी शृंगार करि सेवा ते पहुंचि कें बाहर बैठक में विराजे सो बैठक में बैठि कें रूपचन्द नंदा कों पत्र लिख्यो तामें वसंत की सामग्री मंगाई तब वासदेव सों कह्यौ जो तू इतनी सामग्री लेकें संध्या कों आइयो तब भंडारी कों आज्ञा दीनी जो एक टोकरा याकों प्रसाद को देउ तब भंडारी ने ऐसें शीघ्र को आहार दीनो टोकरा में तब श्री गुसांईंजी ने वासदेव दास कों आज्ञा दीनी जो तोकों पनहीं पहरें को कछू चिंता नाहीं पेंडे में प्रसाद खात चल्यो जैयो तब वासुदेव दास सोई करत आये सो तब आपके आय पहुंचे तब तांई प्रसाद खाय चुके तब फोरी झारि कें रूपचन्द नन्दा के घर गये ता समय रूपचन्द नन्दा अपने घर प्रसाद लै चुक्यौ हो पतू लैकें सीक करत हो सो वासदेव दास पत्र लैकें आए तब रूपचन्द नदा नें हाथ धोय पोंछि कें वह पत्र माथे चढ़ाय के लीनों और भाई सों कह्यौ जो वासदेव दास आए हैं सो घर में कहौ ये भूखे होंयगे तब वासदेव दास ने कह्यौ जो मोकों तो मथुरा जानों है तासों मोकों सखड़ी महा प्रसाद लेवे कों अवकाश नाहीं ताते

सामग्री लै देउ तौ मैं जाउं इहां तौ प्रशाद है नांहीं तव रूपचन्द नन्दा वस्त्र पहर कें सामिग्री लैन गये तव वासदेव दास साथ गये तव रूपचन्द नन्दा नें छोटे भाई गोपालदास सों कह्यो जो अपने घर में जितनों प्रसाद होय सो तू लैकें द्वारकू दरवाजे वेठियो हम आवत हैं तव छोटे भाई नें जितनों घर में प्रसाद हो सो सव लैकें द्वारकू दरवाजे आय वैठ्यो और रूपचन्द नन्दा वाजार में आयकें सव सामग्री लीनी तव वासुदेव दास नें कह्यो जो मेरौ अगरौ घर तौ प्रसादी है तव सव सामग्री पिछुली और कटि सों द्रढ कर वांधी पाछें रूपचन्द नन्दा और वासदेव दास द्वारकू दरवाजे आए तव देखें तो छोटो भाई वैठ्यो है प्रसाद लीये सो सव प्रसाद सों वासदेवदास की झोरी भरी और विदा कीए आप दोऊ भाई घर कों आए और आप वासदेव मथुरा कों आए सो तीसरे पहर श्री गुसांईजी स्नान करवे कों पधारे हुते ता समय वासदेव दास सामग्री लैकें आय ठाड़ो भयो तव श्री गुसांई जी उठि कें वासदेव दास की कटि ते सामग्री खोलि लीनी और श्री गुसांई जी वासदेव दास के ऊपर वहुत प्रसन्न भए और आज्ञा दीनी जो तोकों महा प्रसाद की सामग्री राखी है सो जाय कें प्रसाद लै तव वासुदेव दास विश्रांत स्नान करि कें आयो तव प्रसाद लीनों सो वासुदेव की क्षुधा वहुत हुती मण डेढ खातो परि जैसो खातो वहुत तैसे ही वहुत

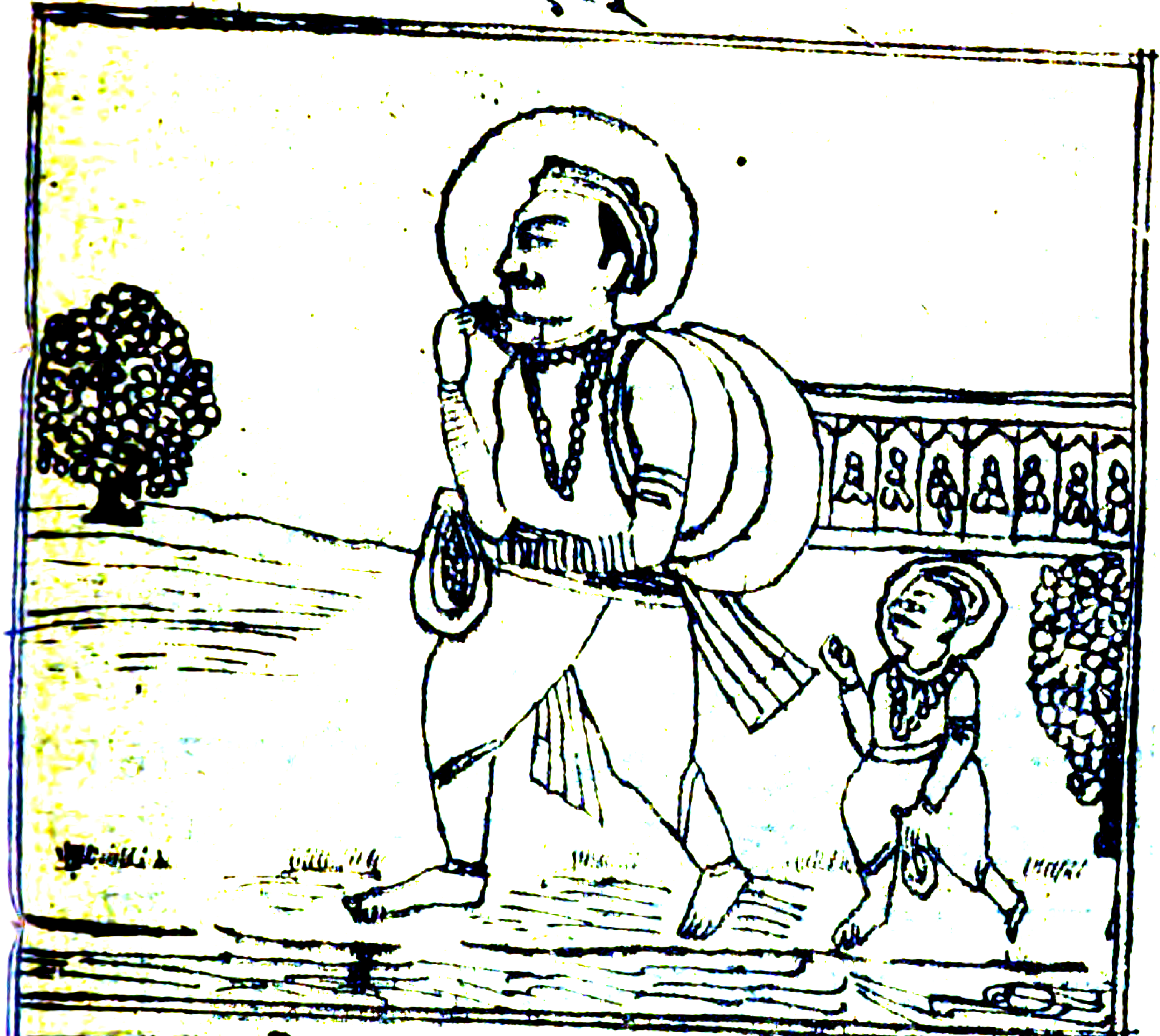

पराक्रम हुतो मथुरा ते दोय पहर में आगरे गए और आए ऐसे पराक्रमी हुते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २

बहुर नित्य प्रति श्री गुसांईजी श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें बाहिर आय कें खवास सों कहते जो तू थैली पीढ़ा लैकें विश्रांत जैयो और आप दर्शनार्थ जन्मस्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन करकें पाछें श्री गुसांई विश्रांत स्नान को पधारते या भांति सों श्री गुसांईजी नित्य करते सो एक दिन मथुरिया चौबे सब मिल कें काजी के पास आय कें चुगली करी जो तुम इनसों लागा बांधो क्यो तो इनके सेवक खास हैं सो तुमकों दोय चार

हजार रुपैया ये देऊंगो तब काजी मनुष्य दोय सौ हथियार बांधि कें जन्म स्थान आय ठाढौ भयो इतने में श्री गुसांई जी श्री केशोराय जी के दर्शन कों पधारे तब दर्शन करिकें बाहर आए पाछें घोड़ा ऊपर सवार भये तब काजी ने कह्यो जो अब तुम कहां जाउगे तब वासुदेव दास नें श्री गुसांई जी सों बीनती कीनी जो महाराज मोकों बुरी नजर दीसत है तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो ये तेरी कहा करेंगे तोसों होय सो तू करि तब वासुदेव दास देखें तो एक के हाथ में ढाल और गुरज देखे सो ताकें वासुदेव नें एक थपेड़ मारी सो थपेड़ लगत मात्र वह तो गिर पर्यो तब वाकी ढाल और गुरज लेकें वासुदेव दास के पीछे मनुष्य बीस पचीस हुते तब वे भाजि कें हवेली में बैठि कें दरवाजो दैकें छिपरहे तब श्री गुसांई जी घोड़ा ऊपर सवार भये और उनके दरवाजे होकर पधारे तब वासुदेव दास ने श्री गुसांई जी सों कह्यो जो महाराज अब भले इकठोरे भराहैं जो आज्ञा होय तो इन सबन कों दरवाजो तोरि कें मारों तब श्री गुसांई जी ने नाहीं करी और कह्यो जो तेरो ये कहा लेत हैं पाछें श्री गुसांई जी विश्रांत पधारे तब दूसरे दिन श्री गुसांई जी स्नान कों पधारे तब वह काजी अपने मनुष्यन कों साथ लेकें गरे में पटुका देकें आय कें बीनती करी जो महाराज आज तुम कन्हैया देखे और भीम हू देखे जो प्रभू

जीके प्रतापते सब डरे तब श्री गुसांई जीने कह्यो जो यह ऐसो हुतो जो फिर यासों बोलततो अकेलो यह सबन कों मारतो तुम सब ठौर रहते और याकों मन में तो बहुत आई हुती परि हमनें ऐसी न करनी हुती पाछें काजी कों समाधान करिकें घर कों पठायो सो श्री गुसांई जीकी कृपा ते श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक ऐसे सामर्थ्य वान हुते॥ वा॰ प्रसंग २

और सीहनन्द में उत्सव होतो तब वासुदेव दास कों बुलावते नाहीं तब एक समय सीहनन्द के वैस्नव मिलिकें श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्शन कों आये सो तिनके साथ वासदेव दास हू आये तब वैस्नवन ने श्री गुसांई जीकों दर्शन कीयो पाछें उहां रहि कें कोई समें पाय कें वासदेव दास ने श्री गुसांई जी सों बीनती करिकें कही जो महाराज ये वैस्नव मोकों सीहनन्द में उत्सव होत हैं तब बुलावत नाहीं तब श्री गुसांई जी चुप करि रहे तब पाछें उन वैस्नवन कों जबडेरा कों बिदा कीये तब तिन में तें चार पांच मुखिया रहे सो तिनकों श्री गुसांई जी ने राखे और सब वैस्नवन कों डेरा पठाये तब श्री गुसांई जीने उन वैस्नवन सों पूछी जो तुम वासदेव दास कों उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावते हो तब उन वैस्नवन ने बीनती करिकें कही जो महाराज वासदेव दास कों बडे उत्सव में कों नाहीं वतहैं और छोटे उत्सव में नाहीं बुलावते जो ये भूखे रहेंगे तो दोष लागे तब श्री गुसांई जीने उन कों आज्ञा दीनी जो तुम

वंधान वांधौ जो १०० वैस्नवन कों वुलावो तौ पचास ५० तौ और वैस्नवन कों वुलावो और पचास में एक वासदेव दास कों वुलावो और जहां ५० पचास वुलावो तौ २५ पचीस तौ और वैस्नवन वुलावो और पचीस में एक वासुदेव दास कों वुलावो और जहां पचीस वुलावो तहां तेरह तौ और वैस्नवनें वुलावो और वारह में एक वासदेव कों वुलावो ऐसें दष्टांताई श्रीगुसांई जी नें वंधान वांध्यो ऐसें पांच ताई वंधान वांध्यो ऐसें जितने वुलावने होय तितने तौ और वैस्नव वुलावो और आधेन में एक वासदेव कों वुलावो तव उन वैस्नवननें नें कह्यौ श्रीगुसांई जी सों जो महाराज ये तौ भूखे रहेंगे तव श्रीगुसांई जी नें उन वैस्नवन सों कह्यौ जो दष्टांताई तुम आधे में वासदेव दास कों वुलावो तामें चाहे सो होय ताकों तुम कहा करोगे सो यह प्रकार मैंनें तुम कों कर दीनों है सो मेरी आज्ञाते तुम कों कछू वाधा नाहीं जो तुम आधे में वासदेव दास कों खुसी सों वुलावो पाछें भूखे रहे तौ तुम कों कछू दोष नाहीं परि यह श्री आचार्यजी महाप्रभून कों सेवक है ताते वुलाए विना वासदेव दास कों तुम उत्सव मति करियो तव वैस्नवन नें कही जो महाराज की आज्ञा होयगी सोई करेंगे तव वे कोईक दिन श्रीगोकुल रहिके पाछें सव वैस्नव सोहनन्द कों गये तव के वैस्नव सोई करन लागे श्रीगुसांई जी वासदेव कों श्री आचार्यजी महाप्र-

भून को सेवक जानि कें ऐसी कृपा करते सों वेवासदेव दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥ +

वार्त्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३८ ॥ संवंध १०८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के । सेवक वावा वेणु और कृष्ण दास घघरिया देवदास तिनकी वार्त्ता लिख्यते ।

सो ये वावा वेणु हृदय के नेत्रन सों देखते सो वावा वेणु और छोटे भाई कृष्ण दास ये दोउ भाई श्री केसों रायजी के आगें कीर्तन करते तहां यादव दास हू कीर्तन में साथ हुते तब कीर्तन करन लागे सो यह पद गावत हुते जो देखरी नैनन गिरवरधरन सो यह पद गावत कृष्ण दास नें अपनी देह छोड़ी तब यादव दासनें वावा वेणु सों कह्यो जो यह पद गावत कृष्णदास नें अपनी देह छोड़ी तब वावे वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्री नाथजी द्वार में छोडेंगे पाछें कृष्ण दास को संस्कार श्री केसों राय के पीछे कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो तब शुद्ध होय के श्री नाथजी द्वार चले सो कितनेक दिन में श्री नाथजी द्वार आय पहुंचे तब पर्वत ऊपर आय कें वावा वेणु नें श्री नाथजी के दर्शन कीये पाछें वावा वेणु नें कीर्तन किये तब श्री नाथजी के कंठ

ते फूल की मालागिरी सो माला और एक बीड़ा रामदास भीतरया नें बावा वेणु कूं दीनों सो बावा वेणु ने मांथे चढ़ाय कें लीनों तब रामदास भीतिरिया नें बावा वेणु सों कह्यौ जो तुम्हारी विदा। श्री नाथजी नें कीनी तब बावा वेणु ने श्री नाथजी कों दंडौत कीनी पाछें नीचे उतरे सो आन्यौर की ओर उतरे तब बावा वेणु नें यादवदास सों कह्यो जो हूं तो पर्वत ते नीचे उतरि कें अपनी देह छोडूंगो तू सावधान रहियो और तू वेगो आइयो ऐसें यादवदास सों कहि कें बावा वेणु पर्वत ते नीचे उतरि कें श्री नाथजी कों दंडौत करत मात्र अपनी देह छोड़ी पाछें यादवदास ने बावा वेणु कौ संस्कार कीयौ पाछें मृतक उ[illegible]सौ तब सुद्ध होय कें यादवदास श्री गुसांई जी के पास आए सो श्री गुसांई जी कौ दर्शन कीयौ और दंडौत कीनी तब श्री गुसांईजी यादवदास कों परम भगवदीय जान कें मन में विचारें जो कोई एक दिन में यादवदास कौ हू स्थिति है ताकें लिये श्री गुसांईजी विचारे जो श्रीनाथजी की सेवा में यादवदास कों राखियें तो आछौ है तब श्री गुसांईजी नें कह्यो जो यादवदास तुम अकेले हो ताते अब श्री नाथजी की सेवा करो तब श्रीगुसांईजी की आज्ञा ते यादवदास ने श्रीनाथजी की सेवा नीकी भांति सों करी सो सेवा सों पहुंचि कें यादवदास नीचे उतरे और नीकी भांति सों सेवा करते सो कहूं कान्ना में जाय

के यादवदास लकड़ी परी होंय सो इकठौरी करी पाछें जब जान्यो जो लकड़ी सिद्धि भई तब श्रीनाथजी पास आज्ञा मांगि कें दंडोत करि कें नीचे उतरे सो अगिन लैकें जहां लकड़ी इकठौरी हती तहां आप आए सो लकड़ीन कौं श्रीनाथजी की ध्वजा के आगारी चौंतरा वनायो सो चौंतरा के ऊपर आप पोढे जा दिशा कौं व्यार चलत हती ता दिशा कों आगिन धरि कें ध्वजा कों प्रनाम करि कें श्रीनाथ को स्मरण करि कें यादवदास नें अपनी देह छोड़ी पाछें व्यार ते अगिन जरि उठी सो जर कें भस्म होगई यादवदास ने

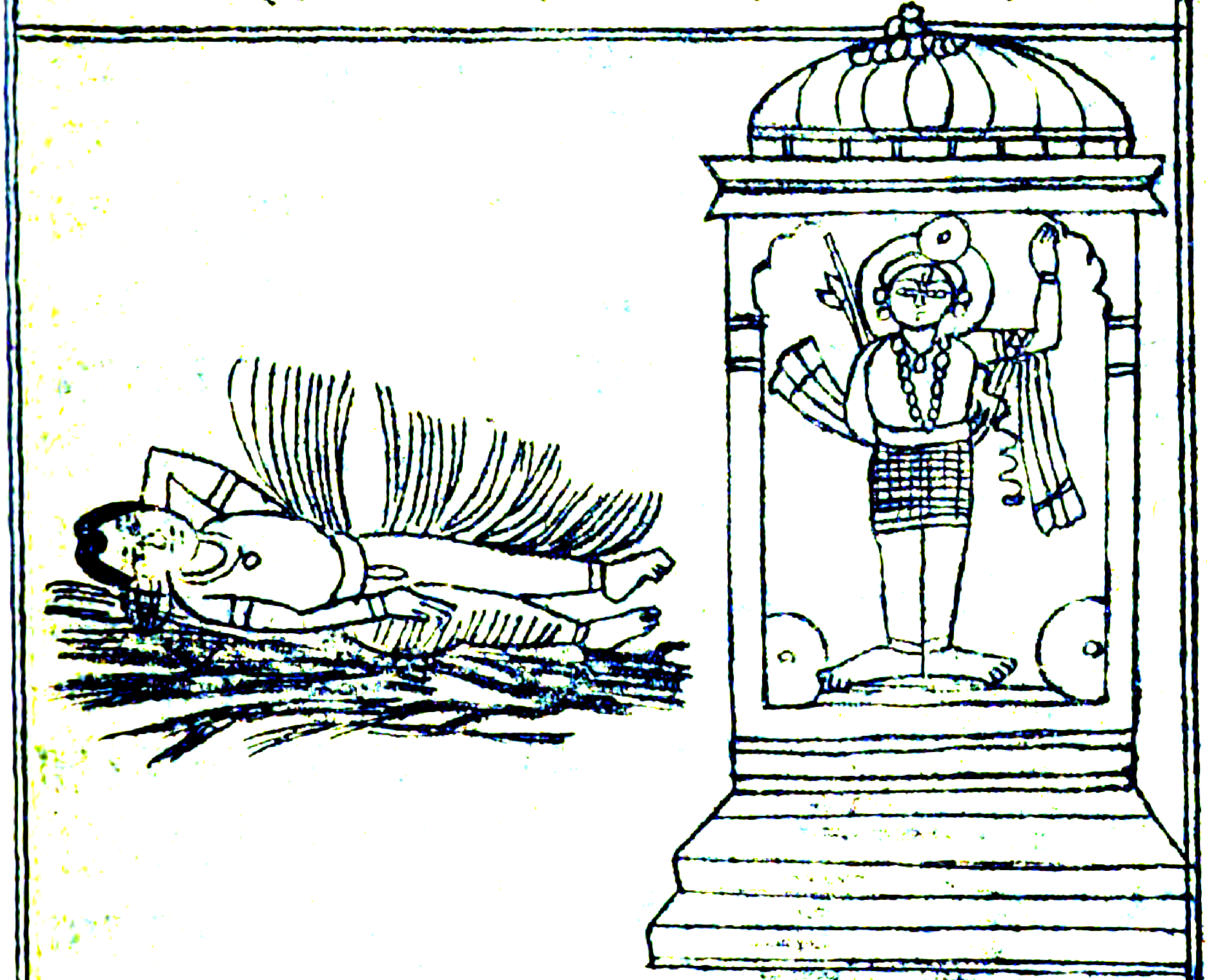

अपने हाथन सों अपनो संस्कार कीयो तथा वावा वेणु को संस्कार कीयो ताते यादवदास नें अपनो-

यही विचार कीयो जो सब सेवकन कों मेरो संस्कार करिवे में कष्ट होयगो और सेवा में विरोध होयगो ताते यादवदासनें अपनों संस्कार अपने हाथन सों कीयो और पहिलें बाबा वेणु ने यादवदास सों कह्यो हुतो जो तू वेगो ऐइयो विलम्ब मति करियो सो तो श्री गुसांई जी ने श्री नाथजी की सेवा सोंपी ताते इतने दिन विलम्ब भयो पाछें दिन द्वै भए तब श्री गुसांई जी नें पूछी जो यादवदास देखियत नहीं सो कहां गयो है तब सेवकन नें कह्यो जो महाराज यादवदास कहूं वन में लकड़ी इकठोरी करत हुते तब श्री गुसांई जी नें कही जो उहां जाय कें देखो तो तब श्री गुसांई जी के कहत मात्र वैष्णव जाय कें देखें तो उहां कछू नाहीं राख की ढेरी परी है तब वैष्णवन नें श्री गुसांई सों आय कें कह्यो जो महाराज उहां तो कछू देखियत नाहीं राख की ढेरी परी है तब श्री गुसांई जी अपने श्रीमुख सों कह्यो जो ऐसो भगवद भक्त जो काहू कों दुख न देतो वे यादवदास श्री महा प्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय जो स्व इच्छा तें अपनी देह छोड़ी सो सब ग्वालन ने देखो सो चकृत होय रहे ताते बाबा वेणु और कृष्णदास घघरिया और पादवदास वनिया ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कों पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिये ॥ ✣

वार्ताप्रसंग ।१ वैष्णव ।९८। संबंध १०८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जगतानन्द सारस्वत ब्राह्मण थानेश्वर के वासी तिनकी वार्ता लिख्यते

सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहते तब समय श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेश्वर पधारे सो जगतानन्द सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो तहां श्री आचार्य जी महा प्रभू जाय बिराजे तब जगतानन्द सरस्वतीनें एक श्लोक को व्याखान कीयो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो याको व्याख्यान भावतो बहुत है तब जगतानन्द नें कह्यो जो श्लोक को अर्थ तो कह्यो जो श्री शुकदेवजीने कह्यो सो कह्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो श्री शुकदेव जी लरिका हैं तब जगतानन्द नें कह्यो जो अधिको व्याख्यान होय तो तुमही आयकें कहो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू तो व्यास आसन बैठ्यो है हम तेरो अति क्रम कैसो करिकैं तब इतनों सुनत मात्र जगतानन्द चौकी छोड़ कें उठि ठाडो भयो तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें चौकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें पोथी धरी और फिर आप ताके नीचें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत करत तीन पहर व्यतीत भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक को व्याख्यान

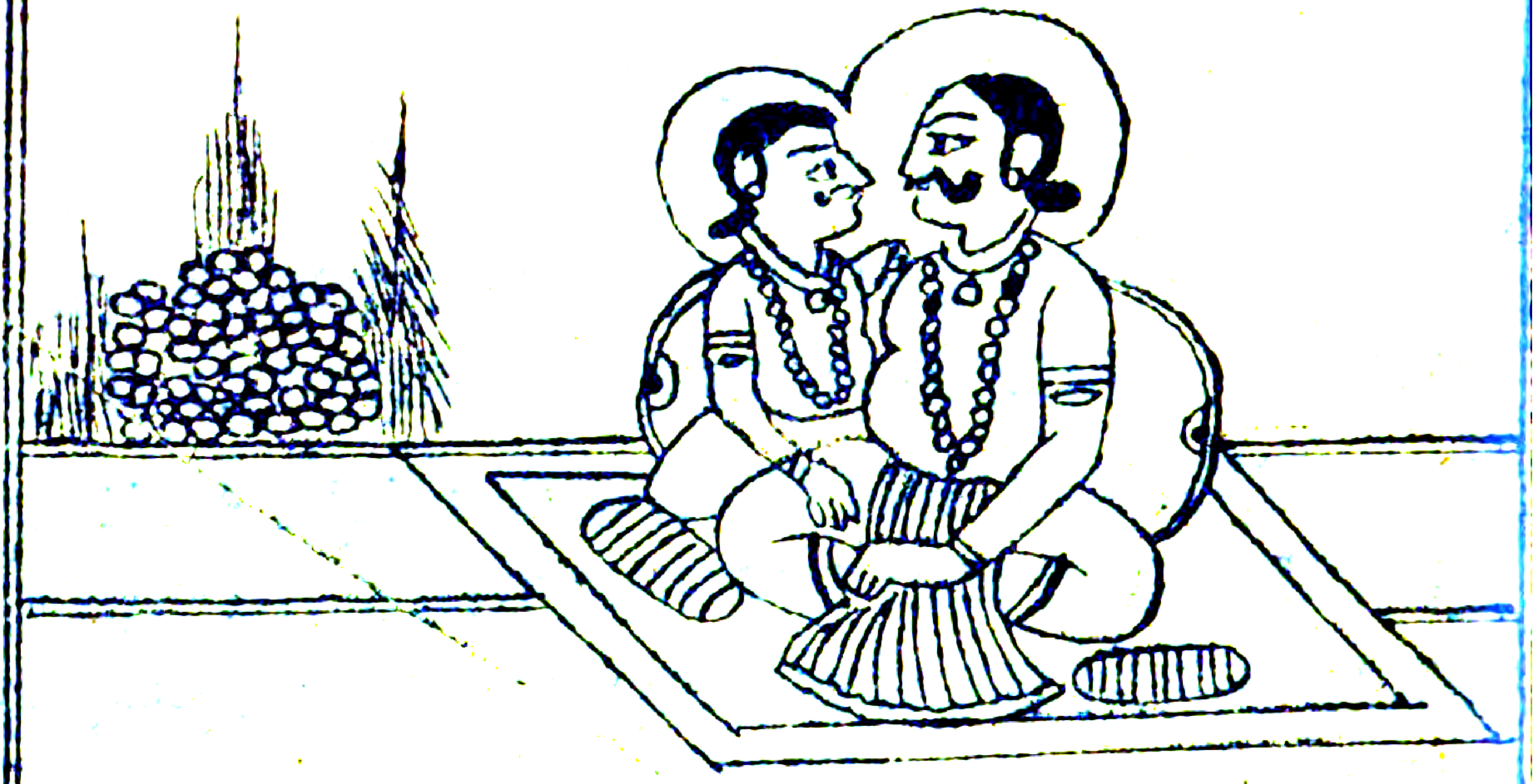

मास दोय तीन लों बीतेगो परि अब तुम भूखे होउगे ताते अब तुम उठो तब जगतानन्द ने कह्यो जो महाराज आप तो ईश्वर आप के भाव घटिके नाहीं तहां चाहो तहां तोई कहो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने पोथी बांधी तब जगतानन्द नें साष्टांग दंडवत कीनी और कह्यो जो महाराज मेरो घर पावन करिये तुम तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू तो अन्यमार्गीय है हम तेरे घर कैसें पधारेंगे तब जगतानन्द सरस्वती स्नान करि कें आय ठाड़ो भायो और बीनती करि कें कह्यो जो महाराज मोकों कृपा करि कें नाम दीजिये तब

श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीयो। तव श्री आचार्यजी महाप्रभू वाके घर पधारे और जगतानंद के घर सेव्य ठाकुर जी हुते सो वे तुलसी मांझ वैठिते तहां चे सदा एक लोटी श्री ठाकुर जी के ऊपर डारते हे तव श्री ठाकुर जी कूं श्री आचार्यजी महाप्रभून नें तुलसी मेंसूं काढ़ि कें पंचामृत सों स्नान करवाय न्यारे वैठाये पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछें जगतानंद कौं सेवा की विधि सिखाई और कह्यौ जो नित्य याही भांति सों सेवा करियो तव जगतानंद भले भगवदीय भये सो श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करन लागे सो वे जगतानन्द श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसं॰ ॥१॥ सम्वंध ॥११०॥ वैस्नव ४०

॥ अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक आनंददास विश्वभरदास दोउ भाई क्षत्री हुते तिन की वार्ता

सो वे दोउ भाई अति कृपा पात्र भगवदीय हे सो वे दोउ भाई एकत्र वैठिकें भगवद्वार्ती करते तथा श्री आचार्य जी महाप्रभून की वार्ता अहर्निस करते कवहूं वार्ता कहत कोदे भाई कौं निंद्रा आय जाती तव श्री ठाकुरजी हुंकारी देते

वड़े भाई आनंददास सो तो भगवद वार्ता के आवेश में जानते नाहीं जो हुंकारी कौंन देत है जब वार्ता कहि चुकने तब आनन्ददास विश्वंभर दास सों पूछते जो मैंनें तोसूं वार्ता कही सो तू समझ्यो तब विश्वंभर दास ने कही जो मैं तो इहां तांई सुनी पाछें मोकों तो निन्द्रा आई हती तब आनन्ददास नें कह्यो जो तू तो अब तांई हुंकारी देत हतो तब विश्वंभरदास ने वासों कही जो मैं तो हुंकारी दीनी नाहीं तब आनन्ददास ने कही जो श्रीठाकुर जी नें हुंकारी दीनी होयगी तब दो आनन्ददास विश्वंभरदास अपने मनमे बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो हमारो बड़ो भाग्य है है श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते श्रीठाकुर जी ने हुंकारी दीनी हमारी कही सब वार्ता सुनी ताते वे दोऊ भाई आनन्ददास विश्वंभ दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता अब तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४१ ॥

॥ अब श्री आचार्य महाप्रभून ॥
॥ की सेवक एक ब्राह्मणी ।
॥ हती तिनकी वार्ता ।
॥ लिख्यते ॥

सो ब्राह्मणी के मांथे श्री आचार्यजी महाप्रभूनने श्रीबालकृष्ण जी की सेवा पधराई हती सो तह

ब्राह्मणी श्री बालकृष्ण जी की सेवा करती परि वह अपने घर में निपट निकंचन हुती ताते श्रीठाकुर जी के आगे मांटी के कूजा भरराखती और रसोई में मांटी के पात्र और घर निपट संकीर्ण इतने ही में सब रसोई मन्दिर आचार हुते और नेत्रन सों थोरो दीसे वृद्ध भई ताते ऐसी सेवा करती सो और वैष्णव देखि कें सेवा करत में सो आपुस में सब चर्चा करन लागे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें या ब्राह्मणी के मांथे कहा जानि कें सेवा पधराई है यह तो कछू समझत नाहीं ऐसे सब वैष्णव आपुस में चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ कोस ऊपर गांव हुतौ तहां पधारे हुते पाछें तहांते फिरे तब तहांते वा ब्राह्मणी के द्वार के आगे होय कें निकसे तब साथ के वैष्णव हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज आपने वा ब्राह्मणी के मांथे श्री बालकृष्ण जी की सेवा पधराई है ताकौ यह घर है सो या के घर पधार कें देखिये याकौ घर याकौ आचार कैसो है तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप असरण सरण अंतरयामी वा ब्राह्मणी के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई करत हुती रोटी करकें घी सों चुपरत जाय और श्री ठाकुर जी आप आरोगत जाय परि वाकों तो दीसत कछू नाहीं हाथ सों टटोरे कहै जो रोटी आगें रासन नाहीं कहा मूसा बिलाई लै जात हैं ऐसें

कहे और रोटी करतजाय और श्रीठाकुर जी आरोगत जाय सो श्री आचार्यजीमहाप्रभू आप ठाडे ठाडे देखें पाछें श्री आचार्यजीमहाप्रभून नें वह डोकरी सों कह्यो जो अरी बाई तेरो वड़ो भाग्य है जो तेरी करी रोटी श्रीठाकुरजी आप आरोगत हैं तव वह बाई श्री आचार्यजी महाप्रभूनं.करि पाछें बोली जो महाराज में नाहीं जानी जो राज पधारे हैं मो कों तो कछु दीसत नाहीं परि तुम्हारी कानि तें श्रीठाकुरजी मान लेत हैं तव श्री आचार्यजीमहाप्रभून ने वेस्नवन सों कह्यो जो श्रीठाकुरजी तो स्नेह के वस हैं तातें मेरी कानि सों श्रीठाकुरजी आरोगत हे और उनकी भ

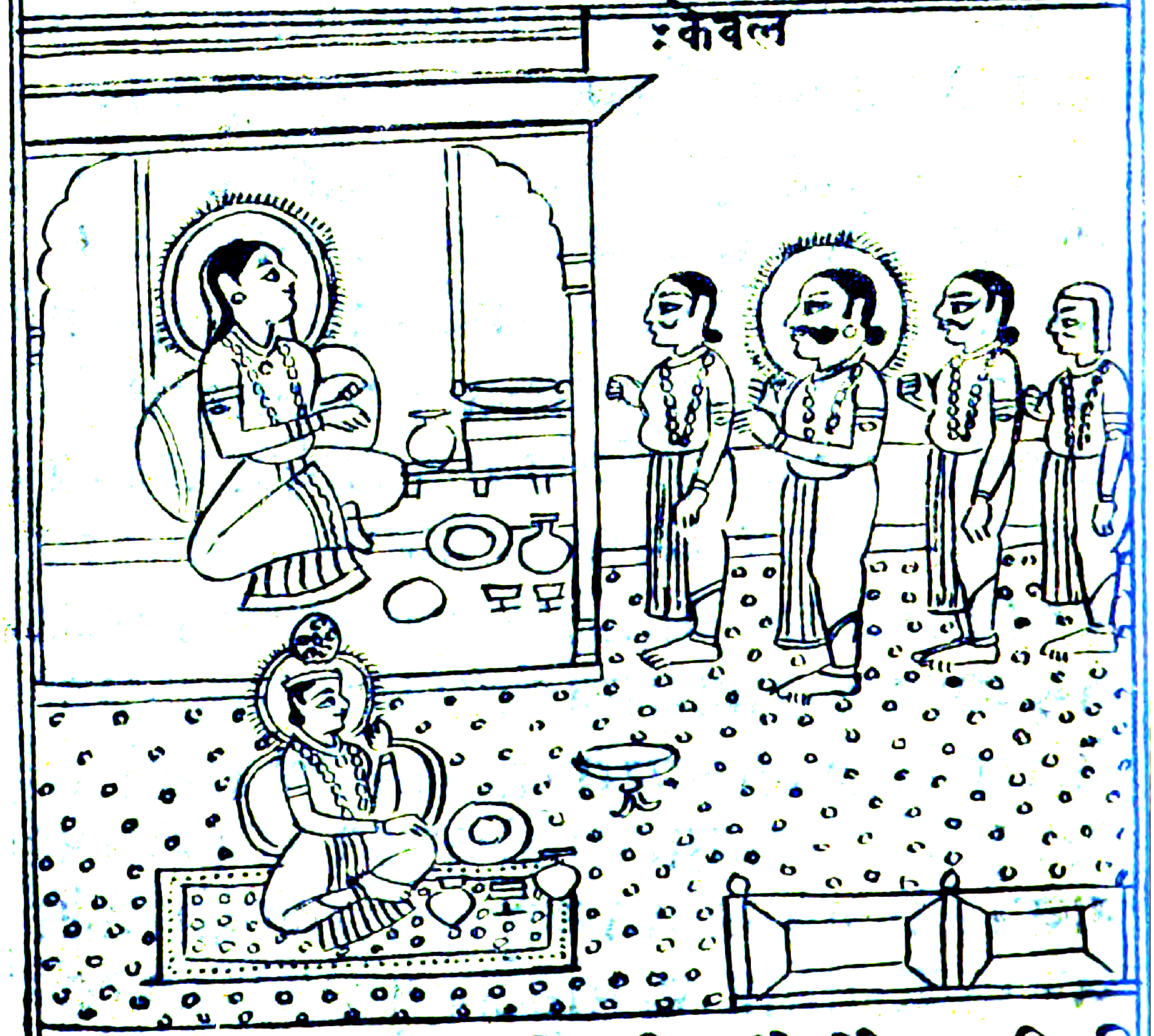

ःचौदडोत

मान लेते हैं तब वैष्णव मुसिक्याय कें चुप करि रहे॰ पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आपने घर पधारे वा वाई के ऊपर बहुत प्रसन्न भये वह वाई श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी परम कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई॰ लिखिये ॥ ❀

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥ सम्बन्ध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक एक क्षत्राणि तिन॰ की वार्ता है

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूत के पैसा दोय तीन आवते सो ताकी जो सामग्री आवती सो लै आवती रसोई बाल भोग करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पती ऐसें निर्वाह करती सो एक दिन॰ ऐसो विचार कर्‍यो जो सूत कातें सो थोरो २ अधिक कातें सो इकठोरो करत जाय सो टका दश बारह को भेलो कियो सो सूत बेचि कें टका दश बारह आये सो तिनको घृत खांड लै आई सो घर आय कें मेदा छानी पाछें दूसरे दिन सेवके लडुवा सिद्ध कीये और मन में कही जो दिन दश बारह कों सामिग्री सिद्ध भई है सो दिन दश बारह कों निश्चिंत भई हों सो ता दिन श्री ठाकुरजी कों आरोगाई और बाकी समग्री एक हांडी में करके मंदिर में धर राखी पाछें श्री ठाकुरजी कों

समर्प्यौ भोग सराय आरती करिकें आप महाप्रसाद लैकें चरखा कातन लगी तब श्री ठाकुरजी आप सिंहासन ते उतरि कें सामग्री की हांडी लैकें सिंहासन ऊपर आय बैठे सो हांड़ी में ते लडुवा काढ़िकें आप आरोगन लागे तब मन्दिर में हांडी खरखटान लागी तब वा क्षत्राणीनें कही जो कछु

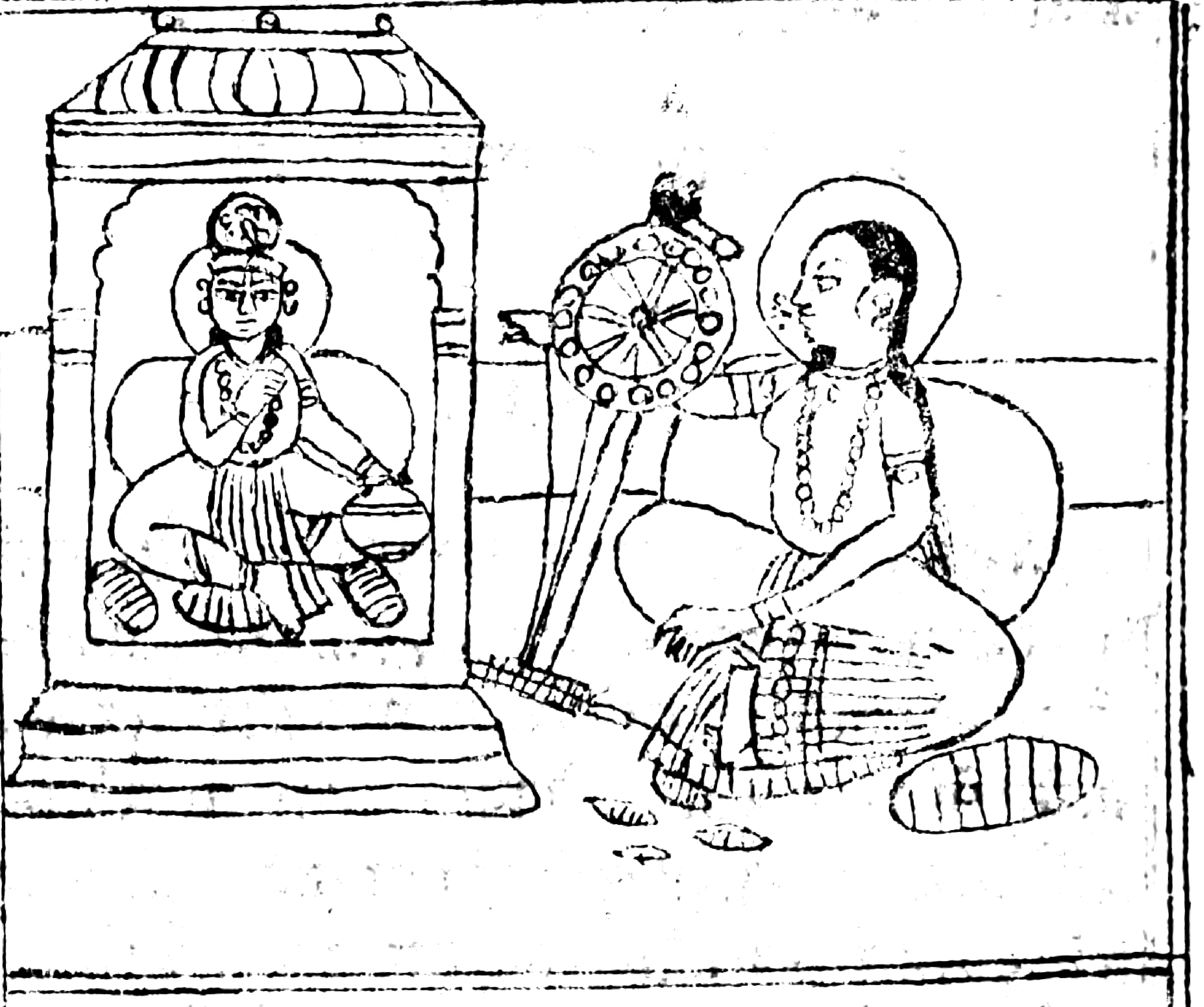

मूंसा विलाई होय देखूं तो सही कौन है तब वह क्षत्राणी कातत हुती सो तहां ते उठि कें देखन गई मन्दिर के किवाड़ खोल कें देखें तो श्री ठाकुरजी सिंहासन ऊपर हांड़ी लैंकें बैठे हैं और वा में ते लडुवा काढ़ि काढ़ि कें आरोगत हैं तब वह क्षत्राणी देखि कें छाती कूटन लागी और कहन लागी

जो यह सामग्री तो तुम्हारे ही लिये दिन दसबारह को करि राखी हुती यह तुमने कहा कीयो जो आजही आरोगे तब श्री ठाकुर जीनें कह्यो जो कहा तू लेखो करि कें आजही निवरी तेनें आलस कें लिये इकठोरी करि राखी हुती सो कहा नित्य नई न होती तब वह क्षत्राणी बोली जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो अब तें नई सामग्री नित्य प्रति करि कें समर्पूंगी सो श्री ठाकुर जी याके लिये आरोगे जो यह दिन दश बारहकों निश्चत होती तो याकों आरत रहती नाहीं और जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याकों आरति रहे जो मोकों सामग्री करनी है तातें श्री ठाकुरजीने ऐसें करी तातें श्री ठाकुरजी की सामग्री दिन चारि तें अधिक को न करनी और या क्षत्राणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुरजी आरोगे ताके लिये कूटी श्री ठाकुर जी तो प्रसन्न होय वे आरोगे वानें छाती याके लिये नाहीं कूटी जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की तो यह मर्यादा है जो श्री ठाकुरजी के आगें भोग धरिये सो आरोगे उठाय धरिये सो सामग्री होय सो न अरोगें तो श्री ठाकुर जीनें आचार्यजी महाप्रभू के मार्ग की मर्यादा छोड़ी तो कदाचित मोहू वे छोड़ें याके लिये वा क्षत्राणीनें छाती कूटी तब श्री ठाकुरजीनें कही जो तू तो आजही लेखो करि निवरी नित्य नई कहा न होती तब याकों नि

श्य भयो जो मार्ग की मर्य्यादा तो श्री ठाकुर जीनें नाहीं छोड़ी हां दश बारह दिन कों निश्चंत होय बैठती तांके लीये श्री ठाकुर जी आरोगे तातें वह क्षत्राणि ऐसी परम भगवदीय ही तिन कों श्री ठाकुर जी सेवा ते एक क्षण हूं स्वास्य होंन देते नाहीं सेवा में सदा आरति रहे सो कियो वा क्षत्राणी सों श्री ठाकुर जी ऐसे सानुभाव हुते जो चहिये सो मांगि लेते ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता को पार नाही सो कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ४३॥ सम्बंध ११३

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून।
के सेवक सास वहू दोउ क्ष
त्राणी सास को नाम गो॰
रजा वहू को नाम॰
समराई सीहनं॰
द की वासीति
नकी वार्ता
लिख्यते
॥ हैं॥

सो इनके मांये श्री आचार्य जी महा प्रभून नें श्री दामोदर जी की सेवा पधराई हुती सो इन सास वहून ते श्री ठाकुर जी बहुत सानुभाव हुते सो एक समय श्री आचार्य जी महा प्रभू थानेस्वर पधारे तब थानेस्वर ही में रहे परि॰ सीहनन्दन पधारते जो काहे तें थानेस्वर और सीहनंद के

बीच सरस्वती नदी है सो श्री आचार्यजी महाप्रभू सरस्वती उल्लंघन न करते काहेते जो आप आचार्य हैं तातें यांने घर ही में रहते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू यांने घर पधारे तब सास नें बहू सों कह्यौ जो मैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों जात हों तू श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करियो सिंगार करि रसोई करिकें भोग समर्पियो इतनों बहू सों सास कहि कें श्री आचार्य महाप्रभून के दर्शन कों गई तब वह न्हाय कें सेवा करन लागी जब पाक सिद्धि भयौ तब श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यौ तब समयानुसार भोग सरावन गई तब देखै तो सामग्री सब यथा स्थिति ज्यों की त्यों है तब बहू नें बीनती कीनी जो महा राज मैं तो जानत कछू नाहीं और सास नें तो मो सों कह्यौ नाहीं और तुम आरोगत नाहीं सो काहे ते अबहूं कहा करूं ऐसें बहुत बिलबिलाय कें खेद करन लागी जो मोसों कछू चूक परी होयगी रसोई आछी न भई होयगी तथा पात्र मांजिबे में सुद्ध न भये होयगे कछू तो भयौ होयगो जो श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं पाछें भोग सराय पात्र मांजे आछी भांति सों धोय पोंछि कें फेरि रसोई करि दूसरी बार जब पाक सिद्धि भयौ तब श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यौ और मैं कहत जाय जो मोतें कछु चूक परी होयगी हों तो कछु जानत नाहीं कहा भयौ तातें

श्री ठाकुर जी आरोगे न होयंगे अब आछी भांति सों पात्र मांजि कें रसोई करी है सो अब श्री ठाकुर जी आरोगेंगे सो जब समय भयो तब दूसरी वेर भोग सरावन गई तब देखे तो श्री ठाकुर जी के आगे सामग्री यथास्थित है तब फेरि बिलबिलावे रोवे और वीनती करें और कहे जो महाराज हों कछू जानत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने मन में विचार करती जाय जो मोकों रसोई करनो आवत नाहीं कै मेरी देह कौ कछू दोष है ऐसें विचार करत जाय और भोग सरावत जाय और छाती भरि आवै और कहे मेरो कौन अपराध होयगो जो श्री ठाकुर जी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पात्र आछी भांति सों मांजि कें तीसरी वार भोग समप्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सामग्री यथा स्थिति है तब तो महा खेद भयो जो अब हूं कहा करूं श्री ठाकुर जी भूखे रहेंगे सास ने तो मोसों कछू कह्यो नाहीं ऐसें कहे तब मूर्छा खाय कें श्री ठाकुर जी के आगें भूमि में गिर परी और बहुत दुख करन लागी श्रमित बहुत भई तातें वाकौ तनक निद्रा हू आई सवारे सों जल हू नाहीं लीनों सो कंठ जुदो सूखे अति व्याकुल है कें परी तब श्री ठाकुर जी ने वाको बहुत दुख सह्यो न गयो तब सिंहासन ते नीचें उतरि कें श्री ठाकुर जी ने वासों कह्यो जो तू काहे कों खेद करत है हों तीन्यो वेर आरोगों हूं तू कछू संदेह मति करें तब

यानें कह्यौ जो में कैसें जानूं तव श्रीठाकुर जीनें कह्यौ जो तू भूखी है कछु खायले तव कह्यौ जो हूं तो न खाउंगी तव आप कों आरोगत देखूंगी तव लेउंगी तव श्रीदामोदर जीने कह्यौ परि यह तौ वात्तें नाहीं तव आप जल की झारी लेकें आए और कह्यौ अरी तेरो गरो सूखौ जात है तू तनक जल पान तौ लै तव श्री ठाकुर जी अपने श्री हस्त सों वाके मुख में जल चुवायौ तव कह्यौ जो सवारें तू देखेगी तौ में आरोगूंगो तव उठि कें सखडी महाप्रसाद सव गायन कों लिवायौ रसोई पोत कें रसोई की सामग्री सव सिद्धि करि सगरी रात्रि कों उत्साह सों सोय रही पाछें प्रातःकाल उठि के नित्य कर्म तथा स्नान करि तथा रसोई करि तव पाक सिद्धि भयो तव श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यौ जव टेरा सरकावन लागी तव श्री दामोदर जी वोले जो अव तू टेरा अव काहे कों सरकावत है अव तू देखि में आरोगत हों और सव सामग्री यथा स्थित रहेगी तव समराई तहां ठाडी भई और श्रीठाकुर जी भोजन करत देखे तव श्री ठाकुर जी आप भोजन कीए पाछें सव सामग्री थार में ज्यों की त्यों यथा स्थित रही तव श्री ठाकुर जीनें कही जो याही भांति सों तू नित्य जानि लीजियो तव समराई ने कही जो हूं तो देखूं तवही मानूं ता पाछें नित्य भोग धरै तव श्री ठाकुर जी कों भोजन करत देखै तव श्रीठाकुर जी हू समराई के देखत भोजन करैं जो वाहे

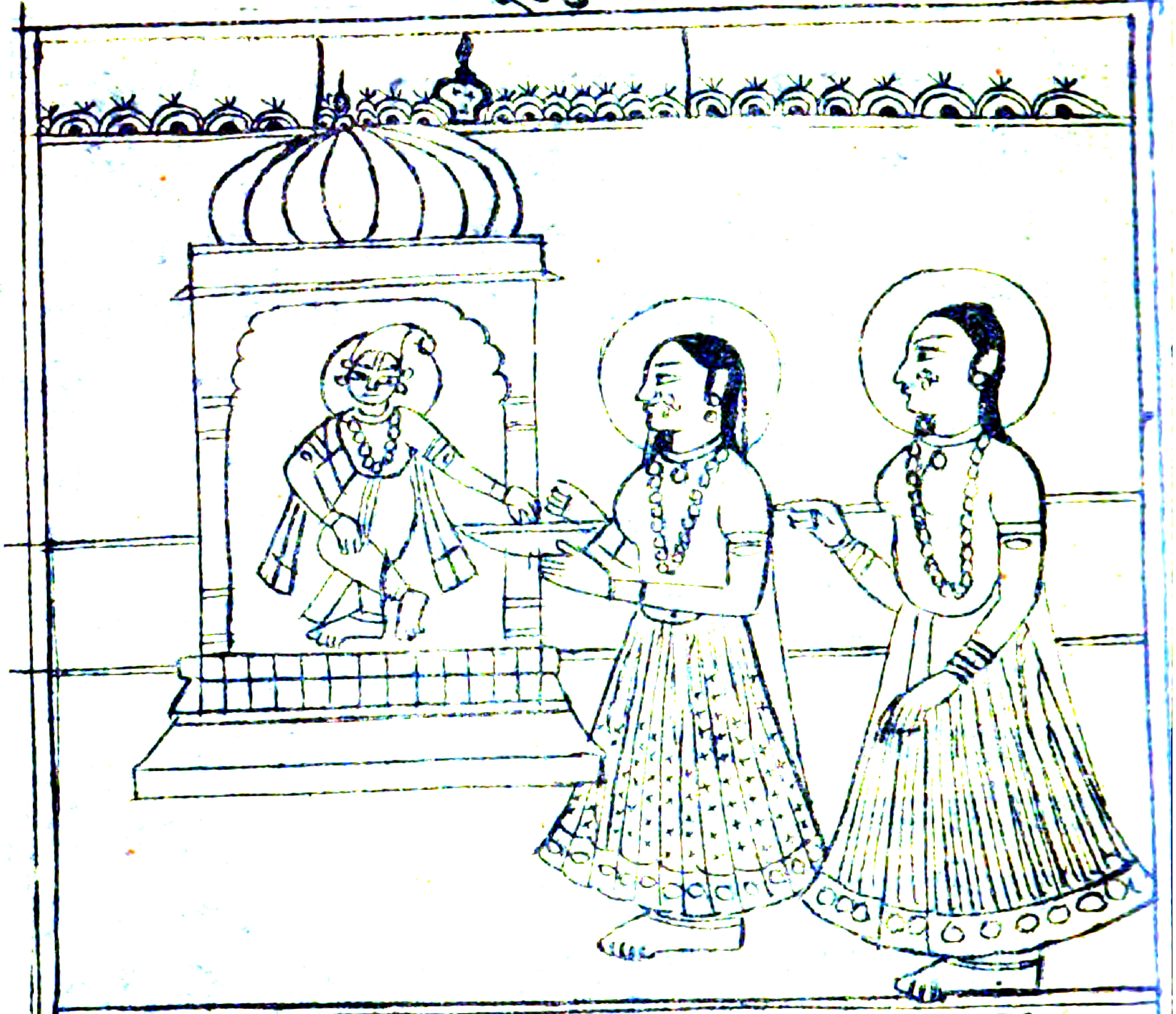

सो मांगि लैंय पाछें हांमादिक कौं पाछें वाकों सब रसकौ अनुभव करवायौ सो समराई सकल रसकौ अनुभव करन लागी तब यह वात श्री दामोदरजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यौ तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें समराई की सासगौरजा सों कही जो श्री ठाकुर जी कछु सानुभाव जतावत हैं तब गौरजा तौ कछु बोली नाहीं पाछें गौरजा श्री महाप्रभून सों विदा होय कें सीहनंद अपने घर आई तब दूसरे दिन सासनें सेवा करि रसोई करी कें अपनें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो जब भोग सर्यो तब वह चौंकि उठी जो श्री ठाकुर जी आरोगे नाहीं तब सास नें कह्यौ जो सुनि

वहू श्री ठाकुरजी तौ लरिका हैं ताते तोही सों हिले होयंगे ताते रसोई तू वेगि करि तव वहूनें रसोई करि भोग समर्प्यौ तव श्री ठाकुरजीनें कह्यौ जो मैं तौ अवही आरोगोंगो हौं तव वहूने कह्यो जो हूं तौ देखूं तव मानूं तव भोग समर्पि कें कह्यो जो महाराज आरोगो तव समराई के देखत श्री ठाकुरजी आरोगे सो जव साम रसोई करे तव वहू कों वुलावै जो थार लै जाउ सो वह थार लै जाय कें आरोगावे ऐसें नित्य प्रति करे सो यह वात श्री ठाकुरजीनें श्री महाप्रभून सों कही पाछें वहू श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों थानेस्वर गई तव आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन कीयो ता समय श्री आचार्यजी महाप्रभू पाक करत हुते तव समराई रोटी वेलन कों बैठी तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें वहू सों कह्यो जो तेरी सव वात हमसों श्री ठाकुरजीनें कही है जो हम कों समराई भलीभांति सों सुख देत है तव समराई मुसिक्याय रही और कह्यो जो इतनीह वात श्री ठाकुरजी के पेट में नाहीं ठहरी तो कहा करिये पाछें कह्यो जो महाराज लरिकों कहा पूछत हो तव श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनकें वहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहन लागे जो देखो इनसों कैसो सम्वंध है श्री ठाकुरजी को और कहें जो या वहू के ऊपर वहुत कृपा है और वहू सालन करती सो नीकी भांति सों

करती सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो नित्य सालन क्यों नाहीं करत तब वहू वोली जो लरिका के मन में आवै सो करिये तब यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भये याकी सास गोरजा वहुत उत्तम सामिग्री करती तातें श्री ठाकुरजी कों वहुत प्रिय लागती तातें इन सास वहुन के ऊपर वहुत प्रसन्न रहते तातें इन सास वहून कों दर्शन देवे कौं श्री महाप्रभूजी तथा देखिवे के निमित्त प्रति वर्ष आय याके घर पधारते तब श्री आचार्यजी महाप्रभू कहते जो कहा करिये सो सरस्वती उल्लंघनी नाहीं नातर इनकों सीहनन्द में दर्शन देतो सो वे सास वहू ऐसी परम कृपा पात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्ता कहां तांईं लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवक रुक्मा दासी रुक्मिनी वहूजी की दासी हती ताकी वार्ता ॥

सो रुक्मा दासी अडेल में श्री रुक्मिनी वहूजी की खवासी करती सो एक समय रुक्मिनी वहूजी कें गर्भ रह्यौ हौ तब रुक्मा दासी नें कह्यौ जो अब कें वेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथजी धरूंगी सो गर्भ के दिन सम्पूर्ण भये तब रु

कमनीजी वहू के पेट में विथा भई तव कुस्मा दासी नें जाय कें जोतषी सों पूछौ जो अव मुहूर्त कैसौ है तव वा जोषी नें दिन नीकौ न कह्यौ तव कुस्मा दासी फिरि आय कें श्री रुकमनी वहूजी के पेट पे हाथ फेर्यौ और कह्यौ जो महाराज अव तौ मति पधारो आज कौ दिन नीकौ नाहीं तव पेट की व्याधि सव दूर भई पाछें दिन दोय तीन वीते तव कुस्मा दासी ने विचार्यौ जो अव फेर पूछिये जो आज दिन कैसौ है तव कुस्मा दासी ने फेरि जाय कें पूछौ जो आज दिन कैसौ है तव वा जोतषी ने कह्यौ जो आज दिन वहुत नीकौ है तव कुस्मा दासी नें आय कें श्रीरुकमनी वहूजी सों वीनती करि कें कह्यौ जो महाराज अव पोढ़िये अव वालक प्रघ

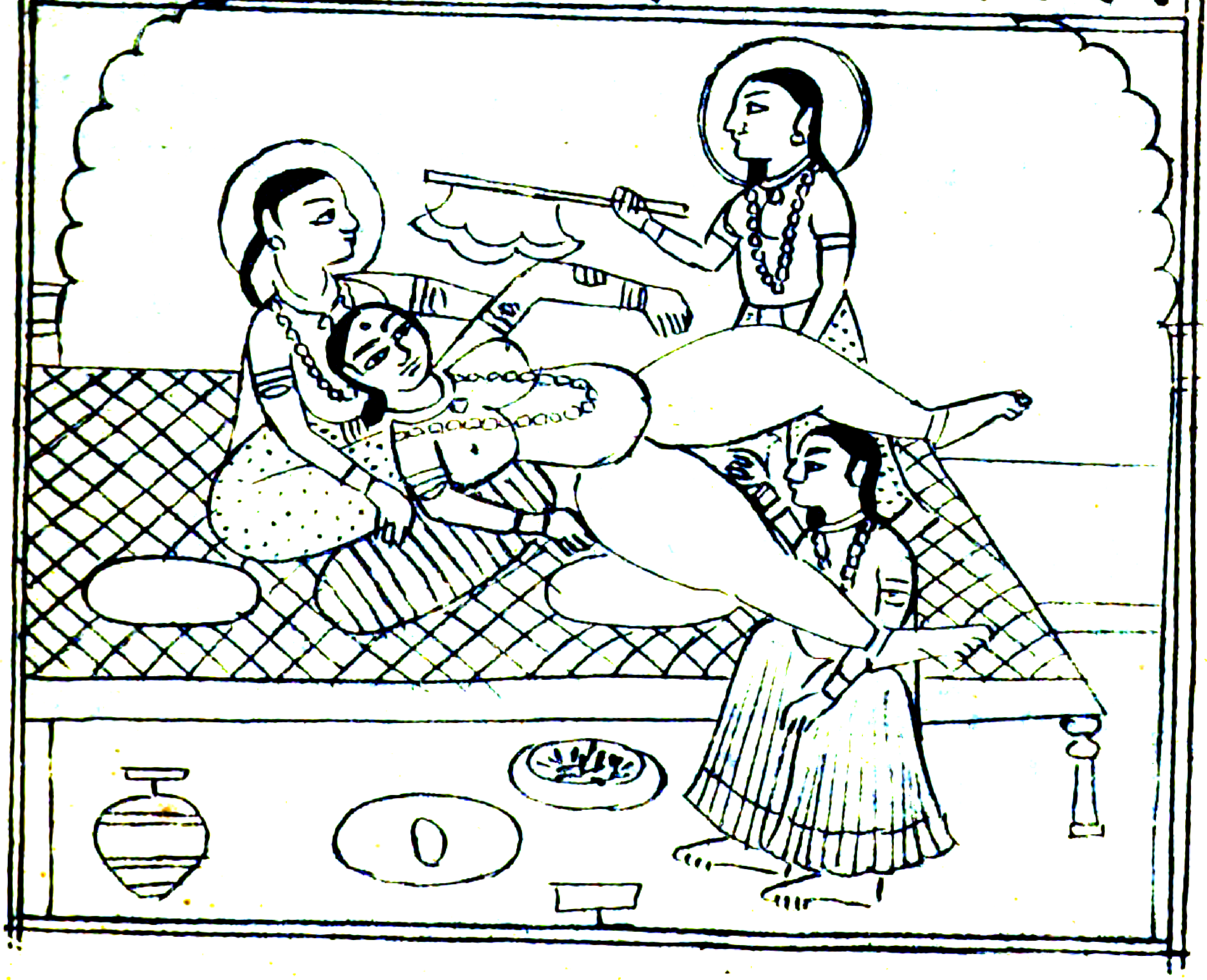

ट होयतौ भलौ है तब बहूजी महाराज पौढ़ीं तब कृष्णादासी नें बहूजी महाराज के पेट पै हाथ फेरौ । और कह्यो जो महाराज अब पधारिये तब श्री गुसांई जी श्रीनाथ जी द्वार पधारे हुते तब पेट में व्यथा भई और बालक कौ जन्म भयो तब ता समें कृष्णादासी नें श्री गोकुलनाथजी नाम धर्यौ ता पाछें श्री गुसांई जी कौं बधैया पठायो तब श्री गुसांई जी महाराज अड़ेल कों पधारे तब नाम करण कीयो तब श्री वल्लभ नाम धर्यौ परि कृष्णा दासी की कानि तें श्री गोकुल नाथ जी नाम राख्यो ऐसी कृष्णादासी के ऊपर कृपा थी जो जाके कहे तें दोउ नाम प्रसिद्धि भये ॥१॥

वार्ता प्रसंग १

पाछें श्री घनश्यामजी कौ जन्म भयौ तब नाम करण विचारन लागे तब श्री वल्लभजीनें कह्यौ जो · श्री गोकुल नाथजी नाम धरो तब श्री गुसांईजी नें कह्यौ जो यह नाम तौ तिहारौ है तब दोउ नाम प्रमाण कीये सो श्री वल्लभ कुल के विषें सब कोउ श्री वल्लभ नाम कहत हैं और सब जगत में श्री गोकुल नाथजी नाम प्रसिद्ध भये और जन्म पत्र में श्री कृष्ण हें सो गोप्य राख्यो श्री गुसांई जीनें कह्यो जो यह नाम गोप्य रहे ताते कृष्णादासी श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदीयही सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ५

वार्त्ता प्रसंग ॥ २॥ वैष्णव ॥ ४५॥ ❖ ॥ ❖
॥ अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के ॥
सेवक वूला मिश्र पंडित तिनकी वार्त्ता है

सो वूला मिश्र एक कपूर छत्री के प्रोहित हते ताकी स्त्री कें संतति न हुती तव वाने दूसरो विवाह कीयो तव ताहू स्त्री कें संतति न भई तव वहू नें वा क्षत्री सों कह्यौ जो तुम हरिवंश पुराण सुनों तव तुम्हारें संतती होयगी तव वा क्षत्री नें जाय कें वूला मिश्र सों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरिवंशपुराण सुनावो तव वूला मिश्र नें कह्यौ जो अव तो मोकों अवकाश नाहीं जव अवकाश होयगो तव तुम्हारे घर जाय कें सुनाउंगो तव वह क्षत्री अपने घर आयो जव एक महिना वीत्यौ तव एक दिन अचानक वूला मिश्र वा क्षत्री के घर पधारे तव वूला मिश्र को वा क्षत्री ने वहुत आदर सन्मान कीयो तव वूला मिश्र नें कह्यौ जो तुम दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय वैठो तव दोउ स्त्री पुरुष स्नान करि कें आय वैठे तव वूला मिश्र ने देह शुद्ध होवे के लिये एक दान करवायो पाछें हरिवंश पुरान को एक श्लोक अंत को सुनायो ॥ ❖

श्लोक

इदं मया ते हरि कीर्त्तनं महत् श्री
कृष्ण महात्म्याय पार मुदत्त अवं
गाय व स्त्रीषु ममासुतत्फले पच्या
पि लोकेषु स दुर्ल्लभं महत् ॥ १॥

यह हरिवंश पुराण के अंत को श्लोक सो बूला मिश्र ने वा क्षत्री कों सुनायौ और आशीर्वाद दीयौ और मंत्राक्षत पढ़ि कें वा क्षत्री की बड़ी स्त्री की गोद में दीए तब वा क्षत्री नें कह्यौ जो यह मिश्र जी तुमने कहा कीयौ यह तो स्त्री धर्म हूं नाहीं होत है तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो श्री ठाकुर जी सर्व सामर्थवान हैं जो दैनहार होयंगे तौ याही कौ पुत्र देयंगे अब तौ मैंने याकों अक्षत दीये सो तो दीये तब इतनो कहि कें बूला मिश्र अपने घर कों चलन लगे तब वा स्त्री नें बहुत बीनती कीनी जो मोकों सम्पूरण हरिवंस पुराण सुनावौ तब बूला मिश्र नें कह्यौ जो तोकों श्री ठाकुर जी सम्पूरण कौ फल-

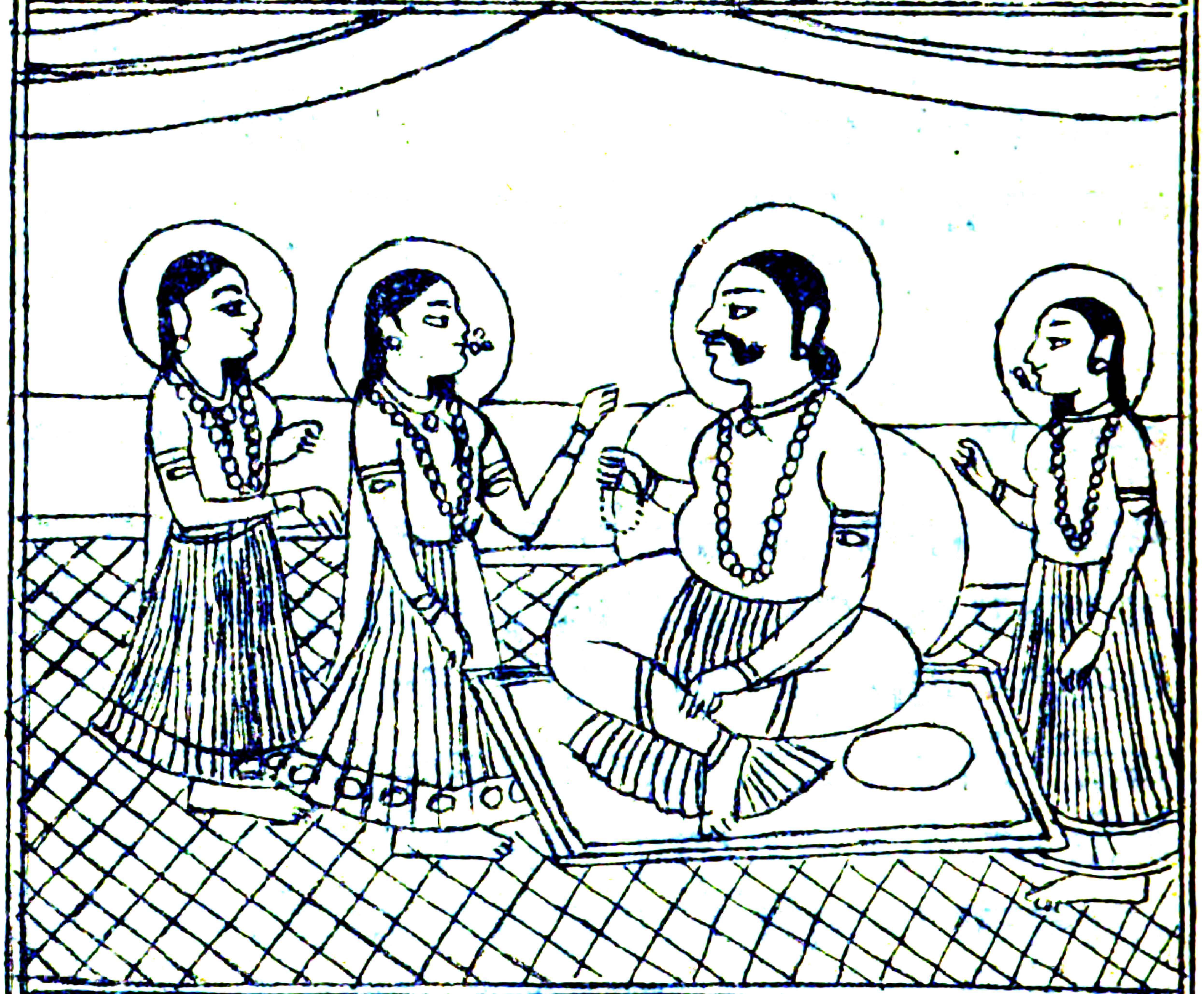

एक ही श्लोक में देहिंगे ऐसें कहि कें वूला मिश्र तौ अपने घर कौं आये पाछें वा वड़ी स्त्री कौं ऋतु आई पाछें गर्भवंत भई तव कितनेक ······ ····· दिन में वाकें पुत्र भयौ वे मूला मिश्र श्री महाप्रभून के ऐसे भगवदीय हे तिन के अनुग्रह ते वाकें पुत्र भयौ हरिवंस पुराण कौ एक श्लोक सुनेते सम्पूर्ण सुने कौ फल भयौ ताते वूला मिश्र ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां ताई लिखियै ॥*

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ७६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून की सेवक मीरा वाई के पुरोहित रामदास तिनकी वार्ता लिख्यते

सो एक दिन मीरा वाई के श्री ठाकुर जी के आगें रामदास जी कीर्तन करत हुते सो रामदास जी श्री आचार्य जी महा प्रभून के पद गावत हुते तव मीरा वाई बोली जो दूसरो पद श्री ठाकुर जी कौ गावो तव रामदास जीने कह्यौ मीरा वाई सों जो अरे दारी रांड यह कौन कौ पद है यह कहा तेरे ख़सम कौ मूंड़ है जो जा। आज ते तेरौ मुहड़ौ कवहूं न देखूंगो तव तहां ते सव कुटुम्व कौ लैकें रामदास जी उठि चले तव मीरा वाई नें वहुतेरो कह्यौ परि रामदास जी रहे नाहीं पाछें फिरि कें वाकौ मुख न देख्यौ ऐसें अपने प्रभू

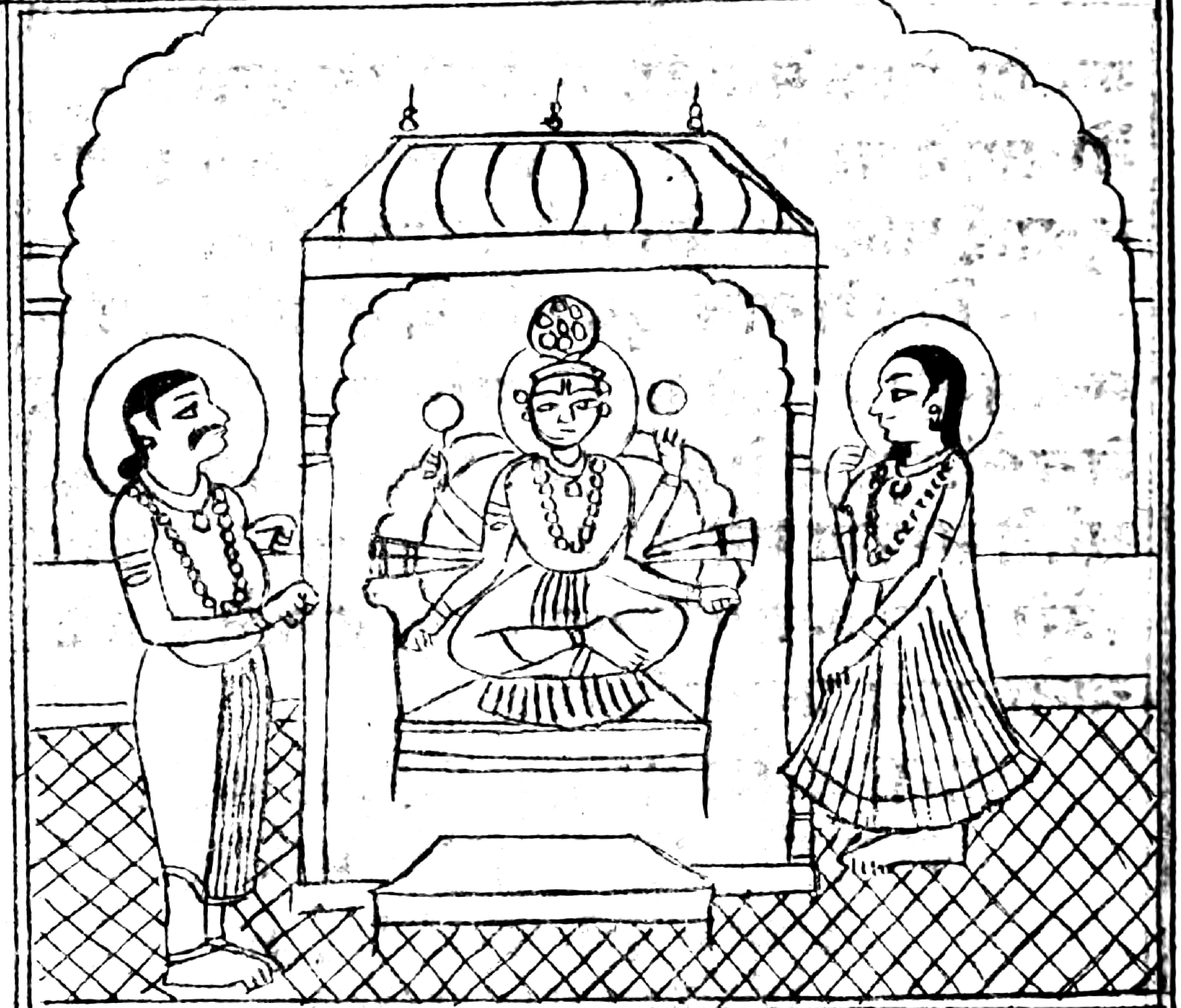

नसों अनुरक्त हुते सो वा दिन ते मीरावाई कौ मुख न देख्यौ वाकी वृत्ति छोड़ दीनी फेर वाके गांव के आगे होय कें निकसे नाही मीरावाई ने वहुत वुलाए परि वे रामदास जी आए नाहीं तव घर वैठे भेट पठाई सोई फेरि दीनी और कह्यौ जो रांडु तेरी श्री आचार्य जी महाप्रभून ऊपर ममत्व नाहीं जो हम कौं तेरी वृत्ति कहा करनी हैं हमारे तो श्री आचार्य जी महाप्रभू सरवस्व हैं हम तो उन के हैं उन विना हमारें सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणार्विंद कौ आश्रय राखनों ऐसी वृत्त वहुतेरी होयगी वे रामदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥०॥

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥८७॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक रामदास चौहान तिनकी वार्ता लिख्यते

सो रामदास चौहान श्री गोवर्द्धन की कन्दरा में रहते सो प्रथम श्री आचार्य जी महाप्रभु श्रीनाथ जी द्वार पधारे तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी कों पाट बैठाये तब रामदास कंदरा में सूं बाहिर आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें रामदास जी सों कहौ जो रामदास श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सावधानी सों करियों तब रामदास जी नें वहां

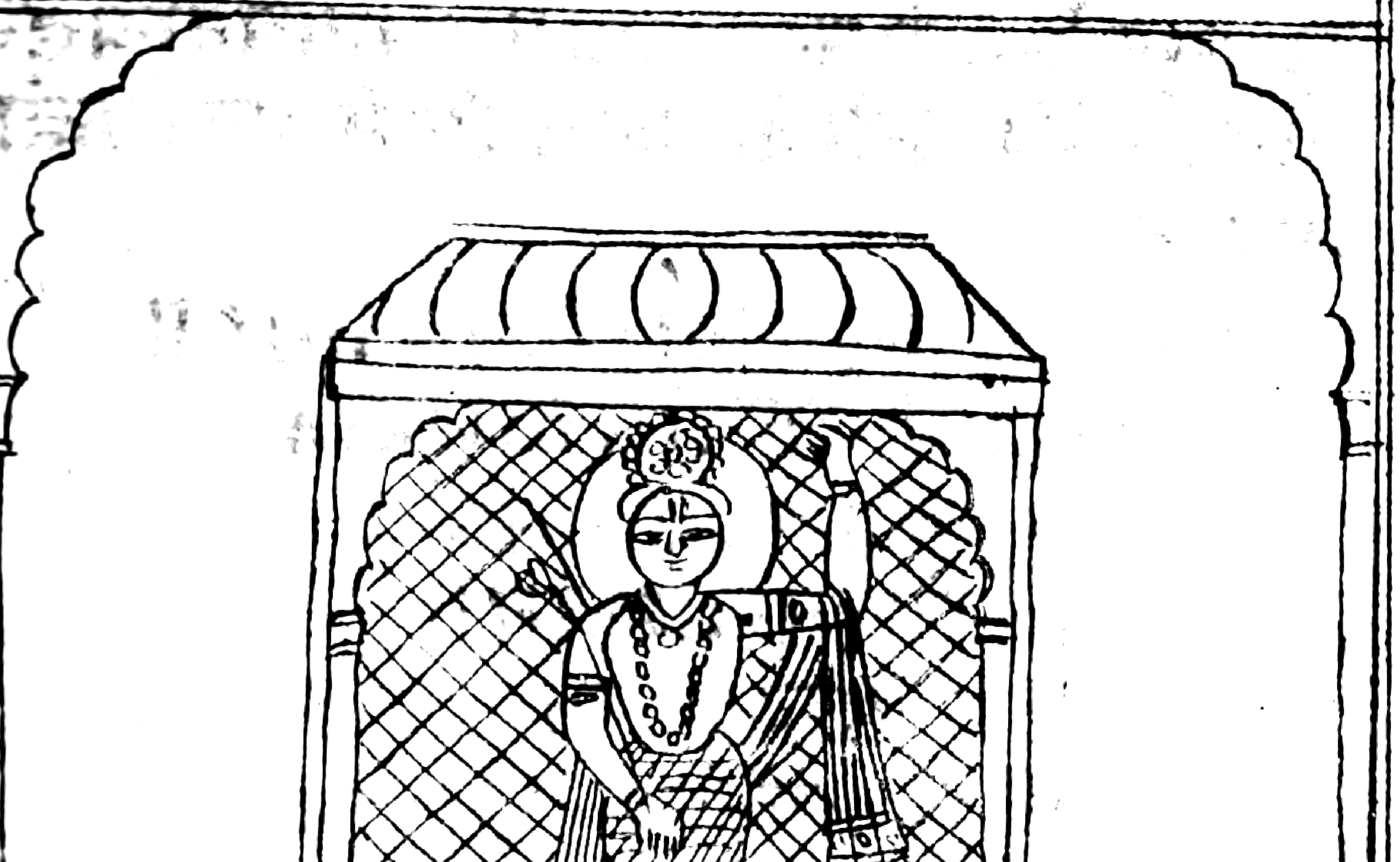

एक मन्दिर छोटो सो ईटन को वनवायो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें ता मन्दिर में श्रीनाथजी को पधराये सो पहिलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर विराजते सो व्रजवासी लोगन नें एक फूस की छानि करि राखी हती ता छानि में वैठते और कवहूं कवहूं दूध दही व्रजवासी समर्पते देवदमन यह नाम कहते सो दूध दही माखन सव आरोगते तथा श्री गोपाललाल जी यह नाम कहते सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी को मन्दिर में पधराय पाछें श्रीनाथ जी नाम प्रगट कीयो तव ते सव कोऊ श्रीनाथ जी कहन लागे वे रामदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता को पार नाहीं सो अव कहा तांई लिखिये ॥ ❖

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥४८॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक रामानंद पंडित सारस्वत। ब्राह्मण तिनकी वार्ता है

सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू थानेस्वर पधारे तहां रामानन्द पंडित के घर पधारे सो रात्रि को तहां पोढ़े हते सो जव पिछली रात्रि भई

तव रामानन्द पण्डित नें अपनी स्त्री सों कह्यो जो वेगि उठि गोवर और ले चौका कों वहियेगो नातरि सवारें ये वैष्णव उठेंगे सो ले जायंगे तव यह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी तासमय श्री आचार्यजी महाप्रभू हाथ पांव धोयवे कों उठे हुते तव अति क्रोधवंत भये तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें रामानन्द पण्डित कों वुलायो तव आपने गडुआ मेंते जल लेकें वाके हाथ में मेलि कें मंत्र पढ़िकें वा जल कों वा ऊपर छिरक्यो और आपने श्री मुख सों कह्यो जो में तेरो त्याग कीयो तेनें मेरे सेवकन सों यों कह्यो जो तू वेगि उठि गोवर और ले नातर वैष्णव उठेंगे तो लै जायंगे तो तू

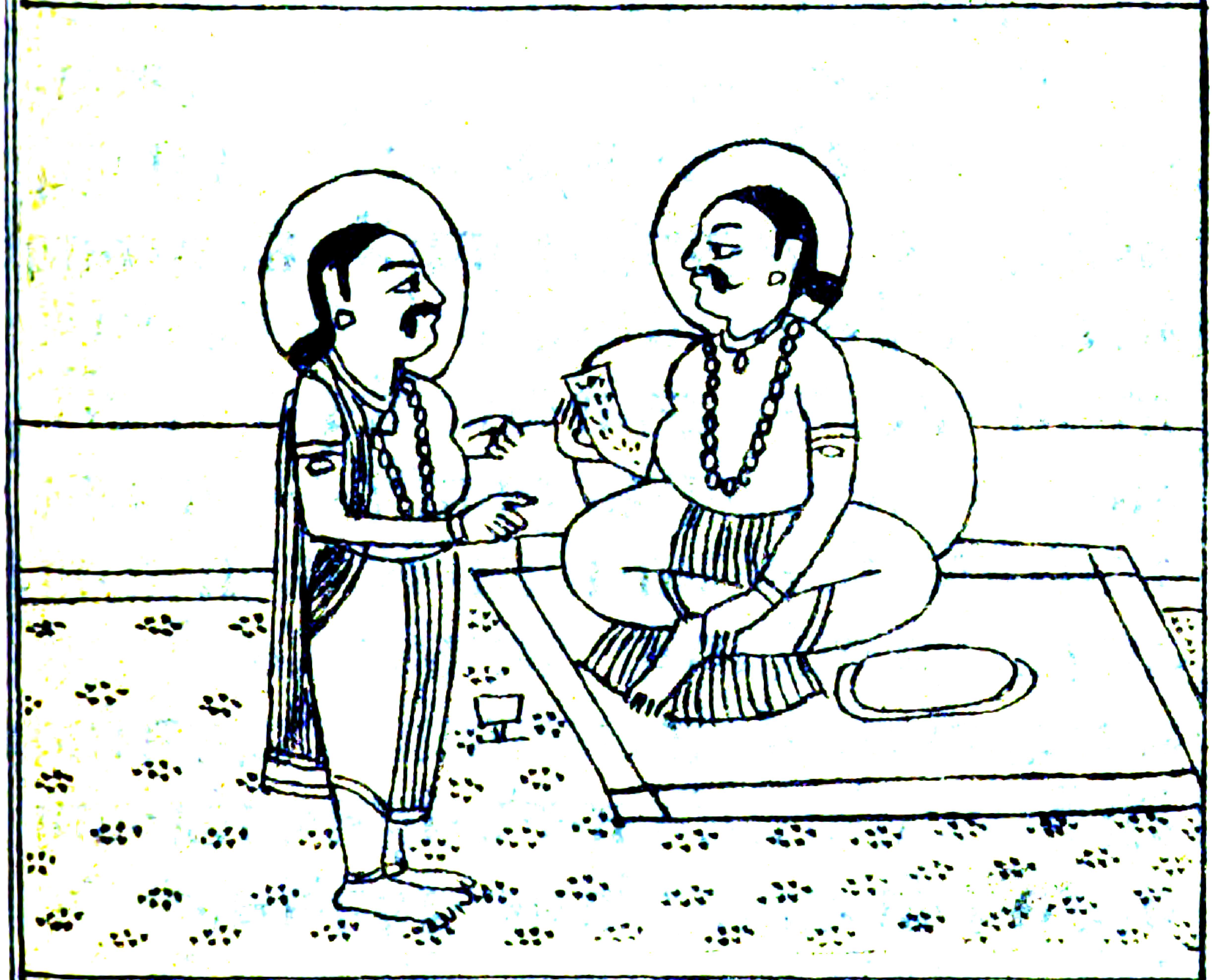

रसोई कौ सामान कहां ते करोगो ऐसो कहिकें तहां ते उठि चले क्षण एक रहे नाहीं सो थानेस्वर ते एक गाव ता ऊपर मही ताथी है सो तहां आये फिर वहां आप ने स्नान कीयो सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू रामानन्द पण्डित के घर ते चलन लागे तब थानेस्वर के वैस्नव नें बहुत बीनती कीनी परि श्री आचार्यजी महाप्रभू रहे नाहीं और कह्यौ जो मैं इहां रहिकें जलपान न करूंगो ता पाछें काहू ने रामानन्द पण्डित पास नाम पायो हो तिनसों श्री गुसांई जी गंगोज्व कहते तब श्री आचार्य जी महाप्रभू थानेस्वर पधारे पाछें रामानन्द की अवस्था विकल भई तब बाजार में जो वस्तु देखतो सो खातो कछू मर्यादा न रही परि इतनी मर्यादा तो करै जो खाय सो समर्पि कें खाय यों कहै जो श्री गोवर्द्धननाथ जी तुम आरोगियों इतनो कहि कें मुख में मेलै सो एक दिन हलवाई की दुकान पै जलेबी बहुत आछी देखीं सो जलेबी वामें ते लैकें कह्यौ जो श्रीनाथजी तुम आरोगियों ऐसें कहि कें खाई ता समय श्रीनाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यौ जो आज तो हमनें जलेबी बहुत आछी आरोगीहें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो कौनें समर्पी है तब श्री नाथ जी नें कह्यौ जो तुम्हारे सेवक रामानन्द ने समर्पी हें तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो महाराज मैंने वाको त्याग कीयो तुम वाके यहां क्यों आरोगे हो तब श्री नाथ

जीने कह्यौ जो तुम मोकों काहू कों सोंपत हो हम तुम्हारी कांनि ते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपे कों नाहीं छोड़त हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू चुप करि रहे तब यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें दामोदरदास हरसानी सों कही तब दामोदरदास हरसानी नें बीनती कीनी जो महाराज आप याकों अंगीकार कब करोगे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें दामोदरदास सों कह्यौ जो यासों अब वैष्णव को अपराध पड़ेगो तो हम याकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेगे श्रीनाथजीने अंगीकार कीयो तोहू परि इतनौ अंतराय भयो ताते वैष्णव सों बोलनो सो विचार कें बोलनों बिना बिचारें सर्वथा न बोलनों ऐसें वैष्णव कों रहनों ॥ ॰

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४९ ॥ ✦

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक विष्णुदास छीपी तिनकी वार्ता लिख्यते ॥

सो विष्णुदास वृद्ध भए तब श्री गोकुल में श्री गुसांई जी की बैठक के द्वारे की द्वार पालकी करते और कोई पंडित आवतो तासों विष्णुदास पूछते जो तुम कों आए हो और कहां जात हो तब उन पंडितन नें कह्यौ जो हम श्री गुसांई जी के पासवा

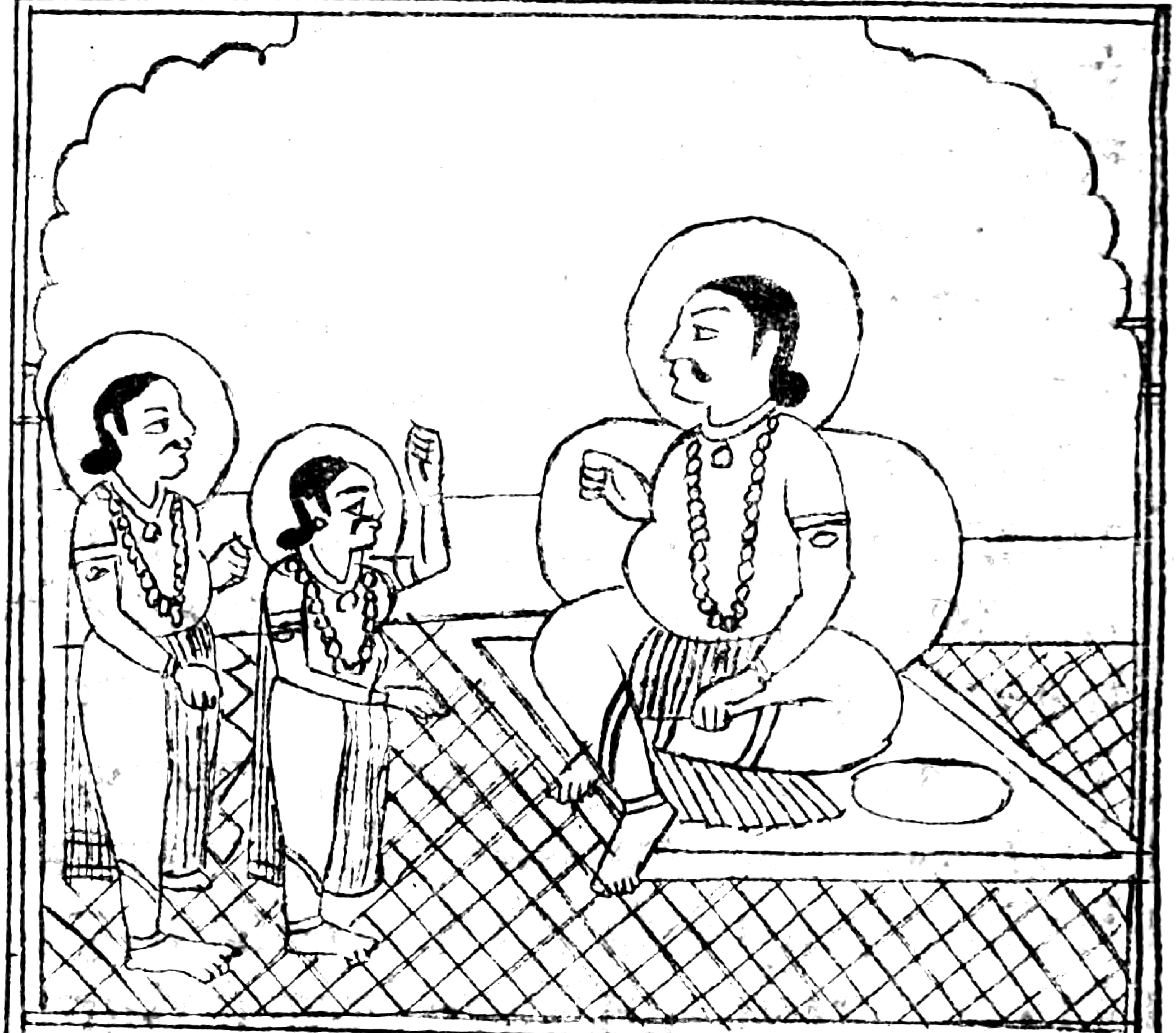

द करन आए हैं तब बिष्णुदासने उन पंडितन सों कह्यो जो तुम मोसों वाद करलेउ तब बिष्णुदास उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करिदेते व्याकरण शास्त्र पुराण इतिहास सब शास्त्रन के वचन लैकें निरुत्तर करि देते तब वे पण्डित अपने मन में समाधान करिके पाछे फिर जाते और वे कहते अपने मन में जो जिनके द्वार पालक ऐसें हैं तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्रीगुसांईजी लों काहू पंडित कों न जान देते द्वारही ते पंडित निरुत्तर होय कें फिरि जाते तब एक दिन श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो कोई पंडित अब वाद करन कों नाहीं आवत सो काहेते तब वैष्णवननें

कह्यो जो महाराज उन पण्डितन कों विष्णुदास॰ निरुत्तर करदेत हैं ताते पण्डित अपने मनमें समाधान करिकें फिर जात हैं तव श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कह्यो जो विष्णुदास तुमकों तो श्रीमहाप्रभून की कृपा ते ऐसी सामर्थ है जो तुम पंडितन कों जीत कें निरुत्तर करदेत हो परि उन शास्त्रनि कों अतिक्रम होत है ताते अब जो कोई पंडित वाद करन कों आवे ताकों हमारे पास आवन॰ दीजो तव उन पंडितन कों·· जान देते विष्णुदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे उन कों ऐसी सामर्थ हुतीजो पंडितन कों निरुत्तर करि दूषण करते ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांईजी सों कहतो जो तुम्हारे सेवकन कों में जिमाऊंगो तव श्रीगुसांईजी चुप करि रहते सो वह श्री गुसांईजी को ससुर हुतो श्री घनश्यामजी को नाना हुतो सो एक दिन॰ वा भट्टनें श्रीगुसांईजी कों न्योत्यो तव श्रीगुसांईजी उन के घर भोजन कों पधारे तव तहां विष्णुदास जलपान कों गडुआ लेकें साथ गये तव श्रीगुसांईजी भोजन करिकें उठे तव श्री गुसांईजी कों विष्णुदास नें शुद्ध आचमन करवायो पाछें श्रीगुसांईजी मन्दिर में पधारे तव विष्णुदास कों श्री॰ गुसांईजीने आज्ञा दीनी जो तुम प्रसाद लेकें वेगि आइयो सो जा थार में श्री गुसांईजी भोजन कीए

हुते ता थार में तें प्रसाद आपनी पातर में धरि कें थार धोय धर्यौ पाछें आप प्रसाद लेवे कों बैठन व भट्ट जी और सामिग्री लेकें आए तव विष्णुदासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत तव भट्टनें कह्यौ जो भूख तव काहे कों लेतहो नीको सामिग्री लेउ तव विष्णुदासनें कह्यौ जो मोकों नाहीं चहियत मेरी पातर में डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी तव भट्ट जी अति क्रोधवंत भये पाछें उन भट्ट जीने श्री गुसांई जी सों कह्यौ

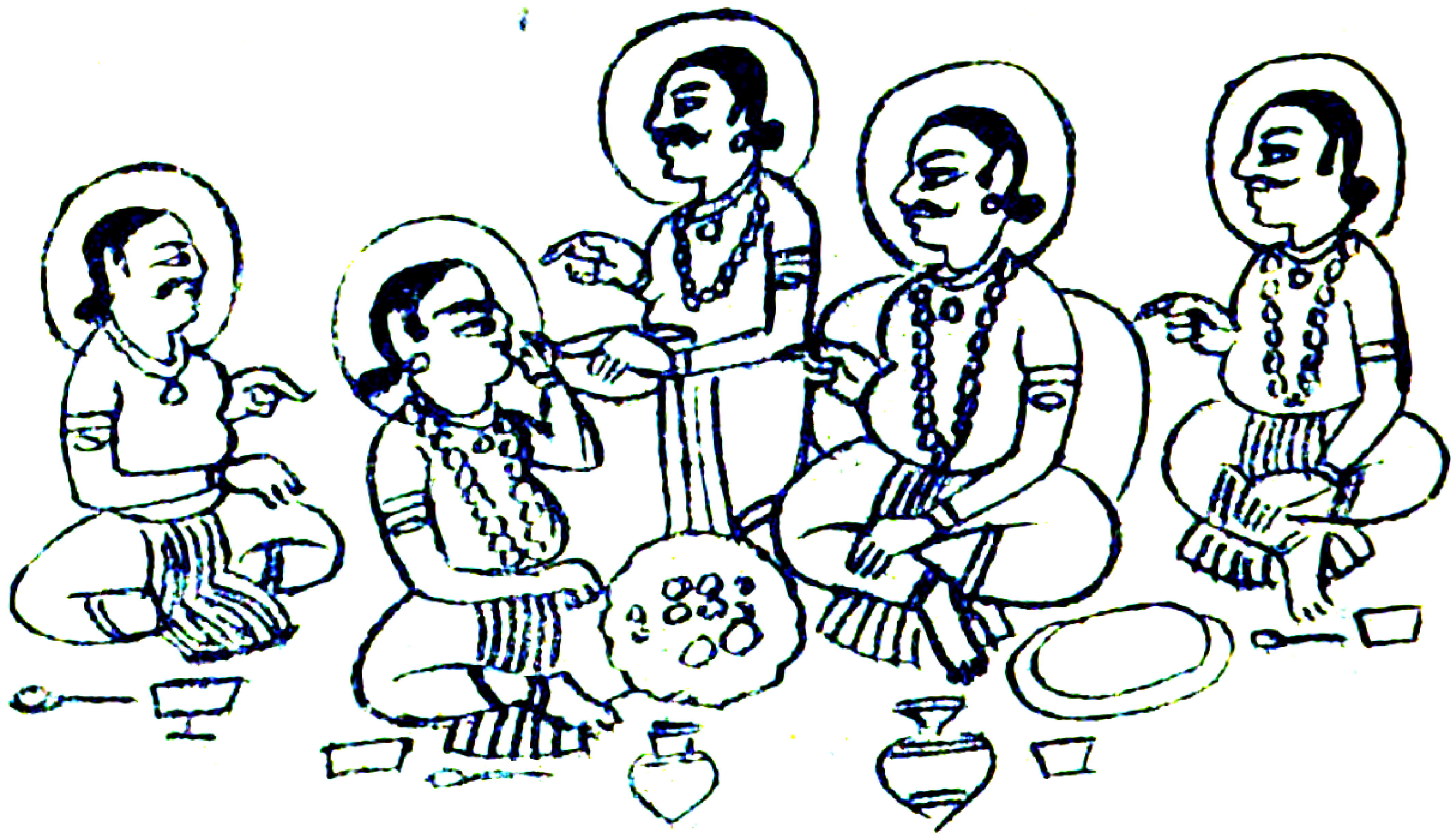

जो तुम्हारे शूद्र ने मोसों ऐसें कह्यौ जो मेरी पातर में मति डारो और डारोगे तो मेरी पातर छूय जायगी तव श्री गुसांई जी चुप करि रहे पाछें श्री गुसांई जी मुसिक्याय कें भट्टजी सों कह्यौ जो तुम हमारे सेवकन कों जिमावन कहत हुते सो तुमसों हमारो १ शूद्र न जिमायौ गयौ और सेवकन कों कै

सें जिमाओरो तव भट्ट जी मुसिक्याय के चुप करि रहे सो वे विष्णुदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिखिं

॥वार्ताप्रसंग॥२॥ वैष्णव॥५०॥सम्वंध॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जीवनदास क्षत्री कपूर सीहनन्द के वासी तिनकी वार्ता लिख्यते०

सो एक समय सीहनन्द के सब वैष्णव मिलिकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल आवत हुते सो मार्ग में एक दिन मजल जाय उ

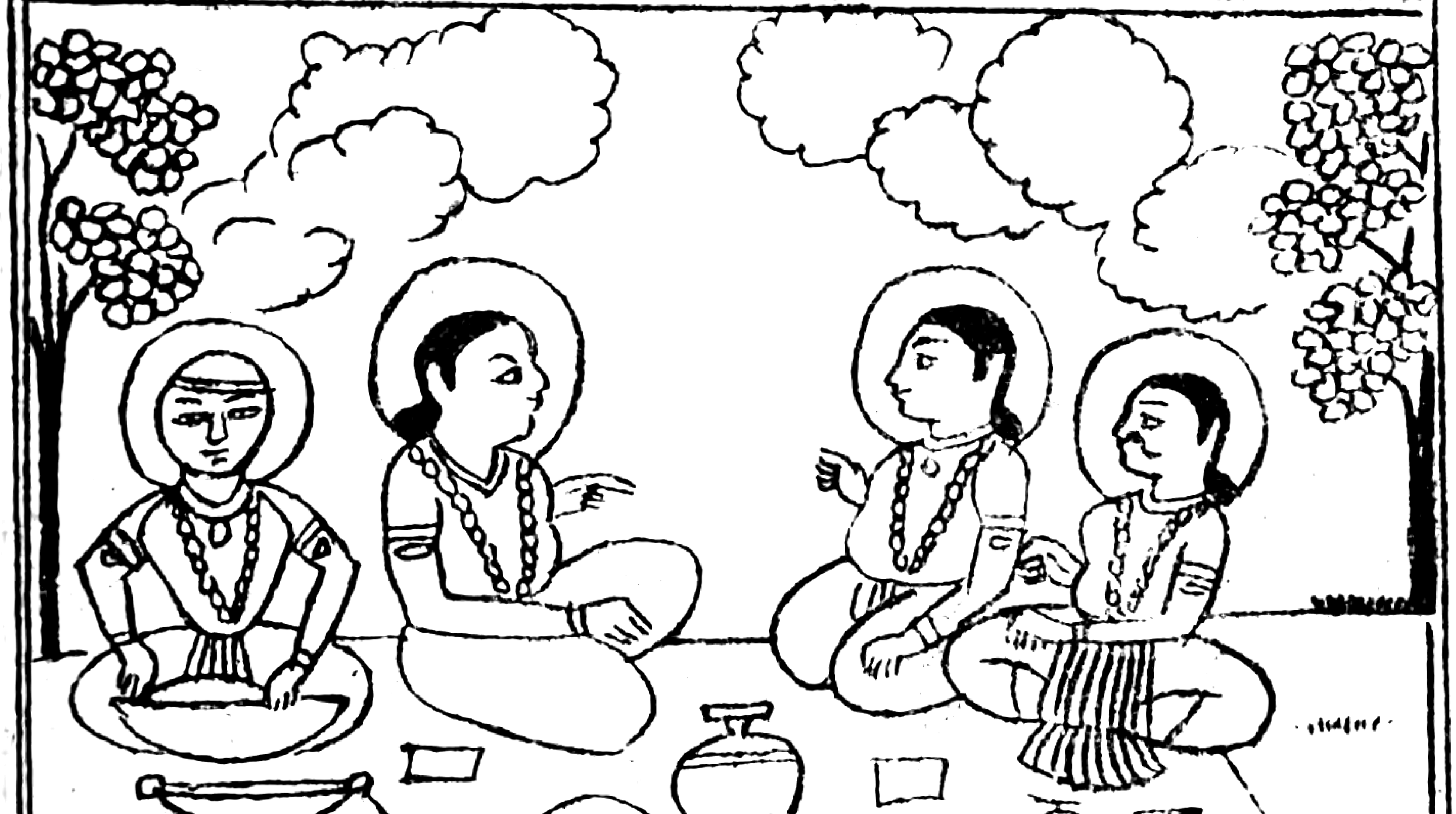

तरे तहां सब वैष्नव अपने अपने चौका देत हुते तासमय मेह चढ़ि आयौ तब वैष्नवन नें कह्यौ जो वर्षा आई ऐसो कार्य भयौ तब जीवन दास बोले जो तुम चिंता मति करौ तब जीवनदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम लेकें मेह कौं आनि दीनी जो तोकौ श्री आचार्य जी महाप्रभून की आनि है जो तू बर्षै मति तब वह मेह रहि गयौ पाछें सब वैष्नवन नें भोग समर्पि महाप्रसाद लीयौ तहां रात्रि कौं सोये ता पाछें सब वैष्नव अडेल आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन कीयौ पाछें यह बात सबनने श्रीगुसांई जी सौं कही जो महाराज एक दिन सब हम वैष्नव पाक करत हुते ता समय मेह चढ़ि आयौ तब जीवन दास नें आप की आनि दैकें ऐसें कहि कें मेह कौं बरजो तब यह सुनिकें जीवनदास सौं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछौ और कह्यौ जो क्यौंरें हमारी तैनें आनि दीनी और कदाचित वर्षा होती तौ तू कहा करतौ तब जीवनदास नें कह्यौ जो महाराज वह कौन है जो आपकी आनि दिये उपरांत बर्षे यह इन्द्र कौ कहा सामर्थ्य है तब यह बात जीवनदास की सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू मुसिक्याय कें चुप कर रहे तब उन जीवन दास पै श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा हुती उन जीवन दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभुन के स्वरूप कौ ऐसो ज्ञान हुतौ सो आनि दैकें मेह बरजो तिनकी कहा कहिये ……

तव वैष्णवन नें कह्यो ये वड़े भगवदीय हैं वे जीवनदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता अव कहांतांई लिखियै ॥

वार्ता प्र० ॥ वैष्णव ॥ ५४ ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भगवानदास सारस्वत ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते

सो उन भगवानदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवा नीकी भांति सों कीनी तव श्री आचार्यजी आप भगवानदास के ऊपर वहुत प्रसन्न भये तव भगवानदास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आप कृपा करि कें अपनी श्रीपादुका जी की सेवा दीनी जो तू इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो तव भगवान दास श्री पादुका जी की सेवा नीकी भांति सों ऐसी भांति सों सेवा करते जो श्री ठाकुर जी इनसों सानुभाव ह्वैने वातें करते सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभु भगवान दास के घर पधारे सो जा ठौर श्री आचार्य जी महाप्रभु विराजत हे ता ठौर नित्य उठि कें सवारें भगवान दंडौत करते सो याते वा ठौर पर कोऊ पाव न धरतौ ऐसो उनकों भाव हो सो हे भगवानदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥

॥वार्त्ताप्रसंग॥१॥वैष्णव॥५२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक भगवानदा
स श्रीनाथजी के भी
तरिया तिनकी
वार्ता है॥

सो एक समय श्रीनाथजी के बालभोग की सामग्री करत भगवानदास सों कछु सामग्री दाझि

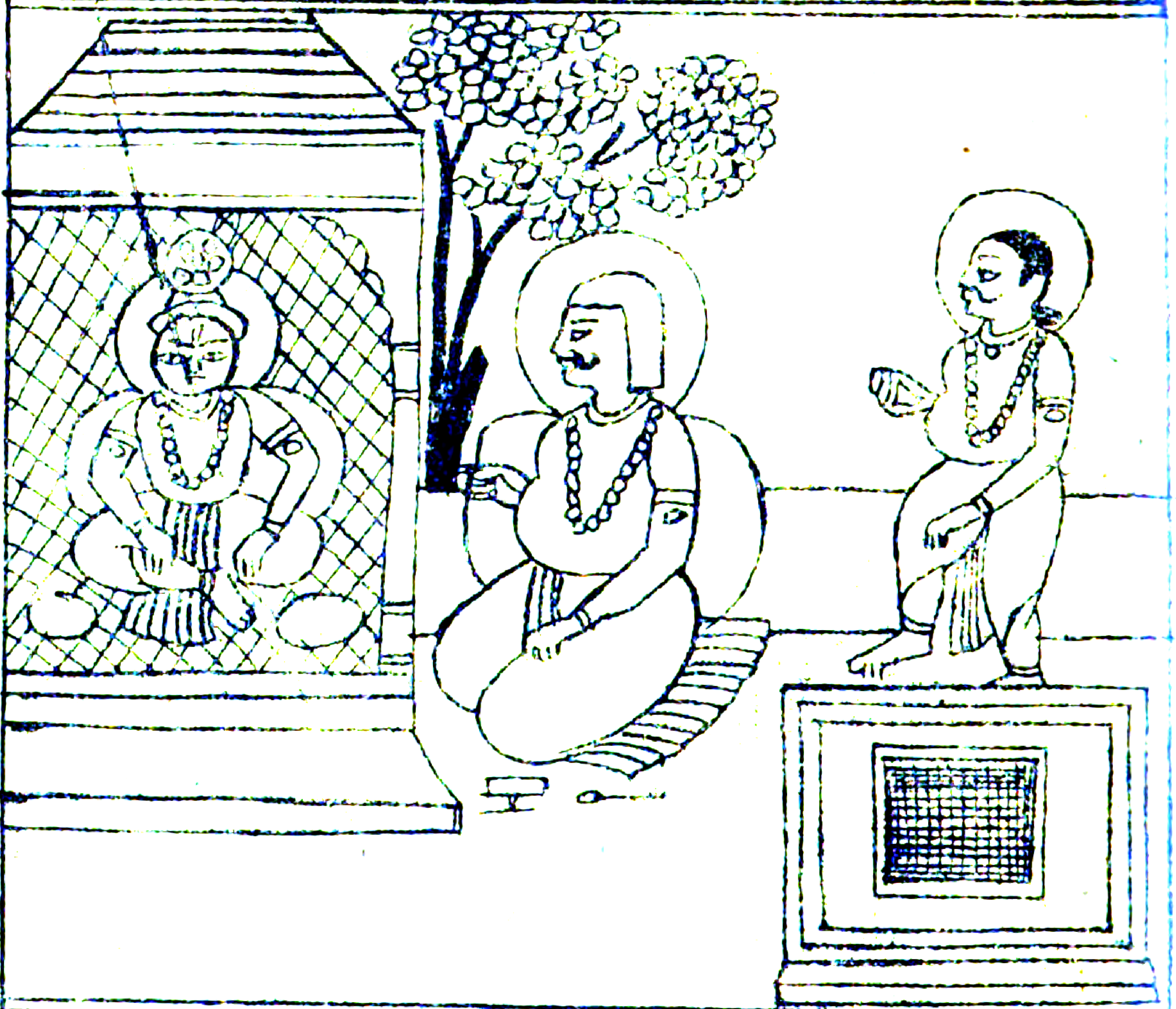

तब श्रीगुसांईजी भगवानदास के ऊपर बहुत खीजे और भगवानदास कों सेवा तें भिन्न बैठा सो भगवानदास गोविंदकुंड ऊपर आये अच्युतदास के पास आय बैठे पाछें श्रीगुसांईजी आप-

स्नान करिवे कों गोविंद कुंड ऊपर पधारे और भगवानदास तो पूछरी की ओर अच्युतदास के पास हुते सो भगवानदास ने सव समाचार कहे पाछें जव श्रीगुसांईजी गोविंद कुंड स्नान करिकें अच्युतदास कों दर्शन देंन पधारे तव श्रीगुसांईजी के दर्शन करिकें अच्युतदास की आंखन में सूं आंसून को प्रवाह चल्यो सो देखिकें अच्युतदास कों श्रीगुसांईजीने अच्युतदास सों पूछो जो अ

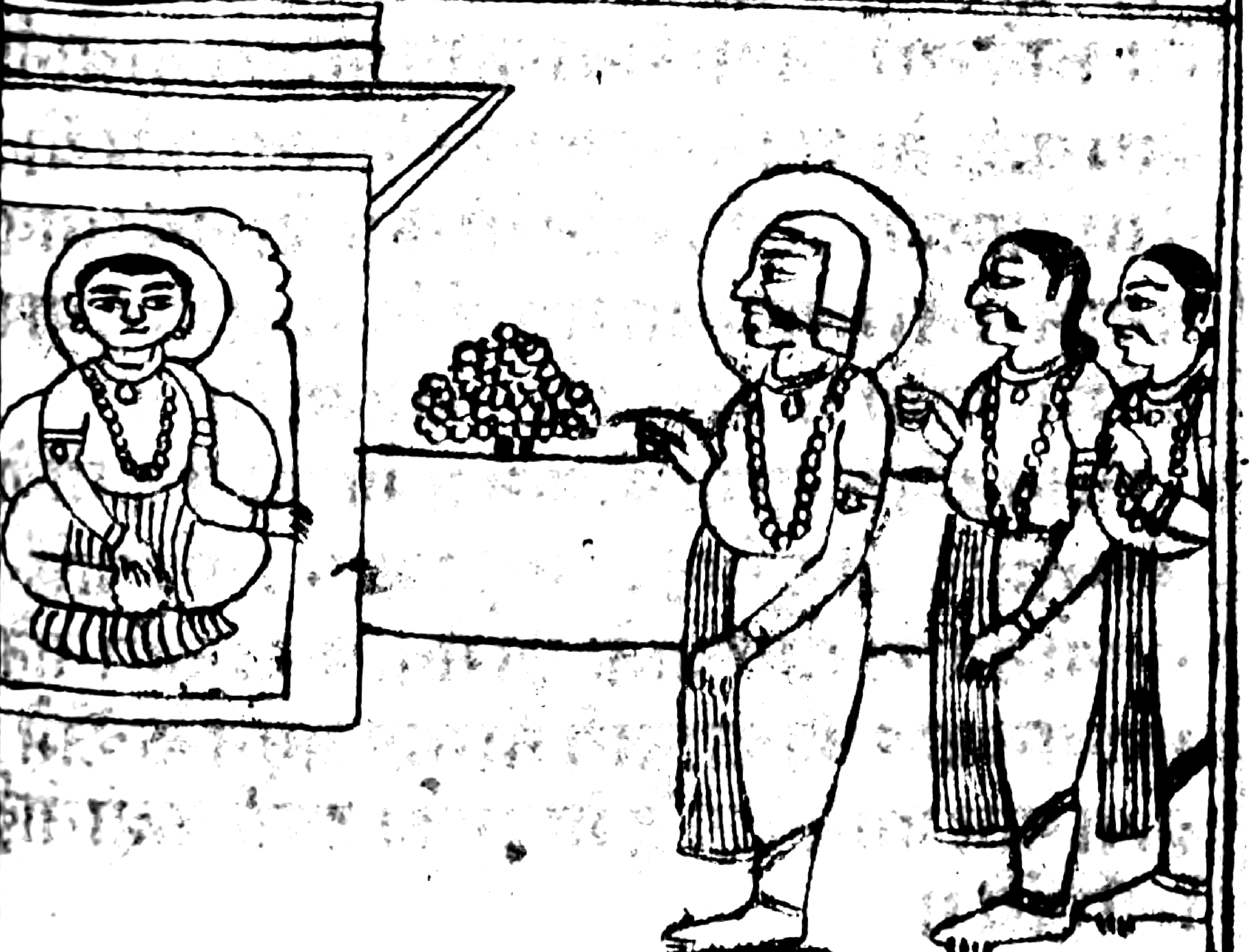

च्युतदास तुमकों ऐसो दुःख कहा है तव अच्युतदास नें श्रीगुसांईजी सों कह्यो जो महाराज श्रीआचार्यजी महाप्रभून को तो श्रीनाथजी नें आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्मसम्बन्ध करावो.

सो साठ लाख जीवन कों तुम द्वारा अंगीकार करनो है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनें तो तुमकों सोंपे हैं और तुम जीवन को अपराध देखन लागे और जीव तो सदा अपराधही ते भर्यो है और जीवन कों अंगीकार करनों तुम्हारे हाथ है ताते अब जीवन को अंगीकार ...... कैसें होयगो तब श्री गुसांई जी यह बात सुनिकें आप भगवानदास कौ हाथ पकरि कें श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर ले चढ़े और श्री गोवर्द्धननाथ जी की सेवा जा रीति सों करते ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी और कही जो अबते सावधानी सों सेवा करियो और सामग्री आछी भांति सों करियो तब भगवनदास ने ता समय श्री गुसांई जी के आगे नयो प करिकें गायो ॥ सो पद ॥ राग सारंग

श्री विठ्ठलेस चरण कमल ॥ सो यह पद गायो सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भये पाछें भगवानदास सावधानी सों सेवा करन लागे ताते भगवानदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥ ❀

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास सनोढिया ब्राह्मण तिन की वार्ता है ॥

सो वे अच्युतदास मानसी गंगा ऊपर रहते तहां चक्रतीर्थ है तहां रहते सो नित्य श्रृंगार के समय श्रीनाथ जी के दर्शन कौं आवते सो दर्शन करि के अपने स्थल कौं आवते सो उन अच्युत दासजीनें श्री नाथजीकी तीन परिक्रमा दंडौती करी हुती तब श्री गुसांईजी अच्युत दास के ऊपर वहुत प्रसन्न भए और श्रीगुसांईजी अपने श्री मुख सों कहते जो अच्युत दास वड़े भगवदीय हैं और वड़े महा पुरुषहैं सो वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के तथा श्री गुसांईजीके ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥*

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥*

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास गौड ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे अच्युतदास वड़े भगवदीय है और श्री आचार्य जी महाप्रभूनने इनके माथे श्रीमदन मोहन जीकी सेवा पधराई हुती आप को पाट वैठारे हुते सो अच्युतदास श्री मदन मोहन जीकी सेवा नीकी भांति सों करते तब श्री मदन मोहनजी आप अच्युत दास सों सानुभाव हुते वातें करते और अच्युतदास ऊपर श्री ठाकुर जी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युत दास श्रीनाथजीके

दर्शनको आवत हुते तब श्री गोवर्द्धननाथजीकी एक दंडौती परिक्रमा करते ऐसे भगवदीय हैं और जब श्री गुसांईजी के पास आवते तब श्री गुसांईजी अच्युतदास कों दंडौत न करन देते और कहते

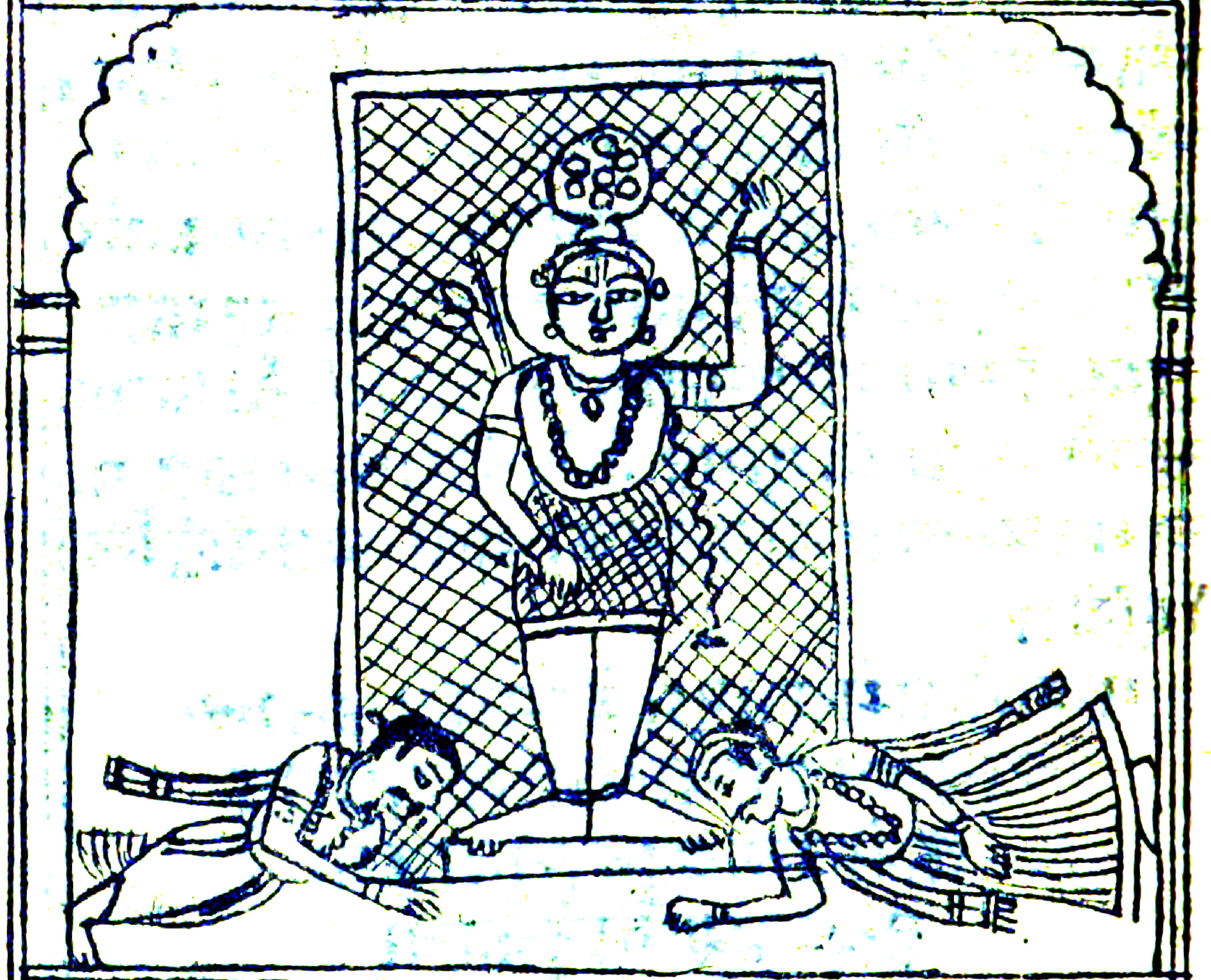

जो ऐसे श्री आचार्यजी महाप्रभून के कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकों दंडवत न करन दीजिये पाछें जब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें लौकिक लीला आसुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युतदासनें श्री मदनमोहनजी कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के घर पधराये आप श्री बद्रीनाथजी के दर्शन कों उठि गये तब उहां जायकें श्री बद्रीनाथजी के दर्शन करि कें अन्नजल को त्याग करि कें

अपनी देह छोड़ी पाछें श्रीमदनमोंहनजी कौं कहे गोपीनाथजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास पधारए वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे भगवदीय हैं जिन श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ स्वरूप साक्षात करि जान्यौ और उनकी श्री महाप्रभून के ऊपर वडी आसक्ति हुती जो परोक्ष भए पाछें अन्नजल कौ त्याग कीयौ तब देह छोड़ी भक्ति मार्ग कौ स्वरूप केवल विरहासक्ति है सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ *

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५५ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक अच्युतदास सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता है ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग अच्युतदास नें पृथ्वी परिक्रमा कीनी हुती सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अच्युतदास कों अपनी पादुकाजी की सेवा दीनी सो अच्युतदास नें आति उतम रीति सों श्रीपादुकाजी की सेवा कीनी तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू अच्युतदास कौं नित्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्रभू नें संन्यास ग्रहण कीयो सो केवल उनके भावार्थ कीयो तब एक वैष्णव सों श्री आचार्यजी महा

प्रभून नें कह्यो जो एक डोंगी कासी को भाडे करलेउ तब वह वैस्नव डोंगी भाडें करि आये ताके ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू चढि कें बनारस पधारे तहां सन्यास डेढ महीना तांई राख्यो तब वह वैस्नव जो काशी में गयो हो सो कासी ते कंडा में आये तब अच्युतदास तथा सब वैस्नवन सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सन्यास ग्रहण कीयो फेरि कासी पधारे सो उहां डेढ महीना तांई रहे पाछें असुर व्यामोह लीला दिखाई तब अच्युतदासनें वा वैस्नव सों कह्यो जो तोकों भ्रम भयो होयगो तब वा वैस्नवनें कह्यो जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हतो सो कासी ते देखि कें अब

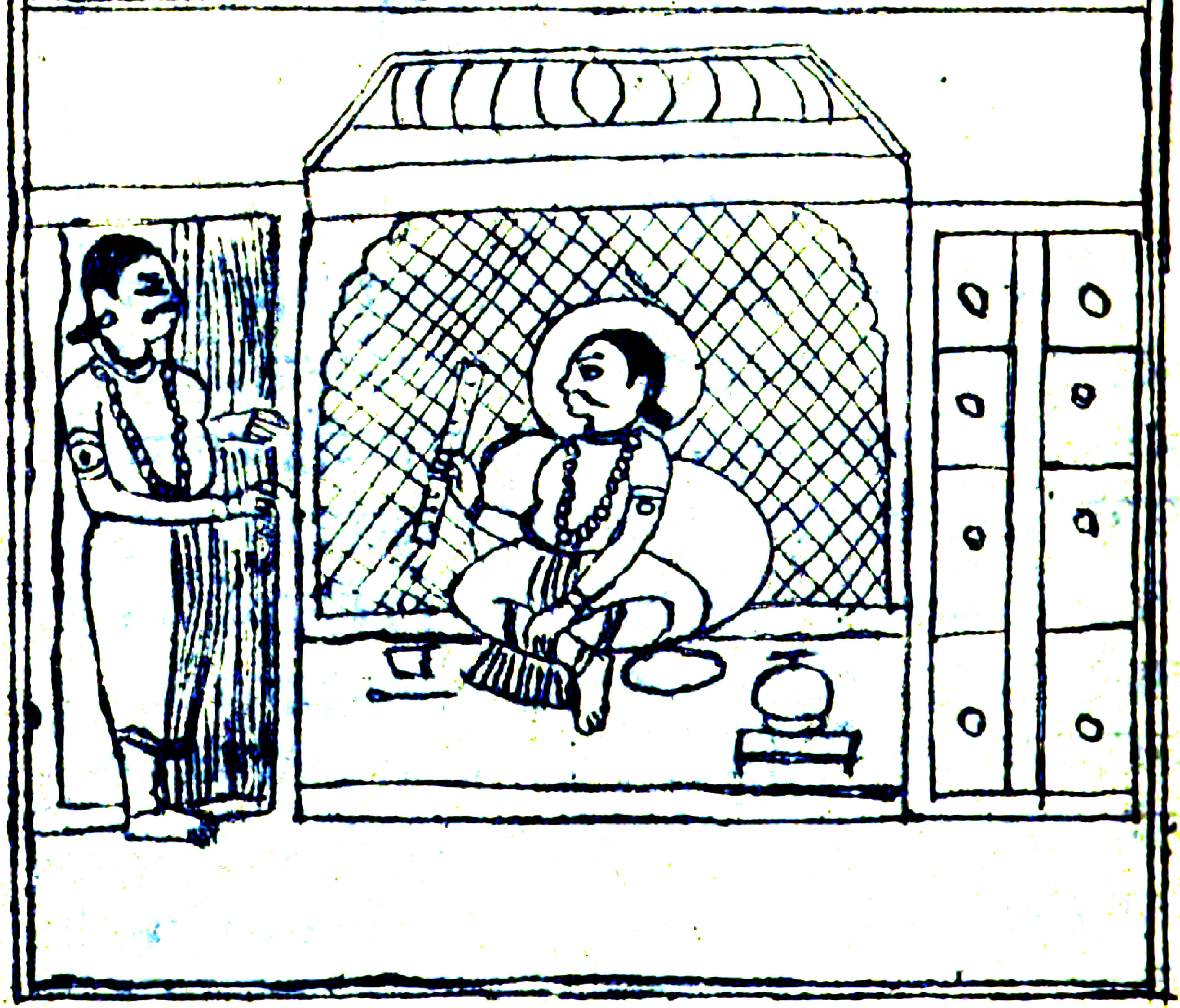

हीहौ आयो हौं तब अच्युतदास नें कह्यो जो ऐसो प्रभु कबहू न करें जो जीवन कों आसुर व्यामोह लीला दिखावत हें तब अच्युतदासने मन्दिर के किवाड़ खोलिकें वा वैष्णव कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करवाये तब देखें तो श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजे हैं और पोथी देखत हें तब वा वैष्णव नें दंडोत कीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो तुम कछू सन्देह मति करो यह प्रागट्य लौकिक रीति सों देह धरे की लीला हे और सिंहासन बैठिकें अलौकिक लीला नित्य हे ताते यह लीला आवर्त्त अवतार प्रगट हे ताते तहां आरा हैं ताते सन्देह न करनों यह आसुर व्यामोह लीला हे सो श्री गुसांईजी सर्वोत्तम में लिखे हैं जो प्राकृतानुकृत व्याज मोहितासुरमानुषः मनुष्य देह धरे ताकी यह लीला हे सो अच्युतदास ऐसे स्वरूपनिष्ठा के जिनकों श्री आचार्यजी महाप्रभून के स्वरूप को ऐसो दृढ़ विश्वास हो ते अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहांलों ई लिखिये ॥ ४ ॥

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५६ ॥ सम्बन्ध ॥ १८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास अम्बाले
के वासी हुते तिनकी
वार्ता लिख
ते हैं ॥

सो वै नारायणदास देशाधिपती के चाकर हुते तिन कों राजद्वार को काम बहुत हुतो ताते श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नाही परि अंतः करन में श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाउंगो परि आय सकते नाही ताते नारायणदास नें एक चाकर राख्यो ताको महीना रुपैया ४) चारि को कीनो और वासों कह्यौ जो तेरो यह काम है जो मोकों छिन छिन में सुरत दीवायौ करि जो भैया जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जो हम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर योंहीं कह्यौ कों

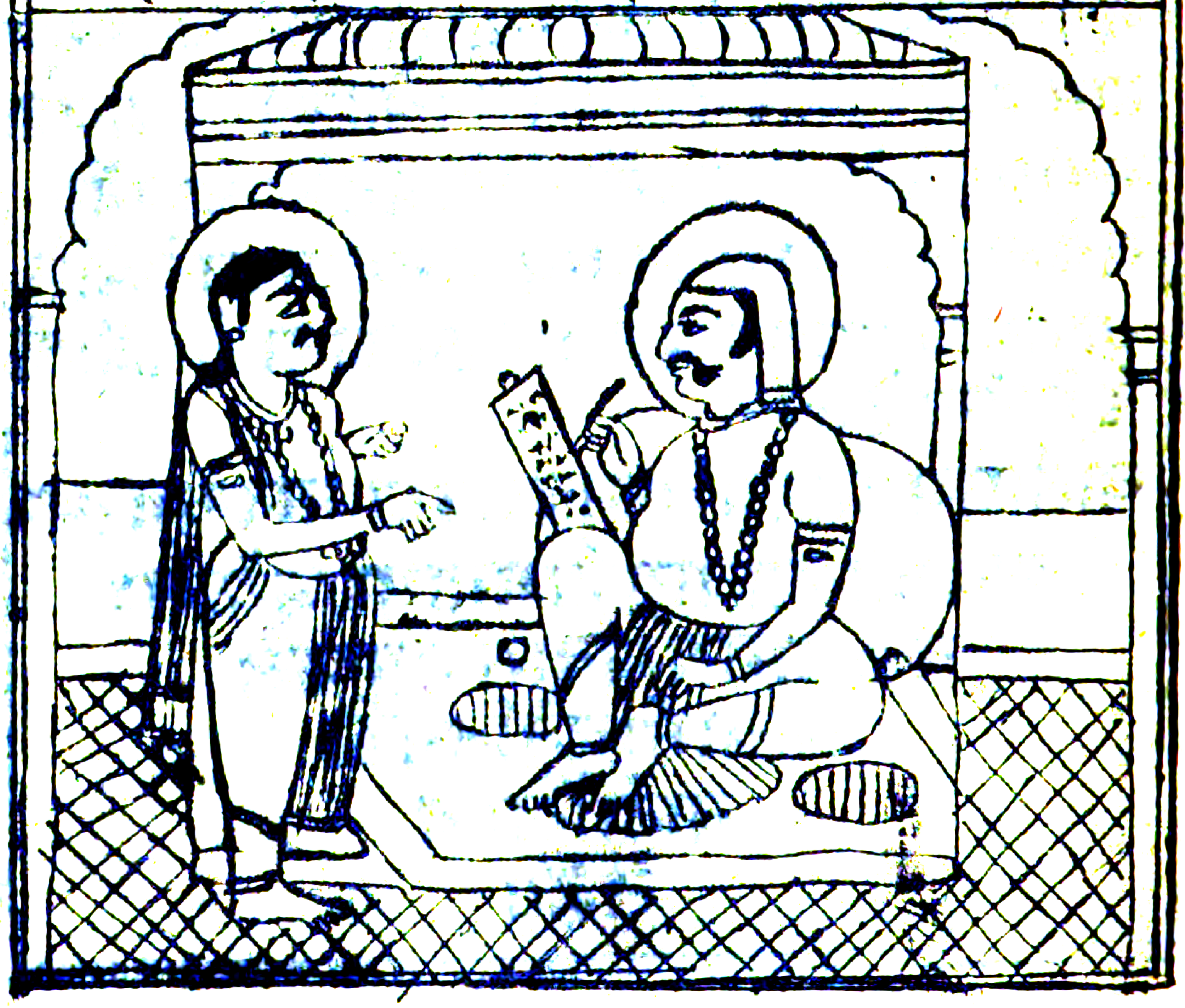

तव नारायणदास अपने कार्य में बैठे तव आगें आपकें ठाडे होयकें एक१ घडी उपरांत कहेजो भैयाजू श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कव जाउगे ऐसेंही नित्य प्रति कहै और नारायणदास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेंट वहुत पठावते नारायणदास ऐसें भगवदीय हे सो उनको चित सदां श्री आचार्यजी महाप्रभून के चरणारविंद में रहतौ ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत ही प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्नव ॥५७॥ सम्वन्ध १२६

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नारायणदास मांट मथुरा में रहते तिनकी वार्ता ✦ लिख्यते

सो नारायणदास कों श्री मदनमोहनजीनें आज्ञा दीनी हुती जो वृन्दावन में अमुकी ठौर हों मो वहां सों काढि के मोकों वाहिर पधराउ तव नारायणदास जायकें श्री मदनमोहनजी कों वाहिर पधरायकें पाछें जव श्री गोपीनाथजीनें श्री मदनमोहनजी कों पाट सिंहासन वैठारे तव कितनेक दिन तांई नारायणदास नें सेवा कीनी तव उनके पाछें उनको कोऊ नहुती ताते वङ्गाली गौडिया सेवा

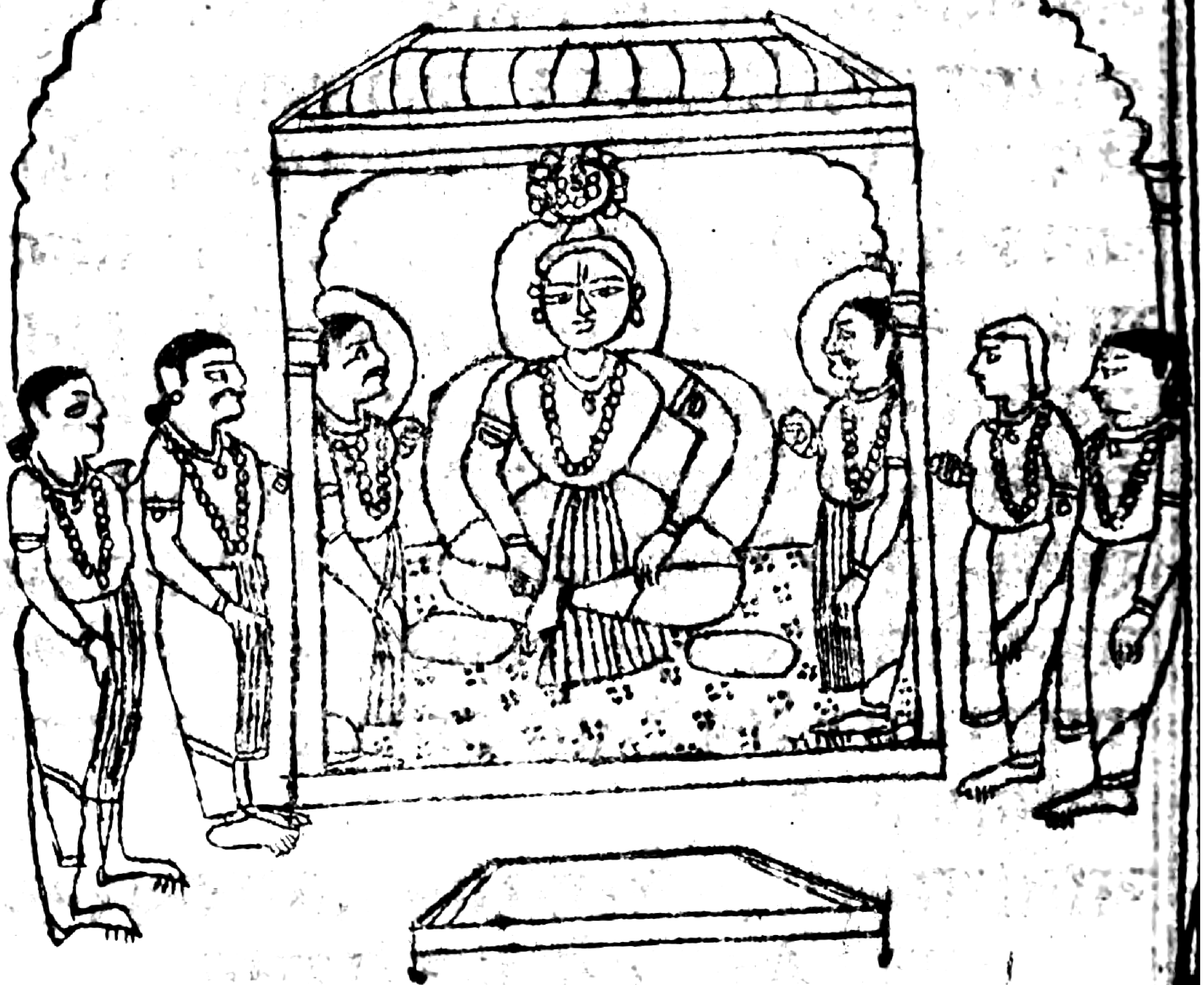

करन लागे श्रीगोपीनाथजी ने पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शन कौं आवत हैं वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हैं तिन कौं श्री मदनमोहनजी आप कृपा करिकें वृन्दावन पधारे श्री मदनमोहनजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभून कौ सेवक जानि कें नारायणदास के ऊपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ◆

वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥५८॥ सम्बंध १३०॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून ◆
के सेवक नारायणदास चौ
हान ठठ्ठे के बासी ति

नकी वार्ता है

सो वे नरायणदास ठट्ठे के पातसाह के दीवान कुलकुलां हुते। जो नारायणदास दीवान करै सो होय पाछे कितनेक दिन में वह पातसाह नारायणदास के ऊपर कोप्यो तब नारायणदास को पकर्यो। तब बहुत मार्यो और बन्दीखाने में देदीयो पाछे पचास लाख रुपैया वाके माथे दंड कौ कीयो सो दिन प्रति पांच हजार भरने और जादिन रुपैया न भरै तादिन नरायनदास कैं पांचसौ कोरड़ा मारने पातसाह ने ऐसो वंधान कीयो। तब एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक दोउ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मन में विचार कीयो जो ठट्ठे में नारायणदास दीवान है सो हम उनके पास चलें हमकों अपनी कन्या कौ विवाह करनों है तातें जो वे कछू देंय तो कन्या कौ विवाह करें सो ऐसो विचार कैं वे दोउ भाई अपने घर ते ठट्ठे कों चले सो ठट्ठे में जाय कें पहुंचे तब वहां जाय कें सुन्यो जो नरायणदास तो बन्दीखाने में पर्यो है तब वे दोउ भाई अपने मन में विचार करन लागे जो अब कहा करिये ऐसो विचार इन दोउ भाईन ने कीयो जो अब यहां सों चलिये तब प्रातःकाल यह बात नारायणदास ने सुनी जो वे दोउ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभू के सेवक गांव में आये हैं सो उनने सुनी जो नारायणदास तो बन्दीखाने में परे हैं तातें अब यहां से प्रातःकाल चलैंगे तब नारायणदास ने उनके पास मनुष्य पठायो और कहिवाय पठाई जो तुम आये सो

मेरो बड़ो भाग्य है मेरे पास तुम प्रातःकाल होय के दर्शन अपने मोकूं देके जैयो तब वे दोउ भाई प्रातःकाल उठि देहकृति करि तिलक मुद्रा करि नित्य कर्मसों पहुंच कें श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ चरणामृत और महाप्रसाद लैकें जहां नारायणदास बन्दीखाने में हुते वहां दोउ भाई नारायणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास कें उनकों देखि कें परम आनन्द भयौ और बहुत प्रसन्न भए तब उन दोउ भाईनिनें चरणामृत और महाप्रसाद नारायणदास कौं दीनों तब नारायणदासने लीनों और कह्यो जो मोकों बन्दीखाने में वैष्णवनको दर्शन भयो तब नारायणदासनें श्री आचार्य

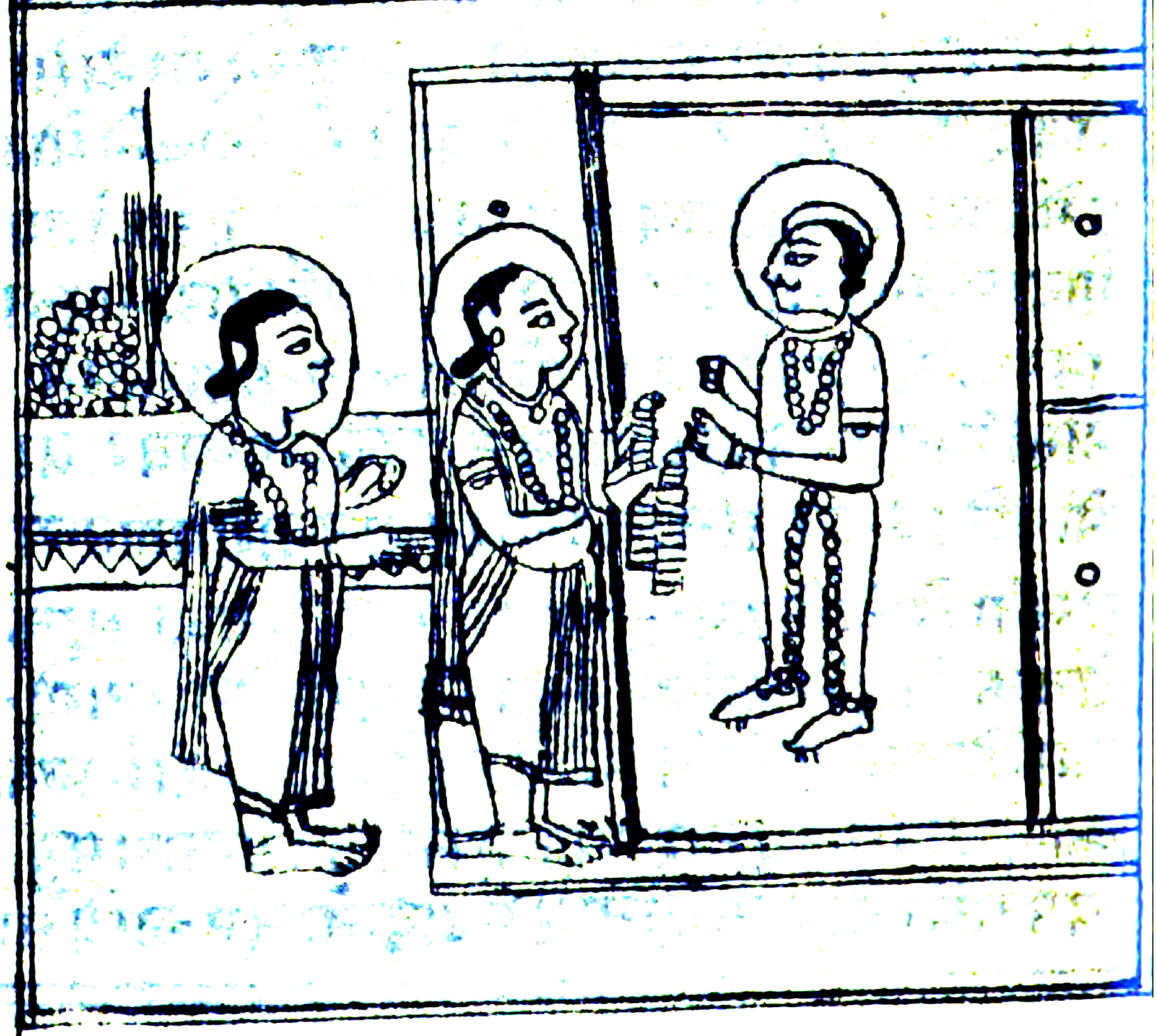

जी महाप्रभून के कुशल समाचार पूछे पाछें भगवद्वार्त्ता के प्रसंग करन लागे इतने में नारायणदास के घरते पांच हज़ार रुपैयान की थैली आई सो द्वारपालनें थैली के ऊपर मोहर छाप करि के नारायणदास के पास पठाई तब नारायणदास नें वे पांचों थैली उन दोऊ भाईन कों सौंपि दीनी और दंडोत कीनी और कह्यो जो अब तुम वेगि पधारो और श्री आचार्यजी महाप्रभून कों मेरी दंडोत करियो और तुम अपनी कन्या को विवाह या द्रव्य ते भली भांति सों करियो तब वे दोऊ भाई ब्राह्मण नारायणदास ते विदा होय के चले तब इतने में पात्साह बोल्यो जो पांचों थैली नारायणदास की लावो तब दरवान बोल्यो जो पांचों थैलीन ऊपर मोहर छाप करि कें नित्य नारायणदास के पास पठावत हैं त्योंही पठाई हैं तब पात्साह बोल्यो जो खजानची कों बुलावो तब मनुष्य जाय कें खजानची कों बुलाय लाये तब खजानची आगें आय ठाढ़ो भयो तब पात्साह नें खजानची सों पूछी जो क्यों रे तेरे पास नारायणदास के पास ते पांचों थैली आई हैं तब खजानची नें कही जो साहब मेरे पास तो नाहीं आई तब पात्साह कों बहुत क्रोध भयो और कह्यो जो नारायणदास कों बुलावो तब नारायणदास कों बन्दीखाने में ते बुलाय सो लायकें पात्साह के आगें ठाढ़ो कीयो तब नारायणदास ने पात्साह ने पूछी जो नारायणदास आज थैली क्यों नाहीं आई पाछें थोड़ो सो गाढ़ो कोरड़ा करिकें

कोरडा वारौ वुलायौ और पात्साह नें पांचसौ कोरडा कौ हुकम दीयौ और पात्साह वोल्यो जो नारायणदास सांच कहि जो आज थैली क्यों नाहीं आई । द्वारपाल नें तो मुहर छाप करि कें तेरे हवालें कीनी और तेंने यह कहा कीयो तू सांच कहि नाहीं कोरडा लागत हैं तव नारायणदास सलाम करिकें वोल्यो जो हजरत आज मेरे गुरू भाई आये हुते सो ।

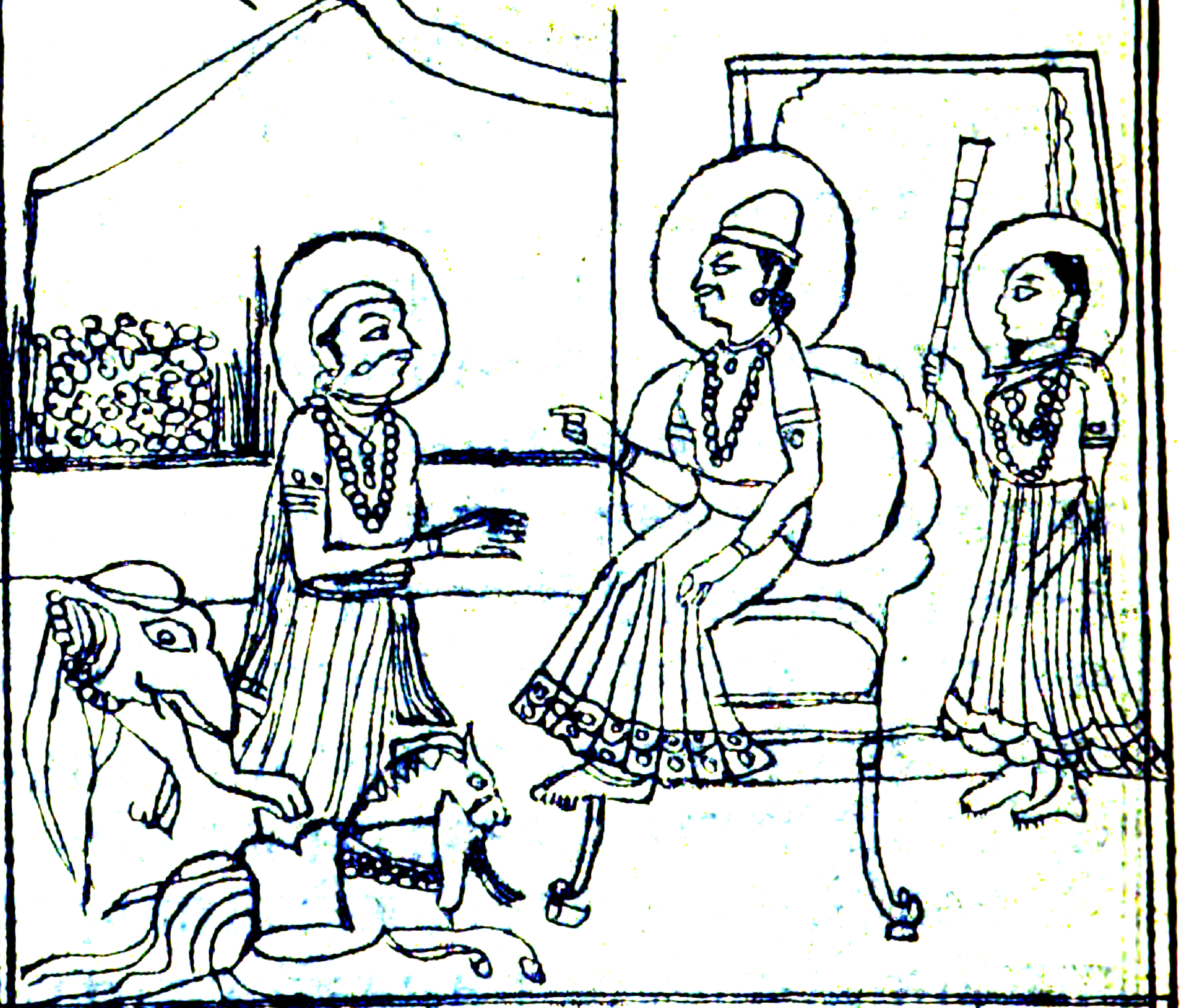

वे पांचों थैली उनकों दीनी और मैंनें अपने मनमें कह्यो जो मैं आज मार खाय रहूंगो परि यह वडी कहा है तव पात्साह चुप करि रह्यो पाछें एक घडी विचार कें कह्यो जो स्यावास तू अपने गुरू कै मार्ग में ऐसो सांचो है सो मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न

तब पातसाह ने वाही समय बेड़ी कटवाइ के वाही समय घोड़ा तथा सिरोपाउ मगाय कें नारायणदास कों पहरायो घोड़ा दीयो और निवाज्यो तब फेरि कें अपनों कुल कुल्लादीमान राख्यो जैसो पहले हुतो तैसेंई कीयो काम सब सोप्यों और नारायनदास के मांथे दंड कीयो हुतो सो सब माफ़ करि कें सिरोपाव पहराय कें कह्यो जो जा घर होय आउसे सिरोपाव पहरि कें घोड़ा ऊपर चढ़ि कें नारायणदास घर कों गये सो वे दोउ भाई वैस्नव गांम में ही हुते सो वे दोउ भाई वैस्नव सुनि कें नारायणदास सों मिलिवे कों आये तब नारायणदास उनसों मिले भेंट और कह्यो जो मेरे गुरू के सेवक आये सो मैं छूटो तब उन वैस्नवन नें कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते कैसें न छूटे तब नारायणदास ने १००० हजार मोहरन की एक थैली वैस्नवन के हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेट पठाई पाछे वे दोउ भाई उहां सों चले सो कितनेक दिन में श्री गोकुल आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोकुल में हुते सो उन दोउ भाई वैष्णवननें आय के श्री आचार्यजी महाप्रभून कों दर्शन कीयो और नारायणदास की हज़ार मोहरन की थैली आगें राखी तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास के कुशल समाचार पूछे तब उन वैस्नवननें सब समाचार कहे तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आपनो श्री मुख सों कहें जो

जाकों वैष्णव ऊपर ऐसो दृढ़ स्नेह है ताको कष्ट क्यों रहे पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभून ते बिदा होय कें अपने घर को गये सो बेटी को बिवाह आछी भांति सों कीयो और वह लेउन कों नाम नरिया हतो सो सेवक भए पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूनने नारायणदास नाम ध सों जाको ऐसो मन होय तापै श्री ठाकुरजी ऐसी कृपा करें प्रभूजी को नाम भक्तवत्सल है सो अपने कों थोरे ही में कृपा करत हैं सो वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र हते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ ∗

॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वैष्णव ॥५८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक एक क्षत्राणी
अकेली सीहनन्द
मे रहती तिने
की वार्ता

सो वा क्षत्राणी कें श्री नवनीतप्रियाजी बिराजे हैं श्री ठाकुरजी सानुभाव हैं सो वह बाई अकिंचन सेवा जब करि पहुंचे तब सूत काते तामें जो कछु बढ़ती आवे तासों निर्वाह करे सो घर के द्वारे काछिन तरकारी बेचन आवे तब श्री ठाकुरजी मन्दिर मेंते पुकार कें कहें अरी अमुकी तरकारी बिकने आई है तू ले ऐसें श्री ठाकुरजी कहें तब वह क्षत्राणी सब भांति की तरकारी लेहि सो केतिक

तौ कच्ची समर्पें कैतिक रसोई में छौंकि कें समर्प्पें और कबहूं काछिन कौ शब्द श्री ठाकुरजी न सुनें और वह काछिन आगें निकस जाय तब वह बाई सामग्री कछु लैन सकै तब श्री ठाकुरजी वा सों बहुत रारि करें जैसे लौकिक लरिका रार करें तैसे श्री ठाकुरजी वा क्षत्राणी सों झगरो करें और एक दिन कछू पकवान बाल भोग कौ होय न आयौ तब रोटी घी सों चुपरि कें रात्री के लियें ढांकि राखी सो जब रात्रि आधी भई तब श्री ठाकुरजी बोले वा क्षत्राणी बाई कौं जगाई और कहें जो हों भूखौ हों तब वा बाई नें कह्यो जो लालजी पकवान तौ कछू नाहीं है और रोटी घृत सों चुपरि धरी है तब श्री ठाकुर जी कहें जो भलौ रोटी ही लाउ तब वा बाई नें रोटी आगें आनि राखी तब श्री ठाकुरजी नें वा बाई सों कह्यौ जो तू मोकों रोटी की तुतुरी कर कें दै तब वह बाई श्री ठाकुरजी के हस्त में दैन जाय तब अपने श्री हस्त में लेकें कतरि कतरि कें आरोगत जाय पाछें जब पान करकें पोढ़े परि वा क्षत्राणी के मन में क्षोभ भयौ बहुत सो और कह्यो जो सवारे उधारे लाय कें पकवान करि धरोंगी जो रात्रि कों श्री ठाकुरजी नें फीकी अकेली रोटी आरोगी पाछें दूसरे दिन पकवान करि धर्यो तब रात्रि कों श्री ठाकुरजी नें मांग्यो तब पकवान लेकें आगें धर्यो तब श्री ठाकुरजी आरोगे तब कह्यो जो अमुकी तेंनें पकवान तो ध-

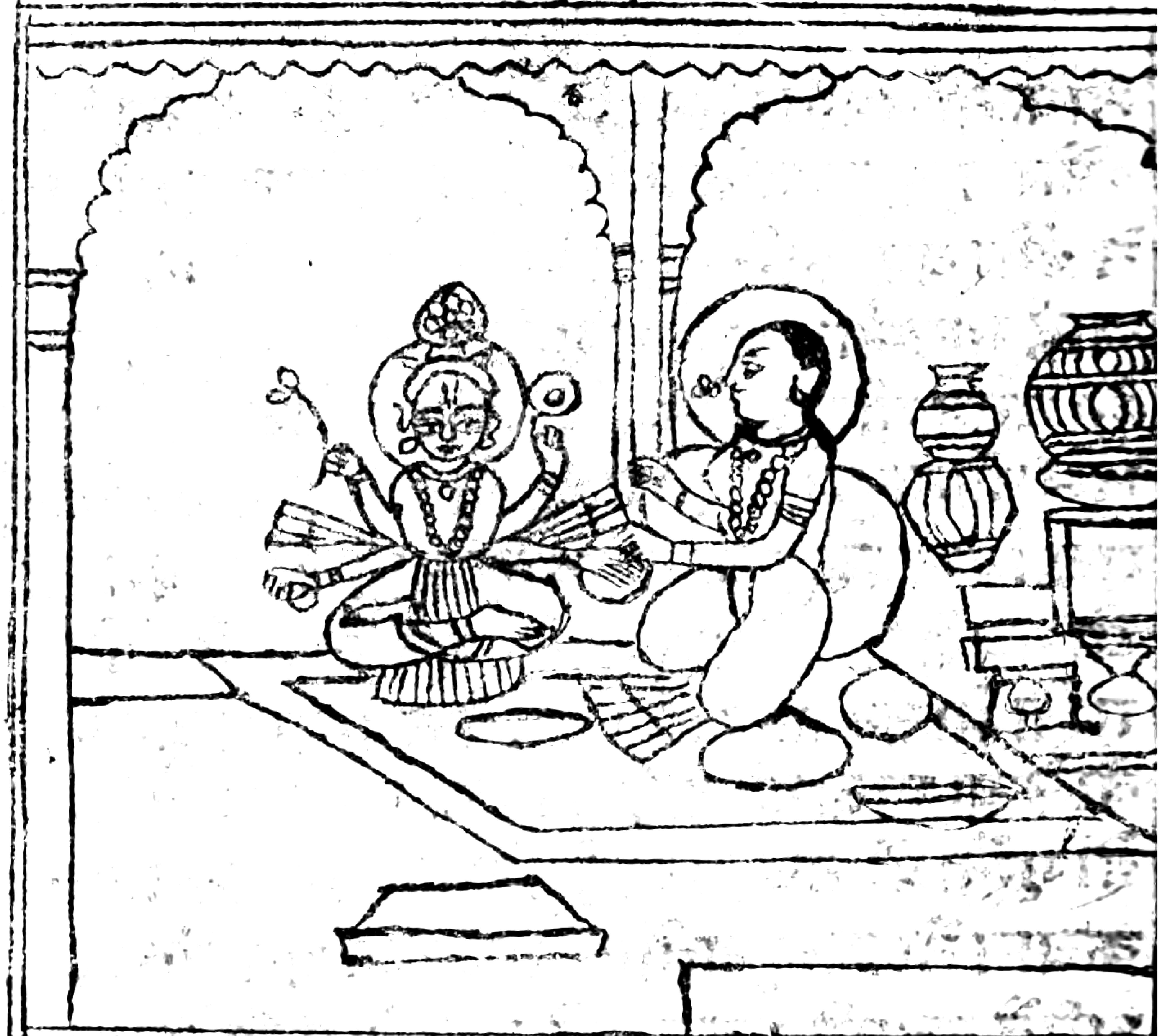

सो परि मोकों पकवान बीच रोटी की लूतरी अति अद्भुत स्वाद लगी तब वा सत्रांणी ने कह्यो जो महाराज में कहा करूं मेरें कोई कमावन हारो तो है नाहीं मैं तो अकेली हों मोते तो कबहू कछू होय आवत नाहीं तब श्री ठाकुरजी नें वा सत्रांणी सों कह्यो जो तू नित्य पकवान काहे कों करत है तू मोकों रोटी चुपरि कें धरि राख्यौ करि मोकों तो तेरी रोटी बहुत रुचित है ताते तू संकोच मति करै हमकों तो तेरी रोटी चुपरी बहुत स्वाद लागत है पाछें वह रोटी करि राखती सो श्री ठाकुर जी आरोगते वह सत्रांणी श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीयही

ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अव कहांताईं लिखिये ॥ ॐ

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६० ॥ ÷ ॥ ÷

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक दामोदरदास का यस्थ संरगढ के वासी तिनकी वार्ता है ॥

सो तिनकी सेव्य ठाकुर श्री कपूररायजी सो वहुत गैर स्वरूप हुते तिनके पास श्री नवनीतप्रियाजी बैठते सो एक समय दामोदरदास की स्त्री वीरवाई ताके गर्भ रह्यो पाछें प्रसूत भई सो पुत्र जन्म भयो सो घर की वहू वेटी सव प्रसूत के कामकाज करन लागी सो श्री ठाकुरजी की सेवा में विलम्व भयो वीरवाई प्रसूतक में ते वहुत कहे जो कोऊ सेवा में न्हाउ श्रीठाकुरजी की सेवा में अवेर होत है परि कोऊ नाहीं न्हाय तव श्रीठाकुरजीने वीरवाई सों कह्यो जो तू स्नान करि कें सेवा क्यों नाहीं करत है तव वीरवाई प्रसूतक में ते उठि कें श्रीठाकुरजी सों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह अवस्था है मोकों तो सेवा में आमनो नाहीं प्रसूतिका में हूं अपरस छूइ जाइगी तव श्री ठाकुरजी महाराजने वीरवाई सों कह्यो जो मोकों तो सेवा में विलम्व होय है मोको इतनी अवार भई है और कोऊ न्हात नाहीं ताते तू ही न्हाउ तव यह वीरवाई

श्री ठाकुरजी के आसन ते उठिके प्रसूत का में ते न्हायके काछ देकें श्री ठाकुर जी की सेवा करिकें पाछें भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय कें अनोसर करिकें आप भोजन करिकें खाट में सोय रही श्री ठाकुर जी की आज्ञा सों सेवा कीनी सो ऐसे चालीस दिन तांई नित्य करती तब श्री ठाकुरजी ने कह्यो जो तेने मेरी आज्ञाहू मानी और वेद मार्ग की रीति हू राखी ताते श्री ठाकुर जी बहुत प्रसन्न भए तब चालीस दिन बीते तब सुद्ध स्नान करकें सेवा करन लागी पहले पात्र वस्त्र सब अपरस दूर कीने और दूसरे सब नये मंगवाए पाछें भली भांति सों सेवा करन लागी ताते वह वीर बाई श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई लिखिये ॥ ❋

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६१ ॥ ❋
अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक स्त्री पुरुष दोउ
क्षत्री हते तिन की ॥
वार्ता लिख्यते

सो वे स्त्री पुरुष दोउ जने सीहनन्द में आय रहे सो वह घर निपट छोटो हुतो ताते श्री ठाकुरजी ता समय बैठिने सो आधी कोठरी में तो रसोई करते और आधी में रहते और सैया को ठौर न हुतो ताते एक बांस को मेंडा कर राख्यो हुतो ता के ऊपर श्री ठाकु

रजी पोढ़ते आप ···· स्त्री पुरुष दोउ जने रात्र कों आगन मे सोय रहते ऐसें करत तब चातुर्मास के दिन आये तब मेह वरसतो तोउ वे आगन में सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्रीठाकुर जी भीतर सों वोलते जो अरे अमुका अमुकी हो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोवत हो वाहिर काहे कों पोढ भीजत हो तातें तुम भीतर आवो और हम तो ऊंचे मेंडा पर हैं तुम नीचे क्यों नाहीं सोवत हो तब वा क्षत्राणी ने कही जो महाराज तुम तो ऊंचा मेंडा ऊपर पोढत हो और में नीचे कैसें सोऊं तब श्रीठाकुर जी प्रसन्न होय कें कहें जो कछु वाधक नाहीं तुम कछु संकोच मति करो हम तुमतें प्रसन्न होय कें कहत हैं तातें

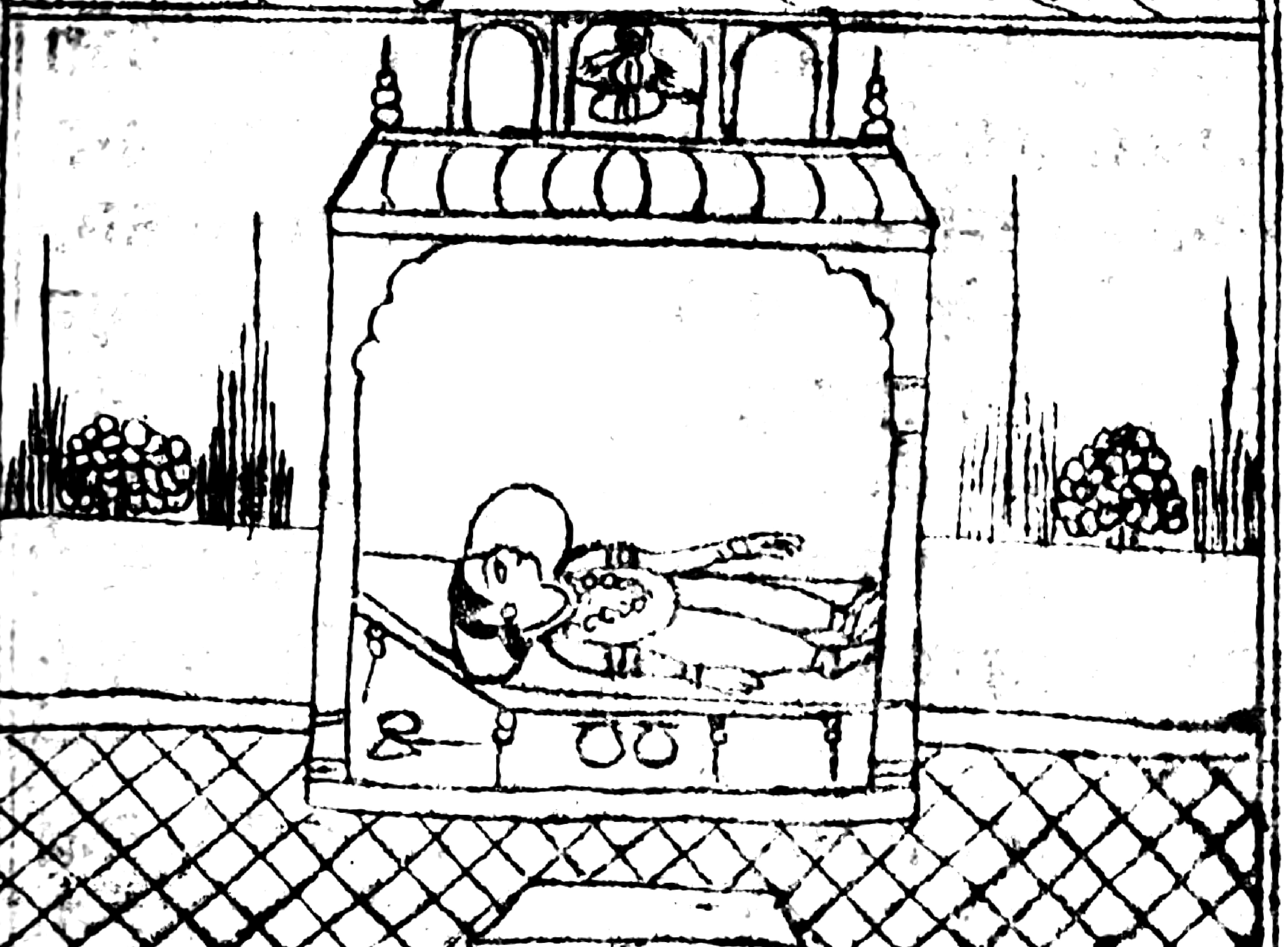

तुम भीतर खुसीसों सोय रहो पाछें तब वे दोउजने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोवते मति कहूं स्वास बाजे ऐसे सावधानी सों सोवते सो वे स्त्री पुर्ष श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्त्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्त्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सूतारि को गिर अडेल में रहते तिनकी वार्त्ता है ॥

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत कृपा करते वा सूतार के ऐसो नेम हुतो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन विना एक दिन न रहतो ताते वह सुतार सब घर को कामकाज छोडि कें नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य दुख बहुत पावते ताके लिये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप वा सूतार के घर पधारते वासों श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्त्ता करते और श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता इल्लमागारूजी सो श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता खीजती और कहैं जो तुम ऐसे अनुचित क्यों करत हो ऐसे उचित नांही ऐसें कहि कें इल्लमागारूजी बहुत रिस

करती परि श्री आचार्यजी महाप्रभू चौथे पांच
दिन तौ पधारते ऐसी कृपा श्री आचार्यजी महाप्र
भू वा सूतार के ऊपर करते सो वह सूतार श्री आ
चार्य जी महाप्रभून को ऐसौ कृपा पात्र भगव
य हो ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ६३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके सेवक एक क्षत्री हते
ताको अन्यमार्गीय
सों सनेह हतौ

सो वा क्षत्री सों अन्य मार्गीय कौ स्नेह हतो सो
एक दिन वह क्षत्री अन्यमार्गी के घर गयो तब व
क्षत्री सों कह्यौ जो तुम आज इहांई पाक करियें
तब वाके आग्रह ते वा क्षत्री वैस्नव ने पाक उहां
ई कीयो तब पाक करिकें वा अन्य मार्गीय ठाकु
र के आगें श्री नाथजी कौ नाम लेकें भोग सम
र्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय वाकौ प्रसाद
दीयो पाछें आपने लीयौ पाछें वहांई विश्राम
कीयौ सो निद्रा वस भए तब वा अन्य मार्गीय के
सेव्य स्वरूप ने स्वप्न में कह्यौ जो आज तौ हम भूखे
रहे तब वा अन्यमार्गीय ने कह्यौ जो तुम कों तो
वा वैस्नव ने पाक भोग समर्प्यौ हो और तुम भूखे
कैसें रहि गये तब उनके सेव्य श्रीठाकुरजी ने के
हौ जो वह तो श्रीनाथजी आप आरोगे हैं हम
कों तो श्रीनाथ जी ने अरोगने न दीयो .....

तब वह अन्य मार्गीय कौ मित्र सोयो हौ ताकौं जगायौ तब वह जाग्यौ तब सब समाचार कहे तब वा क्षत्री ने कह्यौ जो मैं तोसों केतीक बार कह्यौ जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ सेवक होय सो याही के लिये हमारे प्रभुजी श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते सेवक के हाथ कौ आरोगत हैं पाछें वह अन्य मार्गीय सब कुटुम्ब सहित श्री आचार्यजी महाप्रभून की सरण आये सब भाँत सेवक भयौ पाछें वाके स्वरूप कों श्री आचार्य जी महाप्रभूननें पंचाम्रत सों स्नान करवायौ पाछें पाट बैठारे ता पाछें भोग समर्प्यौ समयानुसार भोग सराय कें सब वैष्णवन कों बुलाय महाप्रसाद लिवायौ पाछें वह अन्य मार्गीय श्री ठाकुरजी की सेवा भली भांति सों करन लाग्यौ पाछें वह क्षत्री भलौ वैष्णव भगवदीय भयौ सो वा क्षत्री वैष्णव के संग ते भलौ भगवदीय भयौ ताते संग करनौं तो वैष्णव कौ करनौं भगवदीय कौ करनौं वह क्षत्री वैष्णव श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ ऐसौ कृपा पात्र भगवदीय हौ ता तें इनकी वार्ता कहा ताईं लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक लघु पुरुषोत्तम दास क्षत्री तिनकी वार्ता

सोवे लघु पुरुषोत्तम दास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों तथा श्री नाथजी कों एक सार जानते श्री आचार्य जी महाप्रभून को स्वरूप साक्षात् पुरुषोत्तम करि जानते लघुपुरुषोतमदास कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऊपर बड़ी आसक्ति हुती तातें श्री महाप्रभूजी लघुपुरुषोतमदास के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते लघु पुरुषोतम दास दूसरो स्वरूप जानते नाहीं श्रीठाकुरजी कों तथा श्री महाप्रभूजी कों एक जानते वे लघुपुरुषोतमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६५ ॥ +

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कविराज भाट तिनकी वार्ता है ॥ ०

सोवे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीन भाई हुते सो तीन्यो भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे उनकों नाम समर्पण करवायो पाछें श्री नाथजी के सन्निधान बहुत कवित पढ़े भये २ कवित्त करिकें श्रीनाथजी के सन्निधान कवित सुनावते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून के कवित्त बहुत कीये तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू कविराज भाट के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते सोवे कविराज भाट श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय

हे तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखियें ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६६ ॥ +

अब श्री आचार्य जी महाप्रभूनके सेवक गोपालदास ठौरा के वासी तिनकी वार्ता लिख्यते ॥

सो गोपालदास के कीये छन्द बहुत हैं सो गोपालदास को श्री आचार्यजी महाराज के ऊपर बहुत आसक्ति हुती सो एक समें गोपालदास अडेल आये सो दूसरे दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून को जन्मोत्सव हुतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू मार्कन्डेय पूजा कों बैठे हुते ता समय गोपालदास नें एक नयो छन्द करि कें गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

माधौ मास धरि बैसाख श्री वल्लभहरि जन्म लीये

॥ यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गोपालदास नें बहुत छन्द कीये सो वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ +

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जनार्दनदास चोपडा क्षत्री तिनकी वार्ता

एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू श्रीनाथ जी द्वार पधारे हुते पाछें श्री गोकुल आये तब जनार्दन दास ने श्री महाप्रभून कौ दर्शन कीयो तब कह्यौ जो ये साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हैं ईश्वर हैं तब जनार्दन दास नें बीनती कीनी जो महाराज मोकों शरण लीजिये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने जनार्दन दास कों आज्ञा दीनी जो स्नान करिकें आउ तब जनार्दन दास स्नान करिकें आयो और दंडवत कीनी और बीनती कीनी जो महाराज मोकों नाम समर्पण करवाइये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीनाथ जी के सन्निधान जनार्दन दास कों समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते जनार्दन दास भलो वैष्णव भयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू जनार्दन दास के ऊपर बहुत कृपा करते वे जनार्दन दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ +

+ ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

अब श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक गडु स्वा
मी मनोड़िया ब्राह्म
ण तिन कौ वा
र्ता है ॥

सो वे गडु स्वामी आप स्वामी कहावते सो एक स-

मय श्री आचार्यजी महाप्रभू वृन्दावन में पधारे हुते तव गडु स्वामी कों आज्ञा भई श्री ठाकुरजी ने कृपा करि कें रात्रि कों स्वप्न में जनायो जो सवारे श्री आचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगें सो तू इनकी सरण जैयो तू सेवक हूजियो तव श्री आचार्यजी महाप्रभू आप सवारे पधारे तव गडु स्वामी स्नान करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते तहां गये तव जाय के गडु स्वामी नें दंडोत कीनी और वीनती करिकें यह कह्यो जो महाराज मोकों सरण लीजिये तव श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिक्याय कें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो तुम कों सेवक कैसे करियें तव गडु स्वामी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज मोकों भगवद आज्ञा भई है जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभून की सरण जैयो ताते महाराज मोकों सरण लीजियें तव श्री आचार्यजी महाप्रभूनने गडु स्वामी कों नाम दीयो पाछें निवेदन करवायो ता पाछें जो गडु स्वामी ने जो सेवक कीये हुते तिन सवन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम दिवायो पाछें वे गडु स्वामी वडे भगवदीय भये श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गडु स्वामी के ऊपर वहुत प्रसन्न रहते सो वे गडु स्वामी ऐसे भगवदीय हैं ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ६८ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्र

भून के सेवक कन्हैया साल क्षत्री तिनकी वार्ता है ॥

सो उन कन्हैया साल क्षत्री के ऊपर श्री आचार्यजी महा प्रभू वहुत प्रसन्न रहते वड़ी कृपा करते श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आप कृपा करिकें अपने ग्रंथ कन्हैया साल कौं पढ़ाए सोई ग्रंथ कन्हैया साल के पास ते श्री गुसांई जी नें पढ़े सो श्री आचार्य जी महा प्रभून की कृपाते सब स्फुर्द रूप भये सो वे कन्हैया साल क्षत्री श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७० ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नरहर दास गोडिया तिन की वार्ता है

सो एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून नें नरहर दास के घर श्री मदन मोंहन जी पाट वैठारे हुते सो श्री मदन मोहन जी की सेवा नरहर दास नें नीकी भांति सों कीनी पाछें सरीर जब पस्यो तब सेवा न होय आई तब नरहर दास नें श्री ठाकुरजी श्री गुसांईजी के घर पधराये सो श्री गुसांईजी श्री रघुनाथ जी कें पधराये सो श्री गोकुल चन्द्रमाजी के पास हुते वैठत हे न्यारे सिंघासन ऊपर

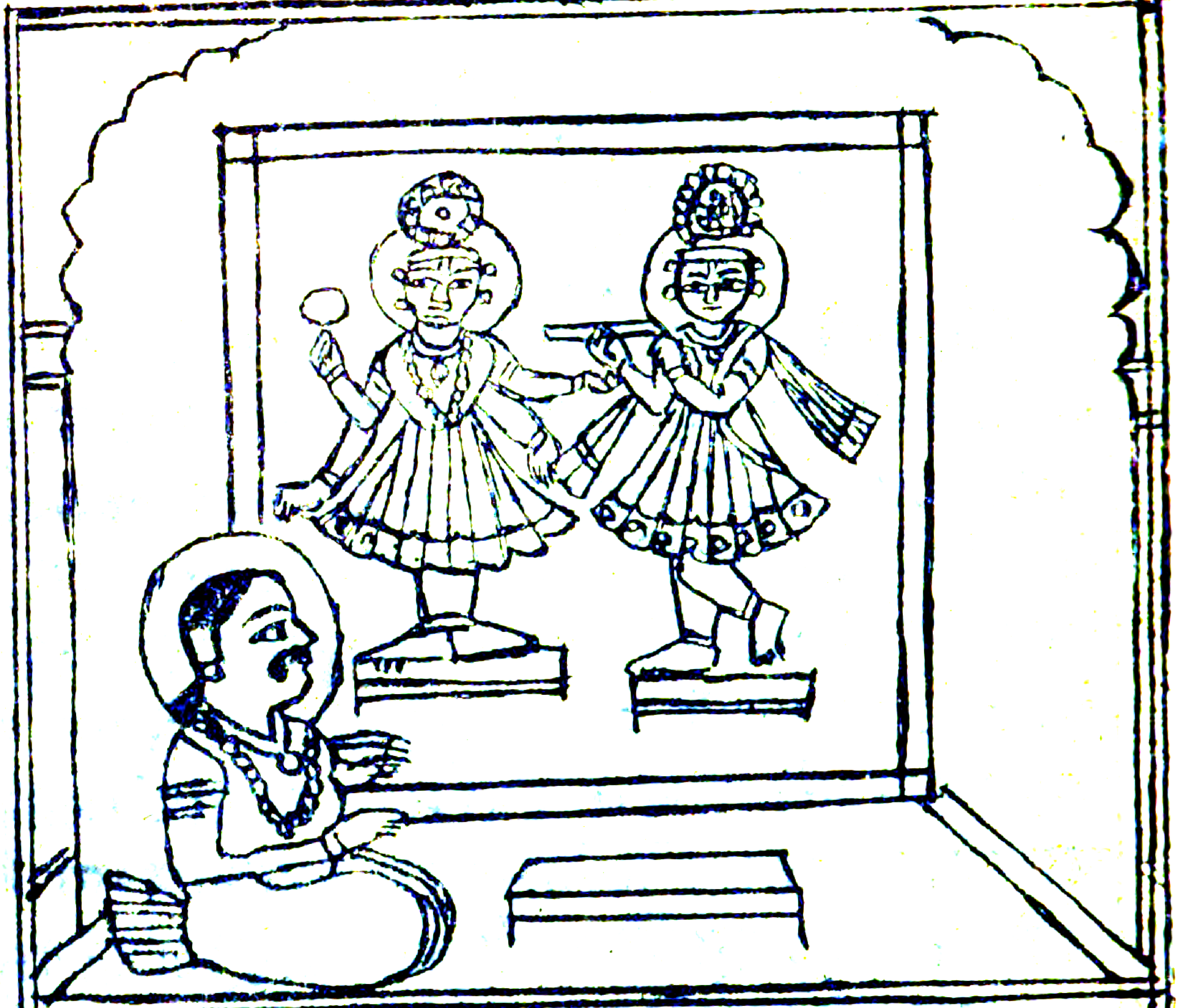

विराजते सो श्री गुसांईजी नरहरदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये थे ऐसे भगवदीय हे और नरहरदास नें अपने मन में विचारी जो श्री ठाकुर जी के यहूं न सुख पामेंगे श्री गुसांईजी के घर सुख पामेंगे सो वे नरहरदास श्री गुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये ॥+

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक बादरायणदास तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वादरायण दास और उनकी स्त्री मोरवी में रहते सो वादरायणदास को पहिलो नाम वादा हुतौ सो एक समय आछे भट्ट द्वारका श्रीरणछोड़ जी के दर्शन कौ जात हुते सो मोरवी में रात्रि कों वसे सो वादरायण दास नें उन कों राखे तब वादरायण दास ने उन पास नाम पायो पाछें आछे भट्ट के पास श्री भागवत श्रवण कीयो तब श्रीभागवत सम्पूरण करि कें वादरायण दास ते विदा होय कें आछे भट्ट द्वारिका श्री रणछोड़ जी के दर्शन कों गये तब कित्तेक दिन पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका श्री रणछोड़जी के दर्शन कों पधारे हुते तब मोरवी में उतरे सो वादरायण दास और उनकी स्त्री दोउ जनेननें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास फेरिकें नाम पायो पाछें समर्पण करवायौ पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू मौरवी में दिन द्वै रहे ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप श्री रणछोड़जी के दर्शन कों पधारे तब वादरायणदास और उनकी स्त्री श्री आचार्यजी महाप्रभून के संग गये तब दोउ स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवा में रहे सो उन दोउन नें ऐसी सेवा कीनी जो श्री आचार्यजी महाप्रभू उनके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब याकौ[1] नाम वादरायणदास धर्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका सों चले तब ये दोनों जने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों

---

[1] पहले वादा हुतो सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें याको नाम

साथ गये सो मोरवी लों साथ आए पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून ते आज्ञा मांगि के मोरवी में रहे पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू आप श्री गोकुल पधारे वे बादरायण दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी वार्ता कहोनांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ॥ ७२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक सद्दू पांडे मानिक चंद पांडे इनकी स्त्रीः तथा नरो बेटी आन्योर में रहते हुते

सो जब श्री आचार्यजी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे तब श्री नाथजी ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम मेरी सेवा को चलावो व्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन दमन हैं देवदमन, नागदमन, इन्द्रदमन तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो देवदमन मेरो नाम हैं सद्दू पांडे को बडो भाई मानकचन्द पांडे हैं तहां हम प्रगट भये हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू परिक्रमा झारखंड में राखि के व्रज को पाउं धारे सो सेवक हू पांच सात साथ है दामोदरदास हरसानी कृष्णदास मेघन रामदासजी माधोदास प्रभृत इत्यादिक श्री आचार्यजी महाप्रभून

कै सेवक सब आन्योर में आए सो सन्ध्यासमय श्री आचार्य जी महाप्रभू आप सद्दू पांडे के घर पांव धारे सो एक वड़ो चोंतरा सद्दू पांडे के घर के द्वारे हुतो ताके ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे तव सद्दू पांडे ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यौ जो स्वामी कछु खाउगे तव श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो हम तौ कछू न खांयगे तव कृष्णदास मेघन नें कह्यौ जो ये तो अपने सेवक के हाथ को लेत हैं विना सेवक तो ये काहू के हाथ को लेत नाहीं इतने में श्री गोवर्द्धन पर्वत ते श्री नाथ जी पुकारे जो नरो मेरो दूध लाउ तव नरो ने कह्यो जो महाराज आज तो हमारे पाउने आये हैं ताते दूध नाहीं तव श्री नाथ जी ने कह्यौ जो

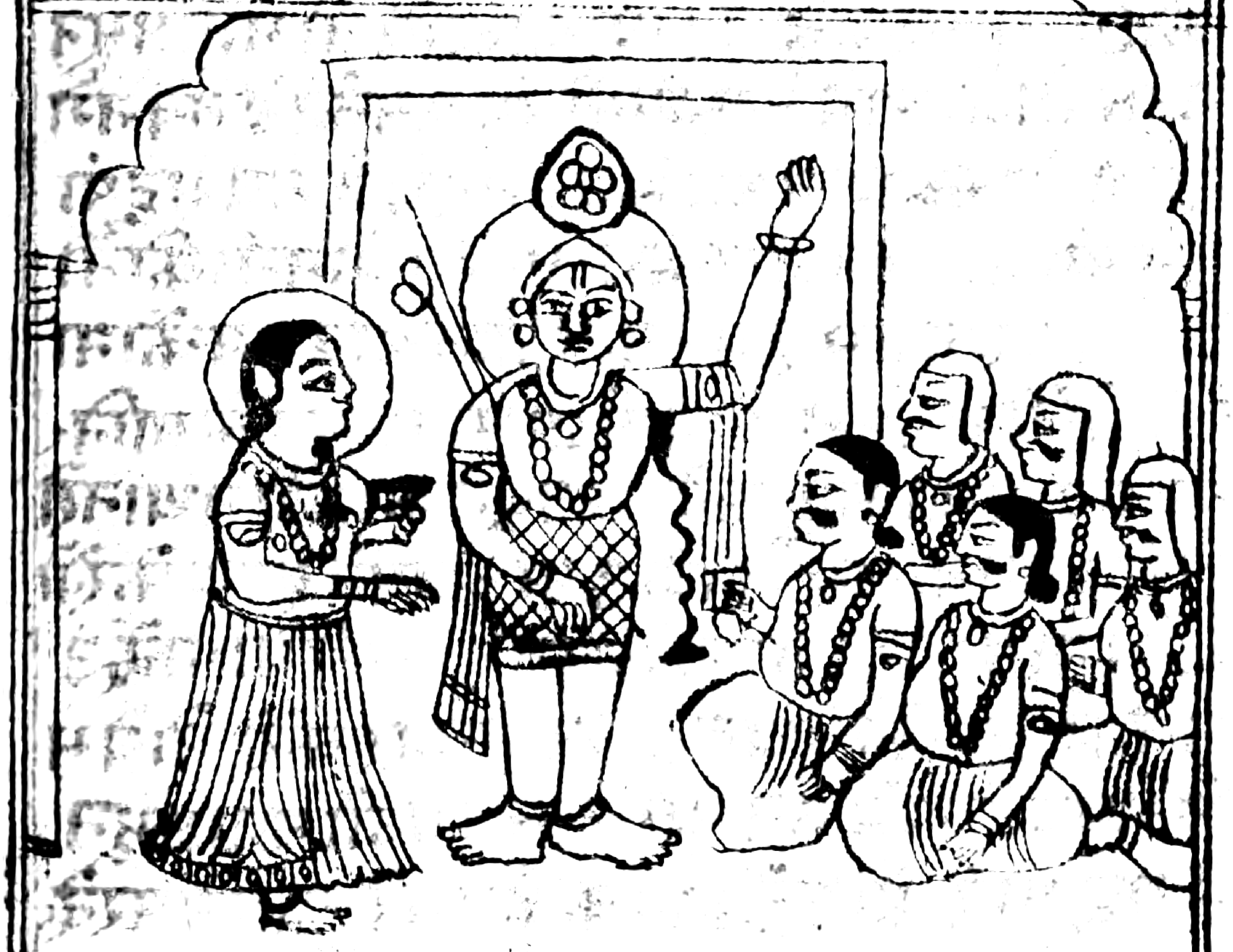

तेरे पाउंने आए हैं सो तो भली भई हम कहा करें परि मेरो दूध तो लाउ तब नरो बोली जो बारी लाल लाई तब नरो कटोरा भरिकें लेगई श्रीनाथजी कों प्यायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें दामोदरदास सों पूछो जो दमला ते कछु सुन्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों दामोदरदास नें कह्यो जो महाराज यह शब्द और झारखंड को शब्द एक मिलत है सो ऐसो जान्यो परत है जो इहांई प्रगटे हैं सवारें चलेंगे तब इतने में नरो दूध प्याय कें आई तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने नरो सों पूछो जो तू कहां गई हुती और कहा लेगयी हुती तब नरो बोली जो राज देवदमन कों दूध प्याय आयी हों तब नरो पे मांग्यो जो यामें दूध है तब नरो नें कह्यो जो रंचक है तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो यामें ते बच्यो है सो हमकों दे तब नरो बोली जो महाराज घर में बहुत दूध है तब सद्दू पांडे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज हम हारे आप जीते अब हम कों नाम दीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के मानिकचन्द तथा सद्दू पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपने हाथ फेरो और नाम दीयो ता पाछें वह दूध लीयो पाछें उनके हू घर को दूध दही अंगीकार करो सो ये भले भगवदीय हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सद्दू पांडे सों पूछो जो कहो पांडे यहां ऊपर दे

व दमन प्रघट भए हैं सो कौन भांति सों प्रघट भये हैं तिनकौ प्रागट्य तुम हमसों कहौ सो श्री आचार्यजी तो साक्षात ईश्वर हैं आपही करत हैं और आपही पूछत हैं सो काहे ते जो आप जीव के ऊपर कृपा करिवे के लीये तब सद्दू पांडे ने श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज एक हमारे गांव कौ ग्वाल हतो सो सब गांव की गायन कों चरावतौ सो सब प्रकार सद्दू पांडे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें कह्यो सो सब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें सुन्यो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू तौ आप पूरणपुरुषोत्तम हैं आपही करत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिकचन्द पांडे और सब श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं जिनके पास ते श्री आचार्यजी महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहिये सो मांगि लेते और आप जिन के घर पधारते ॥ ❋

वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक दिन श्री नाथजी इन के घर दूध पीवे कों सोने कौ कटोरा ले आए तब श्री नाथजी ने नरो सों कह्यो जो दूध लाउ तब नरो तौ वा कटोरा में दूध डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जाय सो दूध पीकें श्री नाथजी आप तो पधारे और कटोरा वहांई भूलि आए तब सवारे भए पाछें मंगला आरती के समय भीतरियानें देखे तो मन्दिर में कटोरा नाहीं तब इतने में नरो

टेरा लै आई और कह्यो जो यह कटोरा तेरे रात्रि कों लरिका भूलि आयो है तब सबजने बहुत प्रसन्न भए वह तेरो ऐसो भगवदीय हो ॥ +

वार्ता प्रसंग २

और एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभून सों श्री नाथजी नें कह्यो जो मोकों गाय मगाय देउ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास हरसानी सों कह्यो जो श्री नाथ जी नें गायन के लीये आज्ञा ... दीनी है सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने हस्त को छल्ला सुवर्ण को दीनो और दामोदरदास हरसानी सों कह्यो याके दामन की गाय लै आवो तब दामोदर दास नें वह छल्ला सदू पांडे कों दीनों और कह्यो जो याकों बेचि के याके दामन की गाय लै देउ श्री आचार्य जी महाप्रभून नें गाय मगाई है तब सदू पांडे ने कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप गायन को कहा करेंगे तब दामोदरदास नें कह्यो जो श्री नाथजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों गाय मंगाई है ताके लिये उननें कही है तब सदू पांडे नें कही जो मेरे यहां गाय हैं सो कौन की हैं वह तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की हैं जो चहियें सो लीजिये तब दामोदर दास नें कही जो श्री आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी ही आज्ञा है ताते याकों बेचि के गाय लै देउ तब सदू पांडे नें वह छल्ला बेचि कें ताकी गाय दो लै दीनी सो दोऊ गाय श्री आचार्यजी म

हाप्रभून नें श्री नाथजी कौं समर्पी पाछें दस गाय मद्दू पाडे नें श्री नाथजी कों भेंट कीनी पाछें सब वैष्णवन कौं खबर भई जो श्री नाथ जी नें गायन के लिये श्री आचार्य जी महाप्रभून सों आज्ञा करी है सो वैष्णवन नें गाय पठाई काहू नें दोय काहू नें चारि काहू नें दश पठाई ऐसें करत दोय सै के आसरे गाय भेली भई सो श्री नाथ जी कों गाय बहुत प्रिय हैं तब तें श्री नाथजी को नाम गोपाल श्री आचार्य जी महाप्रभून ने धर्यो है तब श्री गुसांई जी ने गोपाल नाम तें गोपालपुर गांव बसायौ ताही तें सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के प्रगट गोपाल नाम कीये हैं प्रथम

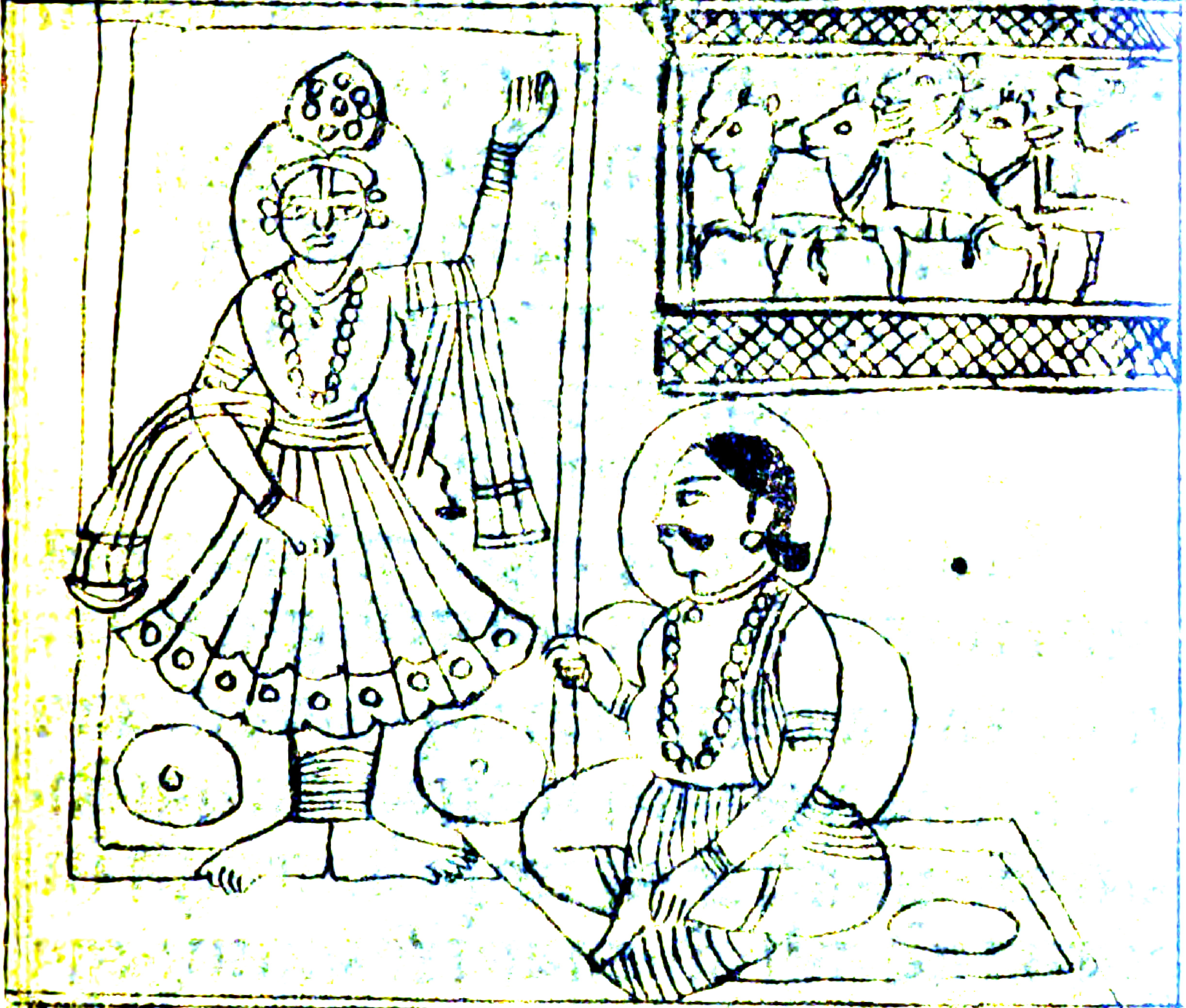

गाय सुर गायो सो वे सहू पंडि तथा नरोस्व कोउ श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ ३॥ वार्ता प्रसंग ॥ वैस्नव ॥ ७३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक नरहरदास सन्यासी तिनकी वार्ता लिख्यते है

सो एक वेना कोठारी हुतो ताने प्रथम नरहरदास सन्यासी के पास नाम पायो हुतो सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे हुते तव नरहरदास सन्यासी और वेना कोठारी श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ हुते सो द्वारिका गये तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आप नरहरदास सन्यासी के ऊपर वहुत प्रसन्न भये तव नरहरदास सन्यासी नें वीनती कीनी जो महाराज मेरे ऊपर कृपा करिये तो मैं प्रार्थना करत हों तव श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकाय कें चुप कर रहे पाछें कहें जो कहा प्रार्थना करत है सव नरहरदास सन्यासी नें कह्यो जो महाराज वेना कोठारी कों सरण लीजिये तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कृपा करिकें नाम दीयो समर्पण करवायो पाछें वे नरहरदास सन्यासी के ऊपर प्रसन्न वहुत भये सो वे नरहरदास सन्यासी श्री

आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखियै ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ७४ ॥ सं· १५७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गोपालदास जटाधारी श्रीनाथजी की खवासी करत॰ हुते

सो श्रीनाथजी उनसों सानुभाव हते और गरमी के दिन में श्रीनाथजी कों भोग आवते तब गोपालदास आप नेत्र मूंदि के पंखा करते तब रात्रि कों श्रीनाथजी जगमोहन में पोढ़ते तहां गोपालदास ठाड़े होय कें आंख मूंदि कें पंखा करते चार पहर ठाड़े रहते परि देहसों लस कछू बाधा न करती रात्रि के विषे श्रीठाकुरजी के श्रीस्वामीजी के वचन सुनतो तब आप कहते···· जो गोपालदास आंख खोल देउ तेरो परदा कैसो तब गोपालदास कहते जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून की आज्ञा नाहीं ताते में क्यों करि खोलों तब कबहू श्रीनाथजी अपने श्रीहस्त सों गोपालदास के मुख में मेलते ऐसी कृपा करते तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदास नें बीनती करिकें कही जो

महाराज मोकों पृथ्वी परिक्रमा करिवे की आज्ञा दीजिये मेरो मनोरथ पृथ्वी परिक्रमा करिवे को है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो अवश्य करिये पाछें गोपालदास आज्ञा मांगि कें पृथ्वी परिक्रमा कों गये तव और वैष्णवननें कह्यो जो महाराज ऐसे कृपापात्र कों ऐसो मन कों कर होय तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो यह गयो तो है परि जाय सकेगो नांही मजल दोयचारि जायगो तव याकों विरह होयगो ता विरह करिकें याकी देह छूटैगी तव सव वैष्णवननें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज इन की देह या भांति क्यों पड़े तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो महद अपराध इन श्री ठाकुर जी सों विगाड्यो ताको नाम महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपराध पड्यो है तासों इनकी यह गति भई तव सव वैष्णवन नें पूछ्यो जो महाराज इनकी देह या भांति सों पड़ै तो सही परि महद अपराध काहे सों कहियतु है तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही जो यह गोपालदास पहिलें श्री नाथजी के वाग की रखवारी करतो सो एक श्री ठाकुर जी को सेवक ब्राह्मण को लरिका हुतो सो रात्रि कों वा वाग में ते फूल चुराय कें लै जातो सो एक दिन गोपालदास ने वाकों पकर्यो सो वह भाज्यो सो वह अपने मन्दिर में दुवक्यो सो गो

पालदास नें जाय कें वाकें मुक्की की मारी सो वात अव श्री ठाकुर जी कों वह वात सुधि जो याकों महद अपराध पर्यो है तातें पृथ्वी परिक्रमा की इच्छा भई है सो गोपाल दास पांचचारि मजल गयो पाछें विरह भयो सो विरह करिकें गोपाल दास ने देह छोडी तव यह वात श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सुनी तव आपने श्री मुख ते कहें जो गोपाल दास के परलोक में तौ हानि नाहीं जो यह श्री नाथ जी के चरणान पास पहुंचो तातें भगवदीय कों सर्वथा विगाड़ न करनों भगवदीय कौ विगाड़ करै तौ या भांति सों होय भगवदीय के विगाडे तें गोपाल दास की यह गति भई ये गोपाल दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता अव कहां तांई लिखिये ॥ +

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ७५ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कृष्णदास ब्राह्मण तिनकी वार्ता है

सो वे कृष्ण दास वा गांम में रहते परि अकिंचन रहते सो एक समय वैष्णव दस पन्द्रह मिलिकें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल कों आत हुते सो जा गांव में कृष्ण दास रहते ता गांम में आए सो कृष्णदास के घर आए तव कृष्णदास तौ घर हुते नाहीं कछू कायार्थ के लिये कोसती

न ऊपर गये हुते और कृस्नदास की स्त्री घर हुती तब वा स्त्री नें उन वैस्नवन कों साष्टांग दंडवत कीनी श्री कृस्न स्मरण कहि बहुत आदर सनमान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में बिचारे जो अब कहा करिये तब सुधि आई जो वह बनियां नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि तू मांगेगी सो देउंगो सो आज वासों सीधो सामग्री लाउं ऐसें बिचार के स्त्री चली सो वा बनियां की हाट पै गई तब वा बनियां नें टोकी तब वा बनियां सों स्त्री नें कही जो मैं तोसों कालि मिलेंगी तू मोकों आज सौदा चहियत है सो दै तब वा बनियां नें कह्यौ जो तू मोसों कौल करै तो मैं मानूं तब वा स्त्री नें वासों कौल करि दीनों तब वा स्त्री कों सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों सब लैकें घर आई तब घर आय के रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय अनोसरि करि के पाछें वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवायो तब वैस्नवन नें महाप्रसाद भली भांति सों लीनों पाछें कृस्नदास घर आए सब वैस्नवन सों मिले दंडौत करिकें भीतर गये तब स्त्री सों कह्यौ जो कहा खबरि है वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवाइये तब स्त्री नें कह्यौ जो प्रसाद तो लिवायो है तब कृस्नदास नें कह्यौ जो सीधो सामग्री कहां ते लाई कहा प्रकार कीयो तब जो प्रकार कीयो हुतो सो सब कह्यौ और कहे

जो यह बनियां मोसों नित्य टोंका करतो जो तू मोसों एक दिन मिलि तू कहैगी सो देउंगो तब आज मैं वासों कौल करार करिकें सीधो सामग्री लाई हों तब कृस्नदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न भए पाछें स्त्री पुरुष दोउ जनेन ने सीरो महाप्रसाद लीयो पाछें कृस्नदास वैस्नवन के पास आय बैठे सवरी रात्रि भगवद वार्ता करत बीती जब सवारो भयो तब सब वैस्नव बिदा होय कें चलें तब कृस्नदास थोरी सी दूर पहुंचावन गयो पाछें आप घर आय स्नान करि श्री ठाकुर जी की सेवा करि कें याचृत कों गये पाछें वा स्त्री नें रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोसरि करि महाप्रसाद ढांकि धर्यो तब कृस्नदास घर सांझ कों आए तब वही सीरो महाप्रसाद दोउ जनेन नें लीयो तब कृस्नदास ने अपनी स्त्री सों कही जो तुमनें कालि वा बनियां सों कौल कीयो हुतो सो वह बनियां पैंडो देखत होयगो तातें वाको कौल पूरौ करिये तो भलो है तब वह स्त्री उबटनों करि न्हाय कें स्त्री जन के शृंगार होत हैं सो सब करि कें वह स्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते सो मेह बरस गयो हुतो सो मार्ग में कीच भई हुती ताके लिये कृस्नदास नें अपनी स्त्री सों कही जो तू मेरे कांधे पै बैठि ले मैं पहुंचाय आऊं मार्ग में कीच बहुत भई है तेरे पांय कीच में भरि जायंगे सो वह बनियां देखि कें तेरो अनादर करैगो तब वा स्त्री

कों अपने कांधे ऊपर चढ़ाय कें लै चले सो वा वनियें की हाट के आगे उतार दीनी तव वा स्त्री नें वा वनियां कों हेला पार कें कह्यौ जो किवाड़ खोलि तव वा वनियां नें किवाड़ खोलि दीनें और वा स्त्री कों भीतर लीनी तव वह वनियां पांय धोयवे कों पानी लै आयौ और कह्यौ जो पांय धोय तव वा स्त्री नें कह्यौ जो मेरे पांय कीच सों भरे नाहीं तव वा वनियां ने कह्यौ जो मार्ग में तो कीच वहुत भई है और तेरे पांय कोरे केसें रहे तव वा स्त्री नें कह्यौ जो तू पूछि कें कहा करेगो तू तेरो काम करि तव वा वनिया नें कह्यौ जो यह तो वात कही चाहिये। तव वा स्त्री नें कह्यौ जो मेरो भरतार मोकों कांधे ऊपर .... चढ़ाय कें लायो है तव यह वात सुनि कें वा वनियां कों वड़ो आश्चर्य भयो और सव वृतांत हो सो पूछ्यौ जो यह कहा कारन है सो सव मेरे आगें कहि तव वा स्त्री ने जो प्रकार भयो हो सो सव कह्यौ सो सुनि कें वह वनियां अपने मन में धृकार करन लाग्यो और कह्यौ जो धन्य जन्म तुमारो जो जिनकों ऐसो मन सांच्यो है और धृकार जन्म मेरो है तव दोउ हाथ जोरि कें दंडोत कीनी और कह्यौ जो मेरो अपराध क्षमा करिये और मेरे ऊपर कृपा राखिये मेरी तुम वहन हो ऐसे कहि वा वनियां ने वहुत दुख मान्यो पाछें वा वनिया ने स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दीनी और कृष्णदास सों वा वनियां नें वहुत वीनती

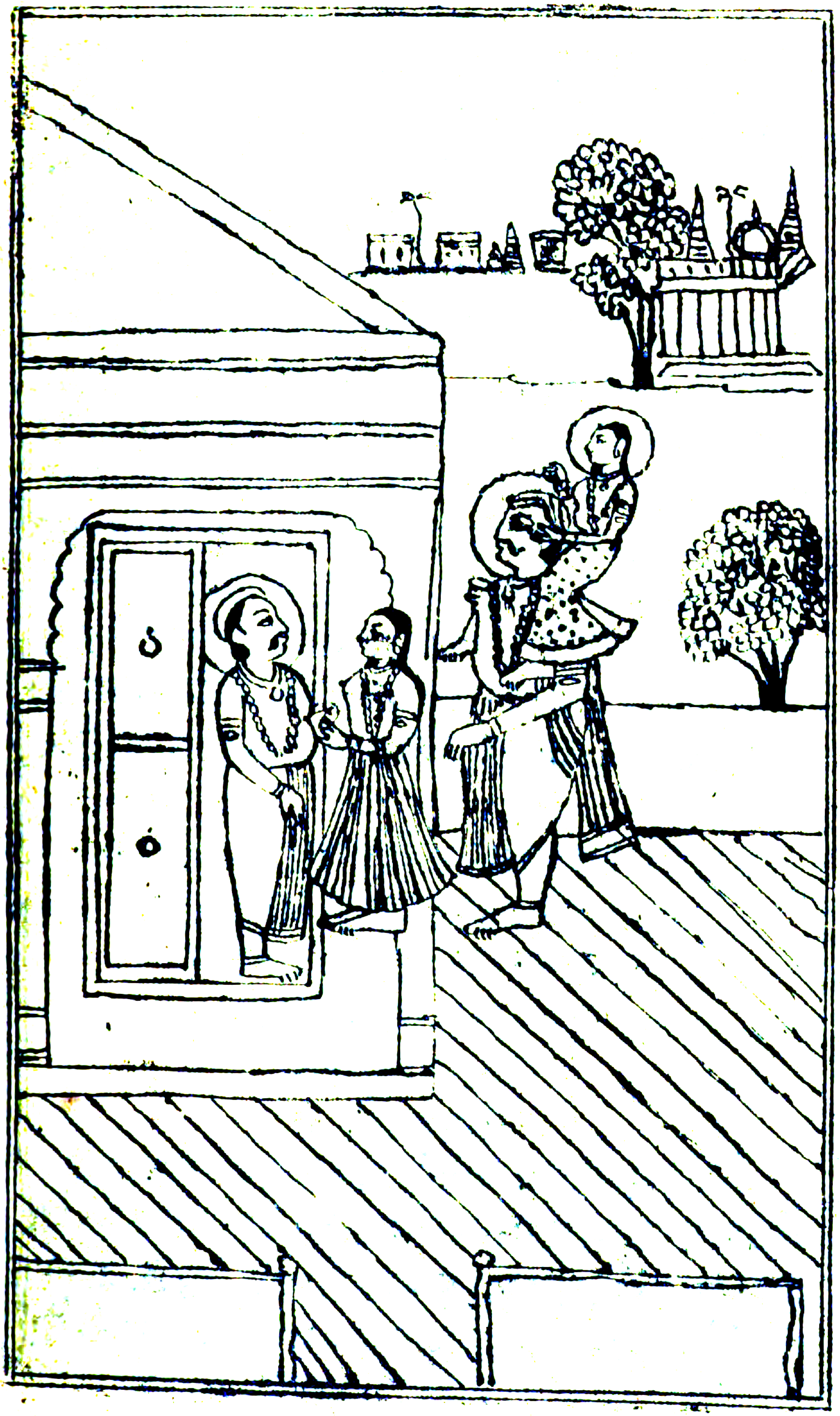

कीनी जो तुम मेरौ अपराध छमा करौ यह मेरी वहन है और तुम मेरे पूज्य हौ तब कृस्नदास ने कही जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच मति करै फेरि वह वनियां कितनेक दिन पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पण कीयो तब वा वनियां को नाम श्री आचार्यजी महाप्रभून नें ग्यानचंद धरयो पाछें वह वनियां वडो भगवदीय भयो सो कृस्नदास के संग ते भयो ताते संग करनो तो भगवदीय को करनो जासों भगवद भक्ति उतपन्न होय पाछें वह वनियां सदा कृस्नदास सों ममत रहतो उनकी स्त्री सों वहन कहतो सो ऐसो सम्बंध राखतो सो वे कृस्नदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्त्ता कहां ताई लिखिये ॥

॥ वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥ ७६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के सेवक संत दास चोप
ड़ा छत्री आगरे के
तिनकी वार्त्ता
लिख्यते

सो वे संतदास पहिलें वहुत संपतवान हुते व्योपार वहुत हुतो लाखन को व्योपार करते सो द्रव्य सब व्योपार ही में खोयो पाछें सेउ के वजार में कोडी केव न लागे टका २४ की पूंजी हुती सो

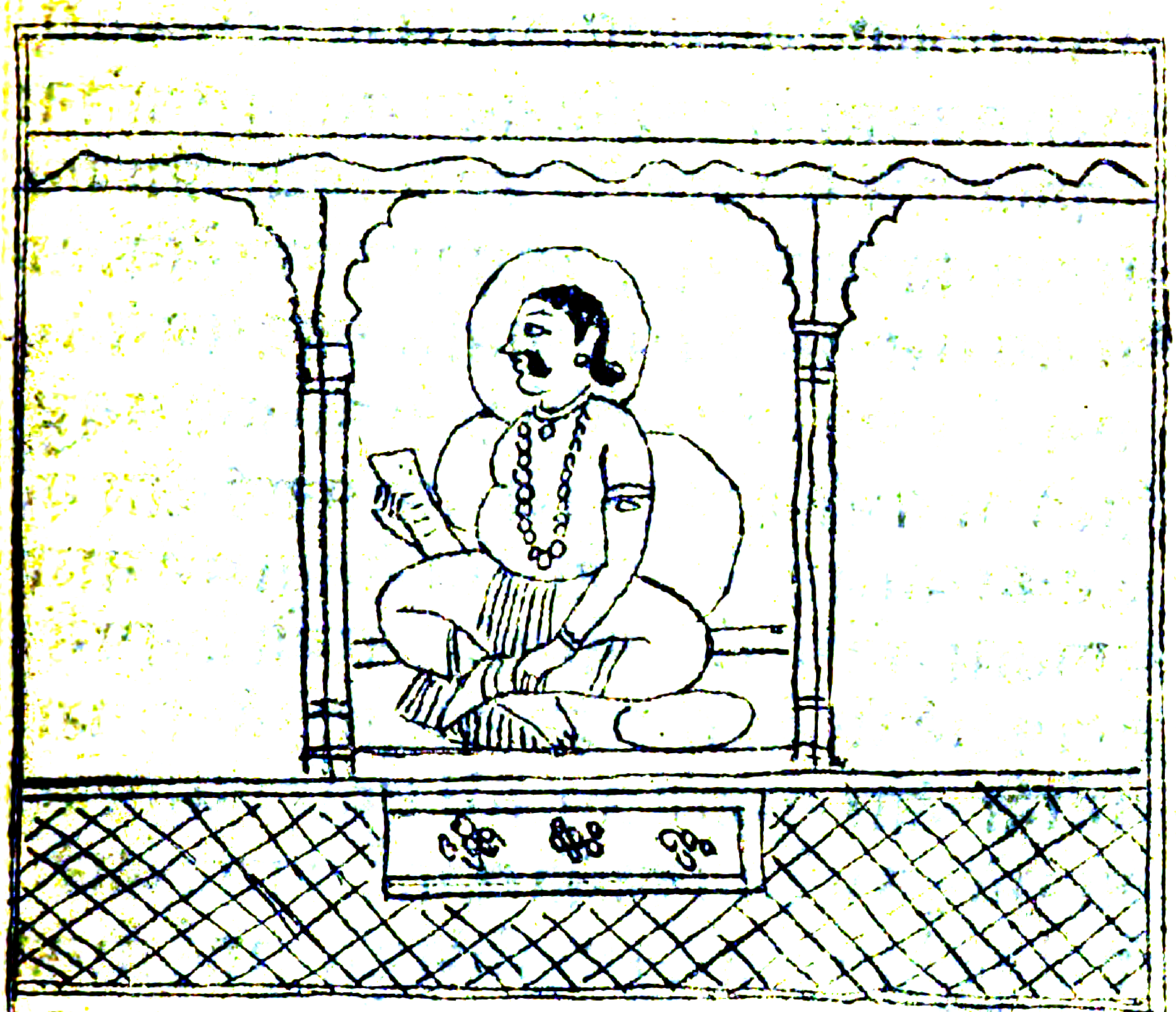

जवतांई पैसा ढाई कमावते तव तांई उहां बैठ रहते कौड़ीन की ढेरी पैसा की करि राखते सो गाहक पैसा धरिकें कौड़ीन की ढेरी ले जाते और संतदास आप पोथी वांचते मार्ग में काहू सों बोलते नाहीं भगवद रस में छिके रहते और जो कोउ भगवद भक्ति आवतो तासों वड़े भगवद वार्ता करिकें और सों संभाषण न करते रसोई कों टका एक लगावते और धेला की चवेंनी आनि राखते सो रात्रि कों वैष्णव आय कें बैठते भगवद वार्ता कीर्तन करते सो सब चवेंनी महाप्रसाद बांटि देते सो वैष्णव लेकें उठते ऐसै ढाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कि-

तनेक दिन वीते तव नारायणदास गौड़ देस के तें सुनी जो संत दास कें द्रव्य को वहुत संकोच है ताते नारायणदास नें संत दास को पत्र लिख्यो और एक मोहरन की थैली पठाइ सो हुंडी कासद लैकें आयो तव संतदास कों पत्र दीनों तव वह पत्र संतदास नें वाच्यो और तामें हुंडी ही सो वांची तव हुंडी ही सो तो श्री गुसांई जी के पास पठाई और एक टका कासद कौं दीनो और संतदास नें नारायणदास कौं पत्र लिखो तामें लिख्यो जो तुमनें हुंडी पठाई ही सो तो अडेल श्री गुसांईजी को पठाय दीनी और तुम्हारी प्रभूता में हमारे एक दिन की रसोई न भई ता दिन की कमाई कासद कों दीनी जव हुंडी पहुंची तव भंडारी नें श्री गुसांई जी कों वचाई सो एक सौ मोहरन की है सो नारायणदास नें गौड़देस ते संतदास को पठाई सो संतदास नें इहां पठाई है तव श्री गुसांई जी नें कह्यो जो संतदास तो श्री आचार्य जी महाप्रभून के वड़े ही कृपापात्र भगवदीय है ताते वैस्नव को द्रव्य काहे कौं राखेंगे ॥+

वार्ता प्रसंग ॥१॥

वहुरि कितनेक दिन पाछें श्री गुसांई जी नें श्रीगोकुल वास कीयो तव संतदास उत्सव के दिन आगरे ते दर्शन कों आवते और श्री गुसांई जी आप आगरे पधारते तव संतदास के घर विना वुलाए पधारते आप श्री गुसांई जी श्री आचा

वैं जी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते तव कितनेक दिन पाछें संतदास की देह यकी तव श्री गोकुल तें चापा भाई कों बुलायौ सो चापा भाई श्री गुसांई जी की आज्ञा मानि कें आगरे आए तव संतदास ने चापाभाई सों कह्यौ जो यह घर तुम्हारौ है जानौ तौ कोई एक दिन स्त्री कों रहन दीजियौ और जानों तौ गहने धर दीजियौ अथवा वेचि कें दाम लै जाउ ऐसें कहि के घर के पत्र खत चापा भाई कों सोंप दीनों तव चापाभाई खतपत्र लैकें श्री गोकुल आए तव श्री गुसांई जी सों सव समाचार कहे पाछें संतदास वहुत आसक्ति भए तव वैस्नव सव आय जुरे तव संतदास सों कह्यौ जो तुम कहौ तौ रेणुका स्थल अथवा मथुरा जहां कहौ तहां लै चलैं तव संतदास नें कह्यौ जो मोकों कहा रेणु का स्थल कृतार्थ करैगो तव वैस्नवन ने कह्यौ जो श्री गोकुल लै जांय तव संतदास नें कह्यौ जो श्री गोकुल जांय कें कहा गाव भड़ाऊंगो ऐसें कहि कें आगरे ही में देह छोड़ी पाछें वैस्नवनों कृत्य उहांई कीयौ पाछें यह वात वैस्नवन ने श्री गुसांई जी के आगें कही तव श्री गुसांई जी आपने श्री मुख तें कहे जो वे संतदास ऐसे भगवदीय है तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ ७७ ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभू

न के सेवक सुन्दरदास श्रीजगन्नाथरायजी के दस कोस परे एक गांव में रहते तिनकी वार्ता

सो सुन्दरदास उहां रहते तहां कृस्नचैतन्य को सेवक माधोदास सो उहां रहतो सो सुन्दरदास कें और माधोदास कें परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुन्दरदास जब श्री आचार्यजी महाप्रभून की सराहना करतो तब माधोदास कहतो जो मेरे जो कछू है सो सब कृस्नचैतन्य कों है सो जहां एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू पाउ धारे हुते तब सुन्दरदास नें अपने घर पधराये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें उहां रसोई करिकें श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधोदास नें थार आवत देख्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भोजन करि कें पोढे तब माधोदास ने सुन्दरदास ते कही जो तेरे गुरु के हाथ ते श्री ठाकुरजी आरोगे नाहीं और में श्री ठाकुरजी कों आरोगावत हौं सो तो एक हू ग्रास रहत नाहीं तब सुंदरदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने माधोदास कों बुलाय कें पूछी तब माधोदास ने जो वृतान्त हुतो सो सब कह्यो जो कालि हम तेरे घर आमेंगे सो देखेंगो मेरे आगें श्री ठाकुरजी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ

चार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर पधारे और कह्यो जो अब थार श्री ठाकुर जी के आगें आन राखि तब माधौदास थार लेगयो श्री ठाकुर जी के आगें भोग धर्यो फिर बाहिर आयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मन्दिर के द्वार ऊपर बैठे रहे सो उहां एक प्रेत नित्य आय के श्री

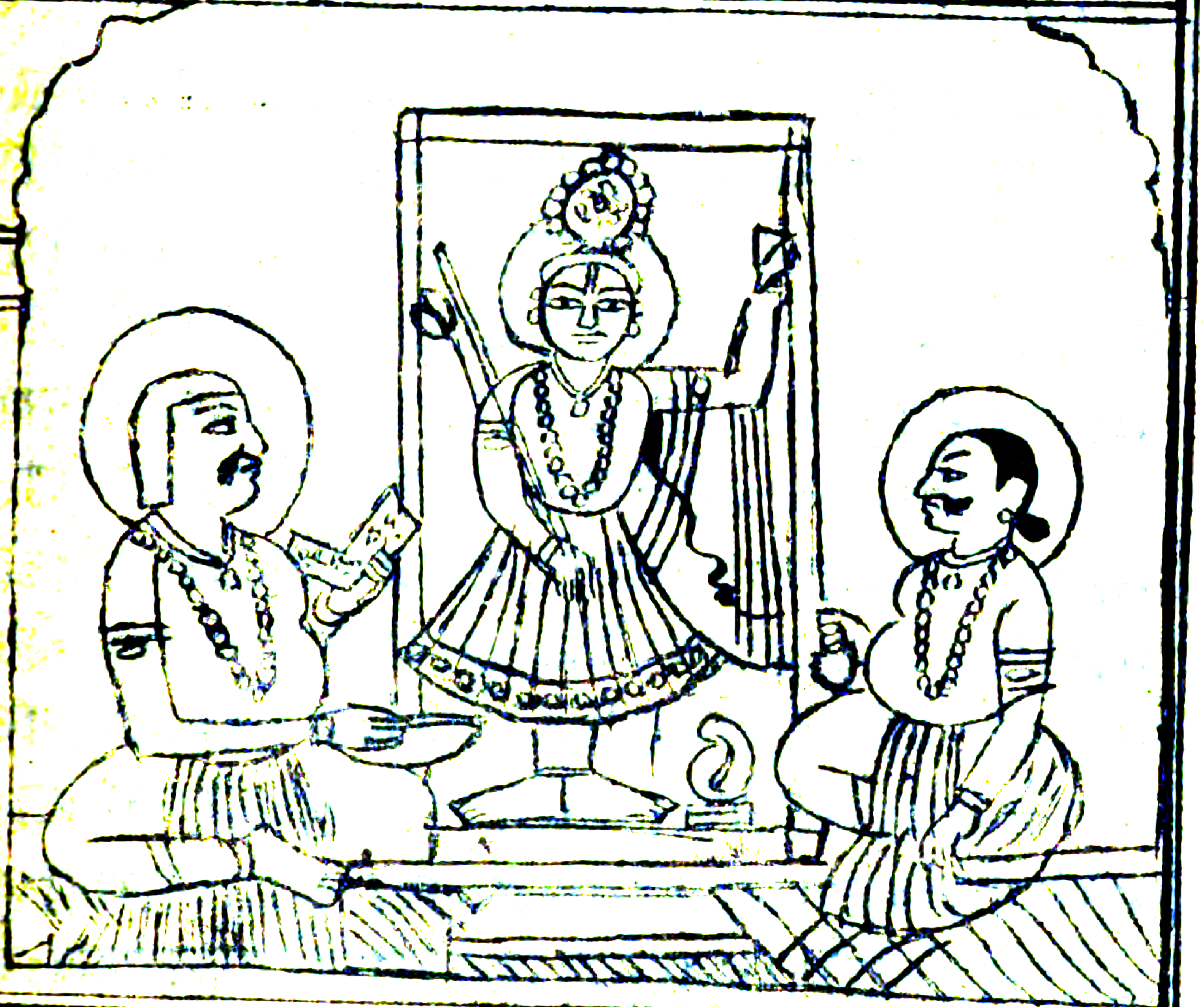

ठाकुर जी के आगे ते खाय जातो सो वह प्रेत वाहू दिन आयो तब देखे तो श्री आचार्य जी महाप्रभू विराजे हैं तब वह प्रेत खिस्यानों और कह्यो जो राज अबहूं भूखो रहूंगो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कह्यो जो तेनें अब तांई खायो सो तो खायो परि अब न खान पावेगो

ताते अब इहां सों जा तब वह प्रेत फिर गयो तब माधोदास भोग सरावन गयो तब देखैं तो यार ज्यों का त्यों भर्यो है तब माधोदासनें कह्यो जो तुम्हारे आगे में श्रीठाकुरजी आरोगे नाहीं ऐसे सामान्य वचन बहुत बोले परि श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुपि कर रहे कछू बोले नाहीं तब माधोदास रात्रि कों सोयो तब श्रीठाकुर जी के अनुचर आए सो बहुत मार्यो और खाट ते औंधों पटक मार्यो तब माधोदास ने उन सों कह्यो जो तुम मो कों काहे कों मारत हो जब जगन्नाथ राय जीनें कह्यो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून सों ऐसो सामान्य वचन कों बोल्यो में तेरे इहां कब आरोगत हों जो तू भोग धरतो सो तो प्रेत खाय जातो हो आज श्री आचार्यजी महाप्रभू भीद्वार ऊपर बैठे हुते ताते न खाय सक्यो तू उनसों कों बुरो बोल्यो वे तो मेरो स्वरूप हैं तब माधोदास ने उनसों कह्यो जो में सवारें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों अपराध क्षमा कराय देउंगो मेंनें ऐसें न जान्यो तब माधोदास प्रातःकाल उठि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आयो और साष्टांग दंडवत कीनी और वीनती करि कें कह्यो जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करिये सो श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो परमदयाल हैं सब प्रसन्न होय कें कहें जो तेरो कहा अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं तब माधोदास

नें बीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पाव धारी तब श्री आचार्यजी महाप्रभू माधौदास के घर पाव धारे और प्रसन्न होय के माधौदास कों नाम सुनायो ता पाछें माधौदास कों निवेदन करवायो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें माधौदास के ठाकुर कों पंचाम्रत से स्नान करवायो ता पाछें श्री ठाकुरजी कों सिंगार करिकें सिंहासन पाद वैठारे पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पाक करिकें भोग समर्प्यो तब समयानुसार भोग सराय आनोसरि करिकें पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू नें माधौदास सों कह्यौ जो तू वैस्नवन कों वुलाय लावो तब माधौदासनें कह्यौ जो महाराज पांच सात वैस्नव वुलाय लाउं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ जो पांच सात की कहा है जितने तेरे मन में आवे तितने वैस्नव वुलाय लाउ तब माधौदासनें श्री महाप्रभूजी सों कह्यौ जो महराज प्रसाद तो थोरो है और वैस्नव वहुत आमेंगे तो कैसें होयगी तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यौ माधौदास सों जो अरे तेरी अक्कल मारी गई है प्रसाद कवहू न घटे तेरे या गांव में जितने वैस्नव होय तिन सव कों वुलाय लाउ पाछें जितने वैस्नव है तिन सवन कों वुलाय लायो तब सवन कों महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार भर्यो रह्यो तब माधौदास सों श्री आचार्यजी महप्रभून नें कह्यौ जो वैस्नव कें विषें विस्वासवहियै

जो भगवद् प्रसाद सदां अटूट रहे या भांति सों माधौदास कों श्री महाप्रभूजीने अंगीकार कर्यो सो सुंन्दर दास के संगते भयो ताते संग करनो तो भगवदीय को करनो सो वे सुन्दरदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥+

॥वार्ता प्रसंग॥१॥ वैस्नव॥७८॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो तिन की वार्ता है

सो वे मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजो वरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्री नाथजी के दर्शन कों तथा श्री गुसांई जी के दर्शन कों आवते सो श्री गुसांई जी इनके ऊपर वहुत प्रसन्न रहते वहुत कृपा करते पाछें उनकों कृस्न भट्ट को संग भयो तव विरजो ने कृस्न भट्ट सों कह्यो जो तुम हमारे माथे सेवा पधरावो तो भलो है तव कृस्न भट्ट ने महाराज गुसांई जी सों वीनती करि कें कह्यो और उन कें माथे सेवा पधराई सो श्री गुसांई जीने श्री ठाकुरजी कों पाट वैठार्यो सो स्नेह पूर्वक सेवा करते सामग्री भली भांति सों करते श्री महाप्रभू जी के सेवक दस कोस पर रहते तिन कों प्रसाद लिवावतें ऐसें भली भांति सों सेवा करी कृस्न भट्ट आवि हैकें करी ॥+

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय वैष्णव सब प्रसाद लेंन कों उत्सव के दिन बैठे हते तब विरजो नें वैष्णवन कों अनसखडी महा प्रसाद परोस्यो तब विरजो नें कृष्ण भट्ट सों वीनती कीनी जो मोकों ऐसो मनोरथ है जो सब वैष्णव मंडली बैठी होय और में सखडी महा प्रसाद सबन कों लिवाऊं. तब कृष्ण भट्ट ने कह्यो जो यह मनोरथ है सो तो भक्ति भाव सों होय परि यह द्रव्य साध्य है तब विरजो ने पूछो जो द्रव्य साध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय के कहौ तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो यह वैष्णव मंडली लेके श्री गोकुल श्री गुसांई जी के पास जैये पाछें श्री गुसांई जी आज्ञा देंय सो करिये जो श्री गुसांई जी आज्ञा देंय तो सखड़ी महा प्रसाद लीयो जाय. ताते यह द्रव्य साध्य है जो मार्ग में सब खरच करिये और वैष्णवन की आज्ञा लेनी तब विरजो नें मावजी पटेल ते कह्यो जो मोकों यह मनोरथ है सो मनोरथ कियो चाहिये तब मावजी पटेल नें कह्यो जो मेरे पास दो लक्ष मुद्रा हैं इनसों काम होय तौ भलेंई करिये तब कृष्ण भट्ट नें कह्यो जो इनसों काम अवश्य होयगो आपन श्री गुसांई जी पास चलें तब श्री गुसांई जी आज्ञा देय सो करिये सो मावजी की गांठि में द्रव्य बहुत हतो सो सब लैकें उज्जैन आये पाछे कृष्ण भट्ट नें वैष्णव सब इकठोरे करि के श्री गोकुल श्री गुसांई जी के दर्श

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी के दर्शन कीये पाछें कृस्न भट्टनें श्री गुसांई जी सें वीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो मनोरथ है जो सखडी महाप्रसाद मेरे हाथ सों सब वैस्नवन की मंडली वैठी होय तिनकों मैं परोसों तब श्री गुसांई जीनें कही जो यह मनोरथ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वैस्नवन की मंडली लैकें विरजो चली श्रीजगन्नाथ रायजीकूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची तब श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो मनोरथ हुतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री करवाय कें श्री जगन्नाथ रायजी कों भोग समर्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अनसखडी सब वै

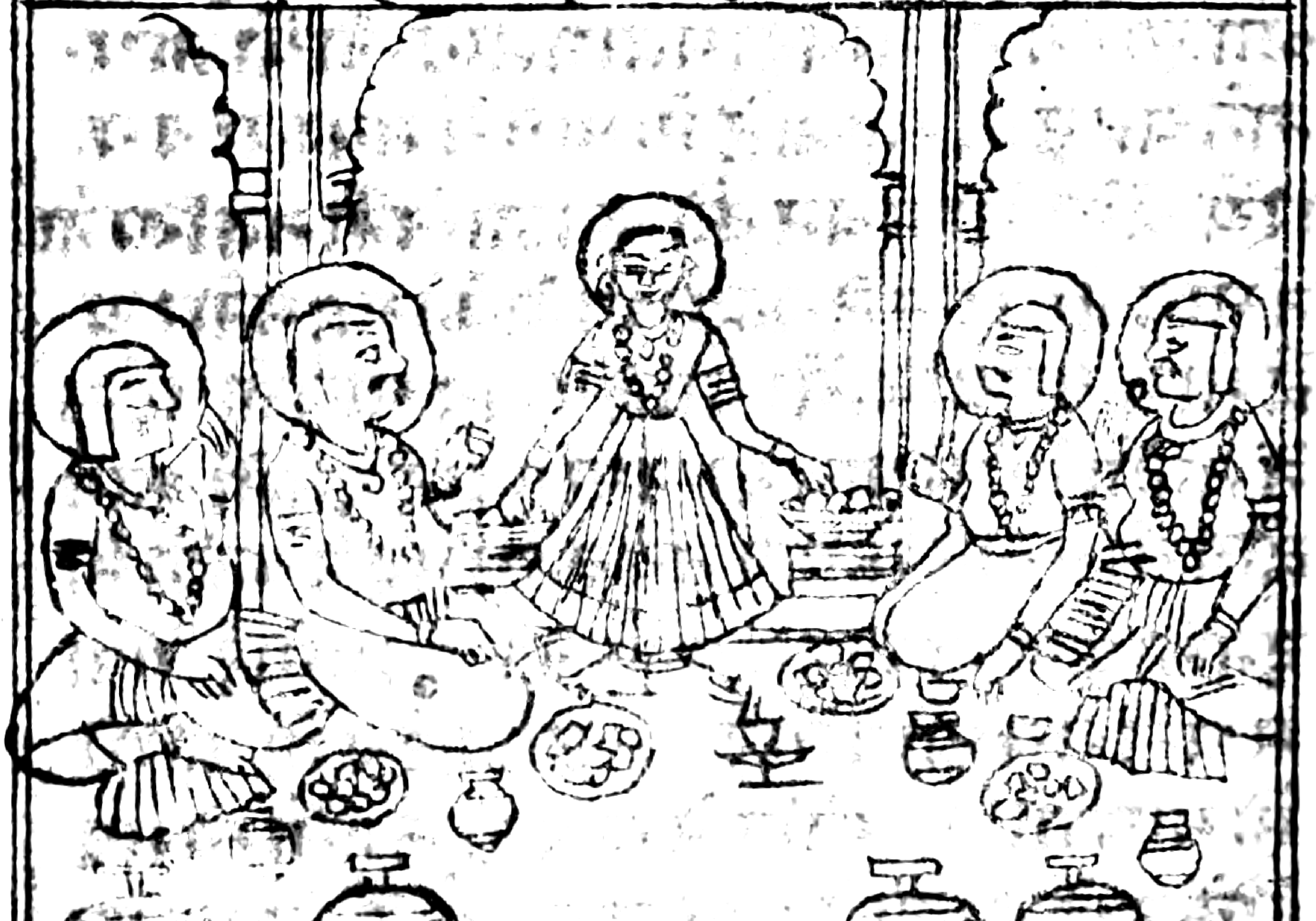

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि कें लिवायौ विरजो नें अपनो सव मनोरथ पूरन कीयो पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सव वैस्नवन सहित श्री गोकुल आई तव श्री गुसांईजी कौ दर्शन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो वात करी सो सव श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य कर्यो सो सव गुसांईजी की भेंट कीनों तव श्री गुसांईजी विरजो कौ भाव देखि कें वाके उपर वहुत प्रसन्न भये पाछें सव वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवायौ तव श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयौ ता पाछें विरजो तथा सव वैस्नव श्री गुसांईजी के साथ श्री नाथजी द्वार आए तव श्री नाथजी के दर्शन कीये तव विरजो तथा श्री गुसांईजी सव वैस्नवन सहित श्री नाथजी ते विदाहोय के अपने देस कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और विरजो वरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवती तव एक गाड़ा तौ गुड़ कौ भर लावती और एक गाड़ा घृत कौ भर लावती सो एक महीना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तो श्री गोकुल रहती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती या भांति सों विरजो रहती तव सामग्री करि कें भोग समर्पि भोग सराय कें सव ढांकि धरे जव गायन के ग्वाल आवते तव महाप्रसाद दूध अंगीकार करते और खिरक में लिवावती और आवती

न कों आये पाछें श्री गोकुल आय कें श्री गुसांईजी के दर्शन कीये पाछें कृस्न भट्टनें श्री गुसांईजीसों वीनती कीनी जो महाराज विरजो कों ऐसो मनोरथ है जो सखड़ी महाप्रसाद मेरे हाथ सों सब वैस्नवन की मंडली बैठी होय तिनकों में परोसों तब श्री गुसांईजीनें कही जो यह मनोरथ तो पुरुषोत्तम क्षेत्र विना न होय तब सब वैस्नवन की मंडली लेकें विरजो चली श्रीजगन्नाथ रायजी कूं सो कितनेक दिन में जाय पहुंची तब श्रीजगन्नाथजी के दर्शन कीये पाछें जो मनोरथ हतो सो सब नाना प्रकार की सामिग्री करवाय कें श्री जगन्नाथ रायजी कों भोग समर्प्यौ पाछें वह प्रसाद सखड़ी अनसखड़ी सब वै

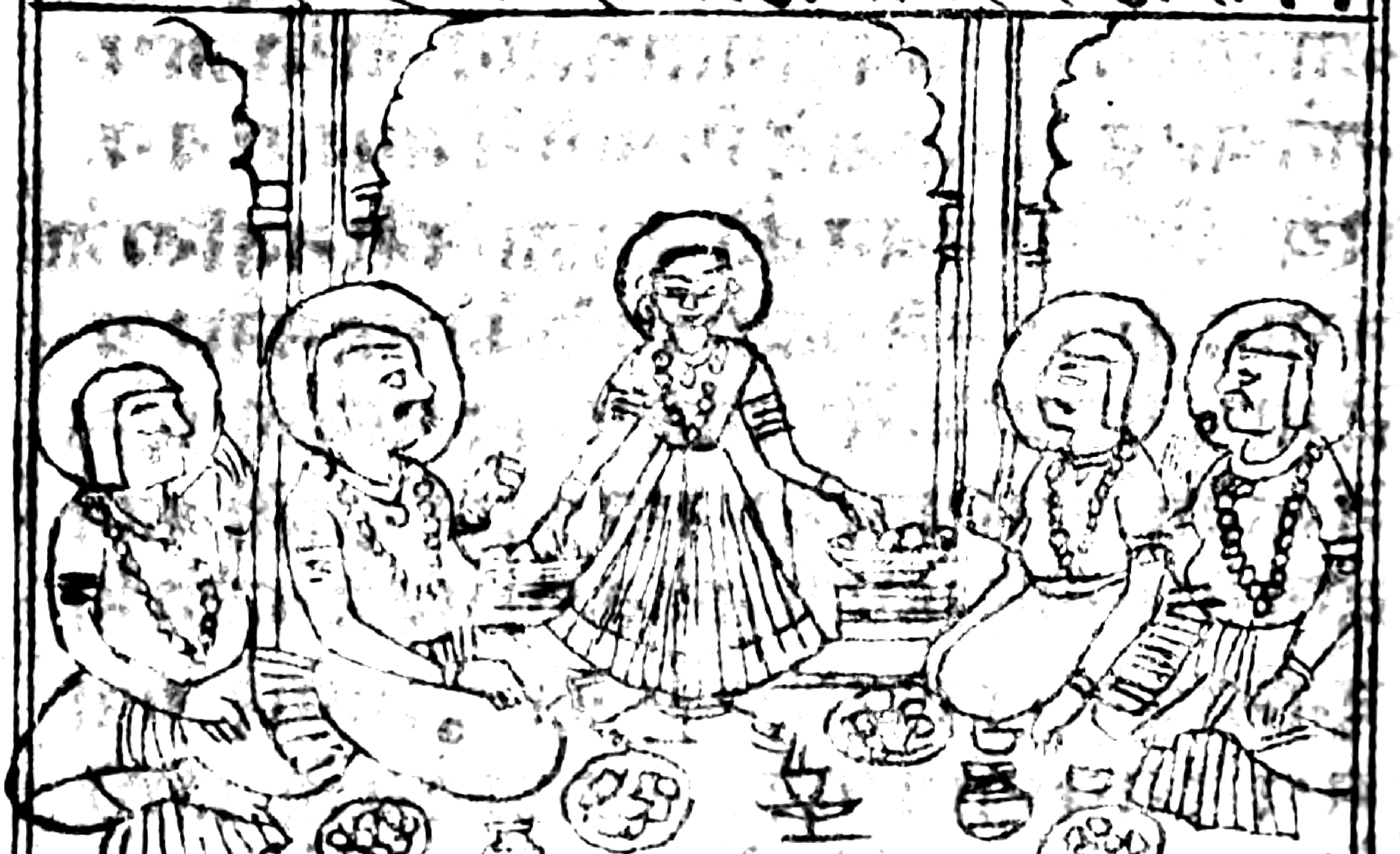

स्नवन कों विरजो नें अपने हाथसों परोसि कें लिवायौ विरजो नें अपनो सव मनोरथ पूरन कीयो पाछें विरजो उहां कछुक दिन रहि कें सव वैस्नवन सहित श्री गोकुल आई तव श्री गुसांईजी कौ दर्सन कीयो दंडवत कीनी ता पाछें जो वात करी सो सव श्री गुसांईजी के आगें कही पाछें और जो द्रव्य वच्यो सो सव गुसांईजी की भेट कीनों तव श्री गुसांईजी विरजो कौ भाव देखि कें वाके उपर वहुत प्रसन्न भये पाछें सव वैस्नवन कों महाप्रसाद लिवायौ तव श्री गुसांईजी नें आप प्रसाद लीयौ ता पाछें विरजो तथा सव वैस्नव श्री गुसांईजी के साथ श्री नाथजी द्वार आए तव श्री नाथजी के दर्सन कीए तव विरजो तथा श्री गुसांईजी सव वैस्नवन सहित श्री नाथजी ते विदा होय कें अपने देस कों गये वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और विरजो वरस दिन में दोय वेर श्री गोकुल आवती तव एक गाड़ा तो गुड़ कौ भर लावती और एक गाड़ा घृत कौ भर लावती सो एक महीना लों रहती ता में पन्द्रह दिन तौ श्री गोकुल रहती और पंद्रह दिन श्री नाथजी द्वार रहती या भांति सों विरजो रहती तव सामग्री करि कें भोग समर्पि भोग सराय कें सव ढांकि धरे जव गायन के ग्वाल आवते तव महाप्रसाद दूध अंगीकार करते और खिरक में लिवावती और आवती

जब दोऊ पधरावती करती सो वह विरजो ऐसी भगवदीय ही सो पद्मावल के संगते ताते संग करनों तो भगवदीय को करनों सो इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते अब कहा तांई लिखिये ॥ ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ७८ ॥ सम्पूर्णम्

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गोपालदास रोड़ा में रहते तिनकी वार्ता है

सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनने उनकों आज्ञा दीनी हती जो तुम सबन कों नाम दीजियो ताते वे गोपालदास नाम देते सो एक समय श्री आचार्यजी रोड़ा में पधारे हुते तब गोपालदास तो घर न हुते गोपालदास के वेटा घर हुते गोपालदास कछू याचृति कों गए हुते तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें गोपालदास के वेटान सों पूछी जो गोपालदास कहां गए हैं तब गोपालदास के वेटानने कह्यो जो कछु श्री ठाकुरजी के काम गयो है तब यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून को मन अप्रसन्न भयो जो गोपालदास के वेटा ऐसे कैसें बोलत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो ये कैसे वैष्णव हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो यहां रहनों उचित नाहीं है तब फिर आपने मन में विचारे जो गोपालदास कों तो आवन दीजिये यह कैसें बोलत है तबप

है संध्या समै गोपालदास आए तब गोपालदास ने संध्यासमय श्री आचार्यजी महाप्रभून कौ दर्शन कायो तब गोपालदास सों श्री आचार्यजी महाप्रभून ने पूछी जो गोपालदास तुम कहा गये हते तब गोपालदास नें कही जो महाराज परलापौ है ताते या वृत्ति कों गयो हुतो तब यह सुनि कें गोपालदास के ऊपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्री मुख सों कहें जो यह वैष्णव कौ लघरा है जो या वृत्ति में श्री ठाकुरजी कौ नाम न लेय

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥

और एक समय गोपालदास श्रीनाथजी के दर्शन कों आये सो साथ एक सेवक हुतो तहां ज्वर चढि आयो सो लंघन द्वै चारि कीये तब रात्र

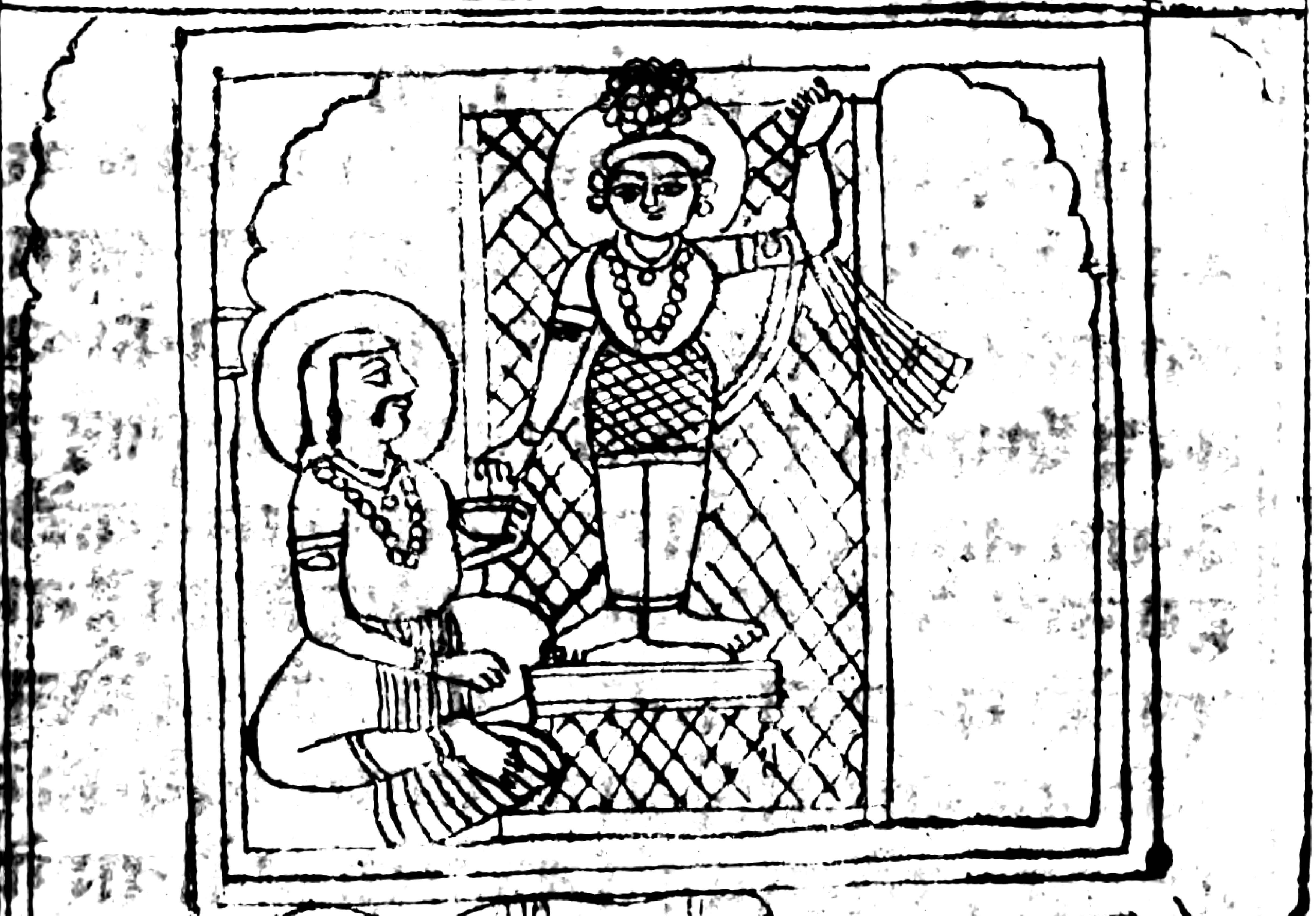

कों गोपालदास कों प्यास लागी सो वा सेवकके पास जल मांग्यो सो सेवक तौ सोयो हुतौ सेवक नें तो सुन्यौ न हुतो तब श्री ठाकुर जी जल पान के झारी लेकें आये सो गोपालदास कों जल पिवायौ और वह झारी उहां ही धरि आये श्री नाथजी कौ हृदय अति कोमल है ताते भक्ति की आर्ति सहि न सकें ॥

वार्ताप्रसंग ॥२॥

और एक समय गोपालदास नें चोपरा विरह करिकें गायो सो चोपरा वेकी + सिखंडी श्याम घन सखी कंठ मनी हारहार + धन्य दिन जेनों देखसूं नयनन नन्दकुमार ॥१॥ ऐसे चोपरा बहुत कीये ॥२॥

वार्ताप्रसंग ॥३॥

और एक समें श्री गुसांई जी आप रोढ़ा में पधा तब बाहिर डेरा कीये हुते पाछें जब गोपालदास उत्थापन के समय श्री गुसांई जी के दर्शन कों आप तब द्वै वैस्नवन नें कह्यौ जो हम कों श्री गुसांई जी के पास नाम दिवावो तब गोपालदास नें कह्यौ जो हम नाम देत हैं सो नाम श्री गुसांई जी देत हैं ताते तुम कों घर चलि कें नाम देयंगे परि उन वैस्नवन कौ मन श्री गुसांई जी पास नाम पायवे कों सो तीन वेर उन वैस्नवन नें कह्यौ सो तीनों वार गोपाल दास नें वैसें हीं कह्यौ जो तुम कों घर चलि कें नाम देयंगे सो यह वात श्री गुसांई जी नें अपने कान

न सों सुनी पाछें उन वैस्नवन सों श्री गुसांईजीनें कही जो तुम कहा कहत हो तव उन वैस्नवन ने कह्यो जो महाराज हम कों नाम दीजिये तव श्री गुसांईजीने उन कों नाम सुनायो उन कों कृतार्थ करे पाछें गोपालदास सों श्री गुसांईजी यों कहें जो गोपालदास तुम्हारो अंगीकार श्री आचार्यजी महाप्रभून ने कीयो है सो तो दृढ भयो है परि जिनने तुम्हारे पास नाम पायो है सो तो हमारे कवहूं न होंयगे सो श्री गुसांईजीने क्षोभ करिकें गोपालदास सों कह्यो पाछें गोपालदासनें जितनेन कों नाम दीयो हुतो तिन सवनकें फिर सवन कों सांईजी के पास नाम दिवायो तव वे सव कृतार्थ भये तिन सों श्री गुसांईजी गंगोञ्व कहते उन गोपालदास कों सामित्व आयो तातें इन जीवन कों अकाज भयो लाते वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ ❧

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैस्नव ॥ ८० ॥ संवन्ध ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता लिखते हैं ॥

सो एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभू अडैलते ब्रज कों पाव धारे सो कितनेक दिन में गऊघाट आए सो गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचा बीच है तहा श्री आचार्यजी महाप्रभू पाव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आन स्नान करि कें संध्यावंदन करि कें पाक करन कों बैठें और श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवकन कौ समाज बहुत हुतो और सेवक हू आपने आपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन लागे सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतो सो सूरदास जी स्वामी है आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते तातें बहुत लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते सो श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जी के सेवक देखि कें सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिननें दक्षिण में दिग्विजय कीयो है सब पंडितन को जीते हैं भक्ति मार्ग स्थापन कीयो है सो श्री वल्लभाचार्य यहां पधारे हैं तब सूरदास जी ने अपने सेवक सों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि तब आप भोजन करिकें बिराजें तब खबरि कीजियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों जांगे सो वह तनक

दूर जाय बैठौ तव श्री आचार्यजी महाप्रभु आप पाक करत हुते सो पाक सिद्ध भयो तव श्री आचार्यजी महाप्रभून में ठाकुरजी को भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर करि कें महाप्रसाद लें कें श्री आचार्यजी महाप्रभू गादी उपर बिराजे तहां सब सेवक हू पहुंचि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आस पास आय बैठे तव [illegible] दास को सेवक आयो सो सूरदास सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं तव सूरदास अपने स्थल ते आय कें श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर आवो बैठो तव सूरदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून

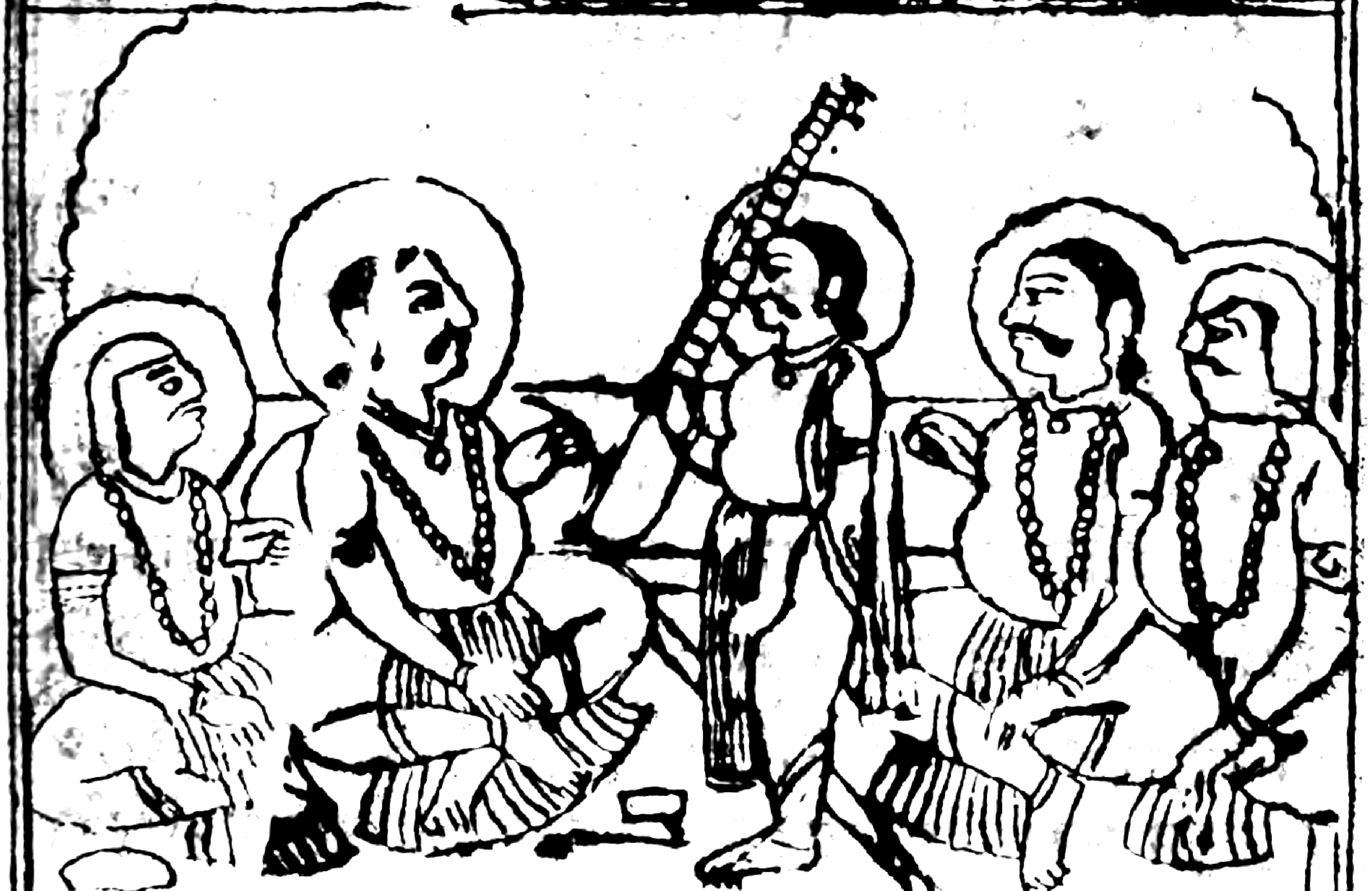

को दर्शन करिकें आगें आय वैठे तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही जो सूर कछु भगवद्जस वर्णन करौ तव सूरदास नें कही जो आज्ञा सो सूरदास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ ॥ (सो पद)

राग धनासरी ॥

हों हरि सव पतितन को नायक ॥ को करि सकै वरावर मेरी इते मान कौ लायक ॥१॥ जो तुम अजामेलि सौं कीनी जो पाती लिखि पाऊं ॥ होय विस्वास भलो जिय अपने और पतित वुलाऊं ॥२॥ सिमिटे जहां तहां ते सव कोउ आय जुरे इक ठौर ॥ अव कें इतने आनि मिलाऊं वेर दूसरी और ॥३॥ होड़ा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ॥ सवहिन ले पायन तरि परिहों यही हमारी भेट ॥४॥ ऐसी कितनी कवनाऊं प्रान पति सुमरन है भयो आडो ॥ अव की वेर निवार लेउ प्रभु सूर पतित कों टाडों ॥५॥

और पद गायो राग धनाश्री

प्रभू में सव पतितन को टीको ॥ और पतित सव द्यौस चारि के में तौ जनमत ही कौ ॥१॥ वधिक अजामिल गनिका त्यारी और पूतना ही कौ ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूल कैसे जी कौ ॥२ कोउन समरथ सेव करन कों खैचि कहत हौं लीकौ ॥ मरियत लाज सूर पतितन में कहत सवन में नीकौ ॥३॥ ऐसो पद श्री आचार्यजी महाप्र

भून के आगे सूरदास जी ने गायो सो सुनि कैं श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो सूर ह्वै कैं ऐसो घिघियात काहे कों है कछू भागवत लीला वर्णन करि तब सूरदास नें कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो जा स्नान करि आउ हम तो कों समझावेंगे तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास को नाम सुनायो पाछें समर्पण करवायो और फिर दशमस्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदास जी कों नवधा भक्ति सिद्ध भयी तब सूरदास जी ने भागवत लीला वर्णन करी अनुक्रमणिका ते संपूरण लीला पुरी सो कों जानियें सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण को प्रथम कारक कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यो

सो श्लोक

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि शायिनं
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्य मानं कलानिधिं

और ताही समय श्री महाप्रभून के सन्निधान पद कीये सो पद ॥

❖ राग बिलावल

चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग ॥ यह पद सम्पूरण करि कें सूरदास जी नें गायो सो यह पद दसमस्कंध के मंगलाचरण को॰

कारिका के अनुसार कीयो सो यासें कह्यो है॰ जो तहां श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदास या भांति पद कीये ताते जानी जो सूरदास कों सम्पूर्ण सुवोधिनी स्फुरी सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें जान्यो जो लीला को अभ्यास भयो पाछें सूरदास जी नें नंद महोत्सव कीयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभून कें आगे गायो॥

राग देव गन्धार

ब्रज भयो महर के पूत जब यह वात सुनी॥ सो यह श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो सो सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भये और आपने श्री मुखते कहे जो सूरदास मानों निकट ही हुते पाछें सूरदास जी नें अपने सेवक कीये हुते तिन सवन कों नाम दिवायो पाछें सूरदास जी नें वहुत पद कीये पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सूरदास जी कों पुरुषोत्तम सहस्र नाम सुनायो तव सूरदास जी कों सम्पूर्ण भागवत स्फुर्तना भई पाछें जो पद कीये सो श्री भागवत प्रथम स्कंध ते द्वादस स्कंध तांई कीये ताते वे सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हैं पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन विराजे पाछें फेरि ब्रज कों पाव धारे तव सूरदास जी हू श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज कों आये॥ +

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १

अव जो श्री आचार्यजी महाप्रभू व्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तव श्री आचार्यजी महाप्रभून के साथ सूरदासजी हू आए तव श्री आचार्य महाप्रभून नें अपने श्री मुख सों कह्यो जो सूरदास श्री गोकुल कौ दर्शन करौ सो सूरदास ने श्री गोकुल कौ दंडवत करी सो दंडवत करत मात्र श्री गोकुल की वाल लीला सूरदासजी के हृदे में फुरी और सूरदासजी के हृदय में प्रथम श्री महाप्रभून नें सकल लीला श्री भागवत की स्थापी है तातें दर्शन करत मात्र सूरदासजी कों श्री गोकुल की वाल लीला स्फुरनी भई तव सूरदासजीनें विचार्यो मन में जो श्री गोकुल की वाललीला कौं वर्णन करिकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें सुनाइये जन्म लीला को पद तो प्रथम सुनायो है अव श्री गोकुल की वाललीला कौ पद गायो ॥ सो पद

॥ राग बिलावल

सोभित कर नवनीत लियें ॥ घुटुरुवन चलत रेणु तन मंडित मुख लेप किये ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दियें ॥ लट लटकन मानों मत्त मधुप गन माधुरी मधुर पियें ॥ २ ॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत हैं सखी रुचिर हिये ॥ धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयो सत कल्प जिये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास नें गायो सो सुनि कें आप बहुत प्रसन्न भए पाछें और हू पद गाए तब श्री महाप्रभूजी अपने मन में विचारे जो श्री नाथजी के यहां और तो सब सेवा को मंडान भयो ॥ और कीर्तन को मंडान नांही कीयो है ताते अब सूरदासजी कौं दीजिये तब आप श्री जी द्वार पधारे सो सूरदासजी कों साथ लीए हीं सो श्री नाथजी द्वार जाय पहुंचे तब आप स्नान करिकें मन्दिर में पधारे तब सूरदासजी सों कह्योजो सूरदास ऊपर आय स्नान करि के श्री नाथजी को दर्शन करि तब सूरदास पर्वत ऊपर जाय कें श्री नाथजी कों दर्शन कीयौ तब आपने कह्योजो सूरदास कछु श्री नाथ कौं सुनावौ तब सूरदास ने प्रथम विायप्त कौ पद गायौ ॥ सो पद

राग धनासरी

अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥ यह पद सम्पूरण करि कें श्री नाथजी के आगें गायौ तब श्री महाप्रभूजी नें कह्यो जो अब तो सूरदास तुम में कछु अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून नें दूर कीनी ताते कछु भगवद जस वर्णन करो तब सूरदास ने महात्म और लीला ऐसो जस करि कें गाय सुनायो ॥ सो पद

राग गोरी ॥+

कोंन सुकृत इन ब्रज वासिन कों यह पद संपूरण करिकें गायो सो सुनि कें श्री महाप्रभूजी बहुत प्र

न भये सो जैसो श्री आचार्यजी महाप्रभूनें मार्गप्रकास कीयो है ताके अनुसार सूरदासजीनें पद कीये श्री आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग कौ कहै स्वरूप है महात्म ग्यान पूर्वक सुहृदस्ने हू कीयो परम काष्टा है और स्नेह आगे भगवान कौ महात्म रहत नाहीं तातें भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं नाम प्रकरन में पूतना करि संकट तृनावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसें करिकें भगवान नें बहुत महात्म जतायो परि इन व्रज भक्तन कौ स्नेह परम काष्टापन्न है तातें ताही समै तो महात्म्य रहे पाछें बिस्मृत हो जाय ॥ +

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और सूरदासजीनें सहस्रा विधि पद कीये हैं ताकों सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भए सो सूरदासजी के पद देशाधिपत ने सुने सो सुनिकें यह विचारी जो सूरदासजी काहू विधि सों मिलें तो भलो सो भगवद इच्छा ते सूरदासजी मिले सो सूरदासजी सों कह्यो देशाधिपति नें जो सूरदासजी मैं सुन्यो है जो तुमनें विसन पद बहुत कीये हैं जो मोकों परमेश्वर नें राज्य दीयो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं तातें तुमहूं कछू गावो तब सूरदासजीनें देशाधिपति के आगें कीर्तन गायो ॥ सो पद

राग बिलावल

मनारे तू करि माधो सों प्रीति ॥+॥ यह पद देशाधिपति के आगें सम्पूर्ण करि कें सूरदासजी नें गायो सो यह पद कैसो है जो या पद कों अहर्निस ध्यान रहे तो भगवद अनुग्रह की सदां सार्ति रहे और संसार ते सदां वैराग्य रहे और कुसंग कौ सदां भय रहे और भगवदीय के संग की सदा चाह रहे और श्रीठाकुरजी के चरणार्विंद ऊपर सदा स्नेह रहे वेसाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपति कौं सुनायो सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदासजी मोकों परमेश्वर ने राज दीनो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावो तब सूरदासजीनें यह पद गायो ॥+ सो पद +

राग केदारा

नाहिनं रह्यो मन में ठौर ॥+॥ यह पद सम्पूर्ण करिकें सूरदासजी नें गायो सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मन में विचारो जो ये मेरो जस काहे कों गावेंगे जो इनकों मेरी कछू वात को लालच होय तो गावें ये तौ परमेश्वर के जन हैं और सूरदासजीने या पद के समाप्त में गायो हो जो सूर ऐसे दर्श कों इमरत लोचन प्यास + यह गायो हो सो देशाधिपति नें पूछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें उपमा कों देत हो

तुम

सो तुम कैसे देत हो तब सूरदास जी कछु बोले नाहीं तब फेरि देशाधिपति बोलो जो इनके लोचन हैं सो तौ परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो दर्शन करत हैं तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनकों कछु दीयो चाहिये परि यह तौ भगवदीय हैं इनकों कछु काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो विदा होय कें श्रीनाथजी द्वार आये ॥ + ॥ +

वार्ता प्रसंग ३॥

एक समें सूरदास जी मार्ग में चले जात हे सो केउ चौपड़ खेलत हुते सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन हें जो कोउ आवते जाते की सुधि नाहीं ऐसे खेल में मान हें सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय हे तिनसों सूरदास जीनें कह्यो जो देखो यह प्राणी कैसो अपनों जमारो खोवत हे भगवाननें तो मनुष्य देह दीनी हे सो तो अपनी सेवा भजन के लिये दीनी हे सो ये तो या देह सों हाड कूटत हे यामें यह लौकिक सिद्धि नाहि सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और पर लोक में भगवान ते वहिर्मुख ताते श्री ठाकुरजीनें इनकों मनुष्य देह दीनी हे तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदास ने अपने संग केन सों कह्यो ॥ सो पद

राग केदारो ॥

मन तू समझ सोच विचार ॥ भक्ति विन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि ॥ दाव अब के पर्यो पूरो उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ + वाक सत्रे सुनि अठारे पंचही को मारि ॥ दूर ते तजि तीन कांने चमकि चौंक विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नारि ॥ सूर हरि के पद भजन विन चल्यो दोउ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजी नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यो सो या पद में सूरदासजी नें कहा कह्यो मन तू समझि सोच विचार ये तीन्यो वस्तु चौपड में चहिये सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चहिये काहे ते जो समझि न होय तो अवश कहा करेगो ताते पहिले तो समझ चाहिये और सोच कहिये चिंता सो भगवान के प्राप्ति की चिंता न होय तो संसार उपर वैराग्य कैसें आवें ताते सोच कहिये और विचार जो या जीव कों विचार ही नही तो संग कुसंग में कहा करैगो ताते विचार चहिये सो ये तीनो वस्तु होंय तो भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहिये और चौपड में हूं ये तीनों वस्तु चहिये समझि कहे गिनवो न आवतो गोट कैसें चले और सोच आगम जो मेरे यह दाव पड़े तो यह गोट चलूं विचार जो वाही में तन मन जो ये तीनो वस्त होय तो चौपड़ खेली जाय सो वे सूरदासजी श्री आचार्यजी

महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे

वार्ता प्रसंग ॥ ४॥

वहुर सूरदासजी श्रीनाथजी द्वार आय कें वहुत दिन तांई श्रीनाथजी की सेवा कीनी वीचवीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियाजी के दर्शन कों आवते सो एक समय श्री सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीत प्रियाजी के दर्शन कीये और वाल लीला के पद वहुत सुनाये सो श्रीगुसांई जी सुनिकें वहुत प्रसन्न भये पाछें श्रीगुसांईजी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो सो पालना सूरदास जीनें श्रीनवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समयः गायो सो पद ॥

राग रामकली

शेष पर्यंक सयनं ॥ यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्रीनवनीत प्रियाजी कों पाछें या पद के भाव के अनुसार वहुत पद कीये सो सुनिकें श्री गुसांईजी वहुत प्रसन्न भए पालना के भाव अनुसार पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल

वाल विनोद आंगन में कीडोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय वलिवलि गई तोतरी वोलनि ॥१॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख व्रजमाल वहु लई अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मधुगनि तोलनि ॥२॥ लीन्यो कर परसत आ

ननपर कछु खाय कछु लायो कपोलनि ॥ कहै जन सूर कहा लों वरनों धन्य नंद जीवन जग तोलौंने ॥३॥ ✣

गोपाल दुरे हैं माखन खात ॥ देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाड़ी ह्वै जिह विधि नहिं लखि लेत ॥ चकृत नैन चहुं दिस चितवत और सखन कों देत ॥२॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार ॥ ✣ ॥ जनु जलरुह तजि वैर विधि सों लारों मिलत उपहार ॥३॥ गिरि गिरि परत वदन ते ऊपर ह्वै दधि सुत के बिंदु ॥ मानहु सुधा कन खौर वत पिय जिय दुंदु ॥ बाल विनोद विलोक सूर प्रभु चित भई ब्रज की नारि ॥ फुरत न बचन बरजि वे कौं मन रही विचार विचार ॥ ✣

राग जैतश्री

कहां लगि वरनों सुन्दरताई ॥ खेलत कुमर कलिक आंगन में नैन निरखि सुख पाई ॥१॥ कुलहे लसत स्याम सुन्दर कें बहु विधि रंग बिवनाई ॥ मानहु नव घन ऊपर राजत मघुवा धनुष चढ़ाई ॥ सेत पीत अरु असित लाल मणि लटकनि भाल रुराई ॥ मानहुं असुर देव गुरु सों मिलि भूमिज सो समुदाई ॥३॥ अति सुदेस मृदु चिहुर हरत मन मोहन मुख वगराई ॥ मानंहु मंजुल कंज ऊपर वर अलि अवलि फिर आई ॥ दूध दंत छवि कही न जात कछु अलि पल लप झलकाई

॥ किलकत हंसत दुरति प्रगटत मानों विधु में विपुल तांई ॥५॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखो सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अम्बुज मध्य देखियत बीस दधि सुत जूप ॥१॥ एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंचवार चटि गहि देखियत कहो कहा स्वरूप ॥२॥ सिसु गन में भई सोभा कोऊ करो विचार ॥ सूर श्री गोपाल की छवि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जीनें गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ५॥

अब सूरदास जीनें श्रीनाथजी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन तांई ता उपरांत भगवद् इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहां करें हैं ऐसो जो परासोली तहां सूरदासजी आए श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडौतत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदासजी सोये परि अंतःकरन यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभू दर्शन देयंगे अब यह देह तो थकी ताते अब या देह सों श्रीनाथजी को दर्शन होय तो जानिये परम भाग्य है श्रीगुसांई जी को नाम कृपा सिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन

कर्ता हैं ऐसे विचार कें सूरदासजी श्री गुसांईजी को चितवन कर... हैं और श्री गुसांईजी कैसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदासजी उहां स्मरण करत हैं तैसेंही श्री गुसांईजी इनकों छिनहूं नाहिं भूलत हैं श्रीनाथजीकों सिंगार होतो तासमय सूरदासजी मणिकोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते सो तादिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कौ सिंगार करत हुते और सूरदासजी कों कीर्तन करत न देख्यो तब श्री गुसांईजीनें पूछो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहे ते तब काहू वैस्नवनें कह्यो जो महाराज सूरदासजी तो आज परासोली की ओडी जात देखे हे तब श्री गुसांईजीने जान्यो जो भगवद इच्छा ते अवसान समें है ताते सूरदासजी परासोली गये हैं तब श्री गुसांईजीनें अपने सेवकन सों कह्यो जो पुष्टिमार्ग को जिहाज जात है जाकों कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरती पछें रहत हैं तो मेंहूं आवत हों पाछें श्री गुसांईजी वेर वेर सूरदासजी की खबरि मंगायो कों जो आवै सोई कहे जो महाराज सूरदासजी तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसें करत श्रीनाथजी के राजभोग को समय भयो सो राजभोग आरती करि कें श्री गुसांईजी श्री गिरिराज ते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरिया सेवक रामदासजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्री गुसांईजी के सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत

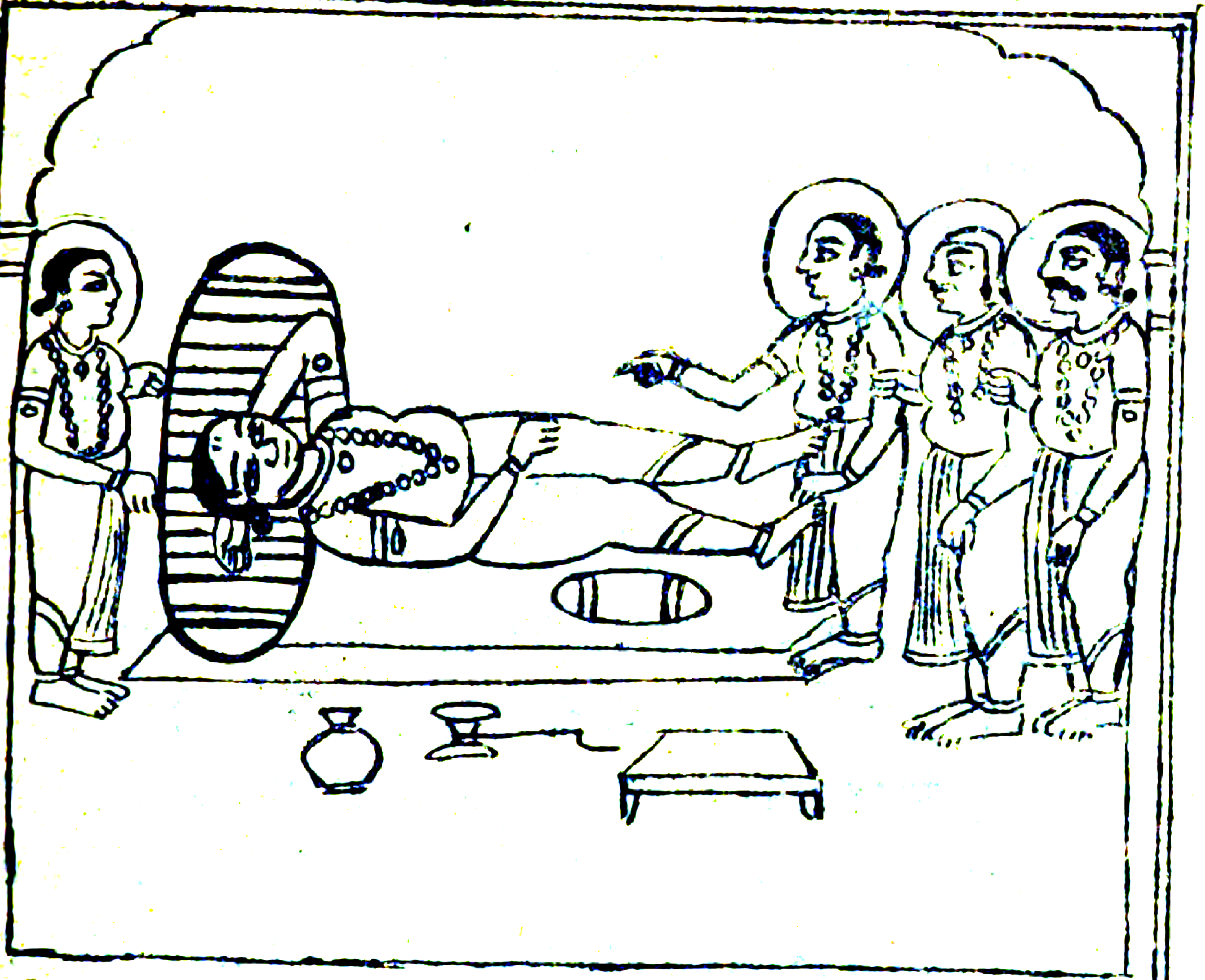

और सब श्री गुसांई जी के साथ आए सो आवतही सूरदासजी सों श्री गुसांई जी नें पूछी जो सूरदासजी कैसें हों तब सूरदासजी नें श्री गुसांईजी कों दंडौत करिकें कह्यौ जो महा राज आए हों महाराज की वाट देखत हुतो यह कहि कें सूरदासजी ने एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग ॥ ✤

देखो देखो हरि जू को एक सुभाव ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जानि सिरोमन राय ॥ १ ॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान ॥ समभि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एको जानि ॥ २ ॥ बदन प्रसन्न कमल पद सनमुख दीखत ही है

ऐसे ॥ ऐसे विमुखहु भए कृपा या मुख कीजव देखौ तब तैसे ॥३॥ भक्त विरह करत करुणा मय डोलत पाछें लागें ॥ सूरदास ऐसे प्रभू कों कत दीजै पीठ अभागे ॥ ✢

यह पद सूरदास जीनें कह्यो सो सुनि कें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो ऐसो दैन्य प्रभू अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही हैं तब वा बेर श्री गुसांई जी पास ठाड़े हुते और चत्रभुजदास हू ठाड़े हुते तब चत्रभुजदास नें कह्यो जो सूरदास जीनें बहुत भगवद जस वर्णन कीयो परि श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ जस वर्णन ना कीयौ तब यह वचन सुनि कें सूरदास जी बोले जो में तो सब श्री आचार्य जी महाप्रभून कोही जस वर्णन कीयो है कछू न्यारो देखूं तो न्यारो करूं परि तेरे साथ कहत हों या भांति कहि कें सूरदास जीनें एक पद कह्यो ॥ सो पद

राग विहागरो

भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो ॥ श्री वल्लभ नख चंद्र छटा विनु सब जग मांझ अंधेरो ॥१॥ साधन और नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ॥ सूर कहा कहि दुविध आंधरो विना मोल कौ चेरो ॥२॥ ✢

यह पद कह्यो पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई तब श्री गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित की वृत्ति कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यो ॥ ✢

सो पद

राग विहागरो ॥

वलिवलिवलि हौ कुमर राधिका नंद सुवन जासों रति मानी ॥ वे अतिचतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीत करी कैसें होत है छानी ॥ १ ॥ वेजु धरत तन कनक पीत पट सो तो सव तेरी गति ठानी ॥ तें पुनि स्याम सहज वे सोभा अंवर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अवही ह्वै आयो निरखि देखि निज देह सियानी ॥ सूर सुजान सखी के वूझें प्रेम प्रकाश भयो विहसानी ॥ ३ ॥

यह पद कह्यो इतनों कहि कें सूरदास जी को चित्त श्री ठाकुर जी को श्री मुखता में करुणा रस के भरे नेत्र देख तव श्री गुसांई जी पूछो जो सूरदास जी नेत्र की वृति कहां है तव सूरदास जी ने एक पद और कह्यो ॥ सो पद

राग विहागरो

खञ्जन नैन रूप रस माते ॥ अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ॥ चलि चलि जात निकट श्रवणन के उलटि पुलटि ताटंक फंदाते ॥ सूरदास अंजन गुण अटके नातर अव उड़ि जाते ॥

इतनों कहत ही सूरदास जी नें या शरीर कों त्याग कीयो सो भगवद् लीला में प्राप्त भये पाछें श्री गुसांई जी सव सेवकन सहित श्री गोवर्द्धन आये ता तें सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इन की वार्ता को पार नाहीं ता तें इन की वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ८४ ॥ सम्बन्ध ॥ ✢

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक परमानन्द दास कनौजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता लिख्यते हैं

सो परमानन्द दास जी परम भगवद् लीला मध्य याती श्री ठाकुर जी के परम सखा हैं सो जब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्री गोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्री आचार्य जी महाप्रभून को श्री ठाकुर जी को परकार सब प्रगट भयो और आप श्री गोवर्द्धन पर्वत में प्रघट भए सो गोपाल दास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अपने क जीव कृपा कों वादे प्रांतर परदेस तातें परमानन्द दास जी को जन्म कनोज में है कनोजया ब्राह्मण के घर भयो सो वे परमानन्द दास जी बहुत योग्य भए और कवि भये भगवद् कृपा के पात्र भये कीर्तन बहुत आछो गावते तातें परमानन्द दास जी के संग समाज बहुत रहतो आप स्वामी कहावते आप सेवक करते सो भगवद् इच्छा ते एक समय: परमानन्द दास जी कनौज ते आप प्रयाग कों आये सो प्रयाग में उतरे सो वहां कीर्तन बहुत आछें गावते तातें बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते: और अडेल तें कार्यार्थि लोग बहुत आवते सोइन के कीर्तन सुनि कें पार अडेल में जाय कहते:

जो परमानन्द दास जी इहां प्रयाग में आये हैं सो कीर्तन वहुत आछे गावत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया कपूर छत्री सो उनके राग ऊपर वहुत आसक्ति परि वे अवकाश नाहीं .... पावें जो परमानंद दासजी के कीर्तन सुनिवे कों आवें सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयो सो वानें कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानन्द दास जी आज जागरन करेंगे सो यह सुनिकें वा जलघरियानें अपने मन में विचार्यो जो आज परमानन्दजी के कीर्तन सुनिवे कों चलनों सो वे छत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहुंचि कें रात्रि कों अपने घर आये सो घर आय कें अपने मन में विचार कीयो जो या वेर नाव तौ मिलैगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य परि वे पैरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी जो पैर कें पार जैये पाछें अपने घर ते चले सो श्री यमुनाजी के तीर ऊपर आय ठाड़े भये तब परदनी पहर कें वस्त्र सब माथे सों वाधि कें श्री यमुनाजी में पैर कें पार प्रयाग आये पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौर परमानन्द स्वामी उतरे हुते तहां आये सो इनकों कछु मिलाप तौ परमानन्द स्वामी सों हुतो नाहीं जहां और सब जने वैठे हुते तहां एउ जाय वैठे परि एउ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक हे सो सब कोउ जानत हुते ताते सबन ने इनकों आदर कर कें वैठाये सो ए वैठे तो पाछें परमानन्द स्वामी ने

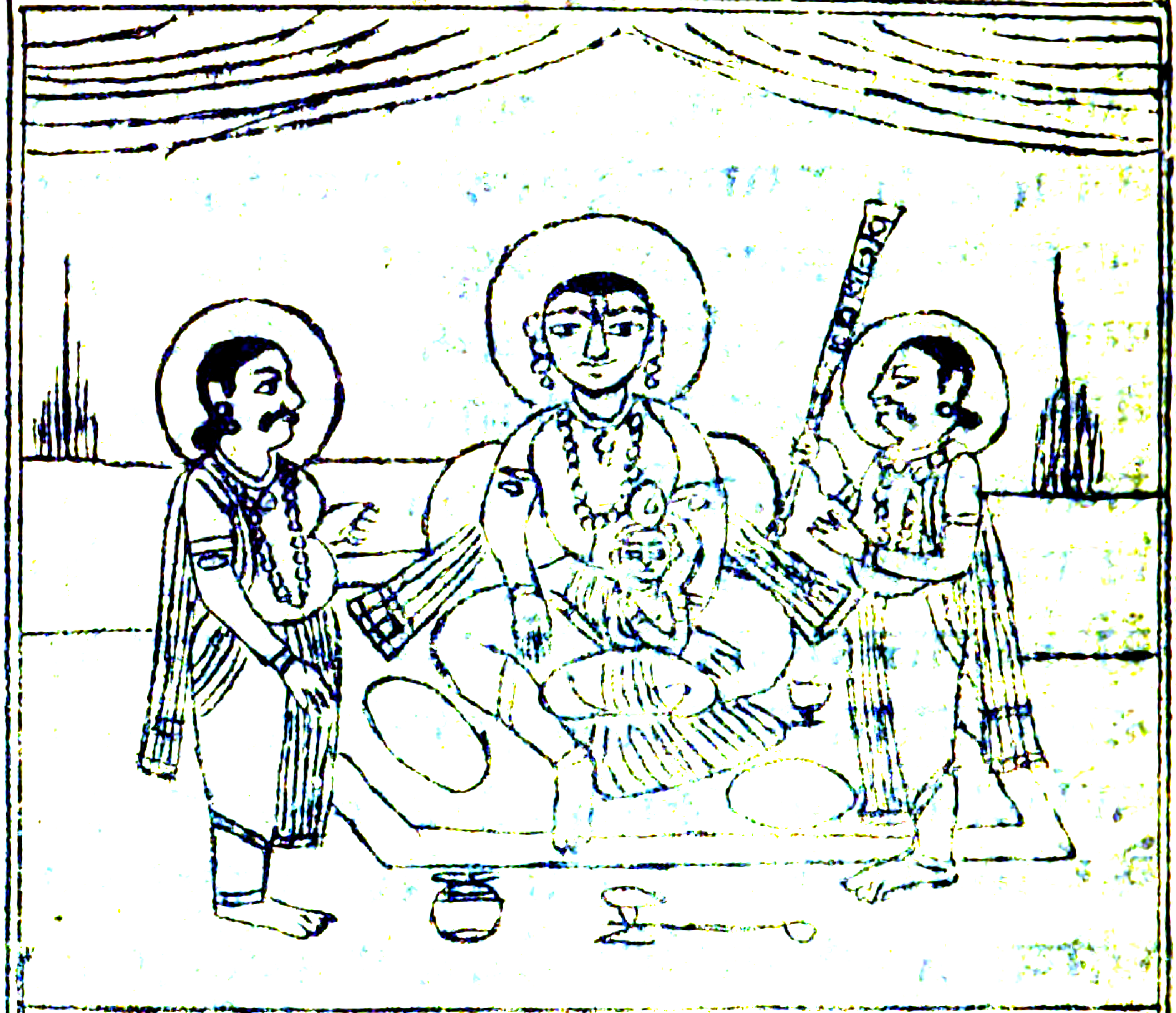

कीर्तन कों आरंभ कीयो सो परमानन्द स्वामी ने विरह कें पद गाये सो विरह के पद काहे कों गाए सो प्रथम इन कों स्वरूप कहि आये हे कही जो ये लीला मध्यपाती श्री ठाकुर जी के परमानन्द स्वामी परम सखा हें सो उहां सों बिछुरे और इहां तो अब ही श्री ठाकुर जी कौ दर्शन नाहीं भयो और श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ दर्शन अब होयगो श्री आचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धांत हे जो भगवदीन को संग होय तो श्री ठाकुर जी कृपा करें ताही के लियें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करि कें अपने कृपापात्र भागवदीय के अंतकरन में प्रेरना करिकें परम

नंद स्वामी के इहां पठाये सो ये श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनकों श्री ठाकुर जी एक क्षन हूं नाहीं छोडत इनके संगही रहत हैं काहे ते सूरदास जी गाए हैं भक्ति विरह करत करुणा मय डोलत पाछें पाछें और जगन्नाथ जोसी की हूवागों में लिख्यो है जो जब रजपूत नें तरवार चलाई तब श्री ठाकुर जी नें हाथ पकर्यो ताते श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदां श्री ठाकुर जी निकट ही रहत हैं ताते परमानन्द स्वामीने विरह के पद गाये सो पद ॥

राग विहागरो ॥

ब्रज के विरही लोग विचारे ॥ विन गोपाल ठगे से ठाडे अति दुर्वल तन हारे ॥१॥ मात जसोधा पंथ निहारत निरखत सांझ सकारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि वोलत अँखियन वहत पनारे ॥२॥ यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ॥ परमानन्द स्वामी विनु ऐसे जैसें चन्दा विनु तारे ॥३॥

और पद गायो सो राग विहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधन के ऊधौ सो सब वसन ईस पुरकासी ॥ जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छांडत कों रति जासी ॥ अपनी सीतलता तहां छांडत जद्यपि विधु राहु है ग्रासी ॥४॥ किंह अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन ते करत उदासी ॥ परमानन्द ऐसी को विरहिन मांगें मुक्ति गुन रासी ॥३॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को ॥ नंदनंदन बिन कासों कहिये सुनरी सखी मेरे दुखिया मन को ॥१॥ कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद राति को ॥ कहां वे मंद सुगंध अमल रस कहां वे षटपद जलजातन कौ ॥२॥ कहां वे सेज पौढिवो वनको फूल बिछौना मृदु पातन कौ ॥ कहां वे दरस परस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन कौ ॥३॥

राग कान्हरो

माई कौं मिलवे नंदकिसोर ॥ एक बार को नैन दिखावे मेरे मन कौ चोर ॥१॥ जागत जाम गनत नहीं खूटत कों पाउंगी भोर ॥ सुनरी सखी अब कैसे जीजे सुनत तमचर खग रोरें ॥२॥ जो यह प्रीति सख्य अंतर गति जिन काहू वन होरे ॥ परमानन्द प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥३॥

इत्यादिक पद बिरह के ऐसे परमानंद स्वामीनें सगरी राति गाए पाछिली घडी चारि रात्र रही तव जो जो जागरन में आए हुते सो सब अपने घरकों गये तैसेंई श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक ए जलघरिया कपूर हू परमानंद स्वामी सों जैसो कृष्णस्मरण कहिकें चले और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनिकें बहुत प्रसन्न भये और परमानन्द स्वामी सों कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते तातें अधिक देखे तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो

ये जलघरिया क्षत्री कपूर श्री महाप्रभून के परम भगवदीय हैं सो ऐजो चलि आए सो परमानन्द स्वामी के उपर अनुग्रह करिवे कों आए हे नातर भगवदीय काहे कों काहू के घर जांय और यह उपर कहि आये हैं जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के निकट ही रहत हैं सो याकों हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्री नवनीत प्रियाजीने परमानंद स्वामी के पद सुने जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग की मर्य्यादा है जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के अनुग्रह विना श्री ठाकुर जी कृपा न करें सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर उपर श्री आचार्यजी महाप्रभून को परम अनुग्रह है ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद में बैठि कें परमानन्द स्वामी के पद काहे को सुनने पड़े सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानन्द स्वामी के उपर श्री नवनीत प्रयाजी अनुग्रह करवे कों आप पधारे हैं ताते सुने सो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानन्द स्वामी सों जैसी कृस्न कहि कें चले सो श्री यमुना जी के तीर उपर आये सो वहां आय कें विचार कीयो जो नाव की बाट देखें तो अबार होयगी और सेवा छूटेगी और श्री आचार्यजी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले सो पैर के पास गये सो पार आवत ही स्नान कर कें अपनी सेवा में तत्पर भये पाछे वहां प्राग में ॥

परमानन्द स्वामी को रात्रि के जागरन के श्रमित सों आंखि लगी निंद्रा आई सो इतने में स्वप्न आयो सो स्वप्न में देखे जो जैसें रात्रि के जागरन में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया सश्री बैठे हैं और उनकी गोद में श्री नवनीतप्रिया जी के दर्शन भये और स्वप्न में श्री नवनीतप्रिया जी परमानन्द स्वामी सों कहें और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो वा श्री मुख को कोउ सोंदर्य कोटिकंदर्पणा वराय परमानन्द स्वामी ने देख्यो सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीये और मन में वटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो तब यह मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक ताको जल घरिया विना न होयगो तातें होय तो उनके पास जैये जो उनसों मिलै तब कार्य सिद्धि होय ऐसो परमानन्द स्वामी नें अपने मन में विचार कियो सो ततकाल प्रागते अडेल कूंचले सो श्री यमुना जी के तीर ऊपर आय ठाढे भये सो प्रातःकाल को समय भयो सो प्रथम नाव चली ता पर बैठि कें पार उतरे तब आगें जाय कें देखें तो श्री आचार्य जी महाप्रभू जी स्नान संध्यावंदन करत हैं सो परमानन्द स्वामी को श्री महाप्रभूजी को कैसो दर्शन भयो साक्षात पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृस्नचंद्र सो श्री गुसांई जी वल्लभाष्टक में लिख्यो है सो वस्तुतः कृष्ण एव ऐसो दर्शन भयो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जल घरि

या छत्री कपूर की गोद में श्री ठाकुरजी काहेकों बैठे यह कारण जिन के माथे ऐसे प्रभू विराजत हैं परमानन्द स्वामी के मन में यह जो छत्री कपूर मिले तो आछो सो काहेते जो जिन के मांथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन तें श्री आचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयो ता पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द कछू भगवदीयजस वर्णन करि तब परमानन्द स्वामी ने विरह के पद गाये ॥ सो पद

रागसारंग ॥ *

कौन बेर भई चलेरी गोपाले ॥ हौं ननसार गई हौं न्योते बार बार बूझत व्रजबाले ॥१॥ तेरो तन को रूप कहां गयो भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यो तब सोभा भाग गयो हरि के संग हृदे सो कमल विरह दह्यो ॥२॥ को बोले को नैन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन ॥ जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानन्द स्वामी जीवन धन ॥ *

रागसारंग

जिय की साधन जिय ही रहीरी ॥ बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए विलपत कुंज अहीरी ॥१॥ एक दिन सांज समीप यह मारग बेचन जात दहीरी ॥ प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी बांह गहीरी ॥२॥ बिन देखें घडी जात कलप सम बिरहा अनल दहीरी ॥ परमानंद स्वामी बिन दर्शन नैनन नींद नहीरी ॥३॥ *

राग सारंग ॥

वह बात कमल दल नैनन की ॥ बार बार सुधि आवत रजनी वह दुरि देनी सैनी सैन की ॥ वह लीला वह रास सरद को गोरज रजति आवनि ॥ आरु वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥ २ ॥ बसन कुंज में रास खिलायौ बिथा गमाई मैन की ॥ परमानन्द प्रभू सों क्यों जीवें जे पोखे म्रदु बेन की ॥

या भांति परमानन्द स्वामी ने बिरह के पद गाए सो सुनि कें परमानन्द स्वामी सों कह्यौ जो कछू बाल लीला बर्णन करि तब परमानन्द स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछू समझत नाहीं तब श्री महाप्रभून ने कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे तब परमानन्द स्वामी नें श्री महाप्रभून सों पूछौ जो महाराज आप कौ सेवक बिरक्त कहां है तब श्री आचार्यजी महा प्रभून नें कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो तब परमानन्द स्वामी स्नान को गये सो तब परमानन्द स्वामी आगे जाय कें देखें तो यमुन जल की गागर लैकें वह कपूर छत्री आवत हैं तब निकट आए सो सान्हें मिले सो उनकों देखकें परमानन्द स्वामी बहुत प्रसन्न भए और परमानन्द स्वामी नें उनकों नमस्कार करी और कह्यौ जो रात्रि कों जागरन में आप पधारे हते सो श्री ठाकुर जीनें आप की गोद में बैठि कें मेरे कीर्तन सुने सो आप की कृपा ते श्री ठाकुर जी नें मोसों क

ह्यो जो मैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जल घरिया स्त्री की गोद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं और आप की कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा से मोकों दर्शन भयो इतनी बात सुनि कें उन जल घरिया नें कह्यो जो एसें मति कहो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ कें क्यों गये ताते यह बात मति कहो तब इतनी सुनि कें परमानन्द स्वामी कों आश्चर्य भयो और कह्यो जो ए धन्य है जिन उपर श्रीठाकुर जी कों ऐसो अनुग्रह है और ये-

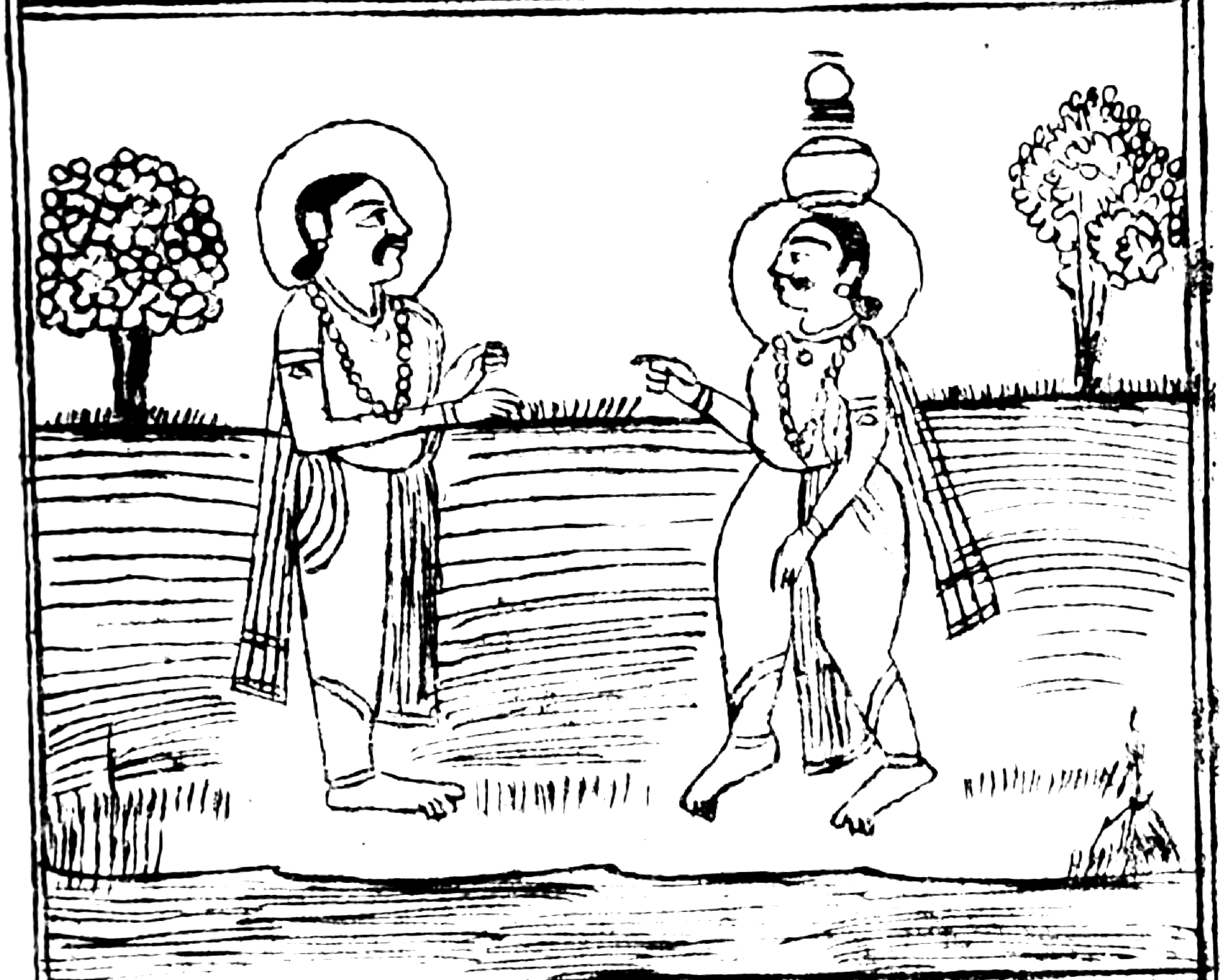

अपनो स्वरूप छिपावत हैं पाछें परमानन्द स्वामी तो स्नान कों गये और जल घरिया जल की गागर

लेकें मन्दिर में गयो पाछें परमानन्द स्वामी श्रीजमुनाजी में स्नान करिकें ततकाल आप श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें आय खड़े भये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानन्द स्वामी आगें आउ बैठि तब परमानन्द स्वामी आप आगें आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें परमानन्द स्वामी कों नाम सुनायो पाछें मन्दिर में पधार कें श्री नवनीत प्रियाजी के सन्निधान परमानन्द स्वामी कों ब्रह्म संबंध करवायो पाछें अनुग्रह करिकें परमानन्द स्वामी कों अनुक्रमणिका सुनाई काहे तें जो प्रथम परमानन्द स्वामी सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें अपने श्री मुख

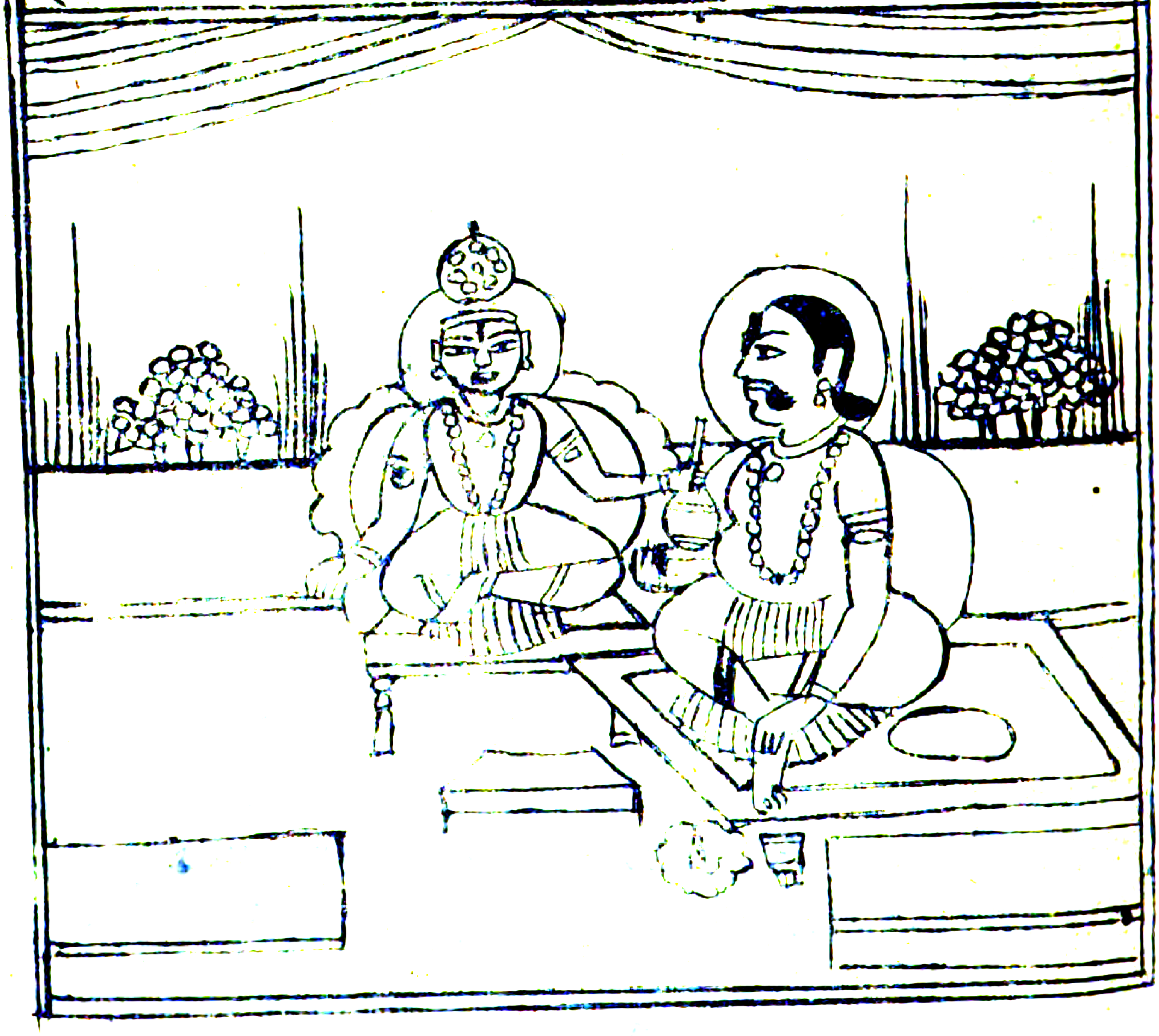

सों कह्यौ जो भगवद जस वर्णन कीयो सो परमानंद स्वामी नें विरह कौ पद गायौ तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी बाललीला गाउ तब परमानन्द स्वामी नें कह्यौ जो राज में कछु समझत नाहीं सो परमानन्द स्वामी नें काहे ते कह्यौ जो ऊपर कहि आए हैं जो ये श्री ठाकुर जी सो बिछुरे हैं सो बिछुरे के दुख की तौ स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताकौ विस्मरन भयो जो काहे ते जो सब लीला विसिष्ट ···

··· पूरण पुरुषोत्तम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून सों घर पधारे हैं सो परमानन्द दास कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुनाई ताकौ कारण कहा जो श्री आचार्य जी महाप्रभून कौ नाम है श्री भागवत पीयूष समुद्र मथनः क्षमः सो श्री भागवत कौ श्री गुसांई जी अमृत कौ समुद्र करिकें वर्णन कीये हैं सो अनुक्रमणिका द्वारा श्री भागवत रूपी समुद्र श्री आचार्य जी महाप्रभून नें परमानन्द स्वामी के हृदय में धर्यो ताते वाणी तो सब अष्ट काव्य की समान हैं और ये दोउ परमानन्द स्वामी और सूरदास जी सागर भये सो याते जो श्री भागवत रूपी अमृत कौ स्वरूप इनके हृदय में श्री आचार्य जी महाप्रभून नें धर्यो सो काहे ते जो सब कोउ सूरसागर और परमानन्द सागर कहते अब परमानन्द दास सों श्री

आचार्यजी महाप्रभू श्री मुख में कहें जो वाल
लीला वर्णन करि सो परमानन्दजी नें ततकाल
वाललीला के पद करिकें श्री नवनीतप्रियाजी के
सन्निधान गाये ॥ सो पद

राग सांमरी

माई री कमल नैन श्याम सुंदर झूलत हैं पलना ॥
वाल लीला गावत सव गोकुल के ललना ॥१॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती ॥ कुं
चित कच भवराकृत लटकत गज मोती ॥२॥∴
अंगूठा गहि कमल पान मेलत मुख माहीं ॥ अ
पनों प्रतिविम्व देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं ॥३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वार वार लाले ॥ परमानन्द
स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्र
सन्न भए फेरि और पद गायो ॥ सो पद

राग विलावल ∴

जसोधा तेरे भाग्य की कही न जाय ॥ जो मूरति व्र
ह्मादिक दुर्लभ सो प्रघटे हैं आय ॥१॥ शिव नारद
सनकादिक महा मुनि मिलवे करत उपाय ॥ ते नं
दलाल धूर धूसरे व पु रहत गोद लिपटाय ॥२॥
रतन जटित पौढ़ाय पालने वदन देखि मुसिकाई
॥ झूलो मेरे लाल वलिहारी परमानन्द जस गाई
॥३॥

राग विलावल

मणि मय आंगन नंद के खेलत दोउ भैया ॥ सो कैसे

वाल लीला के पद परमानन्द दास नें गाए सो सुनि कें श्री आचार्यजी वहुत प्रसन्न भए सो। परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास हे सो परमानन्द दास कों आपने कीर्तन की सेवा दीनी सो परमानन्द दास जी श्री नवनीतप्रियाजी कों नित्य नये पद करि कें भांति भांति के सुनावते जब अनोसर होतो तब परमानन्द दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें पद कीर्तन करैं श्री आचार्यजी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानन्द दास जी ः नित्य सुनते सो ताही प्रसंग के कीर्तन करि कें परमानन्द दास जी सुनावते सो एक दिन परमानन्द दास जी नें श्री ठाकुर जी के चरणार्विंद को महात्म सुन्यौ सो चरणार्विंद के महात्म को कीर्तन करि श्री आचार्यजी महाप्रभून कों सुनायो सुनि के श्री ः आचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्न भए सो पद॥

राग कान्हरो

चरण कमल वंदौ जगदीस गोधन के संग धाए॥ जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥१॥ यह पद संपूरण करि के परमानन्द दास जीनें गायो और श्री आचार्यजी महाप्रभून के ः स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायो॥ सो पद

राग कान्हरो ※

यह मागों गोपीजन वल्लभ यह परमानन्द दास स्वामीनें संपूरण करि कें गायो सो सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर·

कें परमानन्द दास या पद कों सुनाय के व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते व्रज कों अवश्य चलनों ॥

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू यह विचार करेजे व्रज कों पधारवे को उद्यम कीयो सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णदास मेघन परमानन्द दास और यादव दास हलवाई तथा रसोई की सामिग्री संग

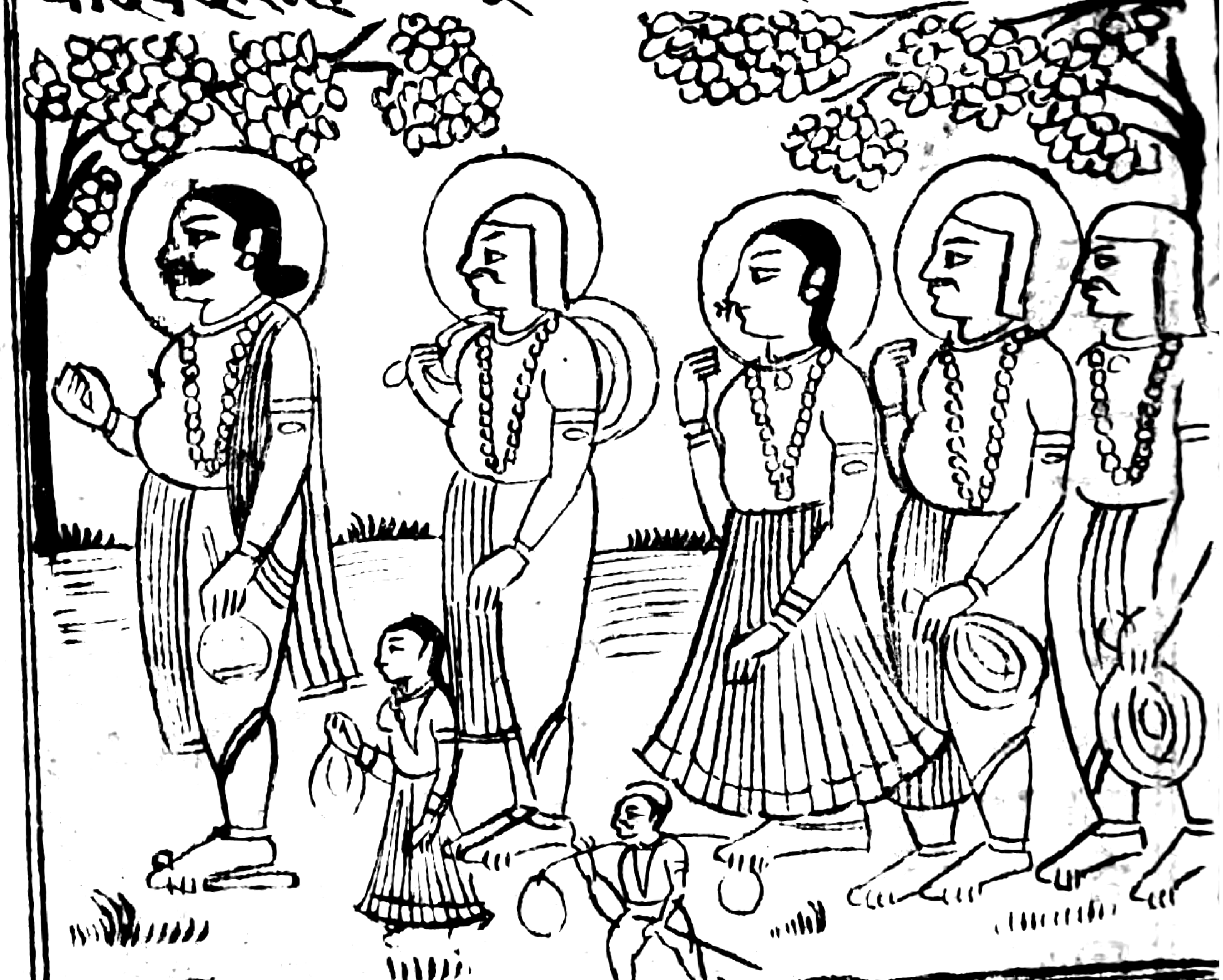

लेकें चले और सब वैस्नव संग ले आप श्री आचार्यजी महाप्रभू व्रज कों पधारें सो व्रज कों आवत परमानन्द दास कों गांव कन्नोज आयो तब परमानन्द दासनें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती

कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आप के अनुग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरो घर हू पावन करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अंतरयामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूर्वक आप कृपा करि कें पधारे सो परमानन्ददास के घर आछी भांति सों श्री आचार्यजी महाप्रभूननें रसोई करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयो पाछें आप गादी तकियान के ऊपर विराजे तब परमानन्ददास सों कह्यो जो कछु भगवद जस गावो तब परमानंददासजी नें मन में विचारी जो या समय श्री आचार्यजी महाप्रभून को मन तो व्रज में श्री गोवर्द्धननाथजी के पास है ताते विरह के पद गाऊं सो विरह को पद ऐसो गायो जामें छिनहूं कलप समान जाय ॥

सो पद राग सोरठ ॥

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ॥ कमलनैन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै ॥१॥ एकबार जाय मिलत माया करि सो कैसें बिसरावै ॥ मुख मुसिकान बंक अविलोकन चाल मनोहर भावै ॥ कबहुक निबड़ तिमर आलिंगन कबहुक पिक सुर गावै ॥ कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहीन उठि धावै ॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अंतरगति मणि माला पहरावै ॥ परमानंद श्यामध्यान करि ऐसें विरह गवावै ॥ +

यह पद परमानन्ददासनें गायो सो सुनिकें श्री

आचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा आई सो जा लीला कौ पद परमानन्द दास नें गायो ता लीला विषें: श्री आचार्यजी महाप्रभू मान भये सो देहानुसंधान न रह्यो सो तीन दिन लों श्री आचार्यजी महाप्रभून कों मूर्च्छा रही सो सवरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्री आचार्यजी महाप्रभून के: दर्शन करे सो वैसें ही वैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्री आचार्यजी महाप्रभू सावधान भए तव सव वैष्णव प्रसन्न भए तव परमानन्ददासजी मन में डर पे जो फेरि ऐसो पद न गाऊ फेरि सूधे पद गाए ॥ सो पद

रागविभाग

माई री हों आनंद गुन गाउं ॥ गोकुल की चिंतामणि माधो जो मांगो सो पाउं ॥ जव ते कमल नैन व्रज आये सकल संपदा वाढ़ी ॥ नंद राय के द्वारे देखो अष्ट महा सिद्धि ठाढी ॥२॥ फूलै फलै सदं वृंदावन काम धेनु दुहि दीजे ॥ मारग मेघ इंद्र वरषावें कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत कथै जनावै ॥ परमानंद दास कौ ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥

और हू पद गायो ॥ सो

राग गौरी ✢

विमल जस वृंदावन के चंद्र कौ ॥ यह पद सम्पूर्ण करि कें गायो फेरि और गायो ॥

राग सारंग ✢

चलिरी नन्द गांव जाय वसिये ॥ यह पद सम्पूरणकरि कें गायो सो पद में यह कह्यौ जो चलरी नंद गांव जाय वसिये सो श्री महाप्रभू जी मुनि के व्रज कों पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत हो श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री यमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे वैठक में तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजे और एक वैठक श्री द्वारिकानाथ जी के मन्दिर के पास है सो भीतर की वैठक है सो रावि के विश्राम मध्य रसोई का ठौर है उहां श्री आचार्य जी महाप्रभून को घर हुतो जव आप श्री गोकुल पधारते तव उहां ई उतरते सो यह भीतर की वैठक है पाछें सव वैष्णवनें श्री यमुना जी स्नान कीये और परमानन्द दासजी हू श्री यमुनाजी कौ जस वर्णन कीये सो पद

राग रामकली

श्री यमुना जी यह प्रसाद हों पाउं ॥ तिहारे निकट रहों निस वासर राम कृस्न गुन गाउं ॥१॥
मंजन विमल पावन जल चिता कुलरव नहाउं ॥ तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत वढ़ाउं ॥२॥
विनती करो यही वर मांगों अधम संग विसराउं ॥ परमानन्द दास फलदाता गगन गोपाल लड़ाउं ॥३॥

राग रामकली

श्री यमुना जी दीन जान मोहि दीजे ॥ सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें श्रीयमुनाजी के परमानन्ददास जी नें वहुत गाए श्री आचार्य जी कें आगें तीर विषें गाए ता उपरांत श्री महाप्रभू जी नें परमानन्द दास कों

कों बाल लीला विसिष्ट श्री गोकुल के दर्शन करवाये सो परमानन्ददास कों ऐसे दर्शन भये। सो सब व्रजभक्त श्री यमुनाजल की गागरि भरि ले जात है और श्री ठाकुरजी मार्ग में खेलत हैं और व्रजभक्तन कों जल की गागरि उठाय देत हैं और उनकी कंकु तोरे हैं याभांति सों दर्शन भए सो तैसोई पद श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें गायो सो पद

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चन्द्रावलि नारी॥ मारग खेलत मिले घनस्याम मुरारी॥१॥ नैनन सों नैंना मिले मन रह्यो है लुभाई॥ मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न जाई॥२॥ तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट॥ परमानन्द ऐसी मिली जैसी गुड़ में चेंट॥३॥

राग सारंग

ग्वाल नैंक टेको मेरी बैंया॥ औघट घाट चल्यो नहि जाई रपटत हों कालिन्द्री महियां॥१॥ यह पद सम्पूर्ण गाकरकें ऐसे पद गाये ता पाछें परमानन्ददास नें बाललीला के पद बहुत गाये और श्री गोकुल को स्वरूप जा में आवे ऐसो पद गायो॥ (सो पद)

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु व्रज बानी॥ जाके भुवन बसत त्रिभुवनपति राजा नन्द जसोधा रानी॥१॥ गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी॥ गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी॥२॥ गावत चतुरानन जद नायक गावत शेष सहस्र मुः

रवास ॥ मन क्रम बचन प्रीत यह अम्बुज अंब गावत
परमानन्द दास ॥ ३ ॥ यह पद परमानन्द दास नें गा
ये पाछें और पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति गृह आवति गोपीजन ॥ वासर ताप निवार
न कारन बारंबार कमल मुख निरखन ॥ १ ॥ चाहत
पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसन मन
हीं मन ॥ लोंन उतारि दोउ कर वारि फेर अपनो तन
मन धन ॥ २ ॥ लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम वि
बस लागे दृग ढरकन ॥ लली लै पलना पोढावन कें
अरु कमाय पोंटे सुन्दर घन ॥ ३ ॥ देत असीस सक
ल गोपीजन चिरंजीवो लोग गज मुन ॥ परमानन्द
दास को ठाकुर भक्त बछल भक्त मन रंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर ॥

चितै चितै चित चोरौ माई ॥ यह पद सम्पूरण कर
कें गायो सो ऐसे पद परमानन्द दास नें बहुत गाये
ता पाछें श्री गोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परम
नन्द दास श्री गोकुल ऊपर बहुत आसक्त भये मव
ऐसे पद गाये जामें श्री आचार्य जी महाप्रभून को
थना कीनो जो मोकों श्री गोकुल में आय कें चरणा
विंद के नीचे राख्यो नित प्रति प्रभून के दर्शन करो म
लीला विसिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं और यह पद गा
यो सो पद ॥

राग कान्हरो

यह मांगों जसोदानंदन ॥ चरणा कमल मन मन मधु

। याछवि नैनन पांऊ दर्शन ॥१॥ चरण कमल की सेवा ठौर तन राजत विजे लता घन नंदन ॥ वृषभानु [illegible] पन ॥२॥ ब्रजवास वा जमुना जल अचिवो श्री वल्लभ कों दास यही पन ॥ महाप्रसाद पाउं हरि गुन गाऊं परमानन्द दास जीवन धन ॥३॥

राग कान्हरो

अब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन तब लग गोकुल गांव गुसांई ॥ यह पद सम्पूरण करके प्रार्थना के पद गाये तब कितनेक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री गोकुल में विराजे ता पाछें सब वैस्नवन कों संग लेकें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

वार्ता प्रसंग ३

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो आवत ही परमानन्द दास ने श्री नाथ जी कों श्री मुख देखि कें वहां के वहां रहे तब श्री महाप्रभू जीने श्री मुख सों कह्यो जो परमानन्द दास कछु भागवत लीला गावो तब परमानन्द दास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊ तब ऐसें विचारो जो जामें प्रथम अवतार लीला पाछें चरणार्विंद की वंदना पाछें भागवत वर्णन कों स्वरूप ता पाछें बाल क्रीड़ा ता पाछें श्री ठाकुर जी को महात्म ऐसो पद परमानन्द दास नें गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

मोहन नन्द राय कुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुञ्ज नाय

क भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरण सरोज वन्दो श्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल ॥२॥ बलिराम सहित विनोद लीला सें करहेता दास परमानन्द प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥ और आसक्ति कौ गायो।

राग पूरवी ॥

मेरो माई माधौ सों मन लाग्यो ॥ मेरो नैनं और कमल नैन कौ दू कठौरो करि सान्यो ॥१॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्यौतो अपने आन्यों ॥ गोविंद चरण के कारण वैर सबन सों ठान्यो ॥२॥ अब कों भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यो जैसें पान्यो ॥ परमानन्द मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यो ॥३॥

ऐसे पद परमानन्ददास नें गाए ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू सैन आरती करि श्रीनाथजी कों पोढ़ाये तव अनोसर करि आप नीचें पधारे तव परमानन्ददास हू नीचे आय बैठे तव रामदास भींतरियानें परमानन्ददास कों महाप्रसाद दूध पठायो सो दूध परमानन्ददास जी लेवे लागे तव तातो लाग्यो तव परमानन्ददास जी नें सीरो करि कें लीयो ता पाछें रामदास नें पूछी जो तुमकों महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो तव परमानन्ददास नें कही जो हां आयो परि दूध बहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुरजी कैसे आरोगत होंगे तातें दूध तो सुहातो भलो तव रामदास नें कह्यो जो बहुत आछो आप भगवदीय हो जैसें आज्ञा करोगे तैसें करेंगे तव सकारें सब सेवक

स्नान करि कें श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवामें तत्पर भये तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें स्नान करि कें श्री गिरराज उपर पधारे तव श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ जगाए तव प्रासमय परमानन्ददासजी जाय कें श्रीठाकुरजी के जगायवे कौ पद गायो सो पद ॥

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखौं तेरो ॥ पाछें गृहकाज करौं नित्य नेम मेरो ॥१॥ विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयो भान ॥ गुंजत अलि पंकज वन जागिये भगवान ॥२॥ द्वारें ठाडे वंदीजन करत हैं पुकार ॥ वंस प्रसंग गावत हरि लीला सार ॥३॥ परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप ॥ वेद पुराण पढत महिमा लीला अनूप ॥४॥

यह पद परमानन्ददास नें गायो फिर कलेउ कौ पद गायो ॥ सो पद

राग रामकली

पिछवारें ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ ॥ कमल नैन प्यारौ करत कलेउ कोटन मुख लौं आयो ॥१॥ अरी मैया गैया एक वन व्याय रही है वछरा उहांही वसायो ॥ मुरली लईन लकुटिया न लीनी अरवराय कोउ सखान बुलायो ॥२॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आय कि धौं अपनें पायो ॥ फूलौं न अंगस मातर सव त्रिभुवन पति सिर छत्रजो छायौ ॥३॥ मिल वैठे संकेत सघन वन विविधि भांति कीयौ मन भायो ॥ परमानन्द सयानी ग्वालनि उलटि अंग लि

रधर पिय प्यारौ ॥४॥

ऐसे पद परमानंद दास नें गायौ ता पाछें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तव परमानन्द दास नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी सों पूछी जो आप तातौ दूध क्यों आरोगत हौ तव श्री नाथ जी नें कह्यौ जो थे हम कों समर्पत हैं सो आरोगत हैं ता पाछें परमानन्द दास जी नित्य कीर्तन करि कें सुनावते तव ता समय एक राजा दर्शन कों आयौ सो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तव फेरि आय कें रानी सों कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर वहुत सुन्दर हैं ताते तू जाय कें दर्शन करि आउ तव रानी ने कही जो जैसें हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करों तव राजा ने कही जो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तव रानी ने मानी नहीं तव राजा नें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों वीनती कीनी जो महा: राज में तो रानी सों वहुत कहत हों परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपा करि कें दर्शन करावौ तो यह करे तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कही जो यहां से आवौ जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे तव राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सव लोग सरकि गये तव रानी दर्शन करिवे लागी तव इतने में श्री गोवर्द्धन नाथ जी नें सिंह पौर के किवाड़ खोल दीए सो सव भीर दौरि कें रानी के ऊपर परी सो रानी के सव वस्त्र निकस परे

और बहुत लज्जित भई तब राजा नें रानी सों कही जो में नें तो तोसों पहिलें ही कह्यो हुतो जो श्री ठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है ये ब्रज के ठाकुर हैं इन नें काहू को परदा राख्यो नाहीं तब वा समय परमानन्द दास जीनें पद गायो ॥

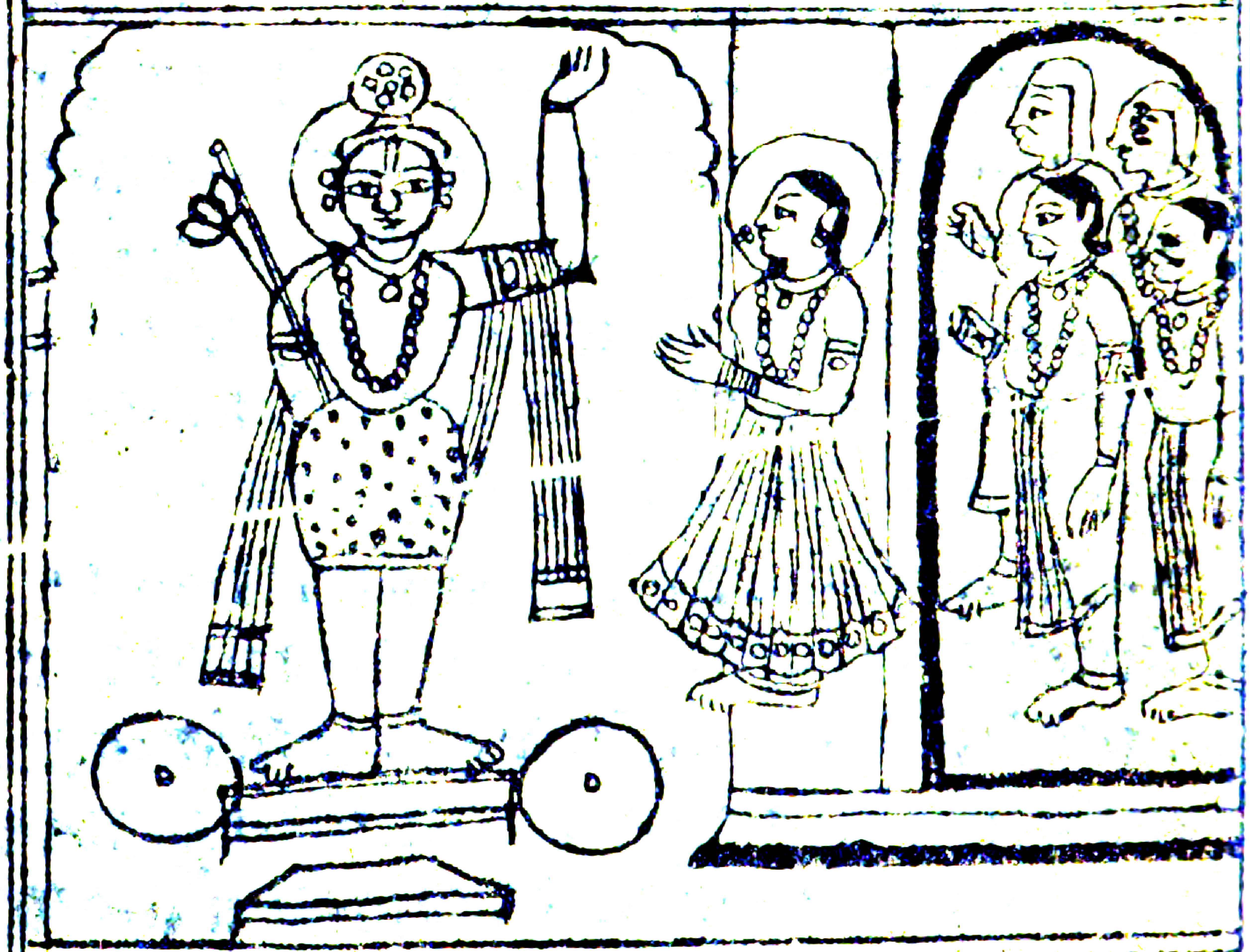

रागदेवगंधार

कौन यह खेलवे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहिन कानि ॥१॥ यह एक तुक परमानन्द दास जी नें गाई हुती तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानन्द दास ऐसें कहो जो भली यह खेलवे की बानि ॥ तब परमानन्द दास नें ऐसो ही पद गायो ॥ (सो पद)

रागदेवगंधार

भली यह खेलबे की बानि ॥ मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥१॥ अपने हाथ लै देत हैं चनवर दूध दही घृत सानि ॥ जो बरजों तो आंख दिखावै पर धन कौ दिन दान ॥२॥ सुनरी जसोधा सुत के करतब पहले मांट मथानि ॥ फोर डारि दधि डारि आजर में कौन सहै नित हानि ॥३॥ ठाढी देखत नंदजू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥ परमानंद दास जानत है बोलि बूझि धों आनि ॥

यह पद परमानन्द दास नें गायौ ता पाछें कितेक पद गाए जो जो लीला श्री ठाकुर जी नें करी सो ता ता लीला के पद परमानन्द दास ने गायो सो एक दिन भगवदीय रामदास जी और कृष्णदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलकें परमानंद जी जहां रहतहुते तहां आये सो भगवदीय आए जानि कें परमानन्द दास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बड़ो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो काहे ते जो श्री ठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा बिराजत हैं ताते भगवदीयन की कृपा होय तो श्री ठाकुर जी अनुग्रह करैं जो ये सब भगवदीय मेरें घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करी चाहिये जो ऐसो तो कछु नाहीं जो न्योछावरि करों जब यह विचार कें परमानंद दास नें ऐसें ही पद कह्यो सो पद ॥

रागहमीर

आये मेरें नन्द नंदन के प्यारे ॥ माला तिलक मनोहर बानों त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥
प्रेम सहत वसत मन मोहन नैंकहूं टरत न टारे ॥ हृदय कमल के मध्य विराजत श्री व्रजराज दुलारे ॥२॥
कहा जानें कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥ परमानंद प्रभु करी न्यौछावर वार वार हों वारे ॥३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आए भगवदीयन कों विदा कीये ता पाछें ऐसी रीत सों परमानन्ददास नें श्रीनाथजी की भली भांति सों सेवा कीनी सो वे परमानन्द दासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहां तांई लिखियें ॥ *

वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैष्णव ८२॥ संबंध ॥१६६॥

अब श्री आचार्यजी महा
प्रभून के सेवक कुंभ
नदास गोरवा ति
नकी वार्ता
है॥

सो वे कुंभनदास जी श्री गोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतौ गांव है तामें रहते सो जमुनावतौ नाम या गाम कों काहेते है जो जमुनाजी को प्रवाह सारस्वत कल्प में या के निकट हुतौ ताते जमुनावतौ नाम या गाम कौ है तामें कुंभनदासजी रहते और परासोली चंद सरोवर के ऊपर उनकी नदासजी की धरती हुती सो वहां खेती करते सो कुम्भनदास

जो श्री गोवर्द्धननाथ जी के परमसखा हुते और कृपापात्र हुते सो अवही श्री गोवर्द्धननाथ जी प्रगट होय के श्री महाप्रभूजी कों बुलावेंगे तव ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे सो एक समय श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे सो झारखंड में श्री गोवर्द्धन नाथजी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं ॥ नागदमन, इन्द्र दमन, देव दमन, तिनके मध्य में हम देव दमन हैं सो मेरो नाम हैं ताते तुम आय कें हम कों पधरावो और हमारी सेवा को प्रकार प्रगट करो तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां ही राखि के वेग पधारे तव दामोदर दास हरसानी कृष्ण दास मेघन गोविंद दुवे जगन्नाथ जोसी रामदास ये पांच वैष्णव संग हुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू श्री गोवर्द्धन की तरहटी आय कें सद्दू पांडे के चोंतरा ऊपर विराजे सो आगें श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नरो श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनको श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपी और व्रजवासी व्रज में श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक वहुत भए और कुंभनदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून को सरण आये सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री गोवर्द्धननाथ जी को एक छोटो सो मन्दिर सिद्ध करवायो तामें श्री नाथजी कों पधराये और रामदास चौहान कूं सेवा की आज्ञा

दीनी और सव व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्री गोवर्द्धन नाथजी आरोगत हुते और रामदास कों जो भगवद इच्छा ते जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते और जे व्रजवासी लोग श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सव वातन सों यत्न राखियोंः और सेवा में तत्पर रहियों और कुम्भनदास कों और सव सेवकन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये विन महाप्रसाद मति लीजियों तव या भांति सों आग्या करि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा भारखंड में राखी हुती अव कुंभनदासजी नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्री गोवर्द्धनाथजी के दर्शन कों आवते सो कुंभनदास जी कीर्तन वहुत नीके गावते जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कुंभनदास जी कों नाम सुनायो और ब्रह्मसंबंध करवायो तव कुम्भनदासजी नित्य नए पद करि कें श्री .. नाथजी कों सुनावते और श्री नाथजी कुंभनदासजी के घर पधारते और वहुत क्रीड़ा करते खेलते वार्ता करते और वहुत कृपा कुंभनदासजी के ऊपर करते अव रामदासजी श्री गोवर्द्धननाथजी की सेवा करन लागे सो एक समय म्लेछ कौ उपद्रव भयो सो यहां मानिकचंद पांडे सद्द पांडे रामदास चौहान कुंभनदास सव मिल कें विचार कीयो

जो यह मलेछ आयो है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है तब सबने कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों आपनों विचारौ कहा होत है ताते श्रीनाथजी कौं पूछौ जो महाराज कहा करें तब श्रीनाथजी नें आज्ञा दीनी जो हमकों यहां ते ले चलौ हम यहां ते उठेंगे तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहां पधारोगे तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोंड के घने में चलेंगे तब एक भैंसा मंगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धननाथजी कौं बैठारे तब एक ओर ते तो रामदास पकरें रहे और एक ओर ते कुंभनदास जी पकरें रहे और

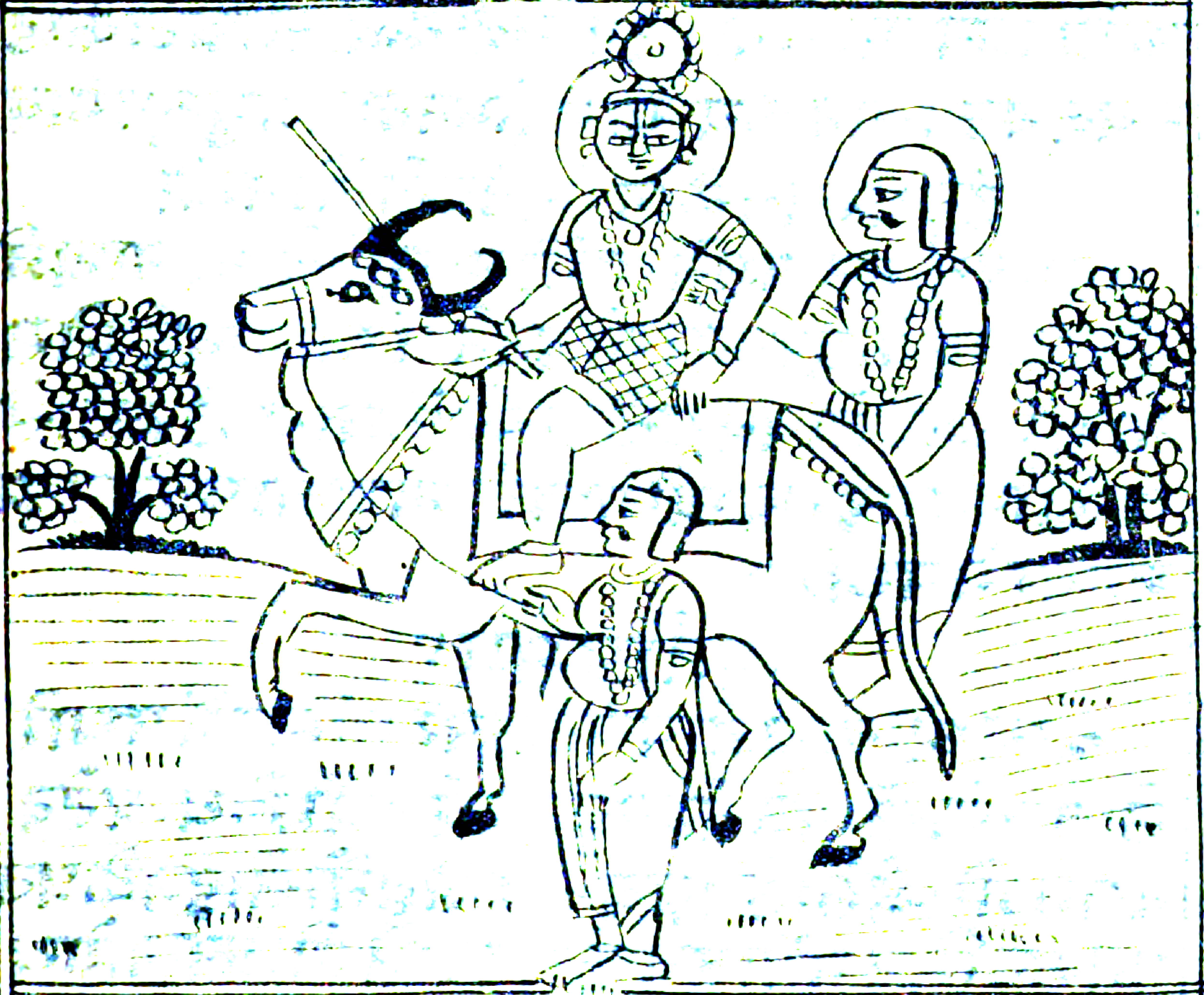

सब सेवक संग चले जात हैं तहां घने में कांटे बहुत हुते सो उहां कांटेन में बैठे सो वस्त्र सबन के फाटिग

ये और सरीर में कांटे लगे दुख वहुत पायो सो घनेमें एक तालाव हुतो तहां रूखन कौ एक चौक है तहां वड़े रूख नीचे श्रीनाथजी विराजे सो कछूक सामिग्री संग नह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करूआ भरि कें आगें धरि कें सव वैष्णव वैठे तव श्री गोवर्द्धननाथजी नें कुंभनदास सों कह्यो जो कुंभनदासजी कछु गावो तव कुंभनदासजी तो मन में कुढ़ रहे हुते तव एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो पद

राग सारंग

भावत है तोय टेड़ कौ घनों ॥ कांटे लगे गोखरू बूढ़े फट्यो जात यह तनों ॥१॥ सिहां कहा लोकटी कोडेर यह कहा वानक वन्यो ॥ कुंभनदास प्रभु तुम गोवर्द्धन धर वह कौन रांड ढेडनी कौ जन्यो

यह पद कुंभनदास नें गायो सो सुनि कें श्रीनाथजी मुसिक्याय कें चुप करि रहे इतने में श्री गोवर्द्धन तें समाचार आये जो वह मलेछ की फ़ौज आई हुती सो पाछी फिर गई तव श्री गोवर्द्धननाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे ॥

वार्ताप्रसंग १

अव श्रीनाथजी पर्वत ऊपर मन्दिर में पधारे सो व्रज के लोगन कों वहुत हर्ष भयो जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रतापतें सव मिट गयो तव कुंभनदासजी प्रसन्न होय कें पद गाए सो पद श्री गोवर्द्धन नाथजी कों सुनाये ॥ +

राग श्री ॥ चर्चरी

जयति जयति हरि दास सर्व धरने ॥ यह पद सम्पूरन करिकें गायो पाछें और पद गाये सो पर

राग सारंग ॥

कृष्ण तंनतर या तीर ॥ यह पद सम्पूरन करकें कुंभनदास नें गायो पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदासजी देव दमन कौं सुनावते तव कुंभनदासजी के पद सव जगत में प्रसिद्धि भये सो सव लोग इनके पद गावते तव इनकों पद काहू कलामत ने सीख्यो सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के आगें कुंभनदासजी कौ पद कीयो भयो पद वा कलामतने गायो सो सुन कें देसाधिपत कौ चित्त वा पद में गड गायो और माथौ धुन्यौ जो ऐसे हू महापुरुष हैं गए हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं तव वा कलामतने कह्यो जो अजी साहव अवहू हैं सो सुनि के देशाधिपति वहुत प्रसन्न भयो और वा कलामत सों कह्यो जो वे: कहां है तव वा कलामत नें कही जो श्री गोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गांव है तहां वे रहत है तव देसाधिपतिनें कही जो यहां वुलावो हम उनसों मिलेंगे तव देसाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुंभनदासजी के वुलायवे कों भेजे तव कुंभनदासजी तो घर हुते परैसोली में वैठे हुते सो मनुष्यन नें उहां वताय दीये तव कुंभनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो तव कुंभनदासदास ने कही जो भैया में कछू देशाधिपति कौ चाकर तो नाही मेरो देसाधिपति सों

कहा काम है तव देसाधिपति के मनुष्यन नें कही जो वावा हम तो काम कछु समझत नाहीं परि हम कों देसाधिपति कौ हुकम है जो कुंभनदास कों ले आवो ताते यह पालकी है यह घोड़ा है जा पर चाहो ता पर वैठि कें चलिये हम तो आये हैं सो आप कों ले जांयगे तव कुंभनदास ने मन में विचार कीयो जो विना जाये तो निर्वाह न होयगो सो कुंभनदास जी ततकाल उहां ते पनहीं पहरि कें चले तव कुंभनदास जी कों जो लेवे कों आये हुते तिन नें कही जो वावा सवारी में वैठिये तव कुंभनदास नें कह्यौ जो भैया मैं तो कवहूं वैठ्यो नाहीं पाउं ऐसें ही चले सो फतेपुर सीकरी आय पहुंचे सो देसाधिपति के डेरा हुते तहां गए तव मनुष्यन नें देसाधिपति सों कह्यो जो कुंभनदास जी आये हैं तव देसाधिपति नें कुंभनदास सों कही जो कुंभनदास जी आवो वैठो सो आय वैठे सो वह स्थल कैसो है जामें जड़ाव की रावटी तामें मोतीन की झालरि लगी है ऐसो स्थल हो तामें वैठे तव मन में वहुत दुख लाग्यो और कह्यो जो यासों तो हमारे व्रज के हींसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्री गोवर्द्धननाथ जी खेलत हैं तव इतने में देसाधिपति वोल्यो जो कुंभनदास जी तुमने विसन पद वहुत कीये हैं सो मैंनें तुम कों वुलायो है ताते तुम कछु विसन पद गावो तव कुंभनदास जी तो मन में कुढ़े हुते जो विचारें जो कहा गाउं मेरी वाणी के भक्ता तो श्री गोवर्द्धनधर हैं और कछु गाए विना सों काम चलैगो नाहीं ताते ऐसो गाउं जो कवहूं

मेरौ नाम न लेय काहे तें जो याके संगते मेरे प्रभू छूटे हैं तातें कछू कठोर वचन कहूं जो बुरौ मानेगो तो कहा करैगो तब यह मन में आई जो जाको मन मोहन संग करै ग कोके सब से नहीं सिरसे जो जग वैर परे यह विचारिकें ता समय कुंभनदासजीनें एक नयो पद करि कें गायौ। सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ॥ आवत जात पन्हैया
टूटी बिसर गयौ हरि नाम ॥१॥ जाकों मुख देखें दुख
लागे ताकों करन परी परनाम ॥ कुंभनदास लाल
गिरधर बिन यह सब झूंठौ धाम ॥२॥

यह पद गायौ सो सुनि कें देसाधिपति अपने मन में बहुत कुढ्यौ और कह्यौ जो इनकों काहू बात कौ लालच होय तौ ये मेरो जस गावें इनकों तौ अपने परमेश्वर सों सांचों स्नेह है इतनों कहि कें देसाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनी तब कुंभनदास जी उहां तें चले सो मार्ग में आवत अति क्लेश जो कबहों प्रभून कौ श्रीमुख देखौं सो ऐसो विचार कें कुंभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायौ सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहूं देखिहौं इन नैननु ॥ सुन्दर श्याम मनोहर मूरति
अंग अंग सुख दैननु ॥१॥ वृन्दावन विहार दिन दिन
प्रति गोप वृन्द संग लैननु ॥ हंसि हंसि हरषि पतो
वन पावन बांटि बांटि पय फेननु ॥२॥ कुंभनदास कि
ते दिन बीते किये रेनु सुख सैननु ॥ अब गिरधर बि

न निस और वासर मन न रहत कौं चैननु ॥ ३ ॥

यह पद मार्ग में गावत आए सो आयकें श्रीगोवर्द्धननाथ जी के दर्शन कीये और दोय दिन लों दर्शन न भए सो कुंभनदास जी को दोय जुग की वरावर वीते सो श्रीमुख देखत ही सव दुख विसर गयो तव एक पद गायो सो पद ॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखो नन्दकुमार ॥ ता दिन ते सव भूलि गयें हों विसर्यो पन परवार ॥ १ ॥ विन देखें हों विकल भयो हों अंग अंग सव हारि ॥ ताते सुधि है सामरी मूरति की लोचन भरि भरि वार ॥ २ ॥ रूपरास पर मित नही मानों कैसें मिमैलों कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर मिलियें वहुरि री माई ॥ ३ ॥

राग धनाश्री

हिलगन कठिन है या मन की ॥ जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सव तन की ॥ १ ॥ धर्म जाउ अरु लोग हंसो सव अरु गावो कुलगारी ॥ सो क्यों रहे ताहि विन देखें जो जाको हितकारी ॥ २ ॥ रसलुब्धक निमख न छांडत ज्यों आधीन म्रग गानों ॥ कुंभनदास सनेह मरम श्रीगोवर्द्धनधर जानों ॥

ऐसे पद वहुत कुंभनदास जी ने गाये सो सुनि कें श्रीनाथ जी वहुत प्रसन्न भए और कहो यह मो विन रहत नाहीं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और एक समय राजा मानसिंह सव ठौर ते दिग्विजय

करि कें आपने देस कूं चले तव मन में विचारे जो वहुत दिन में आये हैं तातें मथुरा विन्द्रावन होय कें चलनों सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आए तव विश्रांत स्नान करि कें श्री केसोरायजी के दर्शन करि कें वृन्दावन चले सो उष्मकाल के दिन हुते तव वृन्दावन के सव महंतन ने जानी जो आज यहां राजा मानसिंह दर्शन कों आवैगो सो यह जानि कें श्री ठाकुरजी कों आछे आछे जरी के वागे वहुत आभरन पहराये पिछवाई चंदोवा सव जरीन के वांधे इतने में राजा मानसिंह दर्शन कों आयो सो भीतर मन्दिर के आय कें श्री ठाकुरजी के दर्शन कीये सो उष्णकाल के दिन हुते सो वहुत गरमी पड़े सो ता समय राजा मानसिंह पै ठाडो न रह्यो गयो सो ऐसे दर्शन चार पांच जगह वड़े हुते सो तहां सव ठौर दर्शन करि सव ठौर ते विदा होय कें आपने डेरा में आये सो डेरा आय कें मन में विचारे जो अवही कूंच करें सो उहां सों असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाव आये सो मानसीगंगा ऊपर डेरा कीये सो तहां श्री हरदेवजी के दर्शन कीये सो वहां वृन्दावन के महंतननें वड़े ठाठ वनाये हते तेसेंई यहां ठाठ वनाय राख्यो हतो सो राजा मानसिंह तहां ते दर्शन करि कें चले तव काहूनें कही जो महाराज यहां श्री गोवर्द्धननाथजी वहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहां आप दर्शन कों चलौ तव राजा मानसिंह ने कह्यो जो यहां तो अवश्य चलनों या ठाकुर सव व्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने तव तहां ते चले सो गोप

लपुर गाम आए तब आयकें पूछी जो दर्शन कौ कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे तब यह सुनिकें राजा मान सिंह श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये सो उष्णकाल के दिन मार्ग के श्रमित होके चले आये सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयो हुतो इतने में भोग के किवाड़ खुले सो राजा मान सिंह कों मणिकोठा में लेगये तिन दिनन में श्रीनाथजी की सेवा वैभव सों होती हुती बड़ो मन्दिर सिद्ध भयो हुतो श्री गोवर्द्धननाथजी के आगें गुलाब जल कौ सिंगार भयो हुतो निज मन्दिर मणिकोठा तिबारी सब जलमय होय रहे हुते सो ता समय राजा मानसिंह

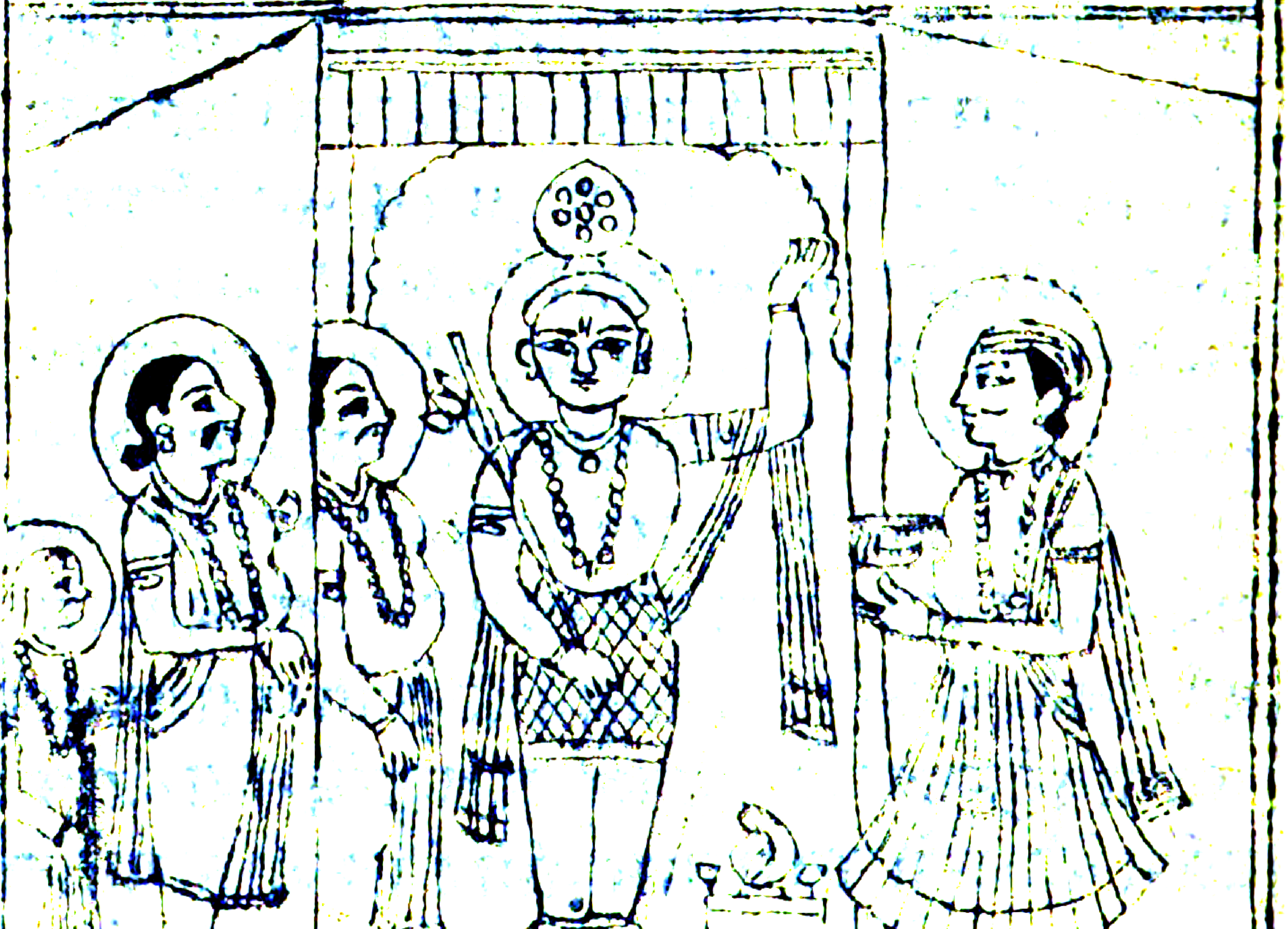

दर्शन कों गये हुते सो श्री गोवर्द्धनाथ जी के दर्शन करि कें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई बड़ो चैन भयो और श्री गोवर्द्धनाथ जी को श्री मुख देखि कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो साक्षात पूर्णब्रह्म श्री कृष्ण वृन्दावनचन्द्र श्री गोवर्द्धनाथ जी हैं आगे श्री भागवत में सुन्यो हुतो सो आज देखे आज है दिन सो धन्य है और आज मेरो बड़ो भाग्य है और मन में कह्यो जो यह भोग को समय है सो तो प्रभून की राजधानी है समय है सो वे प्रभू विराजे हैं आगें ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े मणिकोठा पे दर्शन करत है और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंह को मन वा पद में गाढ गयो हुतो जैसोई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और जैसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते सो पद ॥

राग नट ॥

रूप देखि नैना पल लागे नहीं ॥ गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥१॥ कहा कहों कछू कहत न आवे चित चोर्यो मोग येदही ॥ कुंभनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सों कही ॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हर्यो हो ॥ हों न्हाइ अपने भवन सों बैठी निरखि वदन अरसा विसर्यो हो ॥१॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न पर्यो हो ॥ कुंभनदास प्रभू गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम

पियूष भस्यो हो ॥ ४ ॥

ऐसे पद कुंभनदासजी गावत हैं इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके तब राजा मानसिंह दंडौत करि के अपने डेरा में गयो तब कुंभनदासजी संध्या आरती के दर्शन करिकें अपनी सेवा सों पहुंचि कें अपने घर कों गये तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें आपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्री गोवर्द्धननाथजी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो यह श्री

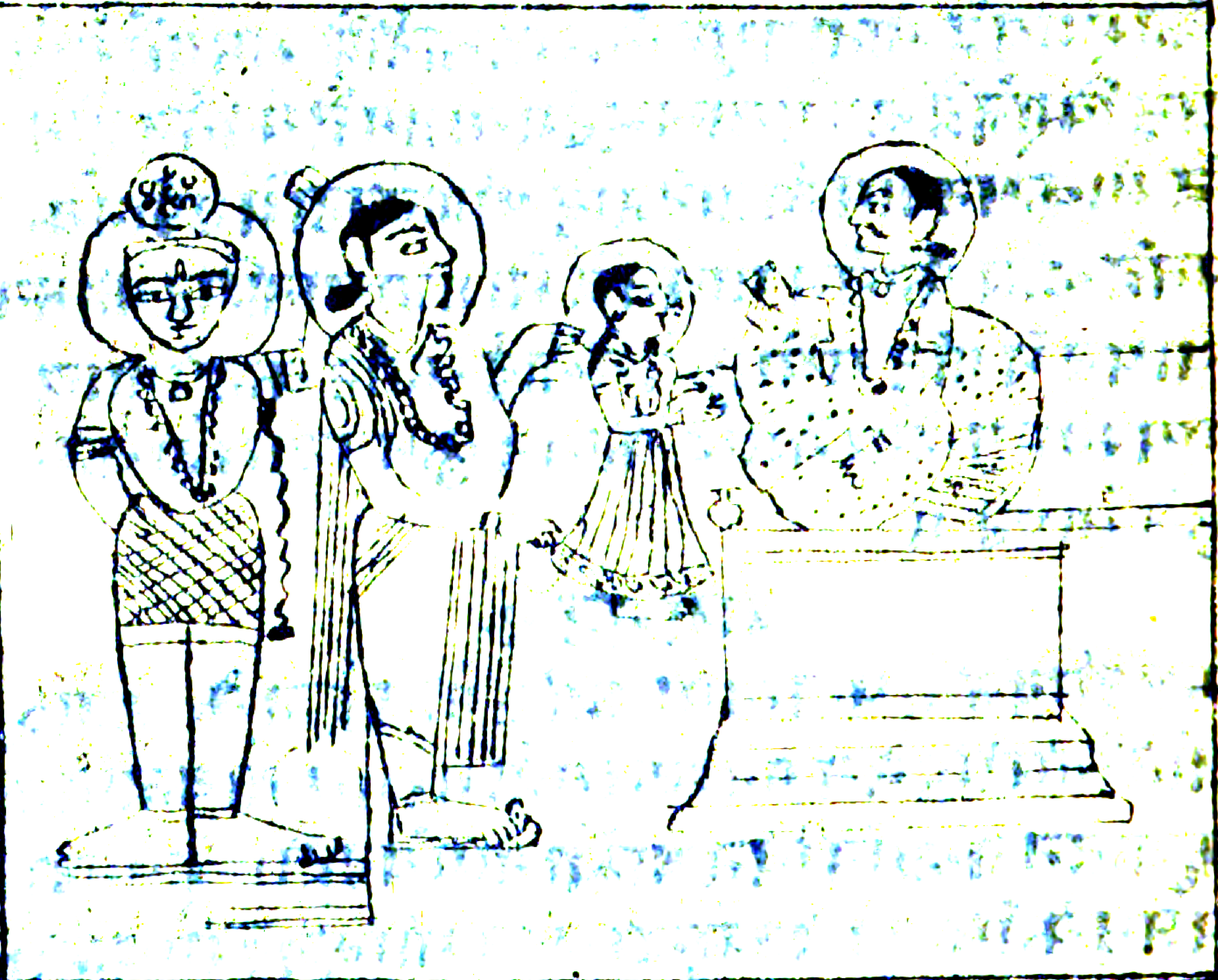

गोवर्द्धननाथ जी के आगें कौंन गावत हुतो इननें ऐसे विमन पद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत तब काहू नें कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभनदास नाम है सो आप सुने हो होयंगे देसाधिपति सो

मिले हुते सो है तब राजा मानसिंह नें कही जो हम कुंभनसों मिलें तो आछो तब राजा मानसिंह सवारे उठ सो श्री गिरराज की परिक्रमा कों निकसे जो परासोली आए सो परासोली में कुंभनदास जी न्हाय के बैठे इतने में श्री गोवर्द्धननाथजी पधारे सो श्री मुख सों कहें जो कुंभनदास जी होतें सो एक बात कहूंगो: तब इतने में राजा मानसिंह आयो सो कुंभनदास जी कों प्रनाम करिके बैठो और श्रीनाथ जी तो उहां ते दूर जाय ठाडे भए सो श्रीनाथ जी तो एक कुंभनदास जी कों देखें हैं और इनको भतीजो कों देखें हैं तब कुंभनदास जी की दृष्टि तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहां कुंभनदास जी देखवे करें तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं तब कुंभनदास जीनें कह्यो जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो जा बात कहहुते सो तो भाजि गये सो अब कहो तब दूर ते श्रीनाथजी कहें जो कुंभनदास मैं बात कहूंगो तब कुंभनदासजी प्रसन्न भये और भतीजी सों कह्यो जो अपुकी आरसी लाउ तिलक करों तब भतीजीनें कह्यो जो बाबा आरसी तो पड़िया पी गई तब राजानें कुंभनदास की भतीजी सों कह्यो जो अरी छोरी पड़िया कहां पी गई तब वह कठौटी में पानी लायके कुंभनदास जी के आगें धर्यो तब कुंभनदास जी वामें देखिकें तिलक करन लागे इतने में राजा मानसिंह नें अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी के आगें धरी और कह्यो जो बाबा यामें देखिकें तिलक करि

ये तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैया याकों हों कहा करूंगो हमारे तो यहां छानि के घर हैं ताते कोउ याके पीछे हमारो जीव लेयगो ताते हमें तो यह नाहीं चहियत हैं तब राजा मानसिंह नें इनके आगे सोने की थैली धरी तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया हम कों तो यह नाहीं चहियत हमारे तो यह खेती है ताको धन आवत हैं सो खात हैं तब राजा मानसिंह नें कह्यो जो भलो आप को गांव है ताकों लिखवाहों करिदेउं तब कुंभनदास नें कह्यो जो भैया हौं तो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं तब फेरि राजा मानसिंह नें कह्यो जो बाबा कछु तो आज्ञा करो तब कुंभनदास नें कह्यो जो हमारो कह्यो करोगे तब राजा मानसिंह नें हाथ जोर कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो तब कुंभनदास नें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति आइयो तब राजा मानसिंह नें कह्यो जो धन्य है माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिरो सो बहुत देखे परि भगवद भक्त तो एक यही देखे यह कहि कें राजा मानसिंह कुंभनदास कों दंडौत करिकें उठि चल्यो तब फेरि आय कें कुंभनदास सों श्री नाथजी नें यह बात कही और बहुत प्रसन्न भये तब फेरि कुंभनदास जी श्री गिरराज ऊपर आय कें श्रीनाथजी की सेवा में तत्पर भये॥

वार्ताप्रसंग ३

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों वृन्दावन के महंत हरिवंश भक्त आये सो यह जानि

कें आये सो महापुरुष हैं इनसों श्री ठाकुर जी बोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकौ सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीये ताते ऐसे पद श्री ठाकुर जी के साक्षात कार विना न होंय यह जानि कें कुंभनदास सों मिलवे आये सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भए और कह्यौ जो कुंभनदास जी तुमनें विमल पद बहुत कीये हैं सो हमनें आय कें सुने हैं और आप के पद श्री स्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोई स्वामिनी जी कौ पद सुनावौ तब कुंभनदास जी ने श्री स्वामिनी जी कौ पद करि कें गायौ सो पद ✣

राग राम कली

ताल चरचरी ✣

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य की वा वदन पर कोटि सत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर सिंह सत कोटि उपन्योंछावर उतारो मत्त सत कोटि चालि पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥१॥ कीर दश कोटि दशानन परिकहिन वारों पंक कें दूर चहूक सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारों ॥ नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि करी जुगल परवार नें नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारों ॥२॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन खसिरव अति अद्भुत सुठान कहां लगि समारों ॥ लाल गिरधर कहत मोहि तोहि लों जीवह रूप छिन छिन निहारों ॥३॥ ✣

✣

✣ यह पद कुंभनदास ने गायौ सो सुनि कें महंत बहुत ही रीझे

और कहैं जो हमनें श्री स्वामिनीजी के पद वहुत कीये हैं परि वहां उपमा दीनी है और वार फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप वड़े महापुरुष हो आप की सराहना कहां तांई करिये वा महंत ने कुंभनदास की वड़ी वड़ाई करी वहुत रीझे ता पाछे वे महंत आदि सव कुंभनदास जी सों विदा होय कें अपने घर गये ॥

वार्ताप्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री गुसांईजी श्री गोकुल में अपने घर ते श्री नवनीतप्रियाजी सों आज्ञा मांगि कें विदेसार्थ द्वारिका कों पधारे सो श्री गुसांईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे सो श्रीनाथजी कों सेवा सिंगार कीये ता पाछें आप भोजन करिकें गादी उपर विराजे तव सव सेवक दर्शन कों आये तव वात चलत में कुंभनदास जी की वात चली तव काहू वैष्णव नें कह्यो जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को वहुत संकोच है सात वेटा हू हैं और उपजत तो एक खेती की है ताको धन आवत है तासों निर्वाह करत हैं सो यह वात श्री गुसांईजीने अपने मन में राखी ता पाछें उत्थापन के समय कुंभनदासजी दर्शन कों आयें तव श्री गुसांई अपने श्री मुख सों कहैं जो कुंभनदास हम श्री द्वारिका रणछोड़जी के दर्शन कों पधारेंगे और विदेस हू होयगो वैष्णवने वहुत करिकें लिख्यो है ताते जो तुम संग चलौ तो विदेस में भगवदीय कों ग्रह काल वाधा न होय तव भगवदीय को काल व्यतीत होजाय कछू जान्यो न परै और मैं सुन्यो है जो कछु तुम्हारें द्र

व्य कोसंकोच हैं सो उहां सिद्धि होयगो ताते सर्वथा
तुम कों चल्यौ चाहिये तव कुंभन दास ने कही जो आ
ज्ञा इतने में दर्शन को समय भयो सो श्री गुसांई जी
आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मन्दिर में पधारे
श्री नाथ जी की सेवा सों पहुंच कें श्रीनाथजी कौं पो
ढ़ाय के बैठक में पधारे और कुंभनदासजी कों सीख
दीनी जो कुंभनदासजी तुम सेवा ते पहुंच कें वेग आइ
यो हम कालि आरती करिकें अपछरा कुंड उपर जा
य रहेंगे तव कुंभनदासजी श्री गुसांई जी को दंडोत
करकें अपने घर कों आये सवारे सेवा सों पहुंचि कें
श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुंड उपर आ
ये और श्री गुसांई जी श्री नाथ सों सीख मांगि कें आ
पनीचे आये पाछें आप भोजन कीये और सव सेव
कन कों महाप्रशाद लिवायो सो पाछें ताही समय कें
महूर्त हुतो सो श्री गुसांई आप पर्वत नीचे आये सो
अपछरा कुंड उपर आये सो तहां अपछरा उपर डेरा
को हुते सव सेवक आगाउ सो ठाडे हुते सो श्री गुसांई
जी डेरा पधारि कें पोढ़े इतने में सव सेवक सामान ले
कें वेउ आये सो कुंभनदास उहां वैठिकें विचारत हुते क
हिये जो कहिवे की होय प्राननाथ विछुरन की विरियां
जानत नाहिन कोउ यह विचार करत उत्थापन को स
भयो तव श्री गुसांई जी आप भीतर डेरा में जागे औ
र कुंभन दासजी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहां पूं
छरी को और कोने में जाय कें वैठि कीर्तन गावत हैं
और आंखिन में ते जल को प्रवाह वहत हो सो कुंभ

नदास नें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

केते हैं जु गए विन देखें ॥ तरुण किसोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें ॥१॥ वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद विसेखें ॥ वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेसें ॥२॥ श्याम सुन्दर संग मिलि खेलन की आवत जिये अपेखें ॥ कुंभनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥३॥

यह पद कुंभनदास नें गायो सो श्री गुसांई जी आपडेरा के भीतर सुनें सो कुंभनदास जी को क्लेश श्री गुसांई जी सों सह्यो न गयो सो श्री गुसांई जी आपडेरा के वाहर पधारे और श्री मुख तें कह्यो जो कुंभनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुको और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है सो कैसें जानियें जो श्री अक्का जी नें गज्जन धावन को पान लेवें कों पठायो सो गज्जन को तो भगवदासक्ति देखे विना एक क्षण हूं न रह्यो जाय सो गज्जन धावन पान लेवे कों वाहिर गये सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढि आयो सो मूर्छा खाय कें गिरे और श्री अक्का जी नें श्री नवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यो तव श्री नवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को वोलन सुन्यो तव श्री नवनीत प्रिया जी नें अपने श्री मुख सों कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है तव श्री अक्का जी नें कह्यो जो वह तो पान लेवे कों गयो है तव श्री नवनीत प्रिया जी ने कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तव

आरोगूंगो सो श्री हस्त खेंचि कें बेठि रहे तव वेगि गज्जनधावन कों बुलायो तव गज्जनधावन नें कही जो वावा आरोगो तव श्री नवनीत प्रिया जी आरोगे हें यह श्री आचार्य जी महाप्रभून की मर्यादा है जो जितनो सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवद गीता में भगवान कहे हें ॥ श्लोक

ये यथा मां प्रपद्यंते॰
स्तांस्तयव भजाम्यहं

यह आधो श्लोक कह्यो ताते श्री मुख सों कहे जो इहां तुम्हारी विविस्था और उनकी विवस्था है सो ऐसो॰ कुंभनदास कों और श्री नाथजी कों विरह हुतो ताते श्री गुसांई जी ने कुंभनदास कों सौंप दीनी तव कुंभनदासनें श्री नाथजी के दर्शन कीये तव कुंभनदासनें एक पद गायो सो पद ॥

राग सारंग

जो पै चोंप मिलन की होय ॥ तो क्यों रहे नाहि विन
देखे लाख करो जिन कोय ॥१॥ जो पै विरह परस्पर
व्यापै जो कछु जीवन वनें ॥ लोक लाज कुल की म
र्यादा एकौ चित न गनें ॥२॥ कुंभनदास प्रभू जाहि
तन लागी और न कछू सुहाय ॥ गिरधर लाल तोहि
विन देखें छिन छिन कलप विहाय ॥३॥

सो यह पद कुंभनदासनें श्री नाथजी के सन्निधान गायो सो सुनि कें श्री नाथजी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदास श्री नाथजी कों देख कें प्रसन्न भये ॥

वार्ताप्रसंग ५

और एक समय कुंभनदासजी श्री गुसांईजी के पास बैठे हुते तव कुंभनदासनें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज वेटा डेढ़ है और हैं तो सात तव श्री गुसांईजी नें कह्यो जो कुंभनदास डेढ़ कौ कारन कहा तव फेर कुंभनदास जी कहें जो महाराज आखो वेटा तो चत्रभुजदास है और आधो वेटा कृस्नदास है सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधो है कुंभनदास जी कृस्नदास सों आधो क्यों कहे ताको हेत यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पुष्टी मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टी मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाए हैं जो सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई सो व्रजभक्तन की कहा रीति है जो श्री ठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करें और श्री ठाकुर जी वन में पधारे तव गुण गान करें जो ए वस्तु होय तो आखो और इन में ते एक होय तो आधो ताते चत्रभुजदास सेवा और गुण गान है ताते आखो और कृस्नदास में एक सेवा है सो आधो तव श्री गुसांईजी श्री मुखते कहें जो भगवदीय हैं तेई वेटा हैं और वहुत भये तो कौन काम के यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं ॥

अव कृस्नदास की वार्ता

सो वे कृस्नदास श्रीनाथजी की गायन के ग्वाल हुते श्री गुसांईजी नें इनकों गायन की सेवा दीनी हुती सो कृस्नदास श्रीनाथजी की गायन की सेवा करते सवा

रें खिरक सेवा सों पहुंच कें फेरि गाय चरायवे कों जाते सो सगरे दिन कृस्नदास गायन की सेवा करते सो एक दिन गाय चराय कें पूंछरी की ओर कृस्नदास गायन के संग आवत हते सो सगरी गाय तो खिरक में आई और गाय बड़ी हती ताकों औन बहुत भारी हतो सो वह गाय बहुत हरवे चलती सो वा गाय कों आवत अंधियारो परि गयो सो तहां पर्वत के नीचे अंधियारे में एक नाहर निकस्यो सो गाय पै दौरो तब कृस्नदास कहे जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथजी की गाय है तू भूखो होय तो मेरे ऊपर आउ तब इतने में गाय तो भाजि खिरक में गई और नाहर ने कृस्नदास कों अपराध कीयो और ऊपर कहि आ

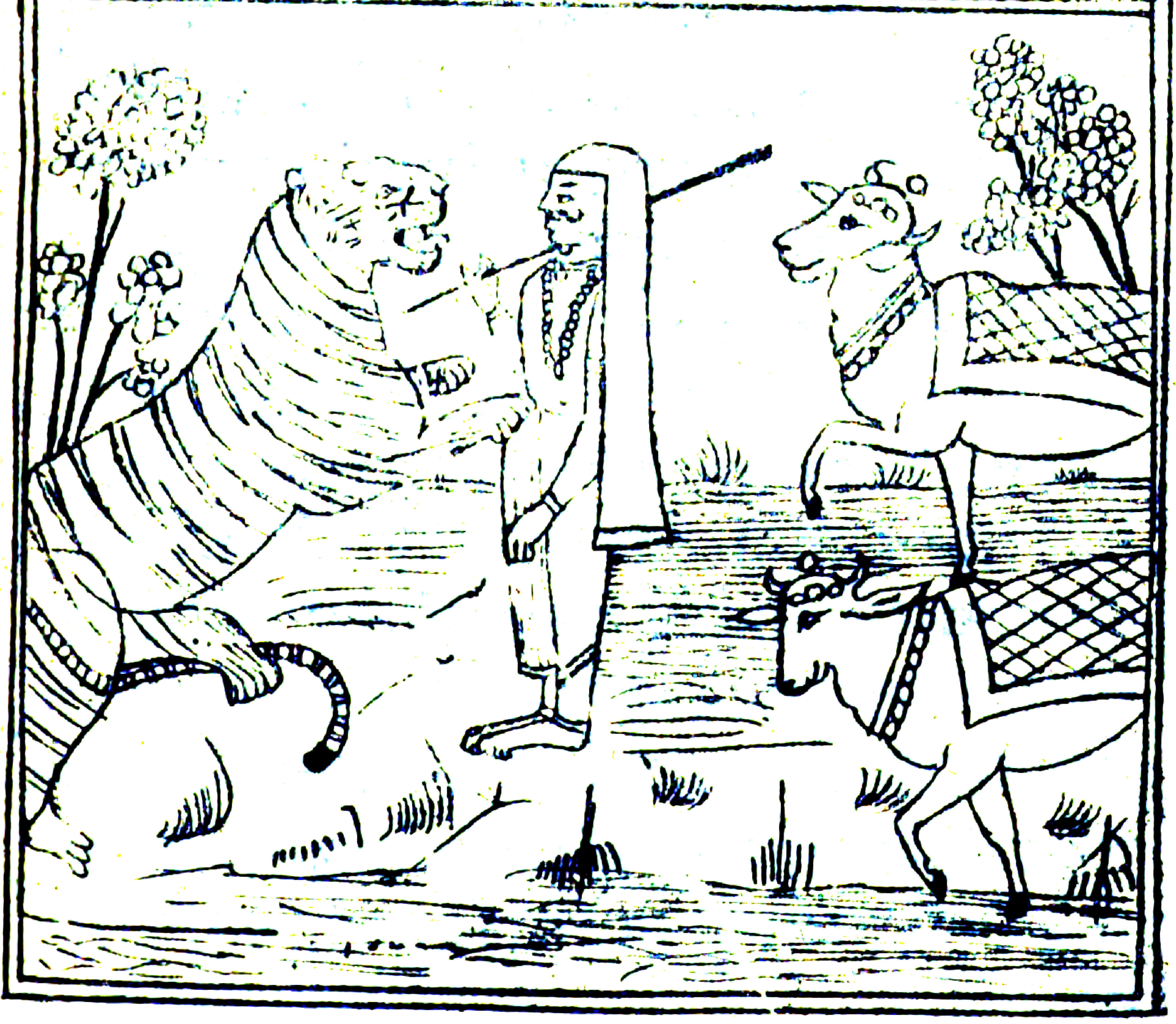

रहैं जो गाय सव खिरक में आई तव श्रीनाथजी आप गाय दुहिवे कों आये सो सव गाय ग्वाल दुहत हैं और वह वड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री दुहिवे कों वैठें और कृस्नदास वछरा थामें हैं और वह गाय वछरा कों चाटत हैं सो ऐसे दर्शन कुंभनदासजी कों भये ता पाछें गोदुहन करिकें श्रीनाथजी गिरराज ऊपर मन्दिर में पधारे तव श्रीगुसांई जीनें भोग समर्प्यो और कुंभनदासजी खिरक में से आये सो दंडोती सिला पास ठाड़े भये इतने में समाचार आये जो कृस्नदास कों नाहर नें मार्यो सो सुनि कें कुंभन दासजी मूर्छा खाय कें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूलि गये तव कुंभनदासजी कों सव कोउ वुलावें परि वोलें नाहीं तव ये समाचार काहूनें श्रीगुसांई सों कहे जो महाराज कृस्नदास कों नाहर नें मार्यो और गाय कों कृस्नदास नें वचाई सो कृस्नदास उहां ही परे हैं तव श्री गुसांईजी कहें जो गाय कवहूं न छोड़ि आवें अंत समै गाय संकल्प करत हैं ताकों गाय उतम लोक कों लेजात है और कृस्नदास ने तो श्रीनाथजी की गाय वचाई है ताते कृस्नदास कों गाय वैंमे छोड़ आवेगी और श्री गुसांईजीनें कह्यो जो कुंभनदासजी कहां हे तव काहू वैस्नवननें कह्यो जो महाराज कुंभनदासजी कों कलेस वहुत वाधा कीयो है जो कुंभनदासजी ऊपर आवत हुते सो कुंभनदासजी के आगें काहूनें कृस्नदास के समाचार कहे सो सुनत ही कुंभनदासजी मूर्छा खाय कें गिरे

सो लोग वहुत ही वुलावत हैं परि आवत नाहीं तव श्री गुसांई जीने अपने श्री मुख सों कह्यो जो फेरी कुंभनदास जी को खवर लावो जो कुंभनदासजी की देह कैसें है सो वे आय कें कुंभनदास जी कों पुकारे तव ए समाचार श्री गुसांई जी सों कहे जो महाराज कुंभन दासजी तो कछू समझत नाहीं तव श्री गुसांई जी तो सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथजी कों पोढ़ाय कें आपनी वै पधारे सो देख कें मार्ग के सामें कुंभनदासजी परे हैं और लोग चासों ओर ठाड़े हैं सो कहत हैं जो कुंभन दासजी कैसें भगवदीय हैं परि पुत्र को सोक वहुत वुरो होत है या पीरा सों कोई वच्यो नाहीं काहे तें जो अपनी आत्मा है तव यह वात लोगन की सुनि कें श्री गुसांई जी मन में विचारे जो इहां तो कारण कछू और है और लोगन कों तो कछू और भाखत हैं तातें भगवदीय को स्वरूप करिवे के लियें श्री गुसांईजी अपने श्री मुखसों कहे जो कुंभनदासजी सवारें तुम वेगो आइयो तुम कों श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन करामेंगे तुम मन मे खेद मति करो इतनों श्री गुसांईजी श्री मुख सों कहे तव कुंभनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भए तव श्री गुसांईजी कों दंडोत करि कें कुंभनदास कों जो कार्य करनों हो सो सव कीयो पाछें सवारें कुंभनदासजी दर्शन कों आये श्रीनाथजी को सिंगार करि कें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो प्रथम कुंभनदासजी कों दर्शन कराय देउ सो कुंभनदासजी वैष्णवन के ऊपर यह प्रकार कीयो जो सूतकी कों कौन मन्दिर में जान देतो सो

कुंभनदासजी के अनुग्रह ते सवकोउ दर्शन करत हैं सो कुंभनदास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय वैठते सो वहां वैठें वैठें विरह के पद गावते सो पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन विन दुखित गुपाल॥ अति आतुर व्रजसुन्दर प्यारे विरही के हाल॥१॥ सीतल चन्द तपत भयो दाहत किरण कमल जनु जाल॥ चन्दन कुसुम सुहाय घनसार लगत वढ़ी ज्वाल॥२॥ कुंभनदास प्रभू नव धन तुम विन कनक लता मानों सूखी जीव मा काल॥ अधरामृत वंसी सींचि लेउ तुम गिरगोवर्द्धन लाल॥३॥

राग धनाश्री

अव दिन रात्रि पहर से भए॥ तव ते निघटत नाहिन जव ते हरि मधुपुरी गये॥१॥ यह जानियें विधाता जुग सम कीने जाम नए॥ जागत जाग विहातन के ऐसे प्रीत ठये॥ व्रजवासी अति परम दीन भए व्याकुल से चलये॥ उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम परा॥ कुंभनदास विछुरत नंदनंदन वहुत संताप करे॥ अव गिरधर विन रहत निरंतर नैनन नीर ढरए॥

राग केदारा

औरन कों समीप विछुरनों आयो मेरी हिसा॥+॥ सव कोउ सोवे सुख अपने आली मोकूं चाहत रिसा॥ ना जानों यह विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसो कौन रिसा॥ कुंभनदास प्रभू गिरधर कहत

निस दिन रहज्यों चातक घन त्रिसा ॥२॥

ऐसे पद गाय गाय कुंभनदास जीनें मूत ते पद कीये पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदासजी भगवद सेवा में आ ऐसे जिनकों दर्शन की आर्ति सो वे कुंभनदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कौ पार नाहीं तातें इनकी वार्ता कहां ताईं लिखियें ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ वैस्नव ८३ ॥ सम्बंध १७५ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता लिख्यते

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्री रणछोडजी के दर्शन करिकें तहांते चले सो आधन मीरा वाई के गांव आये सो वे कृष्णदास मीरा वाई के घर गए तहां हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैस्नव हुते सो काहू कों आये आठ दिन काहू कों आये दश दिन काहू कों आए पंद्रह दिन भये हुते तिनकी विदा न भई हुती और कृष्णदास ने तौ आवतही कही जो हूं तौ चलूंगो तव मीरावाई ने कह्यौ जो वैठो तव वाके तनीक मोहर श्री नाथजी कों देन लागी सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत तातें तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंग नाहीं सो ऐसें कहि कें कृष्णदास उहांते उठि चले सो

जव आगे आये तव एक वैष्नवन नें कह्यो जो तुम नें श्रीनाथजी की भेट नाहीं लीनी तव कृष्नदास ने कह्यो जो भेट की कहा हे परि मीरावाई के यहां जितने सेवक वैठे हुते तिन सवन की नाक नीची करि कें भेट फेरी हे इतने इकठौरे कहां मिलते येहू जानेंगे जो एक वेर सूद्र श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक आयो हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरू की कहा वात होयगी ॥ ::

वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥

और प्रथम सेवा श्रीनाथजी की वंगाली करते जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें मुकट काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हें सो नित्य धरते सो भेट आवती सो खर्च होती कछू संग्रह न राखते सव खर्च होय जातो और वंगाली सेवा करते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कृष्नदास कों आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा टहल करो तव कृष्नदास अधिकारी भए अधिकार करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कों चलन लागे सो अडींग लों पहुंचे तव पेंडे में अवधूत दास मिले महापुरुष हते व्रज में फिर्यो करते सो कृष्नदास कों मिले तव अवधूत दास ने कह्यो जो कृष्नदास तुम कहां चले तव कृष्नदास नें कही जो मथुरा जात हों कछू काम हे तव अवधूत दास ने पूछो जो श्रीनाथजी की सेवा कोन करत हे तव कृष्नदास नें कही जो वंगाली करत हें तव अवधूत दास नें कही जो श्रीनाथजी कों अपनों वैभव वढावनो हे ताते तुम वंगालीन कों दूर क्यों नाहीं करत सो अवधूत दास सों श्रीनाथजी नें कह्यो जो मो कों वंगाली वहु

त दुख देत हैं सो तब बंगाली श्रीनाथजी कों भोग धरते सो उनकी चुटि में छोटो सो स्वरूप हुतो देवी को सो साम्हे बैठावते जब भोग सरावते या देवी कों अपनी चुटिया में धर लेते ऐसें सदा करते सो बात अवधूतदास ५ कों श्रीनाथजी ने जनाई ताते अवधूत दासने ५ कृष्णदास सों कह्यो जो तुम बंगालीन कों दूर करो तब कृष्णदास नें कही जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा विना थेंसें काढे तब अवधूतदास ने कह्यो जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आवो जैसें बने तैसें इन बंगाली कों काढो तब कृष्णदास अडींग ते फिरे सो श्रीगोवर्द्धन आए तब बंगालीन सों कह्यो जो हूं तो श्रीगुसांईजी के पास अडेल जात हों तुम श्रीनाथजी की सेवा सावधानी सों करियों और सब सेवक हुते तिन सों कृष्णदास नें कह्यो जो हूं तो श्रीगुसांईजी के पास कछू काम है सो अडेल कों जात हों तुम सावधान रहियो ता पाछें श्रीनाथजी सों विदा होय के अडेल कों चले सो दिन पंद्रह में श्रीगुसांईजी के पास आय पहुंचे सो आय कें श्रीगुसांईजी कों दंडोत कीये तब श्रीगुसांईजी ने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यों आये तब कृष्णदास नें कही जो श्रीनाथजी कों अपनों वेभव बढावनों है और बंगालीन नें बहुत माथो उठायो है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन कों देत हैं तब श्रीगुसांईजी कहें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू असुरव्यामोह लीला दिखाई ता पाछें श्रीगोपीनाथजी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की

भेट भई पाछें अडेल आये तब श्री गोपीनाथजीनें कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयो सो सब श्रीनाथजी कौ है श्री नाथजी कों विनियोग कीयो चाहियै ता पाछें श्रीगोपीनाथजी दिन दश बारह रह कें पाछें श्री नाथजीद्वार पधारे सो जाय पहुंचे तब श्रीगोपीनाथजीनें दर्शन कीयो पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कीयो आभूखन सब जड़ाव के समराये थार, कटोरा, डबरा, चमचा, तष्टी, प्रभृत, सब सोंना रूपा के कीये सब करिकें श्री नाथजी सों विदा होय कें श्री गोपीनाथजी अडेल आये ता पाछें बंगाली बरस एक के भींतर सब लैगये अपने गुरू के यहां जाय कें दीयो यह बात श्री गुसांईजीनें कृस्नदास सों कही और कह्यो जो बंगालीननें माथो उठायो है परि वे श्री आचार्यजी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसें निकलेंगे तब कृस्नदासनें श्री गुसंईजी सों कह्यो जो महाराज श्री नाथजी की आज्ञा है जो बंगालीन कों निकासो ताते आप या बात में कछू मति बोलो मोकों आप आज्ञा करो तो अपनों आप करि लेउंगो जैसें बंगाली निकसेंगे तैसें काढूंगो तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो अवश्य तब कृस्नदासनें कह्यो जो महाराज दोय पत्र लिखिये एक राजा टोडरमल्ल के नाम को एक बीरबल के नाम को तब श्री गुसांईजीनें दोय पत्र लिखि दीने राजा टोडरमल्ल कों और बीरबल कों लिखो जो कृस्नदास कों श्री नाथजीद्वार भेजे हैं जो तुम सों कृस्नदास कहे सो करि देउगे सो पत्र लैकें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो आगरे आ

ए तहां टोडरमल्ल राजा बीरबलसों मिले पत्र श्रीगुसांईजी के हुते सो दीये सो उन पत्र बांचि कें कृस्नदास सों कह्यो जो तुम कहो तैसें करें तब कृस्नदासनें कह्यो जो अब तो में मथुरा जात हों बंगालीन कों काढिवे कों ता पाछें कृस्नदास राजा टोडरमल्ल सों बिदा होय कें श्रीनाथजी द्वार कों चले सो मथुरा आए तब मार्ग में अवधूतदास मिले तब कृस्नदास सों अवधूतदासनें कही जो कृस्नदासजी ढील कहा करि राखी है बंगालीन कों काढो श्रीनाथजी की ऐसी इच्छा है श्रीनाथजी कों अपनों वैभव बढ़ावनों है तब कृस्नदासनें कह्यो जो श्रीगुसांईजी की आज्ञा लेकें आयो हों अब जाय कें बंगालीन कों काढ़त हों इतनों कहि कें कृस्नदास चले सो श्रीनाथजी द्वार आये सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहां उनकी झोंपरी हुती सो कृस्नदासनें जराय दीनी तब सोर भयो : तब बंगाली सेवा छोड़ के पर्वत के नीचें आये तब कृस्नदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीये तब बंगाली देखे तो कृस्नदासनें झोंपरी में आग लगाय दीनी हैं तब सब बंगाली कृस्नदास सों लरन लागे तब कृस्नदास नें दैदै चारचार लाठी सबन में दीनी तब वे बंगाली तहां ते भाजे सो मथुरा आये तब रूपसनातन के पास आय कें सब बात कही तब इतने में कृस्नदास हू आय ठाडे भये तब रूपसनातन ने कृस्नदास के ऊपर खीजि कें कह्यो जो बेपारे शूद्र तू कौन जो : इन ब्राह्मणन कों मारें तब कृष्णदासनें कही जो हूं

सूद्र हों परि तुम हूं तो अग्निहोत्री नाहीं तुम हू तो कायस्थ हो तव सनातन नें कह्यो जो यह वात पात्साह सुनेंगो तो तू कहा जुवाव देयगो तव कृष्णदासनें कह्यो जो हों तो नीकें जुवाव देयंगो परि तुम कों जुवाव देत में दुख होयगो और तुम कों जवाव न आवेगो जो तुम कायस्थ होय कें इन ब्राह्मणन सों दंडोत करावत हो तव रूप सनातन तो चुप व्है रहे और वंगालीन सों कह्यो जो तुम जानों ए जानों तव वंगाली मथुरा के हाकिम पास गये तव कृष्णदास जाय ठाडे भये तव हाकिम नें कह्यो जो भयो सो तो भयो परि अब इन कों राखो तव कृष्णदासनें कह्यो जो अब तो इन कों न राखेंगे एतो हमारे चाकर हुते सो हमनें इन कों सेवा सोंपी हुती सो ए सेवा छोड़ कें क्यों आये जो इन की झोंपरी जर गई हुती तो हम नई छवाय देते ताते अब हम तो न राखेंगे ता ऊपर तुम कहत हो जो हम श्री गुसांई जी कों लिखेंगे वे कहेंगे तैसें करेंगे तुम श्री गुसांई जी कों लिखो पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जीद्वार आये और वंगाली सव अपने श्री कुंड आये तव कृष्णदासनें श्री गुसांई जी कों पत्र लिखो तामें वंगाली काढ़े सो सव समाचार विस्तार करि कें लिख और लिख्यो जो अव पधारियें तो भलो है सो पत्र श्री गुसांई जी के पास अडेल आयो ता पाछें श्री गुसांई जी अडेल ते चले सो श्री नाथ जीद्वार आये तव वे वंगाली सव आये तव श्री गुसांई जी सों कह्यो जो हम कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें सेवा में राखे हुते सो

कृष्णदास नें हम कों काढे तब श्री गुसांईजी ने कह्यो ः जो तुम सेवा छोड़कें क्यों गये दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे तब वे बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खायेंगे कहा तब श्री गुसांईजी नें इनकों श्रीनाथजी के बदले श्री मदनमोहनजी की सेवा दीनी और कह्यो जो इन की सेवा तुम करियो जो आवे ः सो खाइयों तब वे बंगाली श्री मदनमोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन नें श्री गोवर्द्धन रहिवो छोड़ दीयो ता पाछें श्रीनाथजी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे श्रीनाथजी कों अपनों वैभव बढावनो हो सो सब भीतरियान को नेग और सब सेवकन को नेग जो जा भांति श्रीनाथजीनें कह्यो ता भांति श्री गुसांईजीनें बांधो तब तें श्रीनाथजी की सेवा प्रनालिका नें हान न लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥

बहुरि श्रीनाथजीनें कृष्णदास कों आज्ञा दीनी जो श्यामकुमरि कों लैकें ताल पखावज लैकें तू परासोली में आइयो सो श्यामकुमर आछो म्रदंग बजावते ः सो श्रीनाथजी की सैन आरती उपरांत अनोसर भयो तब कृष्णदास श्यामकुमरि के घर गये तब कृष्णदास नें श्यामकुमरि सों कही जो श्रीनाथजीनें आज्ञा करी है सो म्रदंग लैकें परासोली चलो तब श्यामकुमर नें कह्यो जो मोहू कों श्रीनाथजीनें आज्ञा करी है ताते चलिये तब श्यामकुमर म्रदंग लैकें आयो तब कृष्णदास और श्यामकुमर ए दोउ जने परासोली आए

सो देखें तो श्री नाथ जी स्वामिनीजी सहित विराजें हैं तब श्री नाथजी ने श्यामकुमर सों कह्यो जो तू तो मृदंग बजाय और कुम्भदास सों कह्यो जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथजी और श्री स्वामिनीजी नृत्य कीयो तहां कुम्भदास नें पद गायो सो पद

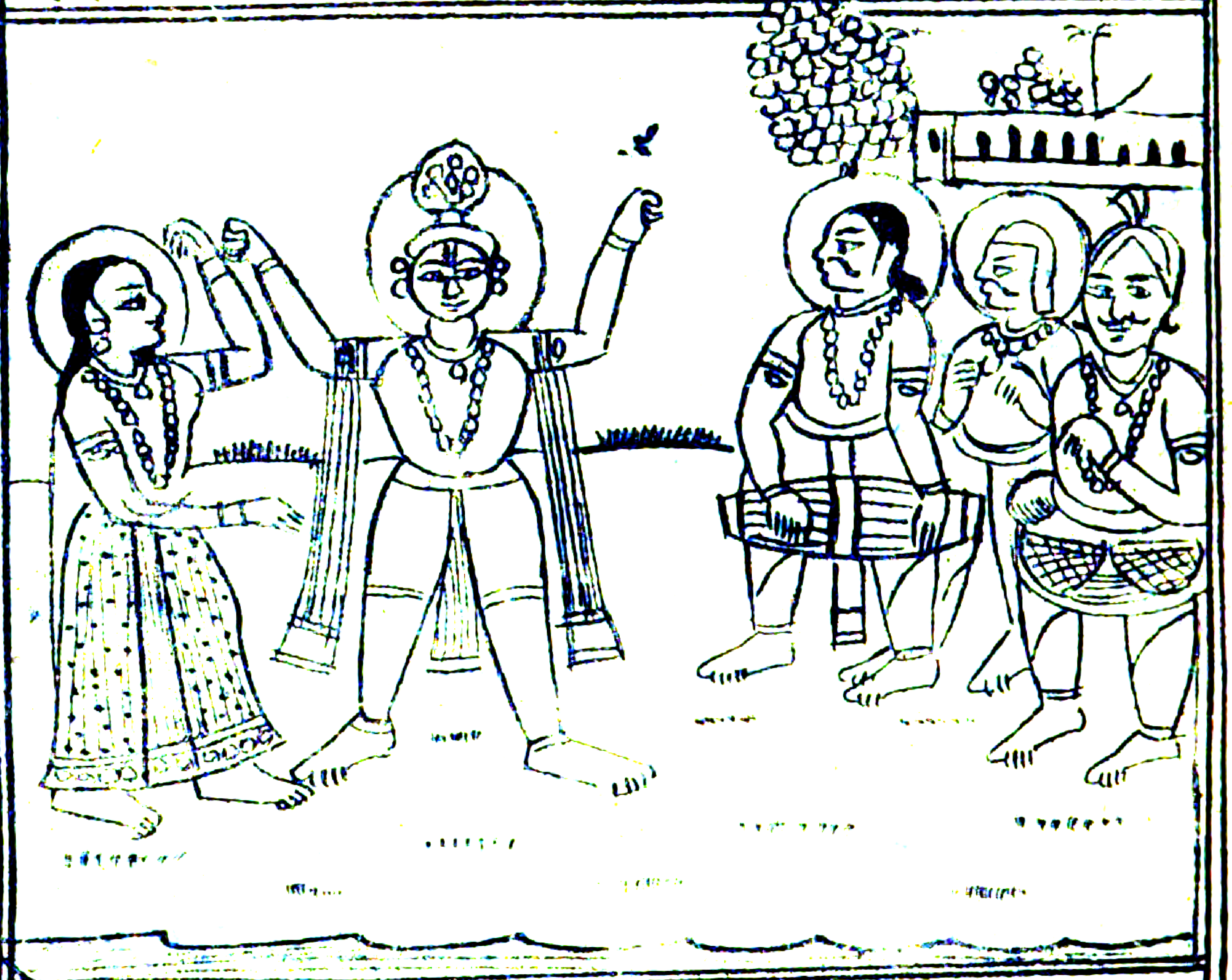

राग केदारो

श्रीवृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग लागडाट उरप तिरप नास रंग राख्यो ॥ झपताल मिल्यो राग केदारो सप्त सुरन अवघर तान रंग राख्यो ॥१॥ पाई सुख सिद्धि भरत काम विविधि रिद्धि अभिनव दल सत सुहाग हुलास रंग राख्यो ॥ वनिता सत जूथ संग लिये निरखत कों सघन चन्द बलिहारी कुम्भदास सुघर रंग राख्यो ॥२॥

यह पद कृष्णदास नें गायो श्याम कुमारनें मृदंग बजायो श्री नाथजी और स्वामिनी जी नृत्य कीयो तातें श्री महाप्रभुजी की कानितें श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते॥

वार्ताप्रसंग ३॥

और कृष्णदास नें बहुत पद कीयें तब एक समें सूरदासजीनें कृष्णदास सों पूछो जो तुम पद करत हो तामें मेरी छाया है तब कृष्णदास नें सूरदासजी सों कह्यो ५ जो अब कें ऐसो पद करूं जो जामें तुम्हारी छाया न आवै तब कृष्णदास एकांत में बैठि कें एकाग्रचित करिकें नयो पद करन लागे जो जामें तीन तुक कौ कीयो और चौथी तुक बनें नाहीं तब घड़ी दोय लों विचारे जो आगें तुक चलत नाहीं तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगें सो जा पत्र मे लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरिकें प्रसाद लेवे कों उठे जब कृष्णदास प्रसाद लेवे कों बैठे तब श्रीनाथजीनें आप तीन तुक वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिखि दीये कृष्णदासनें आधो पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथजी पूरो करिकें आप तो पधारे ता पाछें कृष्णदास प्रसाद ५ लेकें आये तब देखो तो श्री नाथजी पूरो पद करि कें श्रीहस्त सों लिख गये हैं सो देख कें कृष्णदास बहुत प्रसन्न भये और कहें जो सूरदासजी आवें तो पद सुनावे तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों आये तब कृष्णदास ने कह्यो जो सूरदासजी नयो पद एक मेंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी तब सूरदा

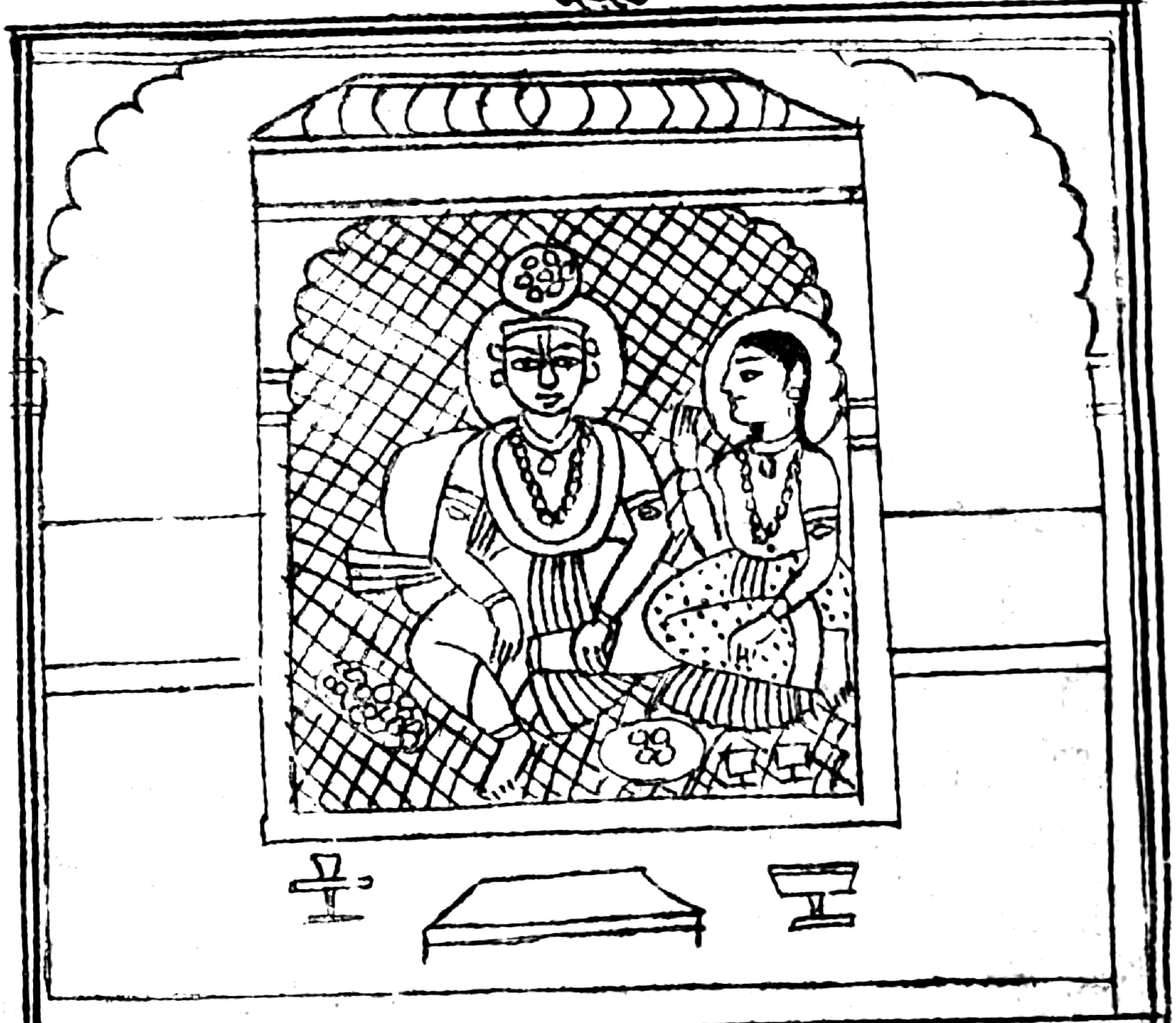

सखीनें कह्यो जो कहो सुनों तब जानों तब पद कह्यो सो पद ॥

राग गोरी ॥

आवत बनें कान्ह गोपबालक मगनें चुकी खुररेणु कुरतु अलकावली ॥ भोंहें मनमथचापबक्र लोचनबान सीस सोभित मत्त मयूरचन्द्रावली ॥१॥ उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि। वदन निरखि फूलीनवलजुवती कुमुदावली ॥ अरुणा सकुच अधर बिंब फल हसात कहत कछुक प्रकाटेत होत कुंददसनावली ॥२॥ श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि सुभग त्रिवलावली ॥ रत्नहाटक खचित उर पदिक निर्पांति बीच राजत सुभ उलक मुक्तावली

॥३॥ अथ श्रीनाथजी कूल ॥ वलय कंकण वाजूबंद आजानु भुज मुद्रिका करदल विराजत नखावली ॥ क्वणतर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजनमसिरु सथित प्रेमावली ॥४॥ कटि क्षुद्र घंटिका जटित हीरा मयी नाभि अम्बुज वलित भृंग रोमावली ॥ धाय कवहुक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मण्डल रुचिर श्रम जल कणावली ॥५॥ पीत कोसय परिधाने सुंदर अंग चरण नूपुर वाद्य गीत सवदावली ॥ हृद्य कृष्णदास गिरवर धरण लाल की चरणनख चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥६॥ यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगें कह्यो सो सूरदास जी तीन तुक तांई तो वोले नाहीं और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदास जी नें कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास मेरें तुम सों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी पहिंचानत हों तब कृष्णदास चुप करि रहे ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय है ॥

वार्त्ता प्रसंग ॥४॥

और एक समय श्रीनाथजी के भंडार में कछु सामिग्री चहियत हुती सो कृष्णदास गाड़ा लेकें आगरे कों आए सो आगरे के वाजार में एक वेस्या नृत्य करत हुती ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती सब लोग तमासो देखत हुते सो कृष्णदास वाजार में तमासे में जाय ठाड़े भये तब भीर सरकि गई तब वह वेस्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी सो वह वेस्या वहुत सुन्दर और गावे वहुत आछो नृत्य तेसोई क

रे सो कृष्णदास वा वेस्याके ऊपर रीझे और मन में कहे जो यह तो श्रीनाथजी के लायक है ता पाछें या वेस्या कों दश मुद्रा तो उहांही दीये और कही जो रात्रि कों समाज सहित आइयो ता पाछें कृष्णदास उहां हवेली में उतरे सो सामिग्री चहियत हुती सो सब लेकें गाड़ा लदाय सिद्ध करवायो ता पाछें रात्रि पहर गई तब वेस्या समाज सहित आई ता पाछें नृत्य भयो गान भयो वापै कृष्णदास बहुत रीझे सो रुपैया सत एक दीये तब वा वेस्या सों कह्यो जो तेरो गान हूं आछो और नृत्य हू आछो परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पान ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयो ता पाछें कृष्णदास नें एक पूरवी राग में पद करिकें सिखयो ता पाछें दूसरे दिन वा वेस्याकों साथ लेकें चले सो आगरे ते

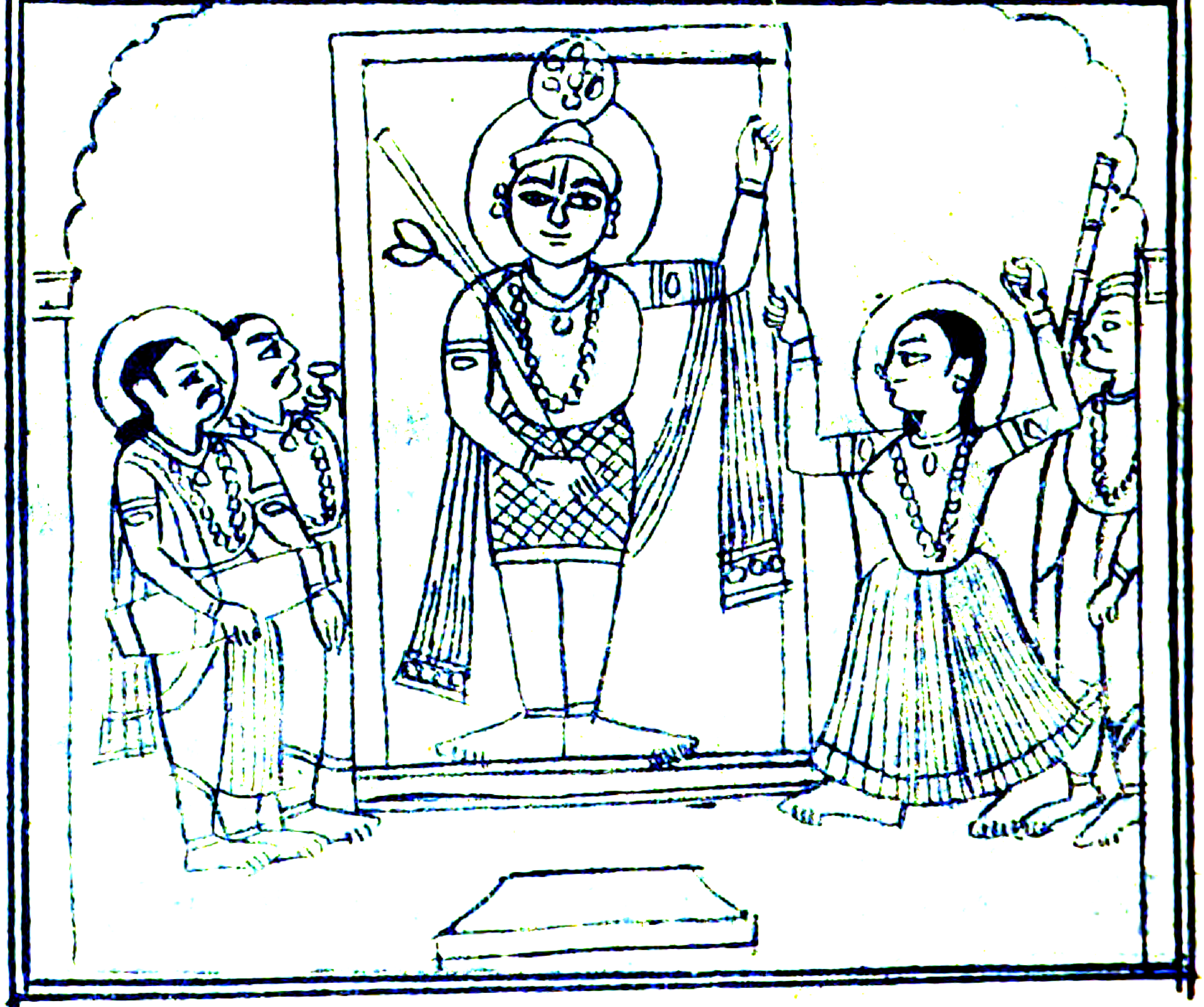

आय पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजी द्वार आये सामग्री सब भंडार में धराई ता पाछें जब उत्थापन को समय भयो तब कीर्तनिया कहू कों वारो   न दीये तब वा वेश्या कों समाज सहित लेगये श्रीगुसांईजी मन्दिर में वाडे श्रीनाथजी कों मूदा करत हैं और मणिकोठा में वेस्या नृत्य करन लागे और यह पद गायो ॥ सो पद

राग पूरवी ॥

मो मन गिरधर छवि पर अटक्यो ॥ ललित त्रिभंगी अंगन परि चलि गयो तहांई ठटक्यो ॥१॥ सजल श्याम घन चरण नील है फिर चित अनि तन भटक्यो ॥ कृस्नदास कियो प्राण न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो ॥ यह पद वा वेश्यानें गायो सो जब गावत २ पिछली तुक आई जो कृस्नदास कियो प्राण न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो इतनों कहत मात्र वा वेस्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरिकें श्रीनाथजी की लीला में प्राप्त भई और वा वेस्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तो या तें जीविका हुती अब हम कहा खायगे तब कृस्नदास नें कह्यो जो तुम कों रोकत हो चलो नीचे खाय वे कों देउं तब उन समाजीन कों नीचे लायकें कृस्नदास नें २ सहस्त्र रुपैया दै विदा किये कृस्नदास नें अपने मन ते समर्पी ताते श्रीनाथजीने वा वेस्या कों अंगीकार करी ताते श्री आचार्यजी महाप्रभून की कानितें सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सों अंगीकार करत हैं ॥

वार्ताप्रसंग ५

और कृस्नदास कों गंगाबाई सों बहुत स्नेह हतो सो श्री गुसांई जी कों न सुहावते सो एक दिन श्री गुसांई जी श्री नाथजी कों भोग समर्पित हते सो सामिग्री ऊपर गंगा बाई की दृष्टि परी ताते श्री नाथ जी आरोगे नाहीं परि भोग तौ समर्प्यौ ता पाछें समय भयो तब भोग सराये तब आरती करि अनोसर करि कें श्री गुसांई जी आप नीचें पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सबनें प्रशाद लीयो तब श्री गुसांई जी आप तौ भोजन करि कें पौढे तब श्री नाथजी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायो और वासूं कहें जो हूं तौ भूखो हूं तब वा भीतरिया नें कह्यो जो महाराज श्री गुसांई जी नें भोग सम-

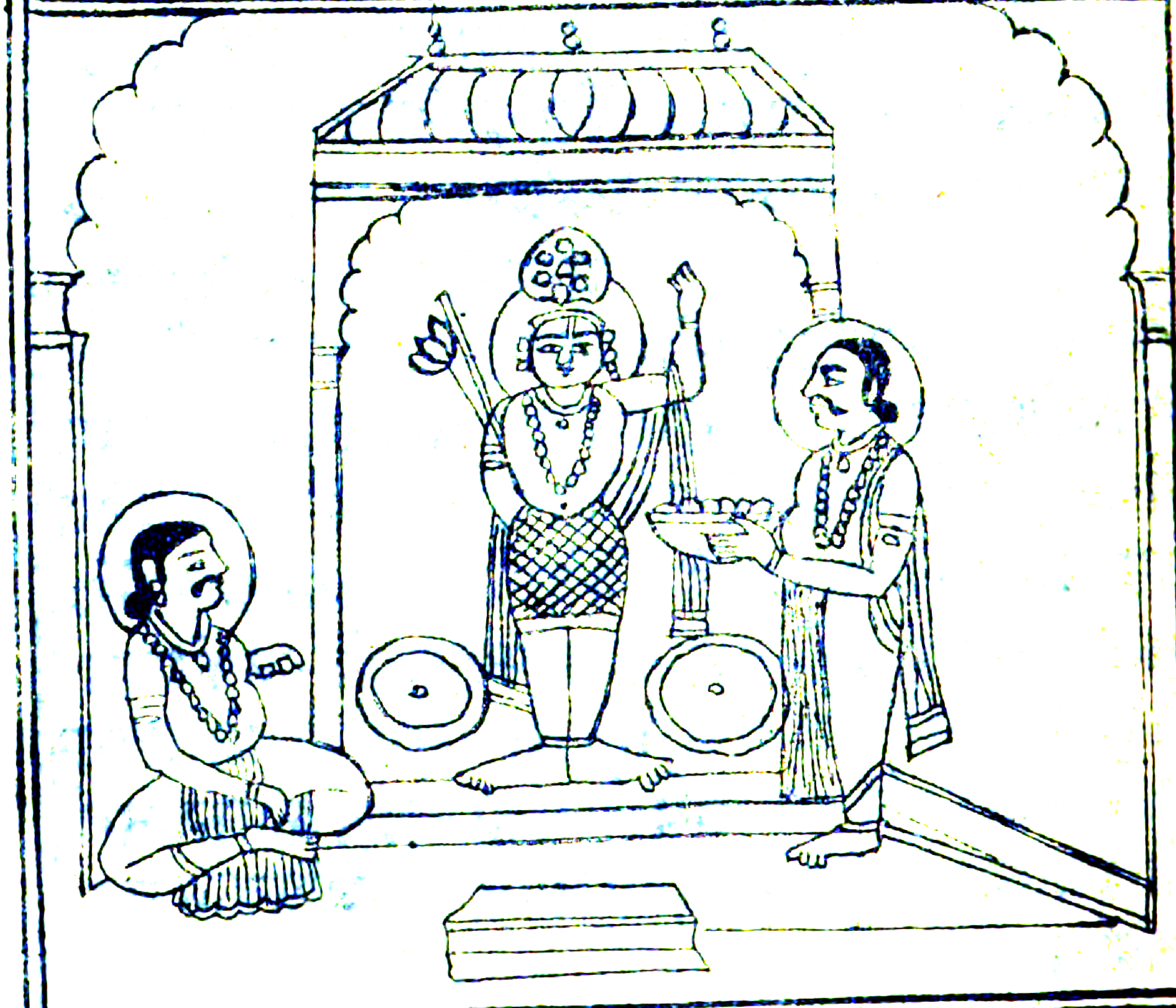

र्प्यौं हो और तुम भूखे क्यों रहे तब श्री नाथ जी नें कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टी परी हती तातें राजभोग आरोग्यो नाहीं तब वह भीतरिया उठि श्री गुसांई जी के पास आयो सो श्री गुसांई जी भोजन करकें पौढे हते तब भीतरिया नें आय कें श्री गुसांई जी के चरण दाबे तब श्री गुसांई जी चौंकि उठे तब देखें तो श्री नाथ जी को भीतरिया है तब वा भीतरिया सों पूछी जो यहां इतनी वेर कहां आयो हो तब वा भीतरिया नें कह्यो जो महाराज आज श्री नाथ जी भूखे हैं मो कों लात मारि कें जगायो और कह्यो जो आज तो में भूखो हों तब मैंनें श्री नाथ जी सों कह्यो जो महाराज भोग तो श्री गुसांई जीनें समर्प्यो हो तुम भूखे क्यों रहे तब श्री नाथ जी नें कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी तातें में नाहीं आरोग्यो तब श्री गुसांई जी सुनतही ततकाल स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे सो वह भीतरिया हू स्नान करकें श्री गुसांई जी के साथ ही आयो तब श्री गुसांई जीनें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवे तब भात और बड़ी कीं सो तत्काल सिद्ध भयो तब श्री नाथ जी कों भोग समर्प्यो पाछें भीतरिया रसोई करि कें स्नान करि कें पर्वत ऊपर आये तब श्री गुसांई जी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई सिद्ध ता पाछें राजभोग सैन भोग इकठोरे समर्प्यो ता पाछे समय भयो तब भोग सराय सैन आरती करी तब श्री नाथ जी कों पौढाये भोग सरयो हो सो प्रसाद

रकडवरा में उहांई रहि गयो तब रामदास भीतरियानें कह्यो जो पहलो भोग समर्प्यो हुतो सो उहां ही रहि गयो तब श्री गुसांई जी डवरा मेंतें ठलाय कें लेत उतर पाछें सब सेवकन कों वह बड़ी भात को महाप्रशाद स्वक बांटि दीनों ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे सो यह बड़ी भात को प्रशाद अति अद्भुत भयो अति अलौकिक स्वाद भयो सो श्री गुसांई जी आप सराह्यो तब कृष्णदास ठाड़े हुते तब कृष्णदासनें कही जो महाराज आप ही करनहारे आप ही आरोगनहारे तो कौन उत्तम होय तब श्री गुसांई जीनें हँसकें कही जो तुम्हारो ही कीये भोगत हैं ॥

वार्त्ता प्रसंग ६

अब जो यह बात श्री गुसांई जीनें कही जो ये तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनि कें कृष्णदासनें श्री गुसांई जी सों बिगाड़ी तब श्री गुसांई जी सों कृष्णदासनें कह्यो जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ौ तब श्री गुसांई जी आप तो तहां ते फिरे सो परासोली में आय रहे तब मन में विचारे जो कृष्णदास कहा मनें करैगो पर श्री नाथजी की इच्छा कैसी है सो श्री नाथ जी की इच्छा जानि कें कछु बोले नाहीं सो आप परासोली में रहे सो परासोली में ध्वजा के सांम्हें बैठि कें विज्ञप्ति कीये और श्री गुसांई जी तीन दिन तो श्री गोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्री गोकुल रहते तब ते परासोली आय रहे तब श्री गुसांई जी श्री नाथजी के मन्दिर की सिखर को परासोली की ओर

पढ़ती ताके सांम्हे वैठिते तब श्री नाथजी आप खिरकी में आय दर्शन देते तब यह जानि कें कृष्णदासनें परासोली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्री गुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्री नाथजी को राजभोग आरती करि कें अनोसर करि कें श्री गुसांई जी के दर्शन कों परासोली आवते सो आय कें चरणोदक लेय पाछें प्रसाद लेते सो कृष्णदास कों सुहावतो नाहीं और सब सेवक श्री गुसांई जी के दर्शन विना महाप्रशाद कैसें लेंय परि सेवकन सों कृष्णदास की चलै नाहीं और श्री गुसांई जी एक पत्र लिखि कें रामदास भीतरिया कों देते और कहते जो श्री नाथजी कों दे दीजो सो पत्र श्री नाथजी कों देते श्री नाथजी विज्ञप्त उत्तर लिखि कें रामदास कों देते सो रामदास श्री गुसांई जी कों देते तब श्री गुसांई जी वा पत्र कों बांचि कें पानी में पी जाते या भांति सों छै महीना बीते परि श्री गुसांई जीनें श्री नाथजी कों अधिकारी वैष्णव जानि कें और श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जानि कछू न कह्यो परि श्री नाथ जी के विरह को स्नेह बहुत करते या भांति छै महीना भए तब एक दिन राजा वीरबल आय निकसे तब ता दिन तो श्री गुसांई जी परासोली हुते श्री गिरधर जी घर हुते तब राजा वीरबल नें श्री गुसांई जी कों खबर कराई तब पौरियान नें कही जो श्री गुसांई जी तो परासोली हैं श्री गिरधर जी घर हैं तब राजा श्री गिरधर जी के

दर्शनकों आए तव वीरवल सों श्री गिरधरजी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथजी के दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी कों खेद बहुत होत है काकाजी परासोली में जाय दर्शन करत हैं तव वीरवल नें श्री गिरधरजी सों कह्यो जो अव हूं जाय कें कृष्णदास को काढूंगो यों कहि कें राजा वीरवल श्री गिरधरजी सों विदा होय कें मथुरा आये और श्री गुसांईजी परासोली तें श्री गोकुल आये और वीरवल नें पांच सौ मनुष्य भेजे और कह्यो जो कृष्णदास कों पकरि लावो सो वे मनुष्य श्री गोवर्द्धन आय कें कृष्णदास को पकरि लाये सो वे वीरवल नें कृष्णदास कों वन्दीखाने में दीनों तव श्री गिरधरजी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को वन्दीखाने में दीनों है तव श्री गिरधरजीनें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो कृष्णदास को वन्दीखाने में दीनें है तव श्री गुसांईजीनें कह्यो जो हाय हाय श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवकन कों ऐसो कष्ट तव श्री गुसांईजीनें श्री गिरधरजी सों कह्यो जो तुमनें कह्यो होयगो तव श्री गिरधरजीनें कह्यो जो हमनें तो वीरवल सों सहज ही कह्यो हुतो जो काकाजी कों दर्शन नाहीं करन देत सो काकाजी कों वहुत खेद होत है तव श्री गुसांईजी ने कह्यो जो भोजन जव करूंगो तव कृष्णदास आवैगो तव श्री गिरधरजी तत्काल घोड़ा मंगाय असवार होय कें मथुरा कों आये तव वीरवल सों कह्यो जो काकाजी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों

छोड देउ तब राजा बीरबलनें कृस्नदास श्री गिरधरजी के

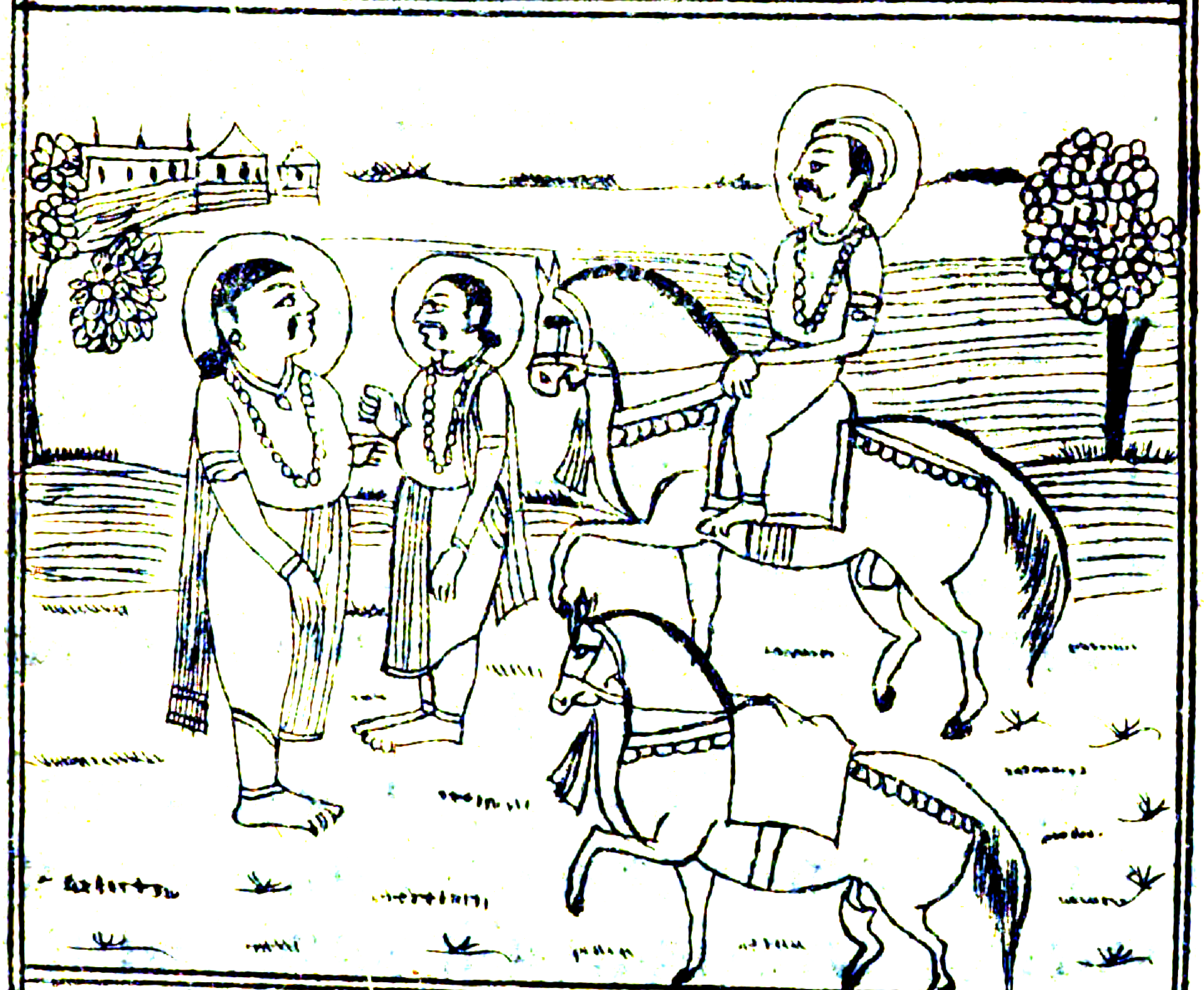

हवालें करदीयो तब श्री गिरधरजी तत्काल संगले श्री गोकुल आये तब श्री गुसांई जीनें सुनी जो श्री गिरधर जी कृस्नदास कों साथ लेकें आवत हैं सो श्री गुसांई जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुंचे और वा ओर ते कृस्नदास आये सो श्री गुसांई जी को दर्शन कीयो और दंडोत करी और एक नयो पद करिकें गायो सो पद ॥

राग केदारो

श्री विठ्ठल जू के चरण की वलि ॥ हमसे पतित उधारन कारन परम कृपालु आग आपन चलि ॥ १ ॥ उज्जल अरुणा दया रंग रंजित दशा नखचन्द्र विहरत मन निर्दलि ॥ सुभग कर सुख कर सोभन पावन भक्त मुदित

ललितकर अंजलि ॥२॥ अतिसे मरतुल सुंगधसु सीतल परत त्रिविध तापडारत मल ॥ भजि कृष्णदास चार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल ॥३॥ +

यह पद श्री गुसांईजी के आगें गायो पाछें श्री गुसांईजी कृष्णदास कों अपने घर ले आये पाछें कृष्णदास सों श्री गुसांईजी नें कह्यो जो उठो भोजन करो तब कृष्णदास नें कह्यो महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूंठन लेउंगो तब श्री गुसांईजी भोजन कों बैठे तब कृष्णदास ने एक पद और गायो सो पद

राग कान्हरो

ताहीकों सिर नाइये जो श्री वल्लभसुत पदरज रति होय ॥ कीजे कहा आन ऊंचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥१॥ सार सार विचार मतो करि श्रुति वच गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय ॥२॥ जाके मन में उभ भरमें हे श्री विट्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताकों संग विषम विषहू ते भूलिहू चातुर कर हे जिन कोय ॥ जिन प्रताप देखि अपने चख असम सार जो भिदे न तोहि ॥ कृष्णदास ते सुर ते असुर भये असुर ते सुर भये चरणन छोह ॥४॥

यह पद सुनि कें श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भये पाछें श्री गुसांईजी भोजन करिकें पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो अब जाउ भोजन करो तब कृष्णदास भीतर गये तब श्री गिरधरजी नें श्री गुसांईजी की

झूंटन की पातर कृष्णदास के आगे धरी तब कृष्णदास ने महाप्रशाद लीनो पाछें बीड़ा दोय दीये रात्रि कों कृष्णदास वहांई सोय रहे तो पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्री गुसांई जी उठ देहकृत करिकें स्नान कीयो श्री नवनीतप्रिया जी के मंगला के दर्शन करिकें बाहिर पधारे तब श्री नाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी कीये तब घोड़ा दोय मंगाये एक घोड़ा ऊपर श्री गुसांई जी असवार भये एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवार कीयो और श्री गोकुल ते चले सो श्री नाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़ें जाय पहुंचे सो यहां श्री नाथ जी को राज भोग आयो हुतो सो श्री गुसांई जी तत्काल स्नान करिकें ऊपर पधारे और श्री गुसांई जी विज्ञप्त पत्र पराशोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते ताको प्रति उत्तर श्री नाथ जी पत्र में लिखिकें श्री गुसांई जी कों पठावते सो श्री गुसांई जी जल में धोय पीजाते सो पिछले दिन को पत्र श्री नाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्री गुसांई जी राखे हुते सो पत्र साथ ही ले आए हुते पाछें श्री नाथ जी कों राज भोग आयो हुतो सो समय भयो तब श्री गुसांई जी भोग सराय वे कों पधारे तब श्री गुसांई जी कों देखि कें श्री नाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछी जो नीके हो तब श्री गुसांई जी कहें जो तुम कों देखें सोई दिन नीके हैं पाछें परस्पर दोउ जने मुसिकाए पाछें श्री गुसांई जी राज भोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झांपी में धर्यो पाछें राज भोग के दर्शन खुले तब

कृस्नदास नें कीये पाछें श्री गुसांई जी राजभोग आरती करि अनोसर करि नीचें पधारे पाछें रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्री गुसांई जी पोढे सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहिलें उठे पाछें उत्थापन को समय भयो तव स्नान करि ऊपर पधारे सो संखनाद करवायो श्री नाथजी के उत्थापन भए पाछें सेंन आरती उपरांत दर्शन करिकें कृस्नदास कों श्री नाथजी के सन्निधान वुलायो और कह्यो जो कृस्नदास तुम अधिकार करौ और श्री नाथजी जी की सेवा नीकी भांति सों करियों तव कृस्नदास नें श्री नाथ जी के सन्निधान एक पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

परम कृपाल श्री वल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथे ॥ जे जन सरणा आये अनुसरही गहि सों पति श्री गोवर्द्धन नाथें ॥१॥ परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धारा ते साथें ॥ भजि कृस्नदास काज सव सवसरहीं जो जानें श्री विट्ठल नाथें ॥२॥

यह पद गायो और वीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करौ तव श्री गुसांई जीनें कह्यो तुमारो अपराध श्री नाथ जी क्षमा करेंगे पाछें कृस्नदास कों विदा कीयो पाछें श्री नाथ जी कों पोढ़ाय कें श्री गुसांई जी नीचें उतरे श्री गुसांई जी परम दयाल कृस्नदास कों कृत कछु मन में न आनों श्री आचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयो पाछें श्री गुसांई जी दिन दोय रहे पाछें श्री गोकुल पधारे फिर कृस्नदास श्री गु

साईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ७ ॥

सो बहुत बरस लों भली भांति सों अधिकार कीयो पाछें एक वैष्णव नें कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवावनों है और मोकों अपने देश कों जानों है तातें द्रव्य तुम कों दे जात हों सो तुम बनवाय दीजो तब कृष्णदास नें कही जो आछो तब वह वैष्णव तीन सौ रुपये दैकें अपने देस कों गयो तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में तें एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरिकें आम के वृक्ष के नीचे गाड़ दीये कह्यो जो दाय में रुपैया लगि चुकेंगे तब इनकों काढ़ेंगे सो आछो मुहूर्त देखि कें रुद्र कुंड ऊपर कूआ खुदायो तब कितेक दिन में वह कूआ मौंहतांई बनिकें तैयार भयो और दाय में रुपैया लगे मठोठा बाकी रह्यो तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन कों गये सो हाथ में आसा हतो सो आसा टेक कें कूआ के ऊपर ठाड़े भये सो वह आसा सरक्यो तब कृष्णदास कूआ में जाय पड़े तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे सो बहुतेरो ढूंढें परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो तब सब मनुष्य उहां तें फिर आये सो ता समय श्री गुसांई जी श्री नाथ जी कों सैन भोग धरिकें मंजूष बिराजे हुते और रामदास श्री गुसांई जी के पास बैठे हुते ता समय काहू नें आय कें कह्यो जो महाराज कृष्णदास नें कूआ बनवायो हो सो कृष्णदास देखन गये हुते सो आसा टेकिकें कूआ के औंहड़े ऊपर ठाड़े

हुते सो आसा सरकौ सो कूआ में गिर परे और मनुष्यदोय कृष्णदास कों ढूंढवे कों उतरे सो वहोतेरों॰

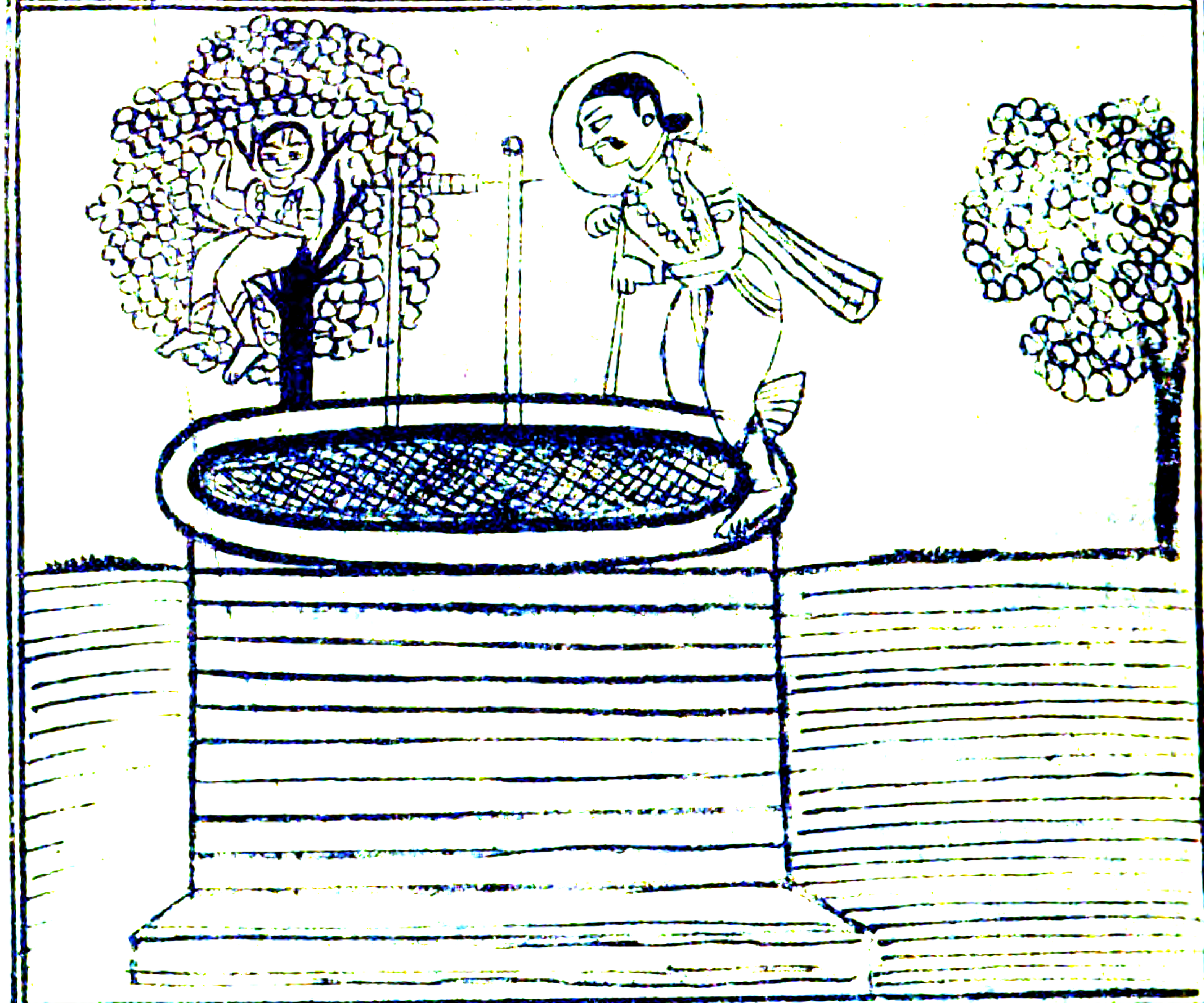

ढूंढे परि सरीरहू न पायौ कहा जानियें कहा भयौ तव रामदास जी कहें ॥ जो

अधोगच्छन्ति तामसा:

तव श्री गुसांई जी कहें जो रामदास ऐसें न कहि अच जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो सरीर न मिल्यो ताको कारन कहा सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतो सो तो श्रीनाथजी की सेवामें प्राप्त भयौ और कृष्णदास नें या सरीर सों॰ श्री गुसांई जी की अवज्ञा करी है जो यह सरीर अलौकिक जीव भुगतनों हों सो कूआ में गिरत मात्र क

ष्णदास कौ सरीर लौकिक मध्य होय कें पूंछरी की ओर एक वृक्ष है पीपर कौ तहां प्रेत होय कें रह्यो भोगभुगतन कों तातें कृष्णदास कों सरीर कूआ में न गिरे पै श्री गुसांईजी को आवनु तातें कृष्णदास को यह गति भई जो प्रेत होय कें पूंछरी की ओर पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ८ ॥

और एक समय श्री नाथजी की भैंस खोय गई हती सो गोपीनाथ ग्वाल और चार पांच ग्वाल पूंछरी की ओर ढूंढवे कों गये हते सो गोपीनाथ देखें तो पूंछरी की ओर श्री नाथजी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत है कें बैठे हैं तब कृष्णदास नें गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी बीनती श्री गुसांई

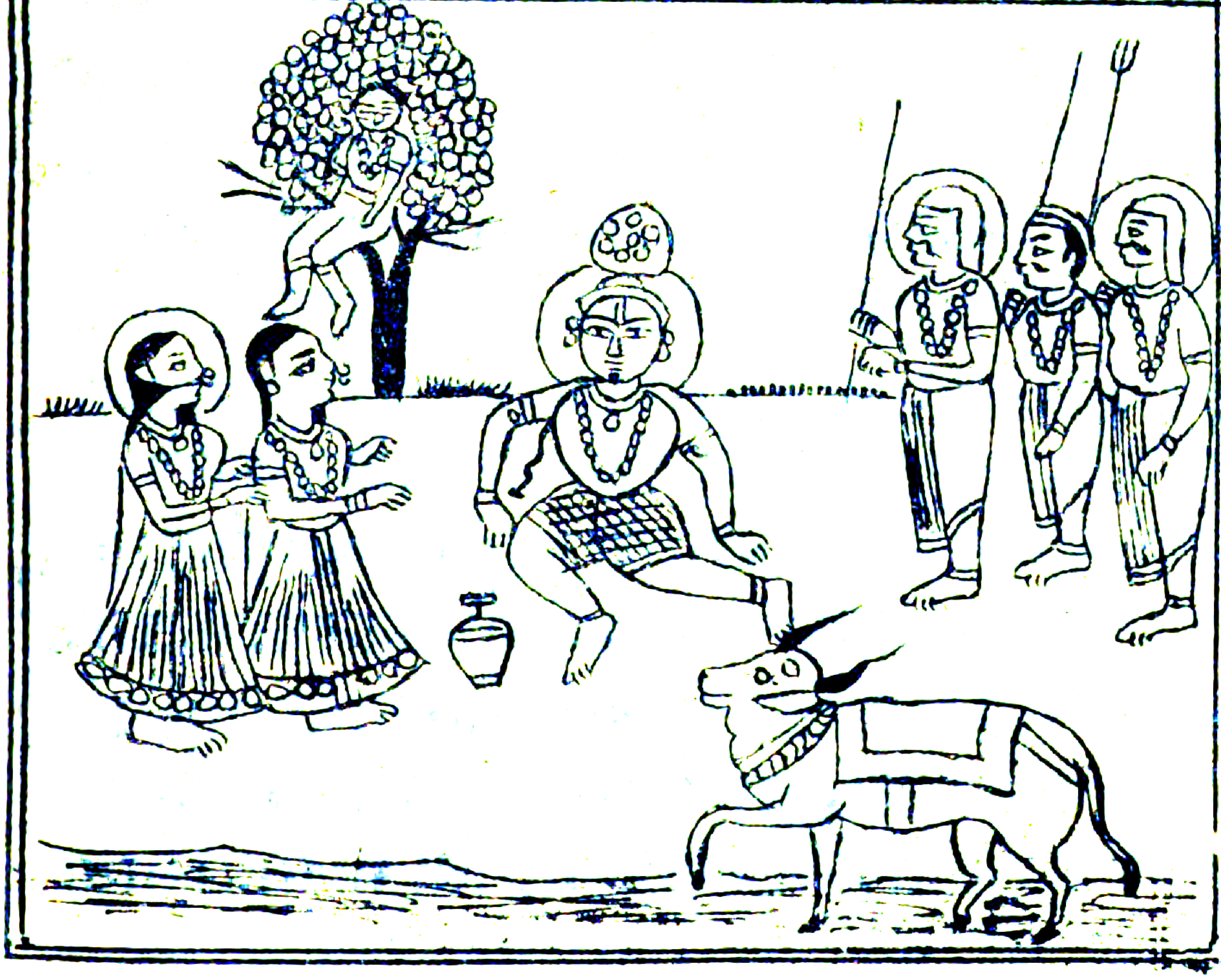

श्री सों करियो और कहियो जो कृष्णदास नें कह्यो है जो हों तुम्हारो अपराधी हों ताते मेरी यह अवस्था है हूं श्रीनाथजी के पास हूं तोहू मेरी गति होत नहीं ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूल्हरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढि के या कूआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्री गुसांई जी के आगें कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी नें यह बीनती करी है तब श्री गुसांई जीनें आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ को बनवायो तब कृष्णदास की गति भई कृष्णदास कों प्रेत जोंन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताको कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्री गुसांई जीनें कृष्णदास सों कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथजी की सेवा नीकी भांति सों करियो तब कृष्णदास नें कह्यो जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री गुसांई जीनें कह्यो जो तुम्हारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे सो श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जीनें अपराध क्षमा करो सो प्रेत जोंन में दर्शन देते पर स्पर्श न कीयो जो स्पर्श होय तो उद्धार होय सो उद्धार तो श्री गुसांई जी के हाथ है कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हो मोसों बोलत हो और मैं प्रेत हों ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत तब श्रीनाथ जीनें कह्यो जो हूं तोको दर्शन देत हों बोलत हों सो तो

श्री गुसांई जी के वचन के लिये नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतो और बोलतो हू नाहीं और उद्धार तो श्री गुसांई जी के हाथ है तेनें श्री गुसांई जी को अपराध कीयो है ताते श्री गुसांई जी उद्धार करेंगे तब होयगो ता पाछें श्री गुसांई जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तो बहुत दिन भये हें ताते अब उद्धार होय तो भलो तब श्री गुसांई जी ध्रुव घाट ऊपर आय कें कृष्णदास को कर्म करवाय उद्धार कीयो तब कृष्णदास को उद्धार भयो और लीला में प्राप्ति भयो और श्री गुसांई जी कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी एक तो अधिकार कीयो सो ऐसो कीयो जो फेरि ऐसो न करो दूसरें कीर्तन कीये सो अद्भुत कीये और तीसरे श्री आचार्य जी महाप्रभून की सेवक होय कें सेवा हू ऐसी करी जो कोउ न करेगो ताते वे कृष्णदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥

॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ सम्बन्ध ॥ १८४ ॥ वैष्णव ॥ ८४ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून।
के सेवक परम कृपापात्र।
चौरासी मुख्य वैष्णव
न की लिखी सो।
सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ श्रीचौरासीवार्ताकेवैष्णवोंकीवार्ताओंका सूचीपत्रलिख्यते॥

नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति	नाम वैष्णव	पृष्ठ	पंक्ति
दामोदरदासहरसानीकी	२	५	वेणीदास माधोदास दो	७२	४
कृष्णदास मेघन क्षत्री·	१०	५	उभाईनकीवार्ता··		
दामोदरदास सम्भरवार	१९	१	हरिवंशपाठक सारस्वत·	७५	१६
खत्री की वार्ता·			गोविंददास भल्ला की वा	७७	९
पद्मनाभिदासकनौजिया	३१	१३	अम्मा क्षत्राणी की वार्ता	८१	१२
ब्राह्मण की वार्ता·			गज्जन धावन क्षत्री की·	८३	२४
पद्मनाभिदास की वेटी तु	४३	१४	नारायनदास ब्रह्मचारि	८७	६
लसाबाई की वार्ता·			सारस्वत ब्राह्मण की वार्ता		
पद्मनाभिदास के वेटा की	४५	२३	महावन की वासी एक	९३	४
वहू पार्वती ताकी वार्ता·			क्षत्राणी ताकी वार्ता·		
पद्मनाभिदास कौ नाती पा	४७	१३	जीयदास क्षत्री सर की·	९४	१८
र्वती कौ वेटा रघुनाथदास			देवा क्षत्री कपूर की वार्ता	९६	८
स्त्री क्षत्राणी अड़ेल की	४९	४	सेठ दिनकरदास की·	९७	१३
सेठ पुरुषोत्तमदास खत्री	५१	२०	मुकन्ददास कायस्थ की·	९९	१२
बनारस के बासी की वार्ता			प्रभूदास जलोटा क्षत्री सि	१००	१८
सेठ पुरुषोत्तमदास की·	६०	२५	हनंद के वासी की वार्ता·		
बेटी रुक्मणी की वार्ता·			प्रभूदास भाट की वार्ता·	१०७	९
सेठ पुरुषोत्तमदास के बे	६३	६	पुरुषोत्तमदास आगरे में	११०	७
टा गोपालदास की वार्ता			रजघाट पै रहते ताकी·		
रामदास सारस्वत ब्राह्मण	६४	१७	त्रिपुरदास कायस्थ शेर	११२	१५
गदाधरदास सारस्वत ब्रा	६९	७	गढ़ के वासी की वार्ता·		

पूरनमल्लखत्रीकीवार्ता	११८	२३
यादवेंद्रदासकुम्हारकी·	१२१	२
गुसांईदाससारस्वतकी·	१२३	७
माधोदासभट्टकाश्मीरकेवासीकीवार्ता·	१२४	१९
गोपालदासकीवार्ता	१२९	२३
पद्मरावलसांचोराब्राह्मणउज्जैनकेवासीकीवा·	१३७	१८
पुरुषोत्तमजोसीकीवार्ता	१४१	८
जगन्नाथजोसीकीवार्ता·	१४४	२
जगन्नाथजोसीकीमाताकी·	१४६	११
जगन्नाथजोसीकेबड़ेभाईनरहरजोसीकीवार्ता·	१५२	७
राणाव्याससांचोराब्राह्मणगोधराकेवासीकीवार्ता·	१५७	२२
रामदाससारस्वतब्राह्मणराजनगरकेवासीकीवार्ता	१६२	२४
गोविंददुबेसांचोराकीवा·	१६५	१
राजादुबेमाधोदुबेदोउभाईनकीवार्ता·	१६९	१६
उत्तमश्लोकदाससांचोरा ब्राह्मणकीवार्ता·	१७१	५
ईश्वरदुबेसांचोराकीवार्ता	१७७	११
वासदेवदासछकड़ासारस्वतब्राह्मणकीवार्ता·	१७८	१३
बाबावेणुऔरकृस्नदासघघरियातथादेवदासइनकीवार्ता·	१८७	६
जगतानंदसारस्वतब्राह्मणथानेश्वरकेवासीकी·	१९१	२
आनंददासविश्वंभरदाससदोउभाईछत्रीनकी·	१९३	२५
एकब्राह्मणीकीवार्ता·	१९४	२०
एकक्षत्राणीकीवार्ता·	१९५	८
गोरजा,समराई,सासबहूसीहनंदकीवासीकी·	२००	११
रुक्मनीबहूजीकीदासीकृस्नादासीकीवार्ता·	२०६	१६
बूलामिश्रपंडितकीवार्ता	२०९	२
मीराबाईकेपुरोहितरामदासकीवार्ता·	२११	११
रामदासचौहानकीवार्ता	२१३	२
रामानंदपंडितकीवा·	२१४	२३
विष्णुदासछीपीकीवा·	२१७	१७
जीवनदासक्षत्रीकपूरसीहनंदकेवासीकीवा·	२२१	७
भगवानदाससारस्वतब्राह्मणकीवार्ता·	२२३	६
भगवानदासश्रीनाथजीकेभीतरियाकीवार्ता·	२२८	२

अच्युतदास सनोड़िया ब्राह्मण की वार्ता·	२२६	२२
अच्युतदास गौड़ ब्रा· की·	२२७	१४
अच्युतदास सारस्वत की·	२२८	२२
नारायनदास अम्बाले के वासी की वार्ता·	२३१	२१
नारायनदास भाट मथुरा के वासी की वार्ता·	२३३	१३
नारायनदास चौहान· ठठे के वासी की वार्ता·	२३४	२३
मोहनंद की॰ क्षत्राणी की·	२४०	२३
दामोदरदास कायस्थ की	२४३	४
स्त्री पुर्ष दोउ क्षत्रीन की·	२४४	१७
अड़ेल के सुतारि कारीगर की·	२४६	८
एक अन्य मार्गीय के स्त्री एक क्षत्री की वार्ता·	२४७	७
लघु पुरुषोत्तमदास की·	२४८	२२
कविराज भाट की वार्ता·	२४९	२३
गोपालदास गंगा के बासी की वार्ता	२५०	३
जनार्दनदास चोपड़ा की	२५०	२२
भट्ट स्वामी सनोड़िया की·	२५१	२०
कन्हैया साल क्षत्री की·	२५२	२५
नरहरदास गोड़िया की	२५३	१४
नारायणदास की वार्ता	२५४	२१
मट्टू पांडे तथा मानिकचंद पांडे तथा इनकी स्त्री तथा नरो वेटी की वार्ता·	२५६	८
नरहरदास संन्यासी की·	२६२	६
गोपालदास जटाधारी श्रीनाथजी को खवासी के की·	२६३	४
कृष्णदास ब्राह्मण की·	२६५	२६
संतदास चोपड़ा क्षत्री· आगरे के वासी की वार्ता	२७१	२७
सुन्दरदास श्रीजगन्नाथजी के पास रहते ताकी वा·	२७४	१
मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री विरजा की वार्ता·	२७८	८
गोपालदास गेड़ा के बासी की वार्ता	२८२	६
सूरदासजी गऊघाट के बासी तिनकी वार्ता·	२८५	२०
परमानन्ददास कनौजिया ब्राह्मण की वार्ता	३०४	२
कुम्भनदास गोरवा की वार्ता	३३०	१४
कृष्णदास अधिकारी की वार्ता·	३५५	९

इति सम्पूर्णम् ॥